दुनिया के मज़दूरो एक हो !

लेनिन

[illegible] संस्मरण उनके संबंधियों द्वारा

विदेशी भाषा प्रकाशन गृह
मास्को

अनुवादक: नारायण दास खन्ना

विषय-सूची

द० इ० उल्यानोव और म० इ० उल्यानोवा

लेनिन विषयक संस्मरणों के अवतरण

न० क० क्रूप्स्काया

लेनिन विषयक संस्मरणों से

भूमिका

इस पुस्तक में व्लादीमिर इल्यीच लेनिन की बहनों, आन्ना और मारिया, उनके भाई दिमित्री तथा उनकी पत्नी न० क० क्रूप्सकाया के लेनिन विषयक संस्मरण संग्रहीत हैं।

पुस्तक में मुख्यतया आन्ना उल्यानोवा-येलिज़ारोवा की "इल्यीच विषयक संस्मरण" तथा दिमित्री उल्यानोव और मारिया उल्यानोवा की "लेनिन के विषय में" शीर्षक पुस्तकों के अवतरण उद्धृत किये गये हैं। मार्क्सवाद-लेनिनवाद संस्था ने इन पुस्तकों को १९३४ में प्रकाशित किया था। इनके अतिरिक्त इस पुस्तक में दिमित्री तथा मारिया उल्यानोवा और न० क० क्रूप्सकाया के वे संस्मरण भी हैं जो समय-समय पर विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं आदि में प्रकाशित हुए थे। प्रस्तुत पुस्तक में जिन संस्मरणों का समावेश किया गया है वे व्ला० इ० लेनिन के विविध कार्यों तथा उनके जीवन में घटित अनेकानेक घटनाओं से संबद्ध हैं। अनेक संस्मरणों में उनके बाल-काल, उनकी युवावस्था तथा अक्तूबर क्रान्ति के पूर्व के वर्षों के उनके क्रान्तिकारी क्रिया-कलापों का दिग्दर्शन कराया गया है। कुछ संस्मरणों में उनके उत्तरक्रान्तिकालीन कार्यों की भी चर्चा है।

लेनिन विषयक उनके संबंधियों के संस्मरणों से हमें लेनिन के व्यक्तित्व की महानता का परिचय मिलता है। हमारा विश्वास है कि इन संस्मरणों से साम्यवादी पार्टी के नेता एवं संस्थापक और सोवियत समाजवादी राज्य के निर्माता के जीवन तथा कार्यों की सम्यक् जानकारी प्राप्त करने में सहायता मिलेगी।

सोवियत संघ की कम्यूनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय
समिति की मार्क्सवाद-लेनिनवाद संस्था

अ. इ. उल्यानोवा – येलिज़रोवा

इल्यीच

विषयक संस्मरण

परिवार
(लेनिन के माता पिता और उनका युग)

व्लादीमिर इल्यीच के पिता, इल्या निकोलायेविच का जन्म आस्त्राखान नगर के एक गरीब परिवार में हुआ था। बालक इल्या कोई सात वर्ष का रहा होगा कि उसके पिता का देहान्त हो गया और उसकी पढ़ाई लिखाई का भार उसके बड़े भाई वसीली निकोलायेविच पर आ पड़ा (इल्या निकोलायेविच ने कज़ान विश्वविद्यालय की स्नातक परीक्षा पास की थी)। वे अपने भाई के बड़े आभारी थे और प्राय: उनकी प्रशंसा करते, क्योंकि उनके लिये तो वे पिता तुल्य थे। वे हम लोगों, अर्थात् अपने बच्चों को, बताया करते कि उनके भाई ने उनके लिये क्या कुछ नहीं किया। वे कहते कि स्वयं वसीली निकोलायेविच को अध्ययन का बड़ा शौक था परन्तु पिता की मृत्यु हो जाने के कारण अल्पायु में ही उनके सिर पर परिवार के पालन-पोषण का भार आ पड़ा। इस परिवार में उनकी माता, दो बहनें और एक छोटा भाई था। फलत: उन्हें एक दफ़्तर में नौकरी करनी पड़ी और उन्होंने शिक्षा की ओर से आंखें बन्द कर लीं। परन्तु उन्होंने यह दृढ़ निश्चय कर लिया था कि मुझे शिक्षा न मिली न सही मेरे भाई को अवश्य मिलेगी। जब इल्या निकोलायेविच ने पाठशाला का प्रशिक्षण समाप्त कर लिया तब उनके भाई ने उन्हें अध्ययन के लिये कज़ान

विश्वविद्यालय भेजा और वे उनकी उस समय तक मदद करते रहे जब तक कि इल्या निकोलायेविच, जो बचपन से ही मेहनती थे, विद्यार्थियों को पढ़ा कर स्वयं अपना पेट पालने में समर्थ न हो गये।

वसीली निकोलायेविच आजन्म कुंआरे रहे और जीवन भर अपनी माता, बहनों और भाई का ही भरण-पोषण करते रहे।

इल्या निकोलायेविच का विश्वविद्यालय में अध्ययन-काल वह काल था जब रूस में निकोलस प्रथम अपना क्रूर शासन चला रहा था, जब रूस में भूदासत्व की प्रथा का बोलबाला था और वहाँ की अधिकांश जनता केवल गुलाम थी जिन्हें जागीरदार कोड़े लगा सकते थे, साइबेरिया में निष्कासित कर सकते थे, भेड़-बकरियों की तरह बेच सकते थे, उनके परिवारों से अलग कर सकते थे या अपनी इच्छानुसार उनका जिस तिस के साथ विवाह कर सकते थे। किसान शासन की चक्की में पिसा जा रहा था, पददलित हो रहा था, उसे शिक्षा की कोई सुविधाएं प्राप्त न थीं और इसीलिए वह निरक्षर भट्टाचार्य बना हुआ था।

कभी-कभी अधिक क्रूर जागीरदारों के खिलाफ़ विद्रोह उठ खड़े होते और उनकी जागीरों को भस्मसात् कर दिया जाता; परन्तु उस समय के किसान विद्रोह संघटित नहीं होते थे, उनका क्रूरता के साथ दमन कर दिया जाता था और परिणाम यह होता था कि गांवों में निरुत्साह और नैराश्य की लहर व्याप्त हो जाती। उस समय बेचारी जनता के पास अपना दु:ख भुलाने और अपने संतप्त हृदय को सान्त्वना देने का एक ही साधन था—शराब। किन्तु कुछ ऐसे भी थे जिनके अन्तस् में विद्रोह की ज्वालाएं धधक रही थीं, शराब जिन्हें कोई सान्त्वना न दे पाती थी और जिन्हें किसी भी करवट चैन न था। उनके लिये केवल एक ही रास्ता था—चरागाहों और जंगलों में निकल जाना और अन्ततः डाकू बन जाना।

बहुत कठिन सचमुच वे दिन थे,
जब कि त्याग देना पड़ता था
किसी व्यक्ति को
अपना चिर-कालीन ग्राम का परिचित-जीवन
और सभी कुछ जो कि हृदय के बहुत पास था—
घर, पत्नी और सगे बंधु-जन, अपने साथी।
जीवन तक का मोह छोड़ देना होता था,
केवल आज़ादी पा-जाने की आशा में।

उस समय की अधिकांश जनता, जो उस काल में "निम्नवर्गीय" कही जाती थी, शासन रूपी दमन-चक्र में पिस रही थी। उस दमन ने समाज के उन "उच्चवर्गीय" सदस्यों के मस्तिष्कों को भी उद्वेलित कर दिया था जिन्हें अपने देश से प्रेम था, जो देश को सर्वोपरि समझते थे। निरंकुशता और तानाशाही के विरुद्ध उनका रोष उमड़ा। पश्चिमी युरोप की क्रांतियों का उन पर असर पड़ ही चुका था, अतएव उन्होंने वाक्स्वातंत्र्य तथा समाचारपत्रों और सभाएं करने की स्वतंत्रता, सरकार को निर्वाचन-पद्धति पर चलाने के लाभ और सर्वोपरि देश से भूदासत्व की प्रथा का समूल नाश करने के संबंध में विचार-विमर्श करना आरम्भ कर दिया। यह उल्लेखनीय है कि इस काल के बहुत पहले ही सारे युरोप से भूदासत्व की प्रथा समाप्त हो चुकी थी और रूस जैसे महान देश में उसका बना रहना समस्त देश के लिये लज्जा की बात थी जिसे इन देश-प्रेमियों ने जाना समझा था। परन्तु अनेक देशभक्तों को या तो फाँसी दे दी गई या उन्हें कारावास में डाल दिया गया और उनका सारा जीवन अन्धकारमय हो गया। दिसेम्ब्रिस्टों*

* वे रूसी क्रान्तिकारी हैं जो सर्वसाधारण (कुलीन वर्ग) में से पनपे थे। यह पहला संघटन था जिसने निरंकुशता के विरुद्ध सशस्त्र विद्रोह किया था—सम्पादक।

की (१८२५ में) और पेत्राशेव्स्की के दल* की (१८४८ में) यही गति हुई थी। बाकी लोगों के मुँह बन्द कर दिये गये थे और यदि कभी वे देश की समस्याओं पर बातचीत करना भी चाहते तो उन्हें अत्यधिक गोपनीयता बरतनी पड़ती।

सभी दिशायें उदासीन हैं उष: काल में ...
. . . .
डाह और उन्माद बन गये अंधड़-आंधी,
मेरा देश — इसे कि आज वे
दुर्दिन से आतंकित करते,
और नष्ट करते
सब शुभ,
सब कुछ प्रकाशमय...**

१८४८ में समस्त युरोप में क्रांति की जो लहर आई उसके कारण देश की जनता के लिये भी यह दमन-चक्र असह्य हो उठा। निकोलस प्रथम ने, जो उस समय युरोप में निरंकुश शासन का बड़ा-भारी समर्थक था, हंगरी की क्रांति को दबाने के लिये रूसी सैनिकों को अपना खून बहाने के निमित्त भेजा। उस समय ज़ार इतने शक्तिशाली

---

* इस दल के सदस्य प्रगतिशील रूसी बुद्धिजीवियों के प्रतिनिधि थे। यह दल १८८५—४६ में पीटर्सबर्ग में कार्य करता था। इसका एक संघटनकर्ता म० व० पेत्राशेव्स्की भी था। इस दल ने निरंकुशता और सामन्तशाही (भूदासत्व) के विरुद्ध मोर्चा लिया था—सम्पादक।

** न० अ० नेक्रासोव की कविता का एक अँश जिसका अभिप्राय है "जो ईमानदार और वीर लोग लड़ाई में काम आये हैं, वे अब हमेशा के लिये शान्त हो चुके हैं" — सम्पादक।

थे कि वे न केवल अपने ही देश में अपितु पास पड़ोस के देशों में भी विद्रोहों को दबाने में समर्थ रहते थे।

देश की दशा यह थी कि यहां विचार-स्वातंत्र्य की थोड़ी सी अभिव्यक्ति भी बुरी तरह से कुचल दी जाती थी। विद्यार्थियों पर तो शासकों की सदा ही शनि-दृष्टि रहती थी। ये युवक केवल अपने घनिष्ठ मित्रों के बीच ही अपने विचारों को स्वतंत्रता के साथ व्यक्त कर सकते थे और उन्हीं के मध्य रिलेयेव तथा अन्य कवियों के उन गीतों को गा सकते थे जो निषिद्ध घोषित कर दिये गये थे। वर्षों बाद, नगर से बहुत दूर खेतों और जंगलों के बीच, इल्या निकोलायेविच इन गीतों को अपने बच्चों को सुनाया करते।

निकोलस प्रथम की मृत्यु के पश्चात् जब अलेक्सान्द्र द्वितीय उत्तराधिकारी हुआ तो रूस में सुधारों के युग का प्रादुर्भाव हुआ। इस समय जनता को कितना संतोष हुआ होगा इसका अंदाज़ा केवल वही लोग कर सकते हैं जिन्होंने उस संकटपूर्ण ज़माने को अपनी आंखों से देखा था। पहला सुधार था भूदासत्व की प्रथा को समाप्त करना। इस सुधार के कई कारण थे—श्रमिकों के लिये पूँजीवादी उद्योगों को समुन्नत बनाने की आवश्यकता तथा किसानों में असन्तोष और विद्रोह की भावनाओं की उत्तरोत्तर वृद्धि। इस संबंध में स्वयं अलेक्सान्द्र द्वितीय का कथन था कि "इसके पूर्व कि जनता स्वयं नीचे से अपनी स्वतंत्रता प्राप्त करे हमें चाहिये कि हम उसे ऊपर से और शीघ्रतापूर्वक स्वतंत्रता दे दें"। किसानों की दशाओं में सुधार होना उन्नति की दिशा में एक ऐसा क़दम था जिससे सारे देश में प्रसन्नता छा गयी। इस प्रसन्नता का कुछ आभास हमें नेक्रासोव के इन शब्दों में होता है—

यद्यपि हमने तोड़ दिये सामन्तिक-बन्धन,
किन्तु, दूसरी ज़ंजीरें भी
हमें जकड़ने के प्रयास में
वैसे ही उत्पात करेंगी,
किन्तु, न अब श्रम अधिक लगेगा,
इन्हें तोड़ना कठिन न होगा।
मेरे गीतो! मुक्त-हृदय से आज़ादी का स्वागत कर लो!*

किन्तु यह सब कितना बड़ा मायाजाल था इसका शीघ्र ही भण्डाफोड़ हो गया। इस संबंध में लोगों को चेतावनी देने वाला पहला दूरदर्शी व्यक्ति चेरनिशेव्स्की था जिसे अपने इस कार्य के लिये आजीवन कारावास का दंड मिला और वह साइबेरिया में निष्कासित कर दिया गया।

इस समय तक युवकों के क्रांतिकारी संघटन पनपने लगे थे। शांत स्वभाव वालों और शिक्षा क्षेत्र में काम करने वाले व्यक्तियों को निकोलस के निरंकुश एवं दमनपूर्ण शासन के बाद बड़े बड़े अवसर हाथ लगे थे और उन्होंने उन्हें न जाने दिया। नये-नये न्यायालयों, समाचार-पत्रों की अधिकाधिक स्वतंत्रता तथा अन्तत: जन-शिक्षा ने उस काल के विचारवान् लोगों को अपनी ओर आकृष्ट किया। इस धारणा ने भी बहुतों पर प्रभाव डाला कि जो लोग पहले दास थे अब उनमें बुद्धि का प्रकाश होगा और वे समाज के एक उपयोगी अंग बनेंगे।

ऐसे लोगों में इल्या निकोलायेविच भी थे। उन्होंने सिम्बिर्स्क गुबर्निया में प्राथमिक स्कूलों के इन्स्पेक्टर की एक नव-निर्मित जगह पर कार्य करना सहर्ष स्वीकार किया। इसके पूर्व वे एक पाठशाला में शिक्षक थे तथा विद्यार्थियों की शरारतों को बड़े प्यार-दुलार के साथ बरदाश्त करते और

---

* कविता का शीर्षक है "आज़ादी"—सम्पादक।

अपने विद्यार्थियों में बड़े लोकप्रिय थे। वे एक सदाचारी व्यक्ति थे तथा अपने विद्यार्थियों को बड़े संयम के साथ पढ़ाया करते और गरीब विद्यार्थियों को, बिना किसी प्रकार का शुल्क लिये हुए, परीक्षा के लिए तैयार किया करते। वे एक जन्मजात अध्यापक थे और अपने काम के शौकीन। वे यही कामना करते रहे कि उन्हें कार्य करने के लिये और भी अधिक व्यापक क्षेत्र मिले। वे सदा पाठशालाओं के समृद्धिशाली विद्यार्थियों के बजाय गरीबों के बच्चों को, उन बेचारों के बच्चों को, जो कल तक दास थे, पढ़ाने लिखाने के अवसर ढूँढा करते क्योंकि इन विद्यार्थियों के लिये शिक्षा का मार्ग बड़ा कंटकाकीर्ण था।

और इसमें संदेह नहीं कि उन्हें अपना कार्य कर सकने के लिये एक व्यापक क्षेत्र मिला। उस काल में सिम्बिर्स्क गुबर्निया में जो थोड़े से स्कूल थे उनकी दशा खराब थी। विद्यार्थी गंदे छोटे कमरों में भर दिये जाते थे और यहीं उन्हें पढ़ना पड़ता था। अध्यापक स्वयं कम प्रशिक्षित होते थे और विद्यार्थियों को पढ़ाने के लिये अपने घूंसों पर अधिक विश्वास करते थे। ऐसी दशा में सब कुछ आरम्भ से ही शुरू करने की आवश्यकता थी। किसानों को यह समझाने की ज़रूरत थी कि वे नये-नये स्कूल बनाएं। इन स्कूलों के लिए धन जुटाने के साधनों का भी पता चलाना था तथा नये अध्यापकों को शिक्षण देने के लिए प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों को तैयार करना भी ज़रूरी था और इन सबके लिए इल्या निकोलायेविच को समय निकालना पड़ता क्योंकि सम्पूर्ण गुबर्निया में एक अकेले वही इन्स्पेक्टर थे।

उनका कार्य तत्कालीन सड़कों की दुर्व्यवस्था के कारण और भी जटिल हो गया था। ये सड़कें खराब हालत में थीं। वर्षा-काल में इन पर होकर चलना असंभव हो जाता, बसन्त-ऋतु में बर्फ़ पिघलने के कारण आने जाने वालों को असुविधा होती और जाड़े में तो फिसलन

के कारण लोग गिर गिर तक पड़ते । प्राय: उन्हें लगातार हफ़्तों और कभी-कभी महीनों घर से बाहर रहना पड़ता तथा सड़क के किनारे बसी हुई गन्दी सराय में खाना और सोना पड़ता। वे हृष्ट-पुष्ट भी न थे। किन्तु कार्य के प्रति अदम्य उत्साह, उनकी अभूतपूर्व एकाग्रचित्तता तथा उनकी दृढ़ता ने इन सभी संकटों पर विजय पायी और उन १७ वर्षों में, जब तक वे अपने पद पर रहे, गुबर्निया में स्कूलों की संख्या बढ़कर ४५० हो गयी। अध्यापकों के लिये उन्होंने जिन पाठ्यक्रमों की व्यवस्था की थी, उसने एक नये प्रकार के अध्यापकों को जन्म दिया जो "उल्यानोव अध्यापक" के नाम से जाने जाते थे।

उनका कार्य बढ़ता ही गया। धीरे धीरे उनकी सहायता के लिये सहायक इन्स्पेक्टरों की व्यवस्था की गई और अन्ततः इल्या निकोलायेविच डाइरेक्टर बना दिये गये। अब उनका कार्य अधिकतर प्रशासन संबंधी ही रह गया था परन्तु तब भी वे वैसे ही मेहनती, सरल स्वभाव वाले तथा सदाचारी बने रहे। अध्यापक बिना किसी हिचक के उनके पास उनसे सलाह-मशविरा करने आते और जब कभी कोई अध्यापक बीमार पड़ जाता, तो इल्या निकोलायेविच उसका अध्यापन कार्य स्वयं अपने ऊपर ले लेते। अपनी आय से वे अपने बड़े परिवार का भरण-पोषण करते तथा अपने बच्चों को पढ़ाते। अपनी आय का बहुत थोड़ा भाग ही वे अपने ऊपर खर्च करते। उन्हें समाज के आकर्षक जीवन तथा इन्द्रिय-सुलभ उपभोगों में कोई रुचि नहीं थी। अपने कामों के बाद मनोरंजन के रूप में वे ऐसे लोगों से बातचीत करना अधिक पसन्द करते जिन्हें उनके कामों में दिलचस्पी होती थी। उन्हें अपने परिवार के बीच आराम करना ज़्यादा पसन्द था और वे अपने बाल बच्चों के पालन-पोषण का विशेष ध्यान रखते थे। उन्हें शतरंज का बड़ा शौक था। अपने तथा दूसरों के साथ काम के मामले में कोई रू-रिआयत न करने वाला यह व्यक्ति जब कभी अपने परिवार के

बीच होता तो उसकी मुखमुद्रा प्रसन्न और विनोदपूर्ण होती और वह अपने मज़ाकों, परियों और अप्सराओं की कहानियों तथा हास्यपूर्ण गाथाओं से सारे घर को भर देता। जब वे अपने बच्चों से बातचीत करते या उनके साथ (शतरंज, क्रोकेट इत्यादि) खेलते तो लगता कि वे उनके एक उन्हीं जैसे साथी हैं। उन्हें बच्चों के साथ खेलने में उतना ही आनन्द आता था जितना स्वयं बच्चों को आता था।

अपने श्रेष्ठतर कार्यों में अथक रूप से निरंतर लगे रहने के कारण उनकी शक्ति का ह्रास हो चला था। अन्ततः उन्होंने १२ जनवरी १८८६ को, ५५ वें वर्ष में, मस्तिष्क के अवयवों में रुधिरस्राव हो जाने के कारण, इस संसार से विदा ली।

व्लादीमिर इल्यीच की माता मारिया अलेक्सान्द्रोवना एक डाक्टर की सुपुत्री थीं। उनके पिता उच्च विचारों वाले एक महान् व्यक्ति थे। मारिया अलेक्सान्द्रोवना ने अपने बचपन का अधिकांश तथा अपनी यौवनावस्था का प्रारंभिक काल अपने गाँव में ही व्यतीत किया। उनके पिता की आय थोड़ी थी तथा भरण-पोषण के लिये परिवार बड़ा। फलतः छोटी उम्र में मारिया के लालन-पालन का भार उनकी चाची के सिर पड़ा जिनका स्वभाव कठोर था। ऐसी दशा में मारिया को आरम्भ से ही कड़ी मेहनत करने तथा मितव्ययी बनने की आदत सी पड़ गयी थी। उनके पिता ने अपनी पुत्रियों का पालन-पोषण कुछ इस प्रकार किया कि उनमें स्वभावतः वीर गुणों का विकास हुआ। छोटी आस्तीनों और खुले गले के सूती वस्त्र, केवल दो दो जोड़ी, यही उनकी जाड़े तथा गर्मी की पोशाकें थीं। उनका भोजन सीधा सादा था। बड़ी हो जाने तक भी न तो उन्होंने चाय का ही स्वाद लिया था न काफ़ी का ही। उनके पिता इन दोनों चीज़ों को स्वास्थ्य के लिये हानिकर समझते थे। ऐसे वातावरण में पलकर जब मारिया अलेक्सान्द्रोवना बड़ी हुई उस समय वह दबंग तथा हृष्ट-पुष्ट थी।

वे दृढ़निश्चयी तथा दृढ़-प्रकृति की वीर महिला थीं। सदैव प्रसन्न रहतीं और दूसरों के साथ सदा मित्र की भांति व्यवहार करतीं। वे प्रतिभासम्पन्न थीं तथा उन्होंने अनेकानेक विदेशी भाषाएं सीखी थीं। संगीत का उन्हें विशेष शौक़ था। पढ़ने में उन्हें विचित्र आनन्द आता और उन्होंने पढ़ा भी बहुत कुछ था। वे सदैव यही चाहती रहीं कि उनके अध्ययन का क्रम बराबर बना रहे, और जीवन भर उन्हें इस बात का दुख रहा कि साधनों के अभाव ने उन्हें अपनी आकांक्षा की पूर्ति के अवसर ही न दिये।

उस काल की महिला समाज की पारस्परिक बातचीत के विषय होते थे—वस्त्रादि प्रसाधन वस्तुएं, गप्पबाज़ी अथवा मिथ्यापवाद। परन्तु मारिया अलेक्सान्द्रोवना को इनमें से किसी भी बात से कोई रुचि न थी। अतएव उनका कार्यक्षेत्र अपने परिवार तक ही सीमित रह गया था—वे पूरी लगन और निष्ठा के साथ अपने बच्चों को पढ़ातीं और जब तथा जहाँ उनमें किसी प्रकार की कमी का अनुभव करतीं बड़े संयम और धैर्य के साथ उसे दूर करने की चेष्टा करतीं। बच्चों से चिल्लाकर तो वे कभी बोलीं ही नहीं। शायद ही कभी उन्होंने किसी बच्चे को सज़ा दी हो। बच्चे उनसे प्रेम करते, उनका कहना मानते। जब कभी वे थक जातीं तो संगीत की शरण लेतीं। संगीत से उन्हें प्यार था, और वे बड़े मनोयोग के साथ वाद्यों को बजाया करती थीं। बच्चे मस्त होकर झूमते और सो जाते। आगे चलकर इन्हीं बच्चों ने माता के संकेतों और पियानो की धुन पर काम करना सीख लिया।

उनका पारिवारिक जीवन सुखी था। बच्चों के भरण-पोषण के प्रश्न को लेकर न तो उनकी उनके पति से कहा-सुनी ही होती थी और न इस प्रश्न पर दोनों के बीच कोई मतभेद ही उठता था। यदि कभी किसी प्रकार की कोई शंका उनके बीच पैदा भी हो जाती थी तो वे एकान्त में बातचीत द्वारा उसका समाधान ढूंढ़ लेते थे। इस सब

का परिणाम यह होता कि बच्चे भी किसी की भी बात का विरोध करने का साहस न कर पाते।

जब बच्चे देखते कि उनके माता-पिता उनसे कितना अधिक, कितना निश्चल, प्रेम करते हैं और हर बात में उनका कितना ध्यान रखते हैं, तो वे भी यही सब बातें सीखते। हम सब अपने परिवार में अच्छे दोस्तों की भांति थे। हम सब साधारण तरीके पर रहते। हम सब को केवल पिता की आय का ही सहारा था। हमारी माता मितव्ययी थीं। वे आय के अनुसार ही अपने व्ययों का प्रबंध करती थीं। फिर भी बच्चों को उनके लिये आवश्यक वस्तुओं का अभाव न होने पाता। उनके माता-पिता अपने बच्चों की सांस्कृतिक आवश्यकताओं की भरसक पूर्ति करते रहते।

अतएव मानसिक-विकास और चारित्रिक सुधार के लिए स्वयं परिवार का वातावरण ही बहुत काफ़ी था।

व्लादीमिर इल्यीच और उनके भाइयों का बचपन सुखी तथा निर्विघ्न था।

व्लादीमिर इल्यीच का बचपन तथा उनकी प्रौढ़ावस्था

व्लादीमिर इल्यीच का जन्म १० (२२) अप्रैल, सन् १८७० ई० को सिम्बिर्स्क में हुआ था। क्रमानुसार परिवार में वह तीसरा बच्चा था। सदा फुर्तीला, हँसमुख और प्रसन्न रहनेवाला यह बालक कोलाहलपूर्ण खेलों तथा हर्षोल्लासयुक्त क्रीड़ाओं का बड़ा प्रेमी था। वह अपने खिलौनों से खेलता कम उन्हें तोड़ता अधिक था। पांच वर्ष की अवस्था में उसने पढ़ना सीख लिया था। बाद में सिम्बिर्स्क पैरिश स्कूल के

एक अध्यापक ने उसे पाठशाला के लिये शिक्षा दी और वह १८७९ की शरद ऋतु में साढ़े नौ वर्ष की अवस्था में, उसकी प्रथम कक्षा में भर्ती हुआ।

उसे स्कूल का काम सरल लगता। जब तक वह स्कूल में रहा सदा अपनी कक्षाओं में प्रथम आता रहा। फलतः हर साल उसे प्रथम पुरस्कार मिलता। इस पुरस्कार में उसे एक प्रमाणपत्र दिया जाता और एक पुस्तक जिस पर स्वर्णाक्षरों में ये शब्द अंकित होते थे—"सदाचरण और उन्नति के निमित्त"।

उसकी इन सफलताओं का कारण केवल उसकी बुद्धिमत्ता ही न थी अपितु उसके दृढ़निश्चय और लगन ने भी उनमें पूरा योग दिया था। उसमें इन गुणों के समावेश के कारण थे उसके पिता, जिन्होंने उसके बाल-काल से ही उसके, उसके बड़े भाई, तथा उसकी बहन के कामों की व्यक्तिगत रूप से देख-रेख आरम्भ कर दी थी। तब वे केवल छोटी कक्षाओं के ही विद्यार्थी थे। बालक वोलोद्या पर उसके माता-पिता के आदर्शों का प्रभाव पड़ा था क्योंकि वे सदैव व्यस्त रहते थे और कुछ न कुछ किया ही करते थे। सबसे अधिक प्रभाव उस पर उसके बड़े भाई अलेक्सान्द्र का पड़ा था जिनका पारिवारिक नाम साशा था।

साशा एक अत्यधिक गम्भीर तथा विचारशील बालक था। कर्तव्य की भावना तो उसमें कूट कूट कर भरी थी। वह दृढ़ संकल्पी, न्यायप्रिय, भावुक तथा सहृदय था। छोटे बच्चों के तो गले का हार ही था।

वोलोद्या अपने भाई का इतना अधिक अनुकरण करता कि कभी कभी तो हम सब मिलकर उसे तंग कर डालते। उससे जो भी प्रश्न किया जाता उत्तर में वह यही कहता, "वही जो साशा ने किया है"। बचपन में बालकों पर सामान्यतया आदर्शों का बड़ा प्रभाव पड़ता है परन्तु जो प्रभाव उन पर अपने बड़े भाई के आदर्शों का पड़ता

है वह बड़े-बूढ़ों के आदर्शों के प्रभाव से अधिक चिरस्थायी और लाभकर होता है। इस दृष्टि से वोलोद्या भाग्यशाली था।

वह एक ऐसे वातावरण में पला था जिसमें उसने कार्य के प्रति अपनी आत्मा का अनुसरण करना सीख लिया था। यही कारण था कि शरारती और उत्साही स्वभाव होते हुए भी अपने पाठों को वह बड़े ध्यान से पढ़ता। उसके अध्यापकों का कहना था कि एक तो उसकी इस प्रकृति और दूसरे उसकी स्मरणशक्ति के प्रखर होने के कारण उसे जो कुछ पढ़ाया जाता वह उसे तुरन्त याद हो जाता और घर जाकर उसे दुहराने की ज़रूरत न पड़ती। छोटी कक्षाओं में वह घर के लिये दिये गये कामों को जल्दी पूरा कर लेता और फिर हर तरह की शरारतें करता, शोर मचाता और हम सबके, जो उम्र में उससे बड़े थे तथा घर के लिये दिया गया काम उसी कमरे में किया करते थे, कार्यों में विघ्न पहुंचाता। कभी कभी उसके पिता उसे अपने अध्ययन-कक्ष में ले जाते, उससे उसके पाठों के संबंध में प्रश्न करते तथा उससे लेटिन के वे शब्द पूछते जो उसकी कापी में लिखे होते थे। परन्तु वोलोद्या प्राय: इन सभी शब्दों को जानता था। वह पढ़ता भी अधिक था। उसके पिता उसके लिये बालोपयोगी नई नई पुस्तकें लाते थे जिन्हें वह बड़े ध्यान से पढ़ता था। हम लोग पुस्तकालय से भी पुस्तकें ले लिया करते थे।

वोलोद्या अपनी बहन ओल्या (जन्म — ४ नवम्बर १८७१) के साथ नियमित रूप से खेला करता था। वह एक प्रफुल्ल, चतुर तथा फुर्तीली लड़की थी और चार वर्ष की आयु में ही अपने भाई के साथ साथ पढ़ना सीख गई थी और भाई की ही तरह बड़ी लगन और मनोयोग के साथ पढ़ा भी करती थी। ओल्या, जो कुछ बातों में अपने भाई साशा के ही समान थी, अत्यधिक परिश्रमी लड़की थी। मुझे याद है, जब वोलोद्या पाठशाला की एक उच्च कक्षा का

विद्यार्थी था तब, उसने बगलवाले कमरे में ओल्या के अनवरत पियानो वादन के अध्ययन की ओर संकेत करते हुए एक बार मुझसे कहा था "देखो अध्यवसाय इसे कहते हैं"। और वह स्वयं अपने में यह गुण पैदा करने की दिशा में निरंतर परिश्रम करता रहा और बाद के वर्षों में जब हमने उसके उद्योगों और अनवरत परिश्रम को देखा, तो हम सब आश्चर्यचकित रह गये। उसके परिश्रम और उसकी प्रतिभा दोनों ने मिलकर उसे ऊंचे से ऊंचे दर्जे तक पहुंचा दिया।

व्लादीमिर इल्यीच कठिन पाठों, सवालों, निबन्धों तथा ग्रीक और लेटिन अनुवादों के संबंध में अपने सहपाठियों की कठिनाइयों को दूर करने के लिये सदा तैयार रहता। पाठशाला के अन्तिम दो वर्षों में उसने एक चुवाश राष्ट्रीय को, जो एक अध्यापक था, मैट्रीकुलेशन परीक्षा के लिये तैयार कराया ताकि वह विश्वविद्यालय में प्रवेश पा सके। उसने यह कार्य बिना किसी शुल्क के किया था क्योंकि उसका यह विद्यार्थी उसे शुल्क देने में आर्थिक दृष्टि से समर्थ न था। यद्यपि इस विद्यार्थी को भाषाएं पढ़ने की ओर कोई रुचि न थी फिर भी व्लादीमिर इल्यीच की सहायता से उसने परीक्षा पास कर ली और वह विश्वविद्यालय में भर्ती हो गया जहाँ उसे अपना प्रिय विषय—गणितशास्त्र—पढ़ने का अवसर मिल गया।

यद्यापि व्लादीमिर इल्यीच मुझ से उम्र में पांच साल छोटा था और स्कूल में ही पढ़ रहा था, जबकि मैं महिलाओं के उच्चतर पाठ्यक्रमों के अन्तिम वर्ष के पूर्व वर्ष की छात्रा थी, फिर भी उसने मुझे पढ़ाया और कुछ काल तक मेरे अध्ययन में मेरी सहायता की। १८८६ की बसन्त ऋतु में मुझे कुछ परीक्षाएं देनी थीं जिनमें से एक परीक्षा लेटिन की भी थी जिसके लिये मुझे पूरे तीन वर्षों का पाठ्यक्रम तैयार करना था। उस समय इतिहास तथा भाषा की फैकल्टी में

लेटिन एक अनिवार्य विषय था। उन वर्षों में, जब शास्त्रीय शिक्षा का बड़ा ज़ोर था, लेटिन की पढ़ाई स्फूर्तिहीन तथा भोंड़े तरीके पर हुआ करती थी और यही कारण था कि अपने अन्य सहपाठियों की भांति मैंने भी लेटिन की उपेक्षा की थी। पाठशाला की रटन्त के बाद युवक विद्यार्थियों की यह स्वाभाविक अभिलाषा होती थी कि पढ़ने लिखने को उन्हें स्फूर्तिदायक तथा सामाजिक उपयोगिता के विषय मिलें। मैं भी लेटिन से बचना चाहती थी और इसी कारण मैंने एक गैरमामूली विद्यार्थी के रूप में अध्ययन जारी रखने की बात सोची। परन्तु जब यह योजना सफल न हो सकी तो मुझे लेटिन पढ़ने के लिये बाध्य होना पड़ा। मैंने जाड़े की छुट्टियों में लेटिन दुहराने की योजना बनाई, परन्तु वह फलीभूत न हो सकी। उसके बाद मेरे पिता की मृत्यु हो गई और तब पढ़ाई-लिखाई में मेरा मन न लगा तथा मेरी लेटिन जहाँ की तहाँ धरी रह गई।

उस समय वोलोद्या अन्तिम वर्ष से पूर्व की कक्षा का विद्यार्थी था और अपने कामों में व्यस्त रहने के साथ-साथ उसे एक चुवाश अध्यापक, ओखोतनिकोव, को भी पढ़ाना होता था। फिर भी उसने मेरी मदद करने का प्रस्ताव किया। इतना ही नहीं उस बालक ने, जो अभी १६ वर्ष का भी पूरा न हुआ था, बड़ी तत्परता तथा नि:स्वार्थ भाव से इस नये भार को ढोना स्वीकार कर लिया। प्राय: देखा गया है कि उस उम्र के व्यक्ति प्रथम प्रेरणावश आरम्भ में कोई भी काम उठा लेते हैं परन्तु जैसे ही उस काम में कोई बाधा या कठिनाई आ उपस्थित होती है वे उसे तुरन्त त्याग देते हैं। परन्तु वोलोद्या ने इस नये भार को केवल उठाया ही नहीं अपितु बड़े धैर्यपूर्वक अपने कार्य में प्रयत्नशील भी रहा और यदि मार्च में मैं पीटर्सबर्ग न चली गयी होती, तो उसका कार्य अभी और अधिक समय तक चलता रहता। उसने पाठों को इतनी निष्ठा के साथ पढ़ाना आरम्भ

किया था और उन्हें इतना रोचक तथा मज़ेदार बना दिया था कि शीघ्र ही मैं भी इस "गन्दी लेटिन" की भक्त बन गयी।

अभी बहुत कुछ करना था। मुझे जूलियस सीज़र और सिसरो का "दे सेनेक्तूत" (वृद्धावस्था विषयक) पढ़ना तथा समझना था। साथ ही पाठों में जब लेटिन भाषा की जटिल व्याकरण के उदाहरण आ जाते थे तो मुझे उनके नियमों को भी जानना समझना पड़ता था।

स्वभावत: यह सोचकर कभी-कभी मैं आकुल हो उठती थी कि मैं अपनी कठिनाइयों को स्वयं दूर करने में समर्थ नहीं हूँ और मुझे उनके लिये छोटे भाई की मदद लेनी पड़ती है जो यह जानता है कि बिना किसी की सहायता के अपनी कठिनाइयों को कैसे दूर करना चाहिये। निस्संदेह मेरे ऐसा समझने का कारण मेरा मिथ्या-अहंकार भी था। वास्तव में मैं एक ऐसे भाई के निर्देशन में अध्ययन करना पसन्द नहीं करती थी जो स्वयं स्कूल में पढ़ रहा हो। परन्तु हमारी पढ़ाई-लिखाई कुछ ऐसे रोचक ढंग पर चलती रही कि मेरी आकुलता की अनुभूति ही समाप्त हो गई।

वोलोद्या सदा लेटिन भाषा की शैली की विशेषताओं और मनोहरता को सराहा करता, परन्तु इस भाषा के संबंध में मेरा अपना ज्ञान कुछ इतना कम था कि मैं उनकी कल्पना भी न कर सकती थी। मैंने तो अपने अध्ययन को अधिकतर व्याकरण के विभिन्न रूपों तथा पाठों में आई हुई कहावतों आदि तक ही सीमित कर दिया था। हां कभी-कभी याद रखने के लिये हम उन रूपों का प्रयोग कर लिया करते थे, उदाहरणार्थ

Gutta cavat lapidem
Non vi sed saepe cadendo;
Sic homo sit doctus
Non vi sed multo studendo.

पानी की वह बूँद,
जो कि छेद देती है पत्थर का भी सीना—
उसकी सत्ता का रहस्य है धैर्य, न ताक़त!
ऐसे ही बस,
यह मनुष्य भी बन सकता है पंडित-ज्ञानी,
नहीं शक्ति को,
बल्कि धैर्य को, संयम को आधार बनाकर!

मुझे याद है कि एक बार मैंने वोलोद्या से अपनी यह शंका प्रकट की थी कि आठ वर्षीय कोर्स को इतनी थोड़ी सी अवधि में कैसे पूरा किया जा सकता है और उसने मुझे विश्वास दिलाया था कि "स्कूलों में जैसे भद्दे ढंग से पढ़ाई-लिखाई चलती है उसमें तो लेटिन के कोर्स में आठ वर्ष लगेंगे ही परन्तु एक विचारशील अध्यवसायी के लिये वह केवल दो वर्षों की ही बात है"। अपने इन शब्दों को सत्य प्रमाणित कर दिखाने के लिये उसने कहा था कि ओखोतनिकोव के साथ मैं ऐसा तजुर्बा करूँगा और इस बात के होते हुए भी कि ओखोतनिकोव भाषा के मामले में कूढ़मग्ज़ था, आखिर में वोलोद्या ने अपनी बात को सत्य सिद्ध कर दिखाया।

जब हम लोग एक साथ बैठकर पढ़ते-लिखते उस समय वह मुझे कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करनेवाला वह विद्यार्थी न लगता जिसने केवल अपने पाठों को ही परिश्रम से पढ़ा हो, परन्तु वह तो मुझे एक अल्पायु भाषाविद् प्रतीत होता था जिसकी मानसिक दृष्टि भाषा के सौंदर्यपूर्ण और विशिष्ट स्थलों में प्रवेश करने से कभी न रुकती थी। मुझे भाषाओं से दिलचस्पी थी अतएव मैंने उन पाठों के परिणामस्वरूप, जिनके दौरान में प्रायः वोलोद्या की मधुर हँसी गूँज जाया करती थी, इस क्षेत्र में काफ़ी प्रगति कर ली। बसन्त ऋतु में मैंने

तीन साल की पढ़ाई के बाद, अपनी परीक्षा पास की। कुछ वर्षों के बाद जब मुझे इतालवी भाषा सीखने की इच्छा हुई तो लेटिन भाषा का मूलभूत ज्ञान प्राप्त कर लेने के कारण मुझे बड़ी आसानी हो गई। इतालवी भाषा ही मेरी आय का साधन और मेरी प्रसन्नता का कारण बनी।

१८८६ में, जब वोलोद्या १६ का भी पूरा न हुआ था उसके पिता इल्या निकोलायेविच का देहान्त हो गया और इसके एक ही वर्ष बाद परिवार में एक और दुखद घटना हो गई—वोलोद्या के बड़े भाई अलेक्सान्द्र को, ज़ार अलेक्सान्द्र तृतीय की हत्या करने के प्रयत्न में भाग लेने के कारण, गिरफ़्तार कर लिया गया। उसपर मुक़दमा चला और उसे फाँसी की सज़ा हुई। ८ मई १८८७ को उसे फाँसी दे दी गई। इस घटना ने व्लादीमिर इल्यीच पर बड़ा ज़बरदस्त आघात किया। इसका परिणाम यह हुआ कि उसमें मोर्चा लेने की नई ताकत आई और वे बड़ी गम्भीरतापूर्वक भावी क्रांति के विषय में सोचने लगे।

वास्तव में, स्वयं अलेक्सान्द्र एक ऐसी स्थिति में पहुंच गया था कि वह यह निर्णय न कर सका कि "नरोदनया वोल्या"* और मार्क्सवाद दोनों में किसका अनुसरण करना चाहिये। उसने मार्क्स की "पूंजी" पढ़ा था और मार्क्स द्वारा उन्नति का जो मार्ग निर्दिष्ट किया गया था उसे स्वीकार भी किया था। पार्टी के कार्यक्रम का मसौदा** इस बात का ज्वलंत उदाहरण है। वह श्रमिकों के मध्य

---

*"नरोदनया वोल्या" एक गुप्त नरोदनिक संस्था है जो निरंकुशता के विरुद्ध मोर्चा लेने के लिये १८७९ में संघटित की गयी थी।

** देखिये "अलेक्सान्द्र उल्यानोव और पहली मार्च का मुकदमापेशी" (सोवियत संघ की कम्यूनिस्ट पार्टी के इतिहास सम्बन्धी कागज़पत्रों को संग्रह करने, उनका अध्ययन और उनका सम्पादन करने के निमित्त स्थापित एक कमीशन—अनुवादक)

अपने मत का प्रचार करता था परन्तु उस समय सामाजिक-जनवादी कार्यों के लिये भूमि तैयार न थी। तत्कालीन रूस के कुछ औद्योगिक श्रमिक असंगठित और पिछड़े हुए थे। बुद्धिजीवियों को उन तक पहुंचने में कठिनाई होती थी। इसके अतिरिक्त ज़ारों का भी दमन ज़ोरों पर था और जनता के साथ किसी भी प्रकार का सम्पर्क स्थापित करने की सजा या तो कारावास थी या साइबेरिया में निष्कासन। यदि विद्यार्थी भी किसी ऐसे मंडल की स्थापना करते जिसका उद्देश्य उनके कार्यों को केवल उन्हीं तक सीमित कर देना होता था—जैसे संयुक्त पढ़ाई-लिखाई, वाद-विवाद अथवा सामाजिक मेल-जोल—तो उसे समाप्त कर दिया जाता और विद्यार्थियों को उनके घर वापस भेज दिया जाता। ऐसे वातावरण में केवल वे ही लोग तटस्थ रह सकते थे जो या तो शांतिपूर्ण जीवन व्यतीत करने के इच्छुक होते थे अथवा जिनका एकमात्र लक्ष्य जीविकोपार्जन का कोई साधन ढूंढ़ना होता था।

उस काल में समस्त सम्मान्य एवं निष्ठावान् व्यक्तियों की केवल एक ही आकांक्षा रहती थी—निरंकुश राज्य शासन के विरुद्ध मोर्चा खड़ा करना और इस शासनतंत्र ने अपने चारों ओर निरंकुशता की जो दीवारें खड़ी कर रखी थीं, जिनके भीतर प्राणिमात्र का दम घुट रहा था, उन्हें धराशायी करना। वे इस ओर अपना कुछ न कुछ अंशदान करने के इच्छुक थे। इस कार्य में जो अधिक हिम्मत वाले थे उनके लिये सदा मृत्यु का भय बना रहता परन्तु उससे वे लोग विचलित न होते। ऐसे ही वीरों में से अलेक्सान्द्र इल्यीच भी एक था। लोगों का कहना था कि अलेक्सान्द्र एक न एक दिन प्रोफ़ेसर होगा परन्तु देश-भक्ति के इस दीवाने को न केवल अपने अध्ययन को ही तिलांजलि देनी पड़ी अपितु जब उसने देखा कि वह देश का दलन करने वाली निरंकुशता को सहन करने में समर्थ नहीं है तो उसने

देश की बलिवेदी पर अपने को समर्पित कर दिया और प्राणों का तनिक भी मोह न किया। उसने बम बनाने के खतरनाक काम को अपने हाथ में लिया और यह बात उसने खुले न्यायालय में स्वीकार की। वह नहीं चाहता था कि उसके साथ उसके अन्य साथी भी फंसें।

अलेक्सान्द्र उल्यानोव को एक नायक की मृत्यु नसीब हुई थी और उसकी क्रांतिकारी हुतात्मा के तेज ने उसके अनुज व्लादीमिर के लिये पथ प्रशस्त किया था।

उस समय वोलोद्या पाठशाला की अन्तिम कक्षा में था।

अपने भाई की फांसी का समाचार उसके लिये एक हृदयविदारक घटना थी, परन्तु उसने इसे बड़े धैर्य के साथ बरदाश्त किया। उसी वर्ष उसने तथा उसकी बहन ओल्या ने स्कूल छोड़ा। अपनी पढ़ाई-लिखाई में सर्वोत्तम रहने के कारण दोनों को ही स्वर्ण-पदक प्राप्त हुए थे।

इस परिवार पर विपत्ति के जो बादल मंडराये हुए थे उनकी लपेट में परिवार के अन्य सदस्यों के आने की भी आशंका हो गई। शासनाधिकारी वोलोद्या को बड़ी सशंकित दृष्टि से देखते और यह भय था कि उसे किसी भी विश्वविद्यालय में प्रवेश न मिलेगा।

सिम्बिर्स्क पाठशाला के तत्कालीन डाइरेक्टर फ़० केरेन्स्की व्लादीमिर इल्यीच को एक महान् व्यक्ति मानते थे तथा उनके पिता की, जिनका केवल एक ही वर्ष पूर्व देहान्त हुआ था, बड़ी क़द्र करते थे। सिम्बिर्स्क में इल्या निकोलायेविच एक प्रतिष्ठित तथा सम्मानित व्यक्ति समझे जाते थे और लोगों की दृष्टि में उनके परिवार का बड़ा मान था। डाइरेक्टर महोदय उस प्रतिभावान् विद्यार्थी की सब प्रकार से सहायता करना चाहते थे और उनकी अभिलाषा थी कि उसके रास्ते में कोई रोड़े न रहें। उसे 'अनुकरणीय सदाचार' का एक प्रमाणपत्र दिया गया था जिस पर डाइरेक्टर तथा अन्य अध्यापकों के हस्ताक्षर थे। इस प्रमाणपत्र को स्वयं केरेन्स्की ने कज़ान विश्वविद्यालय

का [illegible] ताकि व्लादीमिर इल्यीच को वहाँ प्रवेश मिल सके। प्रमाणपत्र में इस बात का भी उल्लेख था कि पाठशाला को व्लादीमिर इल्यीच पर गर्व है और इसका कारण यहीं नहीं कि उसकी योग्यताएं उत्कृष्ट रही हैं अपितु यह भी है कि उसमें एकाग्रचित्तता तथा सदाचारिता कूट कूट कर भरी हुई है क्योंकि अपने परिवार में वह विवेकपूर्ण अनुशासन के बीच पला था। प्रमाणपत्र का यह उल्लेख केवल सत्य का ही दिग्दर्शन था।

केरेन्स्की ने इस बात पर ज़ोर दिया था कि व्लादीमिर इल्यीच एक ऐसे परिवार में बड़ा हुआ है जहाँ बच्चों के पालन-पोषण में धर्म का विशेष हाथ रहता है। उन्होंने यह भी लिखा था कि व्लादीमिर इल्यीच "अत्यधिक एकांतप्रिय" था और "सबसे अलग रहना"* ही पसन्द करता था तथा "उल्यानोव ने अपने कार्यों और व्यवहार से ऐसा एक भी अवसर न दिया कि उसके विरुद्ध दोषारोप किये जाते"। केरेन्स्की ने अपने प्रमाणपत्र में यह बात कहकर सत्य को छिपाने का प्रयत्न किया था क्योंकि व्लादीमिर इल्यीच तो सदा से ही शरारती और तेज़ स्वभाव का था। वह प्राय: लोगों का मज़ाक उड़ाता और कभी-कभी तो उसके मज़ाक के शिकार स्वयं उसके साथी और अध्यापक तक हुआ करते थे। परन्तु केरेन्स्की ने व्लादीमिर इल्यीच के लिये जो कुछ किया उसमें उनका कुछ निहित प्रयोजन था।

एक बार तो उसके मज़ाक की लपेट में स्वयं फ़्रेंच के अध्यापक मि० पोर्ट भी आ गये थे। उनके बारे में यह प्रसिद्ध था कि वे कूढ़मग्ज़ और पेशे के रसोइये थे। किसी प्रकार वे सिम्बिर्स्क के एक जागीरदार की पुत्री से विवाह करने में कामयाब हो गये थे और

---

*उसके स्कूल के वर्षों में उसके कोई विशेष दोस्त-अहबाब तो न थे, हाँ वह लोगों से अलग रहना अवश्य पसन्द नहीं करता था।—अ० ए०

इस रिश्ते के कारण उन्होंने "समाज" में घुसने भर का स्थान प्राप्त कर लिया था। वे हमेशा डाइरेक्टर अथवा इन्सपेक्टर की लल्लो-चप्पो में लगे रहते जिसके कारण सभी भले अध्यापक उन्हें घृणा की दृष्टि से देखते थे। यह अध्यापक महोदय व्लादीमिर इल्यीच के मज़ाक से बेहद चिढ़ गये और उन्होंने इस बात का आग्रह किया कि ऐसे बदतमीज़ विद्यार्थी की तिमाही रिपोर्ट में उसके चरित्र-आलेख के संबंध में दिये जाने वाले अंक कम कर दिये जायं।

यदि मि० पोर्ट की योजना सफल हो गई होती तो इससे मेरे भाई पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ता क्योंकि वह उस समय सातवीं कक्षा में था। मुझे तो इसके बारे में पिता ने तब बताया जब मैं १८८५ में जाड़े की छुट्टियों में घर आयी। उन्होंने मुझे यह भी बताया था कि वोलोद्या ने उनसे यह वादा किया है कि वह फिर कभी ऐसा न करेगा।

किसी क्रांतिवादी युवक के जीवन में इतनी छोटी छोटी घटनाओं के कभी कभी बड़े भयंकर परिणाम निकल सकते थे, स्कूल से निकाला जाना तो एक मामूली सी बात थी। परन्तु व्लादीमिर इल्यीच को एक तो अपनी अद्वितीय प्रतिभा और दूसरे अपने पिता तथा परिवार की प्रस्थिति एवं ख्याति के कारण वह दिन देखना न बदा था।

जिन कारणों से केरेन्स्की ने अपने प्रमाणपत्र में उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की थी उन्हीं कारणों के आधार पर मेरी माता ने भी सपरिवार कज़ान जाना उचित समझा क्योंकि व्लादीमिर इल्यीच को कज़ान विश्वविद्यालय में ही अध्ययन करना था।

अगस्त १८८७ के अन्त में हमने कज़ान में पेरवाया गोरा पर रोस्तोवा के मकान में एक फ्लैट किराये पर लिया और फिर एक महीने के बाद हम वहाँ से नोवोकोमिसारियात्सकाया सड़क पर सोलोव्योवा के मकान में चले गये।

यह वह काल था जब राजनैतिक वातावरण अस्थायी रूप से शांत हो चुका था और लोगों का उत्साह क्षीण होता जा रहा था। "नरोदनया वोल्या" को पहले ही समाप्त कर दिया गया था और तब तक सामाजिक-जनवादी पार्टी का जन्म भी न हुआ था। उस समय तक श्रमिकों तथा किसानों ने बड़े पैमाने पर संघर्ष में कोई भाग न लिया था। हाँ, जबकि देश के लिये संघर्ष करने की अभिलाषा साधारण जनता के दिलों में ही दबी पड़ी थी, विद्यार्थियों के बीच वह कभी कभी यत्र-तत्र उमड़ पड़ती थी। इन्हीं विद्यार्थियों में से सच्चे सरल हृदय वाले परन्तु ऐसे उत्साही लोग निरन्तर आगे आ रहे थे जो वर्तमान व्यवस्था के प्रति अपने रोष को न रोक पाते तथा उससे मोर्चा लेने की तरकीबें सोचा करते। यही कारण था कि ज़ार सरकार की शनि-दृष्टि विशेष रूप से विद्यार्थियों पर ही रहती और अधिकतर उन्हीं को गिरफ़्तार किया जाता, उन्हीं के यहाँ तलाशियां होतीं और उन्हीं को निष्कासन का दंड दिया जाता।

१८८७ में ज़ार की हत्या के प्रयत्न के बाद दमन शक्तियों को और भी खुलकर खेलने का मौका मिला। ज़ार की हत्या का यह प्रयत्न इसी वर्ष की बसन्त ऋतु में पीटर्सबर्ग में किया गया था जिसमें एकमात्र विद्यार्थी ही फँसे थे*।

विश्वविद्यालयों की दशा तो और भी विचित्र थी। अनिवार्य रूप से वर्दियाँ पहनना, लोगों पर निगाह रखना तथा गुप्तचरी की व्यवस्था करना, नये विचारों के समर्थक तथा उदार वृत्ति के प्रोफ़ेसरों

---

*यह मुकदमा १ मार्च १८८७ को आरम्भ हुआ था। इसमें १५ अभियुक्त थे जिनमें से ५ को फांसी दी गयी — उनमें व्लादीमिर इल्यीच के बड़े भाई भी एक थे — दो को श्ल्यूसेलबर्ग के क़िले में आजीवन कारावास मिला तथा शेष को साइबेरिया और सख़ालीन में भिन्न भिन्न वर्षों के लिये निष्कासन का दंड दिया गया।

का निकाला जाना, प्रान्तीय विद्यार्थी समाजों जैसे — अनुपद्रवी संघटनों तक — सारे संघटनों को प्रतिषिद्ध घोषित कर देना और ऐसे विद्यार्थियों को, जो शासन की निगाह में ज़रा भी खटकते थे, या तो विश्वविद्यालय से निकाल देना या उन्हें उनके घर वापस कर देना आदि ऐसी बातें थीं जिन्होंने शिक्षण-वर्ष के प्रारम्भिक कुछ महीनों में ही विश्वविद्यालयों के वातावरण में चिनगारियां फूंक दी थीं। परिणामत: सारे विश्वविद्यालयों में, जिनमें कज़ान का विश्वविद्यालय भी था, "अव्यवस्थाओं" की एक लहर सी दौड़ गई।

४ दिसम्बर को कज़ान विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने आपस में एक होकर इन्स्पेक्टर को बुलाये जाने की माँग की और तब तक वहां से न हटे जब तक कि इन्स्पेक्टर साहब तशरीफ़ न ले आये। उनके आने पर विद्यार्थियों ने उनके सामने न केवल विश्वविद्यालयों की दशाओं के संबंध में ही, अपितु सामान्य राजनीति के संबंध में भी, अपनी अनेक माँगें पेश कीं।

मुझे इस मुठभेड़ के सारे ब्यौरे वोलोद्या ने बताये अवश्य थे, परन्तु इस समय वे मुझे याद नहीं पड़ रहे हैं। हाँ माताजी द्वारा, जो उसकी पैरवी करने गई थीं, बतायी गयी बातें मुझे अवश्य याद हैं। इन्स्पेक्टर का कहना था कि सभा में वोलोद्या बड़े सक्रिय रूप से भाग ले रहा था, सब से आगे की कतार में था और बड़े जोश-खरोश के साथ बातें कर रहा था तथा उन्हें (इन्स्पेक्टर को) अपने घूंसे दिखा दिखाकर प्राय: धमकाता जा रहा था। उसी रात को व्लादीमिर इल्यीच को उनके घर पर गिरफ़्तार कर लिया गया और उन्हें, अन्य ३९ व्यक्तियों के साथ कई दिन पुलिस की हवालात में काटने पड़े। उसके बाद उन सब को कज़ान से निकाल दिया गया। हवालात जाते समय व्लादीमिर इल्यीच की उस पुलिस अफ़सर के साथ अच्छी खासी तकरार भी हो गई थी जिसने उन्हें गिरफ़्तार

किया था। वी० वी० अदोरात्स्की को इस तकरार के संबंध में स्वयं व्लादीमिर इल्यीच ने बताया था। अदोरात्स्की ने इस वाद-विवाद को इस प्रकार वर्णित किया है—

"अरे युवक, इन उपद्रवों से क्या फ़ायदा? देखते नहीं सामने कितनी बड़ी दीवार है?"

"है, परन्तु अब वह सड़-गल चुकी है। केवल एक धक्के की देर है और भरभरा कर नीचे आ गिरेगी," व्लादीमिर इल्यीच ने बड़े गर्व के साथ उत्तर दिया था।

कज़ान से हटाकर व्लादीमिर इल्यीच को तुरन्त वहाँ से लगभग २६ मील दूर कोकूशकिनो ग्राम में भेज दिया गया जहाँ हमारे नाना अलेक्सान्द्र दिमित्रियेविच द्वारा खरीदी गई एक जागीर थी। उस समय उसकी बहन आन्ना (जो प्रस्तुत पंक्तियों की लेखिका है) वहाँ पर अधिवासीय बन्दिनी के रूप में रह रही थी। पहले तो उसे साइबेरिया में ५ वर्ष के निष्कासन की सज़ा दी गई थी परन्तु बाद में माता जी के तर्कों के कारण यह सज़ा कोकूशकिनो में ही पाँच वर्ष की अधिवासीय गिरफ़्तारी के रूप में बदल दी गई थी।

इस जागीर में माताजी का पाँचवाँ हिस्सा था। परन्तु हमारे परिवार (माताजी तथा दो छोटे छोटे बच्चे भी जल्दी वहीं पर चले आये थे) ने १८८७-८८ की जाड़े की ऋतु उक्त जागीर के एक ऐसे भाग में बिताई जो सम्पूर्ण जागीर की देख-रेख रखनेवाली हमारी एक चाची के हिस्से में पड़ता था। हमारे ठहरने तथा रहने का स्थान बहुत ठंढा था और उसमें किसी प्रकार का आराम न था।

हमारे आसपास कोई पड़ोसी न थे। जाड़े भर हम लोग अकेले ही रहते रहे। हमारे मुलाकातियों में या तो हमारा एक भतीजा था जो कभी कभी हमसे मिलने आ जाता था या एक डिस्ट्रिक्ट पुलिस अफ़सर, जिसकी यही ड्यूटी थी कि वह इस बात की जांच

करता रहे कि मैं वहाँ रहती हूँ या नहीं और स्थानीय कृषकों में शासन के विरुद्ध कोई प्रचार तो नहीं कर रही हूँ।

व्लादीमिर इल्यीच को पढ़ने का बड़ा शौक था। हमारे रहने के हिस्से में पुस्तकों की एक अलमारी थी जो हमारे स्वर्गीय चाचा की थी। उन्होंने भी बहुत कुछ पढ़ा था। वहां ढेरों पुरानी पत्र-पत्रिकाएं पड़ी थीं जिनमें प्रायः रोचक लेख पढ़ने को मिल जाते थे। इसके अलावा हम लोग कज़ान पुस्तकालय से भी पुस्तकें ले लिया करते तथा समाचारपत्र मंगाया करते थे।

हम सब शहर से अपनी डाक आने की प्रतीक्षा किया करते और जब कोई हमारी डाक लाता तो हमारी प्रसन्नता का ठिकाना न रहता। हम पुस्तकों, समाचारपत्रों और चिट्ठियों की अपनी चिर-प्रतीक्षित पिटारी खोलने में जुट जाते और बाद में उसी पिटारी को लौटाई जाने वाली पुस्तकों और पत्रों से भर देते।

इस संबंध में मुझे एक घटना याद आ गई। एक दिन संध्या के समय हम सब पत्र लिखने में व्यस्त थे क्योंकि अगले दिन अपनी चाची के नौकर द्वारा इन पत्रों को हमें शहर भेजना था। उस समय हमने वोलोद्या की ओर देखा जो जल्दी जल्दी कोई लम्बी दास्तान घसीटे डाल रहा था। उसके चेहरे पर उत्साह तथा प्रसन्नता के लक्षण प्रकट हो रहे थे। आज हम सबको वोलोद्या पर आश्चर्य हो रहा था क्योंकि प्रायः वह कभी किसी को पत्र नहीं लिखता था। बाद में जब पिटारी पुस्तकों और पत्रों आदि से भर गई तथा माताजी और छोटे बच्चे सोने चले गये तो हम अपनी आदतों के अनुसार आपस में बातचीत करने बैठ गये और मैंने उससे उस पत्र के बारे में पूछ-ताछ शुरू की। मैं जानना चाहती थी कि वह पत्र उसने किसे लिखा है। वोलोद्या ने बताया कि वह पत्र उसने अपने स्कूल के एक पुराने साथी को लिखा है जो अब किसी दूसरे विश्वविद्यालय में — मैं

समझती हूँ यह विश्वविद्यालय दक्षिणी प्रदेश में था — भर्ती हो गया है। इस पत्र में उसने कज़ान में विद्यार्थी उपद्रवों के बारे में बड़े जोश के साथ लिखा था और अपने मित्र से यह भी पूछा था कि उसके विश्वविद्यालय में क्या क्या हो रहा है। वास्तव में वोलोद्या से इसी प्रकार के पत्र की आशा भी की जाती थी।

मैंने बहस शुरू की। कहा कि इस प्रकार वह बिना जरूरत और बेकार ही अपनी जान के लिये नये खतरे क्यों मोल ले रहा है? परन्तु उसके विचारों को बदल देना आसान न था।

वह कमरे में तेज़ी के साथ इधर-उधर टहलने लगा। उस समय उसने खुश होकर मुझे बताया कि उसने विश्वविद्यालय के इन्स्पेक्टर तथा अन्य अधिकारियों के लिए किन किन कठोर विशेषणों का प्रयोग किया था। उसने मेरे भय को तो कम कर दिया परन्तु अपना निश्चय वह किसी भी प्रकार बदलने को तैयार न था। फिर मैंने दूसरा तीर छोड़ा। मैंने कहा हो सकता है तुम्हारे मित्र को भी विश्वविद्यालय से निकाल दिया गया हो और उसे संदिग्ध व्यक्तियों की सूची में रख लिया गया हो। तुम्हारे इस पत्र से तो उसकी स्थिति और भी बिगड़ जायगी।

बात ठिकाने की थी। वोलोद्या सोच-विचार में पड़ गया और आखिर उसे मेरे तर्क के आगे झुकना पड़ा। वह रसोई में गया और झिझकते हुए पत्र को पिटारी से बाहर निकाल दिया।

कुछ महीनों बाद वोलोद्या ने मेरी भतीजी से कुछ मज़ाक में और कुछ गम्भीरतापूर्वक कहा था कि आन्ना ने मुझे जो सलाह दी थी उसके लिये मैं उसका आभारी हूँ।

मुझे यह सुनकर सन्तोष हुआ और प्रसन्नता भी हुई। यह उस समय की बात है जब उसने अपने उस पत्र को, जो भूल से कई

महीनों तक उसकी डेस्क में पड़ा रह गया था, दुबारा पढ़कर फाड़ डाला था।

पढ़ने के अलावा व्लादीमिर इल्यीच को व्यस्त रखने के लिये कुछ और काम भी थे—अपने छोटे भाई को पढ़ाना-लिखाना, शिकार खेलना और जाड़े में स्कीईंग करना (एक लम्बे पतले लकड़ी के पटरे को पैर में बांधकर बर्फ़ पर फिसलना)। शिकार के कारण ही बन्दूक के साथ उसकी पहली मुलाकात हुई थी। परन्तु जाड़े की सारी ऋतु बीत जाने पर भी वह कोई शिकार मारकर घर न लाया था*। बन्दूक चलाने में उसे कोई सफलता न मिली। मैं समझती हूँ इसका कारण यह था कि शिकार से उसे कोई विशेष प्रेम न था जैसा मेरे दूसरे भाइयों को था।

बर्फ़ से ढंकी हुई उस भूमि पर हमारी जीवनचर्या नीरस होती जा रही थी। परन्तु वोलोद्या ने अधिक परिश्रम करने की जो आदतें अपने में डाल रखी थीं उन्होंने उसकी यहाँ बड़ी मदद की।

इस एकाकी और श्रांत शीत के बाद मधुर बसन्त का आगमन हुआ। अपने भाई के साथ मैं भी खेतों में घूमने का आनन्द ले रही थी। हमारे चारों ओर श्याम वर्ण के खेत मीलों तक फैले हुए थे। लज्जाशीला वधू की भांति हरियाली पेड़ों की ओट से अपना घूंघट पट खोल रही थी। बर्फ़ के श्वेतवर्णीय खंड अपनी आभा से सारे वातावरण को आलोकित कर रहे थे।

---

* मुझे यह बात याद रहने का एक विशेष कारण है। एक बार हम लोग कुछ मज़ाक के मूड में थे। गर्मी की ऋतु थी। वोलोद्या अपने भतीजे के साथ घूम-घाम कर घर वापस आया था। आते ही उसने डींग मारी, "आज हमने एक खरगोश देखा है"। "वही होगा ना जिसे तुम सारे जाड़े भर ढूंढते रहे थे," मेरा सारगर्भित उत्तर था। —अ०ए०

प्रकृति की इस अनुपम छटा के बीच हमें अपनी बातों में भी विचित्र आनन्द का अनुभव हो रहा था। स्यात् अदृष्ट भरद्वाज भी हमारी बातों में रस ले रहे थे।

गर्मी में हमारे भतीजे भी आ गये। वे घूमने-फिरने, शिकार खेलने और शतरंज की बाज़ियाँ जमाने में वोलोद्या के साथी बने परन्तु किसी को भी सामाजिक समस्याओं में कोई रुचि न थी। अतएव वोलोद्या उनसे ऐसी बातों के संबं में बातचीत करने का आधार न खोज पाता जिनमें स्वयं उसे रुचि थी। यद्यपि वे उम्र में बड़े थे फिर भी वोलोद्या की तीक्ष्ण अभ्युक्तियों का प्राय: वे समुचित उत्तर न दे पाते।

१८८८ की शरद ऋतु में व्लादीमिर इल्यीच को कज़ान में रहने की अनुमति मिल गई। उनकी माता तथा छोटे बच्चे पहले से ही वहाँ चले गये थे। कुछ समय बाद मुझे भी वहाँ जाने की अनुमति दे दी गई।

कज़ान का जीवन

हमने पेरवाया गोरा पर ओरलोवा के मकान का एक भाग किराये पर लिया। यह स्थान आर्सकोये पोल्ये से दूर न था। हमारे कमरे के आगे एक छज्जा और सामने पहाड़ी पर स्थित एक बग़ीचे का मनोरम दृश्य था। सबसे नीचे की मंज़िल में दो रसोईघर थे। बाकी सब कमरे पहली मंज़िल पर थे।

वोलोद्या ने दूसरे रसोईघर पर कब्ज़ा किया। यह रसोईघर रास्ते से हटकर कुछ दूरी पर था। अतएव इसे लोग इस्तेमाल में न लाते थे। वोलोद्या को यह रसोईघर इसलिये और अधिक पसन्द

आया कि यहाँ उसे पढ़ने की सुविधा अधिक थी। उसने अपने कमरे में किताबें इकट्ठा कर लीं और दिन का अधिकांश वह पढ़ने में ही व्यतीत करने लगा।

यहीं उसने मार्क्स का "पूंजी" (कैपिटल) पढ़ना आरम्भ किया। शाम को जब मैं उससे बातचीत करने के लिये नीचे आती, तो वह बड़े उत्साह के साथ मुझे मार्क्सवाद के मूलभूत सिद्धांत समझाता और बताता कि इनसे उज्ज्वल भविष्य की संभावनाएं कितनी बढ़ गई हैं। वोलोद्या आज भी मेरी कल्पना के आगे कागज़पत्रों से भरे उसी रसोईघर में हाथ पैर फटकारते हुए अपने भावों को व्यक्त करता रहता है, मानों यह कल की ही बात हो। वह आशावादी था और दूसरों में आशा और विश्वास का संचार भी कर सकता था। उन आरम्भिक दिनों में भी उसके शब्दों और उसकी वक्तृता में लोगों को प्रभावित कर सकने की अपूर्व क्षमता थी। उस काल में भी उसने यह कोशिश कभी न की कि उसका ज्ञान सिमट कर केवल उस तक ही रह जाय। जब उसे कोई नई बात मालूम होती, वह उसे दूसरों को बताने और लोगों को अपने विचारों के अनुकूल बनाने का भरसक प्रयत्न करता। कज़ान में मार्क्सवाद के समर्थक तथा क्रांतिवाद के पोषक अनेक विद्यार्थियों से उसकी मित्रता हो गई।

हमारे परिवार पर पुलिस की विशेष कृपा थी। वे लोग सदा हमारी देखरेख रखते। यही कारण था कि वोलोद्या के मित्र हमारे घर यदा-कदा ही आते। परन्तु वोलोद्या उनसे उन जगहों पर मिला करता जहाँ वे लोग इकट्ठा हुआ करते थे। वह मुझसे अपने अनेक मित्रों के बारे में बताया करता था। इस समय मुझे ऐसे केवल दो ही व्यक्तियों के नाम याद रह गये हैं। इनमें से एक थी चेतवेरगोवा जो एक अधेड़ महिला तथा "नरोदनया वोल्या" की सदस्या थी;

उसके बारे में वोलोद्या बड़े आदरसूचक शब्दों में बातचीत करता, और दूसरा था चिरिकोव जो एक विद्यार्थी था। इस समय मुझे यह याद नहीं पड़ रहा है कि उसे भी निकाला गया था या नहीं। यह व्यक्ति बाद में एक कहानीकार बन गया और क्रांति के आंदोलन को तिलांजलि देकर शत्रुओं से मिल गया।

अपनी माता के ख्याल से ही व्लादीमिर इल्यीच सतर्कता के साथ अपना काम करता। उसकी माता ने जिस असीम धैर्य के साथ अपने पुत्र अलेक्सान्द्र का मृत्यु-शोक सहन किया था उससे अपरिचितों तक को आश्चर्य हुए बिना न रहता। हम सब पर तो उसका गहरा असर होता था क्योंकि हम सबके लिये ही वे अपने संतप्त हृदय पर नियंत्रण रखतीं और अपनी आन्तरिक वेदना को किसी पर प्रकट न होने देतीं। मुझे नदेज्दा-कोन्स्तान्तीनोवना क्रूप्स्काया से बाद में मालूम हुआ कि व्लादीमिर इल्यीच ने उन्हें यह बताया था कि माता जी ने कितने साहस के साथ हमारे भाई और बाद में हमारी बहन ओल्गा के मृत्यु-शोक को सहन किया।

हमारे बालकाल से ही हमारी माता का हम पर बड़ा प्रभाव रहा। मैं इसके संबंध में विस्तार के साथ आगे चलकर कुछ कहूंगी। यहाँ पर मैं कज़ान में अपने जीवन की एक छोटी सी घटना के संबंध में बताना चाहती हूँ। वोलोद्या को धूम्रपान की लत पड़ गयी थी। बचपन और युवावस्था से ही वोलोद्या का स्वास्थ्य कुछ बहुत अच्छा नहीं रहा था और माता जी को उसकी चिंता थी। अतएव माता जी ने उससे धूम्रपान की आदत छोड़ देने का आग्रह किया और इसके लिये उन्होंने अनेक तर्क उपस्थित किये। परन्तु इन सब का वोलोद्या पर कोई असर न हुआ। अन्त में उन्हें यही कहना पड़ा कि चूंकि तुम अभी कुछ पैदा नहीं करते इसलिये तुम बेकार का कोई भी ख़र्च नहीं कर सकते वह चाहे भी जितना कम क्यों न

हो—यहाँ यह कह देना असंगत न होगा कि हम सब की गुजर-बसर केवल माता जी की पेंशन से हो रही थी। तर्क काम कर गया और वोलोद्या ने तुरन्त ही धूम्रपान की अपनी आदत छोड़ दी और जीवन में फिर कभी धूम्रपान न किया। माताजी ने बड़े सन्तोष के साथ मुझे यह घटना सुनाई थी और साथ ही यह भी बताया था कि वोलोद्या के स्वास्थ्य के हित में ही उसकी धूम्रपान की आदत छुड़ाने के लिये अन्त में उन्होंने आर्थिक पहलू उसके आगे रखा था।

वोलोद्या बड़े उत्साह के साथ मुझे उन आलेखपत्रों के संबंध में बताया करता था जो युवकों की सभाओं में पढ़े जाते थे और साथ ही इन सभाओं में होने वाली अन्य कार्यवाहियों के संबंध में भी मुझे सूचना दिया करता था। बसन्त ऋतु आते आते इन युवकों के कार्यकलाप प्राय: बढ़ जाते और वोलोद्या अपनी संध्याएं घर के बाहर ही बिताया करता।

तत्कालीन राजनैतिक दलों के संबंध में जो खोजें हुई हैं उन्हें हाल ही में प्रकाशित किया गया था। इन खोजों से पता चलता है कि कज़ान में उस समय अनेक दल थे। इन दलों को अपने कार्यों के संबंध में अत्यधिक गोपनीयता बरतनी पड़ती थी और इसी कारण इनके सदस्यों के लिये एक दूसरे के साथ अधिक मिल-जुल कर रहना अथवा अपनी सभाएं करना सम्भव न था। कुछ सदस्यों को तो यह भी नहीं मालूम होता था कि उनके जैसे अन्य दल भी कहीं काम कर रहे हैं। और यदि कुछ लोग इस संबंध में जानते भी थे अथवा अनुमान मात्र लगा सकते थे, तो उन्हें यह तो मालूम ही नहीं हो पाता था कि इन दलों के सदस्य कौन कौन हैं या कितने हैं। जब तक कोई ख़ास ज़रूरत न होती थी तब तक नामों का उल्लेख नहीं किया जाता था। सबसे बड़े दल का संचालन निकोलाई येवग्राफ़ोविच

फ़ेदोसेयेव कर रहा था जो सक्रिय रूप से काम करनेवाला एक युवक क्रांतिकारी था। उसकी सामाजिक-जनवाद में प्रगाढ़ आस्था थी।

पाठशाला की सर्वोच्च कक्षा से निकाले जाने के बाद फ़ेदोसेयेव पूरी लगन के साथ क्रांतिकारी कार्यों में जुट गया। उसके दल ने अवैध तथा प्रतिषिद्ध साहित्य का एक पूरा पुस्तकालय इकट्ठा कर लिया था। इस दल ने बसन्त ऋतु में स्वयं अपने प्रकाशनों और ऐसी अवैध पुस्तकों के प्रकाशन की व्यवस्था की थी जो प्रायः अन्यत्र उपलब्ध न होती थीं। व्लादीमिर इल्यीच को इस दल की जानकारी अवश्य थी, परन्तु वह स्वयं उसका सदस्य न था और न व्यक्तिगत रूप से फ़ेदोसेयेव को जानता ही था। किन्तु जब वोलोद्या ने जुलाई १८८९ में कज़ान में हुई गिरफ़्तारियों के संबंध में सुना, तो उसने मुझे बताया था कि उसने पहले ही अनुमान लगा लिया था कि अपने साथियों सहित वह खुद गिरफ़्तार किया जायगा, परन्तु वैसा न हुआ। गिरफ़्तार हुए व्यक्तियों में फ़ेदोसेयेव भी एक था। अब उसके दल को भंग कर दिया गया था। कुछ ऐसे भी व्यक्ति गिरफ़्तार हुए थे जो उसी दल के थे जिसका सदस्य स्वयं व्लादीमिर इल्यीच था। व्लादीमिर इल्यीच के गिरफ़्तार न होने का एक कारण था—मई १८८९ में हमारा परिवार समारा गुबेर्निया में, अलाकायेव्का ग्राम के समीप एक फ़ार्म-बस्ती में आकर बस गया था जिसे म० त० येलिज़ा-रोव * की मार्फ़त मेरी माता जी ने खरीदा था। म० त० येलिज़ारोव के साथ मेरा विवाह हो जाने के पश्चात् १८८९ की शरद् ऋतु में हमारा परिवार समारा में आ गया।

---

* विश्वविद्यालय के वोल्गा विद्यार्थी समाज में हमारे भाई अलेक्सान्द्र का साथी।—अ० ए०

इस प्रकार सौभाग्य से व्लादीमिर इल्यीच कज़ान में गिरफ़्तार हुए व्यक्तियों में न था। इन गिरफ़्तारियों के फलस्वरूप फ़ेदोसेयेव को कुल मिलाकर ढाई वर्ष का कारावास हुआ। इस अवधि में वह काल भी है जिसमें उसे मुकदमे के पूर्व नज़रबन्द रखा गया था और वह काल भी जो वह "क्रेस्टी" (पीटर्सबर्ग में विबोर्ग की जेल) में काट चुका था। समारा कज़ान की अपेक्षा कुछ दूर हट कर बसा हुआ एक छोटा सा नगर था। यहाँ व्लादीमिर इल्यीच को मार्क्सवाद के सिद्धान्तों का अध्ययन करने और बाद में विश्वविद्यालय की उपाधि के लिये काम करने का सुअवसर मिला। जिस फ़ार्म पर वह स्वयं रह रहा था वह मनोरम और प्राकृतिक सौन्दर्य से स्नात् था। यहाँ उसने गर्मियों के कुछ महीने बिताये और इसके फलस्वरूप उसके स्वास्थ्य में भी अधिक सुधार हुआ।

समारा का जीवन

व्लादीमिर इल्यीच ने विश्वविद्यालय में प्रवेश पाने की बार बार कोशिशें की; परन्तु प्रत्येक बार उसकी प्रार्थना अस्वीकृत होती गई। अन्त में उसके साथ कुछ रू-रिआयत की गई और उसे विश्व-विद्यालय में डिगरी परीक्षा देने की अनुमति मिल गई। तत्पश्चात् उसने कानून की घुटाई आरम्भ की। १८९१ में उसने पीटर्सबर्ग यूनिवर्सिटी में उपाधि प्राप्त की। बहुत से लोगों को इस बात पर आश्चर्य भी हुआ कि विश्वविद्यालय से निकाले जाने के बाद भी उसने बिना किसी की मदद के और बिना कोई नियतकालिक अथवा शिक्षण-वर्षीय परीक्षा दिये हुए ही विश्वविद्यालय में प्रवेश पाया तथा उसे उपाधि अपने उन अन्य मित्रों के साथ ही मिली जिन्होंने आरम्भ में उसी के साथ कज़ान विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया था। अब उसके

उद्योग और उसकी योग्यताओं ने उसके भविष्य के लिये रास्ता साफ़ कर दिया।

उस ग्रीष्म काल में व्लादीमिर इल्यीच ने हमारे फ़ार्म पर लाइम वृक्षों की पंक्ति के नीचे एक एकाकी स्थान पर कुछ अध्ययन किया। उसने ज़मीन में एक मेज़ और एक बेंच गाड़ रखी थी। प्रत्येक दिन प्रातःकाल वह बगल में ढेर सी पुस्तकें दबाये वहाँ पहुंच जाता और वहाँ खाने के समय, अर्थात् अपराह्न तीन बजे तक बिल्कुल अकेला बैठा पढ़ता रहता।

उसके काम में विघ्न पहुंचाने के लिये हम लोगों में से कोई भी वहां न जाता।

खाने के बाद फिर वह सामाजिक अथवा राजनीतिक विषय की पुस्तकें लेकर अपनी मेज़ की ओर चल देता। मुझे ऐसा याद पड़ता है कि इस समय वह एंगेल्स की "इंगलैंड में श्रमिक वर्ग की दशा" का जर्मन संस्करण पढ़ा करता था। इसके बाद वह घूमने या तैरने निकल जाता और सायंकालीन चाय के पश्चात् मक्खी मच्छड़ों से बचने के लिए लालटेन लिये हुए फिर बरामदे में पहुंच जाता और अपना अध्ययन आरम्भ कर देता।

उसे अध्ययन का शौक था जो उसे आद्योपांत बना रहा। परन्तु वह किताबी कीड़ा न था। अपने खाली समय में या खाने-पीने या घूमने-घामने के समय वह हंसी मज़ाक और कहकहों से सारा वातावरण गुँजा देता। वह काम भी गज़ब का करता और खेलकूद में भी उस्ताद था।

समारा में क्रांतिवाद के पोषक युवक कज़ान की अपेक्षा कम थे क्योंकि वहाँ कोई विश्वविद्यालय न था। वहाँ कुछ ऐसे अधेड़ व्यक्ति भी थे जो पुलिस की निगरानी में रहते थे क्योंकि वे कभी साइबे-रिया में निष्कासन का दंड भुगत चुके थे। ऐसे लोग नरोदनिकों

अथवा "नरोदनया वोल्या" के विचारों के समर्थक थे। उनके लिये सामाजिक-जनवादी आन्दोलन एक नई चीज़ थी और वे समझते थे कि रूस में इसके पनपने की कोई गुंजाइश नहीं है। इन लोगों ने अपने साइबेरिया-निष्कासन काल को दूरस्थ गांवों में व्यतीत किया था। इसी कारण वे इस बात से पूर्णरूपेण अवगत न थे कि हमारे देश के सामाजिक तथा आर्थिक जीवन में क्या क्या परिवर्तन और कौन कौन से विकास हुए हैं।

विदेशों में "श्रम उद्धार" दल * की स्थापना होने के साथ ही साथ १८८३ में हमारे देश में सामाजिक-जनवादी विचारधारा की नींव पड़ी। फिर भी बड़े नगरों में उस समय इस विचारधारा के समर्थकों की संख्या अधिक न थी। जो थोड़े से लोग इस विचारधारा के पोषक थे भी वे अधिकतर युवक थे।

धीरे धीरे समाज में नई विचारधाराएं प्रवेश कर रही थीं। वोरोन्त्सोव (व० व०), यूज़्हाकोव और क्रिवेन्को जैसे नरोदनिक उस समय के प्रमुख विचारक थे और सामयिक राजनैतिक परिस्थितियों का लेखक तथा आलोचक मिखाइलोव्स्की (जिसका पहले "नरोदनया वोल्या" के साथ घनिष्ठ संबंध था) तो जनता के दिमाग़ों पर छा गया था। पाठकों को याद होगा कि १८९४ में मिखाइलोव्स्की ने तत्कालीन सर्वाधिक प्रगतिशील पत्रिका "रूसकोये बोगात्सत्वो" में सामाजिक-जनवादियों के खिलाफ़ खुले रूप में विषवमन किया था।

---

* "श्रम उद्धार" दल रूस का वह पहला मार्क्सवादी संघटन है जिसे ग० व० प्लेख़ानोव ने जेनेवा में १८८३ में स्थापित किया था। इस दल ने रूस में मार्क्सवाद के प्रसार में काफ़ी महत्वपूर्ण योग दिया है। —सम्पादक।

इन विचारों के ख़िलाफ़, जो समाज में अपनी जड़ जमा चुके थे, मोर्चा लेने के लिये सबसे पहले यह आवश्यक था कि मार्क्सवाद के सिद्धान्तों को ठीक ठीक समझा जाय और फिर रूस के उन उद्योगों और कृषि-व्यवस्थाओं के विकास की प्रगति के संबंध में ठीक ठीक आंकड़े संकलित किये जायं जिन पर ये सिद्धान्त लागू किये जा सकते हैं। इस क्षेत्र में प्राय: ऐसा कोई कार्य न किया गया था जिससे देश की सामान्य स्थिति का समुचित परिचय प्राप्त होता। एतदर्थ यह आवश्यक था कि आंकड़े संबंधी तत्कालीन सामग्री का अध्ययन किया जाता और उसके आधार पर निष्कर्ष निकाले जाते। यह कार्य व्लादीमिर इल्यीच ने समारा में आरम्भ किया। यह कार्य महान् था और अभी तक अन्य किसी व्यक्ति ने इस ओर कोई भी प्रयत्न नहीं किये थे।

उसने मार्क्स और एंगेल्स का अध्ययन किया। इन लेखकों की कुछ कृतियाँ, उदाहरणार्थ "दर्शनशास्त्र की निर्धनता" ("पावर्टी आफ़ फ़िलासफ़ी"), केवल विदेशी भाषाओं में ही उपलब्ध थीं। उनका भी उसने अध्ययन किया। इसके अतिरिक्त उसने वह सब साहित्य भी पढ़ा जिसे नरोदनिकों ने लिखा था। नरोदनिकों के वक्तव्यों की न्याययुक्तता की जांच करने तथा यह अध्ययन करने के लिये कि रूस में सामाजिक जनवाद प्रणाली के अपनाये जाने की सम्भावनाएँ हैं या नहीं उसने आंकड़ा क्षेत्र में गवेषणा का कार्य हाथ में लिया। इस्तपार्त (एक आयोग, जिसे पार्टी के इतिहास की सामग्री संकलित, संपादित और प्रकाशित करने का काम सौंपा गया था — संपादक) की समारा शाखा में उपलब्ध प्रविष्टियों से पता चलता है कि व्लादीमिर इल्यीच ने इन विषयों की अनेकानेक पुस्तकें समारा सार्वजनिक पुस्तकालय से पढ़ने के लिये ली थीं। उसने न केवल इन पुस्तकों का व्यापक अध्ययन ही किया, अपितु, अपने अध्ययन के आधार पर लेख भी

लिखे। इनमें से एक लेख, जिसका आकार बहुत बढ़ गया था, पोस्तनिकोव की प्रसिद्ध पुस्तक "दक्षिणी रूस में किसानों द्वारा खेती" का ही विश्लेषण था। लेनिन के इस लेख का शीर्षक था "कृषक वर्ग में पाई जाने वाली नई आर्थिक प्रवृत्तियाँ"। *

यह बात सर्व-प्रसिद्ध है कि बड़े पैमाने पर पूंजीवादी खेतीबारी का विकास दक्षिणी रूस में केन्द्रीय अथवा उत्तरी प्रांतों से पहले हुआ था। वहीं पर पूंजीवादी किस्म के बड़े बड़े आस्थानों की उत्पत्ति हुई थी। इन आस्थानों में भूमिहीन मज़दूरों को काम पर लगाया जाता था। अतएव कृषि-दशा का विकास संबंधी अध्ययन करने की दृष्टि से दक्षिणी रूस का विशेष महत्व था।

पोस्तनिकोव के विचारों में क्रांतिवादिता का पोषण प्रायः नहीं था। व्लादीमिर इल्यीच ने उसके सुधार संबंधी निर्देशों की उपेक्षा करते हुए केवल उसकी तथ्याधारित बातों को अपनाया और उससे स्वयं अपने निष्कर्ष निकाले।

उक्त लेख के अतिरिक्त व्लादीमिर इल्यीच ने मार्क्सवाद के विभिन्न पक्षों के संबंध में और भी अनेक लेख लिखे (जैसे "पावर्टी आफ़ फ़िलासफ़ी" का संक्षेप तथा नरोदनिक — व० व० (वोरोन्त्सोव), यूज़्हाकोव इत्यादि — के विरुद्ध लेख)। वह अपने लेखों को स्थानीय युवक दलों को पढ़कर सुनाता। समारा में व्लादीमिर इल्यीच के आरम्भिक परिचितों में से मेरे पति, मार्क तिमोफ़ेयेविच येलिज़ारोव के एक मित्र वादीम अन्द्रेयेविच इओनोव भी थे जो उम्र में व्लादीमिर इल्यीच से बड़े थे और "नरोदनया वोल्या" की विचारधारा के समर्थक थे। उस समय वे समारा के युवकों में सबसे अधिक विख्यात व्यक्ति

---

* यह लेख लेनिन ग्रन्थावली के पहले खंड में सम्मिलित है। —अ० ए०।

थे और लोग उनके विचारों की बड़ी क़द्र करते थे। धीरे धीरे व्लादीमिर इल्यीच ने उन्हें अपनी विचारधारा के अनुकूल बना लिया।

व्लादीमिर इल्यीच की ही उम्र का एक अन्य व्यक्ति, अलेक्सेई पावलोविच स्क्ल्यारेन्को (पोपोव) तो आरम्भ से ही उनके विचारों का समर्थक था। स्क्ल्यारेन्को समारा पाठशाला से निकाला गया था और "क्रेस्ती" जेल में सज़ा भुगत चुका था। वह धार्मिक विद्यालय तथा नर्सों के प्रशिक्षण स्कूल के विद्यार्थियों की एक टोली का नेता था। व्लादीमिर इल्यीच इस टोली तथा नरोदनिकों की सभाओं में प्रायः भाषण दिया करता। नरोदनिकों की सभाओं में गरमागरम बहसों की नौबत आती और "नरोदनया वोल्या" के पुराने सदस्यों से बातचीत अथवा मुकाबले के दौरान में तो कभी कभी ज़बरदस्त वाद-विवाद तक उठ खड़े होते। व्लादीमिर इल्यीच इन पुराने सदस्यों में से एक — अलेक्सान्द्र इवानोविच लिवानोव—की अधिक इज़्ज़त करता था क्योंकि क्रांतिकारी प्रवृत्तियाँ उसकी नस नस में समाई हुई थीं। वह दूसरों से अधिक इसी व्यक्ति से मिला करता था।

व्लादीमिर इल्यीच का स्वभाव था कि यदि वह किसी व्यक्ति या किसी चीज़ में कोई अच्छाई देखता तो सदैव उससे लाभ उठाने की कोशिश करता। वह लिवानोव तथा "नरोदनया वोल्या" के अन्य सदस्यों से केवल वाद-विवाद ही न करता, अपितु उनके क्रांति विषयक अनुभवों को भी हृदयंगम करता था। वह इन लोगों की बातें बड़े ध्यानपूर्वक सुनता और क्रांति-संघर्षों तथा गुप्त क्रान्तिकारी कार्यों की नीति, जेल की दशाओं, बाहरी दुनिया से सम्पर्क रखने के तरीकों, नरोदनिकों तथा "नरोदनया वोल्या" के सदस्यों पर

चलाये गये मुक़दमों आदि की उनकी कहानियों को भी याद कर लेता था।

वह अलेक्सान्द्र इवानोविच की भावुकता और चातुर्य से बड़ा प्रभावित हुआ था। अधिकांश बूढ़ों की तरह वह कभी भी युवावस्था और अनुभवहीनता के वशीभूत न हुआ। व्लादीमिर इल्यीच के बहुत से प्रतिद्वंद्वी, उसके साहस और किसी के सामने न झुकने वाले स्वभाव को युवावस्था की प्रचण्डता तथा आत्मविश्वास की अतिशयता समझते थे। ऐसे व्यक्ति व्लादीमिर इल्यीच को, उसके समारा के वर्षों में और उसके बाद भी मिखाइलोव्स्की, व० व०, करेयेव तथा अन्य व्यक्तियों का, जो जनमत के सुदृढ़ स्तम्भ थे, तीव्र विरोध करने के कारण क्षमा न कर सके। व्लादीमिर इल्यीच ४ वर्षों तक समारा में रहा। इन वर्षों में, अपने को दूरदर्शी कहने वाले सम्प्रदाय के प्राय: सभी सदस्य उसे एक ऐसा व्यक्ति समझते थे जिसमें योग्यता तो थी, परन्तु जिसे अपने ऊपर ज़रूरत से ज़्यादा आत्मविश्वास था और जो ज़बान का तेज़ था।

केवल युवकों के बीच, जो भावी सामाजिक-जनवादी थे, उसका अत्यधिक मान-सम्मान था। व०व०, युज़्हाकोव और मिखाइलोव्स्की के लेखों के विरोध में उसने जो लेख लिखे थे उन्हें वह समारा की युवक सभाओं में सुनाया करता। ये लेख बाद में सम्पादित किये गये और "'जनता के मित्र' कौन कौन हैं और वे सामाजिक-जनवादियों का किस प्रकार विरोध करते हैं" इस सामान्य शीर्षक के अन्तर्गत तीन नोटबुकों में तैयार किये गये। इनमें से एक नोटबुक का आज तक पता न चला, अन्य दो लेख लेनिन ग्रन्थावली में प्रकाशित हो चुके हैं। यह ठीक ही कहा गया है कि इन लेखों में वे सभी मूलभूत विचार निहित हैं जिनका व्लादीमिर इल्यीच ने बाद में विकास किया और जो लेनिनवाद के आधार बने।

व्लादीमिर इल्यीच ने अपने समारा काल में केवल सैद्धान्तिक अध्ययन ही नहीं किया, अपितु एक ऐसे प्रान्त में रहते हुए, जहाँ के कृषकों की स्थिति सारे रूस की सी थी, उसने इस वर्ग के संबंध में काफ़ी अच्छा ज्ञान प्राप्त किया और उसकी समस्याओं को समझा जिससे हम सब को पश्चात्वर्ती वर्षों में बड़ा आश्चर्य हुआ। उसके इस ज्ञान ने क्रांति-पूर्व तथा क्रांति-पश्चात् के वर्षों में उसकी बड़ी मदद की जिसके फलस्वरूप क्रांति-पूर्व के काल में उसने हमारी पार्टी के कृषि विषयक कार्यक्रम को तैयार किया और कृषकों के बीच कार्य करने में सफलता प्राप्त की और क्रांति-पश्चात् पार्टी द्वारा किये जाने वाले रचनात्मक कार्यों को सम्पन्न किया। उसने एतद्विषयक ज्ञान की वृद्धि का एक भी अवसर हाथ से न खोया।

उसका मित्र स्क्ल्यारेन्को समोइलोव नामक स्थानीय "जस्टिस आफ़ दि पीस" का सेक्रेटरी था। समोइलोव ऊंचे सिद्धान्तों और प्रगतिशील विचारों का पोषक था। अपने प्रधान के साथ स्क्ल्यारेन्को को मौके पर मामलों की जांच करने के लिए गांवों में जाना पड़ता था और उन किसानों से मिलना पड़ता था जो अपनी शिकायतें लेकर शहर में आया करते थे। इस प्रकार वह उयेज़्द में रहनेवाले किसानों की जीवनचर्या के विषय में अच्छी जानकारी रखता था और व्लादीमिर इल्यीच से इस विषय पर घंटों बातचीत किया करता था।

व्लादीमिर इल्यीच स्वयं समोइलोव तथा अन्य दोस्तों से भी, जिनका संबंध कृषक वर्ग से रहा करता था, विचार विमर्श किया करता था। मार्क तिमोफ़ेयेविच येलिज़ारोव से, जो जन्म से ही किसान था तथा जिसका समारा गुबेर्नियां के किसानों से अच्छा खासा परिचय था, तो उसकी बातचीत का सिलसिला बहुत ही लम्बा होता

था और इस बातचीत से उसे किसानों की अनेक समस्याओं की अच्छी जानकारी भी हो जाती थी। मार्क तिमोफ़ेयेविच का बड़ा भाई पावेल भी व्लादीमिर इल्यीच को लाभकर एवं उपयोगी बातें बताया करता था। वह अपने गांवों से लगी हुई सरकारी ज़मीनों को लगान पर लेकर फिर उन्हें अन्य किसानों को लगान पर उठा दिया करता था। वह अपने गांव में सबसे प्रसिद्ध व्यक्ति था तथा प्रति वर्ष स्थानीय सरकारी निकाय के लिये चुना जाता था। अपने वर्ग के अन्य व्यक्तियों की तरह वह भी अपने धन की वृद्धि करने तथा व्यापारी बनने की धुन में रहता। अन्त में वह व्यापारी बन भी गया।

उस समय मुझे यह देखकर बड़ा आश्चर्य होता था जब वोलोद्या इस अर्द्ध-साक्षर कुलक से, जिसके लिये आदर्शों का कोई मूल्य न था इतनी देर देर तक और इतना घुलमिलकर बातें किया करता। मुझे बाद में मालूम हुआ कि इस बातचीत के फलस्वरूप व्लादीमिर इल्यीच को किसानों की दशा, उनके भेदभावों तथा उनके बारे में गांवों के उच्चवर्ग के विचारों की जानकारी हुई थी। हमेशा की तरह वह पावेल तिमोफ़ेयेविच की कहानियाँ सुन कर ज़ोरों के कहकहे लगाया करता और पावेल को यह देखकर बहुत प्रसन्नता होती कि व्लादीमिर इल्यीच उसकी कृतियों को बड़े ध्यानपूर्वक सुनता था। वह व्लादीमिर इल्यीच की विद्वत्ता से बड़ा प्रभावित हुआ था। उसे यह बात कभी नहीं सूझी कि वोलोद्या यह सुनकर नहीं हंस रहा है कि गांव के मालदार व्यक्ति किन किन तिकड़मों से अपना काम निकालते हैं, अपितु वह नरोदनिकों पर और उनके इस सीधे सरल विश्वास पर हंस रहा है कि गांवों की जनता तथा कृषकों की जीवनचर्या रूढ़ियों से कितनी बंधी हुई हैं।

अपनी बातचीत में व्लादीमिर इल्यीच ने यह सिद्ध कर दिया था कि वह सभी किस्म के लोगों से प्रायः सभी विषयों पर वार्तालाप

कर सकता है और उनसे ऐसी बातें कबुलवा सकता है जिनकी उसे ज़रूरत होती थी। उसकी बातों ने यह भी प्रमाणित कर दिया था कि वह केवल सिद्धान्तों में नहीं व्यवहारिकता में विश्वास रखता है और अपने चारों ओर जो कुछ देखता है, जो कुछ सुनता है, उससे कुछ नसीहत लेता है, कुछ निष्कर्ष निकालता है। उसके अपने सिद्धान्त थे जिन पर वह अटल बना रहता। साथ ही अपने चतुर्दिक जीवन की सारी विशिष्टताओं को भी वह दृष्टिविगत न होने देता। उसकी कार्यनीति स्पष्ट थी और वह उस पर चलता था, परन्तु मातृभूमि का हित वह सर्वोपरि रखता। और यही दो बातें इल्यीच के महत्व और उसकी शक्ति का आधार थीं।

व्लादीमिर इल्यीच की युवावस्था में उसके इन गुणों को बहुत कम लोगों ने परखा था क्योंकि वे प्रायः उसके हंसी मज़ाक और कह-कहों के बीच छिप जाते। उसने अपने सिद्धान्तों को कभी भी दूसरों पर थोपने का प्रयत्न नहीं किया। खाली समय में शायद ही कोई उसकी तरह खुश मिज़ाज या खुश दिल नज़र आता हो। फिर भी वह अपने चारों ओर के जीवन और वातावरण का अध्ययन करता और ऐसी प्रत्येक बात को हृदयंगम कर लेता जो उसके काम में उसके लिये उपयोगी हो सकती थी अथवा जो उस कार्य में सहायक बन सकती थी जिसे पूरा करने के लिये वह कटिबद्ध रहता था।

व्लादीमिर इल्यीच ने अलाकायेव्का ग्राम में पाँच गर्मियाँ बिताईं। प्रत्येक बार गर्मी में वह तीन तीन चार चार महीनों के लिये वहां रहता। बेस्तूजेव्का ग्राम भी उसे प्रिय था जहाँ वह मार्क तिमोफ़ेयेविच के साथ उसके संबंधियों से मिलने जुलने जाया करता। वह इन गांवों के किसानों से प्रायः मिलता और उनसे उसे बहुत सी बातें मालूम होती रहतीं।

जब वह किसानों से उनकी जीवनचर्या के संबंध में बातें करता, तो खुद तो कम बोलता, अधिकतर यही प्रयत्न करता कि स्वयं वे ही अपनी बातें कहते रहें। वह अपने विश्वासों को अपने तक ही रखता और यह सब इसलिये नहीं करता था कि पुलिस की निगाह में चढ़े रहने के कारण उसे सतर्क रहना पड़ता था। वह जानता था कि किसानों से क्रांतिवाद और समाजवाद की बातें करना बेकार है। उसका कहना था कि यह संदेश उद्योगों में लगे हुए श्रमिक-वर्ग के लिये है और इसे वह तब तक अपने तक रखेगा जब तक कि सन्देश स्वयं उन तक न पहुंच जाय। खाली बातें बनाने से उसे चिढ़ थी। वह जानता था कि किसानों से केवल बातचीत कर लेने भर से ही कोई काम न चलेगा।

इस प्रकार एक छोटे से नगर में बसे हुए एक विजन फ़ार्म में लेनिन नाम का वह वीर और साहसी महापुरुष हुआ जिसने बाद में सोवियत संघ में साम्यवादी पार्टी की स्थापना की और जो उसे विजय-पथ पर ले चलने में समर्थ बना। अन्त में उसने स्वयं अपने सिद्धान्तों के अनुसार समाजवाद की स्थापना करने की दिशा में इस पार्टी का नेतृत्व किया।

समारा में अपने आवास-काल के समय तथा कज़ान-वास के पूर्व के एक वर्ष में वह सदा ही अपने को उस काम के लिये तैयार करता रहा जिसे उसे आगे चलकर करना था। परन्तु वे वर्ष व्लादीमिर इल्यीच के जीवन के शायद सबसे महत्वपूर्ण वर्ष थे, क्योंकि उन्हीं वर्षों में उसके क्रांतिवादी दृष्टिकोण में परिवर्तन हुआ था और उसकी विचारधारा में दृढ़ता आई थी जिसने बाद में स्थायी रूप धारण किया था।

व्ला. इ. उल्यानोव (न. लेनिन) के क्रान्तिकारी कार्यों का आरम्भ

समारा से पीट्रर्सबर्ग

व्लादीमिर इल्यीच ने क्रान्तिकारी कार्यों में भाग लेने के लिए १८९३ की शरद् ऋतु में समारा से पीटर्सबर्ग के लिए प्रस्थान किया। उन्होंने १८९१ में विश्वविद्यालय की उपाधि प्राप्त की थी लेकिन अब समारा में उनके कार्यों के लिए काफ़ी क्षेत्र न था। वहाँ उनका मस्तिष्क अशान्त रहता। उस समय तक उन्होंने समारा में मार्क्स के सिद्धान्तों का अच्छा-खासा अध्ययन कर लिया था।

यहाँ स्वभावतया यह प्रश्न हो सकता है कि जब उन्होंने १८९१ में विश्वविद्यालय की उपाधि प्राप्त कर ली थी तो वे १८९२ की शरद् ऋतु में ही पीटर्सबर्ग क्यों नहीं चले गये? समारा में उनके एक वर्ष और रहने का क्या उद्देश्य था?

मैं इस प्रश्न का उत्तर दिये देती हूँ। वे वहाँ पर अपनी माता के कारण ही पड़े रहे।

व्लादीमिर इल्यीच के बालकाल और उनकी यौवनावस्था का उल्लेख करते हुए मैं पहले ही कह चुकी हूँ कि वे भी हम सबकी तरह माता जी से कितना स्नेह और उनका कितना आदर करते थे। जिस संयम एवं सहनशीलता के साथ हमारी माता ने आपदाओं को झेला था उसके लिए वे सभी व्यक्ति जो उन्हें जानते थे उनकी प्रशंसा करते थे। हम बच्चे तो उनकी दूसरों से अधिक सराहना कर सकते थे, क्योंकि हमने उन्हें सदा बड़े पास से देखा-समझा था। अपने

सबसे बड़े बेटे को गँवा देने का महान् दुख भी उन्हें विचलित न कर सका उनमें अपनी मनोव्यथाओं को व्यक्त न होने देने की असाधारण क्षमता थी और इसी कारण वे अपने आंसुवों को पी जातीं और उनके मुखमंडल पर आन्तरिक वेदना के लक्षण प्रकट न होने पाते। वे समझती थीं कि पति की मृत्यु के बाद उनके बच्चों की देख-रेख का कार्य केवल उन्हीं को करना है। अतएव वे अब अपने बच्चों की देखभाल पहले से कहीं अधिक रखती थीं।

उन्होंने अपनी ओर से इस बात का पूरा प्रयत्न किया कि उनके छोटे छोटे बेटी-बेटों पर विपत्ति की साया न पड़े, वे अपने लिए उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करें और सदा फूलें फलें। वे अपने बच्चों के क्रान्ति-प्रिय स्वभाव से भली भांति परिचित थीं। बच्चों के प्रति उनका स्नेह इतना निष्कपट एवं निःस्वार्थ था और उन्होंने अपने बच्चों के सामने जो आदर्श प्रस्तुत किया था वह इतना महान् था कि स्वयं वे भी उनके जीवन को सुखमय बनाने तथा उनके मानसिक क्लेश को कम करने की दिशा में सदैव प्रयत्नशील रहते। जिस वर्ष व्लादीमिर इल्यीच को विश्वविद्यालय की उपाधि मिली उसी वर्ष हमारे परिवार पर एक और विपत्ति आ पड़ी—हमारी बहन ओल्गा का टायफ़ायड के कारण स्वर्गवास हो गया।

यह घटना बसन्त ऋतु की है जब व्लादीमिर इल्यीच परीक्षा देने के लिए पीटर्सबर्ग आये ही आये थे। उस समय उन्होंने अपनी बहन को एक अस्पताल में भर्ती करा दिया था (बाद में मालूम हुआ कि यह अस्पताल बहुत रद्दी था) और जब उसकी दशा बिगड़ने लगी, तो उन्होंने तार द्वारा माताजी को भी बुलवा लिया। ओल्गा की मृत्यु के बाद के कुछ दिनों तक व्लादीमिर इल्यीच अकेले ही अपनी माता के साथ रहते रहे, परन्तु बाद में वे उन्हें समारा ले आये। इस समय भी उन्होंने अपनी माता को, इतना बड़ा

आघात सहने के बाद भी, साहस और दया की प्रतिमूर्ति ही पाया।

माताजी ने अपनी वेदनाओं को अन्दर ही अन्दर पी जाने की कोशिश की परन्तु इसका स्वाभाविक परिणाम यह हुआ कि उन्हें बड़े कष्ट झेलने पड़े। ओल्गा एक योग्य लड़की थी। शक्ति और स्फूर्ति तो उसमें कूट कूटकर भरी थी।

१८९० की शरद् ऋतु में ओल्गा महिलाओं के लिए निर्धारित उच्च पाठ्यक्रमों का अध्ययन करने के निमित्त पीटर्सबर्ग गई हुई थी क्योंकि समारा की तो बात ही क्या उस समय स्वयं कज़ान में भी महिलाओं के कोई कालेज नहीं थे। उसमें अध्ययन की अशान्त पिपासा थी।

इस पाठ्यक्रमों के प्रथम वर्ष में ही उसने अपनी बुद्धिमत्ता तथा अथक परिश्रम कर सकने की क्षमता का परिचय दिया था। उसकी मित्र—ज़०प० नेवज़ोरोवा-क्ज्हिजानोव्स्काया, तोरगोन्स्काया और स्वर्गीया अ०अ० यकूबोवा—उसके विषय में यही कहा करतीं कि ओल्गा एक प्रतिभाशाली और योग्य लड़की थी और हम सबों के बीच बड़ी विख्यात थी। जब कभी हमारी समझ में कोई बात न आती, तो हम उसके पास पहुंचते और बीमार होते हुए भी वह परीक्षाओं के पूर्व रसायनशास्त्र तथा अन्य विषयों में अपने मित्रों की कठिनाइयों का निवारण किया करती। इन सब के कारण उसका स्वास्थ्य और भी गिरता रहा। वह सार्वजनिक कार्यों में भाग लेने के अवसर भी खोजती रही; और यदि वह इस क्षेत्र में क़दम रखती, तो यह निश्चित था कि वह एक उच्चकोटि की और कर्तव्य परायण क्रान्तिकारी महिला होती।

अपनी पुत्री की मृत्यु से माता जी को जो कष्ट हो रहा था वह केवल इसी बात से कुछ कम हो सकता था कि उनके बच्चे उनके

साथ रहते रहें और इसीलिए दूसरे वर्ष वोलोद्या को समारा में रहना पड़ा।

परन्तु उस अन्तिम वर्ष के आख़िर तक वोलोद्या की आत्मा बेचैन हो उठी। वह एक ऐसे स्थान पर जाने को उत्सुक हो उठा जहाँ जीवन हो, क्रान्तिकारी कार्यों के लिए व्यापक क्षेत्र हो। उस समय समारा एक ओर तो प्रमुख निष्कासन क्षेत्र साइबेरिया और दूसरी ओर राजधानियों और विश्वविद्यालय के नगरों जैसे सांस्कृतिक केन्द्रों के बीच एक छोटे से नगर के रूप में बसा हुआ था जहाँ वोलोद्या के लिए कार्य कर सकने की गुंजाइश प्रायः नहीं थी।

इस स्थल पर मुझे एक घटना याद आ रही है। मैं और वोलोद्या चेखोव की एक कहानी "वार्ड नं० ६", जो उसी समय प्रकाशित हुई थी, के संबंध में वाद-विवाद कर रहे थे। (यहाँ यह कह देना असंगत न होगा कि वोलोद्या चेखोव की कहानियों का बड़ा शौकीन था)। यह कहानी उसी जाड़े की ऋतु में एक पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। वोलोद्या ने इस कहानी की प्रशंसा करते हुए कहा था कि उसने उन्हें बड़ा प्रभावित किया है। इस प्रभाव का वर्णन उन्होंने कुछ इन शब्दों में किया था—"जब कल रात मैंने कहानी समाप्त की, तो सचमुच मैं डर सा गया। मैं अपने कमरे में बैठा न रह सका, खड़ा हो गया और बाहर निकल गया। ऐसा लगा कि मुझे भी 'वार्ड नं० ६' में बन्द कर दिया गया है।" यह घटना अधिक रात बीते घटी थी जब हम सब अपने अपने कमरों में सोने चले गये थे और हम में से कुछ तो सो भी गये थे। उस समय वोलोद्या से बातचीत करनेवाला कोई न था।

इन शब्दों से उनके मानसिक विचारों की एक झलक मिल जाती है। मैंने समझ लिया था कि समारा वोलोद्या के लिए एक प्रकार का "वार्ड नं० ६" था और वह वहाँ से उसी निराशा के साथ निकल

भागना चाहते थे जैसे कि चेखोव की कहानी का दुखी और बीमार पात्र निकल भागा था। अब उन्होंने दृढ़ निश्चय कर लिया था कि वे अगली शरद् तक अवश्य चले जायंगे। किन्तु जब यह सवाल आया कि कहाँ जाया जाय तब उन्होंने तय किया कि वे मास्को न जायँगे। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि उनका शेष परिवार उनके छोटे भाई दिमित्री के साथ मास्को जा रहा था क्योंकि दिमित्री को मास्को विश्वविद्यालय में भर्ती होना था। व्लादीमिर इल्यीच ने पीटर्सबर्ग में बसने का निश्चय किया जहाँ के वातावरण में जीवन था और जो बौद्धिक विकास तथा क्रान्तिकारी सँघर्ष इन दोनों के लिए प्रसिद्ध था।

उस ज़माने में पीटर्सबर्ग में मास्को को "एक बड़ा गांव" समझा जाता था। इसमें सन्देह नहीं कि उस समय भी मास्को में प्रान्तीय तरह की बहुत सी चीज़ें थीं और वोलोद्या को उनसे सन्तोष हो सकता था। इसके अतिरिक्त उसे अपने परिवार का भी ध्यान था। यदि वह परिवार के साथ रहा होता तो उसके लिए खतरनाक होता, क्योंकि वहाँ वह श्रमिकों से सम्पर्क स्थापित करना तथा निष्ठापूर्वक अपना क्रान्तिवादी कार्य आरम्भ करना चाहता था।

मास्को में बस जाने के बाद शरद् ऋतु के अन्त में माता जी के साथ मैं भी वोलोद्या से मिलने पीटर्सबर्ग गई। माताजी वहाँ एक विशेष उद्देश्य से गई थीं। उन्हें वोलोद्या के लिए जाड़े का एक ओवर-कोट ख़रीदना था।

वोलोद्या को दैनिक जीवन का कोई व्यावहारिक अनुभव न था। वे अपने आप चीज़ें ख़रीदना पसन्द न करते और यह सीख भी न सके कि चीज़ें कैसे ख़रीदी जाती हैं। अतएव या तो उनके लिए यह काम स्वयं मैं करती थी अथवा माताजी। इस मामले में वे ठीक पिताजी के समान थे, क्योंकि पिताजी भी अपने लिए कपड़े पसन्द

करने और उन्हें ख़रीदने के लिए माताजी पर निर्भर रहते थे। पिताजी को कभी इस बात की परवाह न रहती कि वे क्या पहने हैं और उनके कपड़े कैसे हैं। वे अपने कपड़ों के इतने अभ्यस्त हो चुकते थे कि यदि कपड़ों की बात केवल उन्हीं पर छोड़ दी जाती तो वे उन्हें कभी न बदलते। पिताजी की इस आदत का भी वोलोद्या पर प्रभाव पड़ा था।

नये मित्र और नये सम्पर्क

पीटर्सबर्ग में आने पर व्लादीमिर इल्यीच बड़ी सतर्कता के साथ और धीरे धीरे नये नये लोगों से मित्रता पैदा करने में लग गये। उन्होंने समझ लिया था कि अलेक्सान्द्र इल्यीच का भाई होने के कारण वे शासनाधिकारियों की निगाह में अवांछनीय व्यक्ति थे। उन्होंने प्रायः देखा था कि युवकगण कुछ ठोस कार्रवाई करने के पहले ही उतावली में कहे गये कुछ थोड़े से शब्दों तक के कारण जेलों में ठूंस दिये जाते थे।

वे खाली बातों और बेकार के विवादों से सदा अलग रहे। वे सदा यही चाहते रहे कि उनकी योग्यता और बुद्धिमत्ता का उपयोग श्रमिक वर्ग के लिए ही हो क्योंकि अन्ततः इसी वर्ग को देश में क्रान्ति पैदा करनी है। उन्होंने ऐसे लोगों से दोस्ती बढ़ाई जिनके विचार उनकी अपनी विचारधारा के अनुकूल थे और जो यह जानते थे कि क्रान्ति पैदा करने की ताक़त न तो किसानों में ही है और न देश के बुद्धिजीवी वर्ग में ही। इसमें सन्देह नहीं कि इस वर्ग ने कुछ हिम्मती, निःस्वार्थी और आत्म-त्यागी पुरुष पैदा किये, परन्तु इनकी संख्या गिनी चुनी ही थी। कुछ लोग समझते थे कि किसानों की विचारधारा समाजवादी क़िस्म

की है और वे अपने बुजुर्गों के साम्यवादी विश्वासों और रीति-रिवाज़ों के संरक्षक रहे हैं। व्लादीमिर इल्यीच सदैव ऐसे व्यक्तियों की तलाश में रहते जो, स्वयं उन्हीं की तरह, इस बात में विश्वास रखते हों कि रूस में या तो क्रान्ति हो ही नहीं सकती (प्लेखानोव के शब्दों में) और यदि हो सकती है तो केवल श्रमिक वर्ग द्वारा ही।

उस समय ऐसे व्यक्तियों, सामाजिक-जनवादियों, की संख्या बहुत थोड़ी थी। क्रान्ति के समर्थक बहुत से बुद्धिजीवियों के विचार नरोदनिकों अथवा "नरोदनया वोल्या" द्वारा प्रचारित सिद्धान्तों के अनुरूप थे, परन्तु चूंकि उनका संघटन नष्ट कर दिया गया था अतएव अब केवल ढोल बजाने तथा दिखावे को छोड़ कर कोई ठोस काम नहीं हो रहा था। व्लादीमिर इल्यीच इस प्रकार की निरर्थक बातों से दूर रहना चाहते थे। इसके अतिरिक्त पुलिस तथा शासनाधिकारी "नरोद-नया वोल्या" के सदस्यों को एक ख़तरा समझते, क्योंकि वे हिंसात्मक तथा आतंकवादी कार्यों से अपने जीवन को ख़तरे में डालने से बाज़ न आते थे। ये अधिकारी इन सदस्यों की अपेक्षा सामाजिक-जनवादियों को कम ख़तरनाक समझते थे, क्योंकि वे केवल श्रमिकों में उत्तेजना फैलाने का कार्य शांतिपूर्वक कर रहे थे। उनके बारे में पुलिस विभाग का डाइरेक्टर ज़्वोल्यान्स्की कहा करता था "ये तो छोटे छोटे दल हैं। दूसरों तक प्रभावकर तरीक़े पर उनकी आवाज़ पहुंचने में अभी बहुत समय लगेगा। हो सकता है इसमें ५० वर्ष लग जायं।"

सामाजिक-जनवादियों के बारे में बहुत कुछ इसी प्रकार की धारणा प्रगतिशील समाज में भी फैलती जा रही थी। उस समय के मिखाइलोव्स्की जैसे विद्वानों की भी मार्क्स के सिद्धान्तों के बारे में बड़ी ग़लत धारणा थी। जब स्वयं मिखाइलोव्स्की का यह मत था कि

में नहीं समझता कि देश में क्रान्ति पैदा करने में सामाजिक-जनवादियों का कुछ भी महत्व है, तो साधारण जनता की तो बात ही क्या थी। मार्क्स के सिद्धान्तों को शायद ही कोई पढ़ता रहा हो। लोग तो सामाजिक-जनवादियों के कामों का अन्दाज़ मुख्यतया यही देख कर लगाते थे कि वे जर्मनी में संसदीय कार्यों को किस तरह निभा रहे हैं। उस समय रूस में संसद् की कोई कल्पना भी नहीं करता था और असंयमी युवकगण, जो क्रान्ति द्वारा संघर्ष पैदा करने के लिए लालायित थे, यह समझ रहे थे कि सामाजिक-जनवादी एक सरल और सुगम मार्ग अपनाने की बातें सोचते हैं, उस दिन की प्रतीक्षा कर रहे हैं जब देश में स्वातंत्र्य-सूर्य का उदय होगा, और इस बीच वे मार्क्सवाद के अध्ययन में लगे हुए हैं। ऐसे लोगों का विचार था कि मार्क्सवाद लोगों की जड़ता और शक्तिहीनता को छिपाने के लिए एक आवरण तथा वृद्धावस्था में दार्शनिकों के समान तर्क करने की एक कला है और अपने स्वार्थों की पूर्ति का एक साधन भी।

कारावास तथा निष्कासन का दंड भुगत कर लौटे हुए कर्मठ क्रान्तिकारियों का भी, जिनकी तत्कालीन नवयुवक बड़ी इज़्ज़त करते थे, मार्क्स के शिष्यों के बारे में यही मत था। अपनी युवावस्था में इन लोगों ने सर्वशक्तिसम्पन्न निरंकुश शासन के ख़िलाफ़ ज़ोरदार आवाज़ उठाई थी। अपनी पुस्तकों को ताख पर रख कर तथा अध्ययन की चिन्ता न करते हुए उन्होंने जनता से सम्पर्क स्थापित किया था। ये व्यक्ति जब नई पीढ़ी के नवयुवकों को देखते तो उन्हें दुख और निराशा होती क्योंकि उनका विचार था कि ये नवयुवक अस्वाभाविक रूप से गम्भीर प्रकृति के थे और अपने समय को दर्शनशास्त्र और राजनीतिक अर्थशास्त्र के अध्ययन में लगाना अधिक उचित समझते थे। परन्तु इनके प्रयासों के होते हुए भी शासनतंत्र में कोई सुधार नहीं हुए और सर्वसाधारण की दशा वैसी ही संकटापन्न बनी रही। वे

व्यक्ति इन नवयुवकों को उदासीन प्रकृति का समझते और उनके लिए नेकरासोव की इन पंक्तियों का प्रयोग करते थे—

कोई उत्तम, श्रेष्ठ-नागरिक
देश-जाति के संकट के प्रति
कभी उदासी नहीं दिखाता।
क्योंकि नहीं हो सकता कुछ भी उसके हित में
और अधिक अपमानजनक
शायद दुनिया में।*

प्रत्येक ऐतिहासिक काल की अपनी अपनी आवश्यकताएँ होती हैं और प्राय: ऐसा होता है कि पुरानी पीढ़ी के लोगों के विचार तथा आदर्श नई पीढ़ी के नवयुवकों के अनुरूप नहीं हो पाते, क्योंकि वे परिवर्तित सामाजिक दशाओं में बौद्धिक जीवन में प्रवेश करते हैं। उस काल में रूस की राजनैतिक स्थिति में परिवर्तन नहीं हुआ था, परन्तु वहाँ की अर्थव्यवस्था में बड़े बड़े रद्दोबदल हो रहे थे। उस समय पूंजीवाद ज़ोरों के साथ बढ़ रहा था और ऐसे लक्षण प्रकट हो रहे थे कि रूस में भी विकास का वही मार्ग अपनाया जायगा जिसे पश्चिमी देशों ने अपनाया था और वहीं की भांति हमारे देश में भी सर्वहारा एक भावी क्रान्ति के अग्रणी बनेंगे।

जो व्यक्ति नरोदनिकों के पुराने विचारों से चिपके हुए थे वे यह नहीं समझ पा रहे थे कि दोष इस बात में नहीं है कि लोग देश की ओर से उदासीन हैं अथवा उनके उद्देश्य स्वार्थपूर्ण हैं, अपितु यह तो विकास की एक स्वाभाविक गति है जिससे मोर्चा लेने के लिए स्वार्थों की बलि देने की भावना ही काफ़ी नहीं है। वे लोग यह

---

* कविता का शीर्षक है "कवि और नागरिक"—सम्पादक।

समझते थे कि मार्क्सवादी आंख मूंद कर पश्चिमी देशों का अनुसरण कर रहे हैं और उन्हीं देशों की भांति यहाँ के किसानों को भी कल-कारख़ानों में जोत देना चाहते हैं। इन लोगों का विचार था कि सभी किसान जन्मजात साम्यवादी हैं और उनके इस स्वभाव के कारण रूस को पूंजीवाद का कंटकाकीर्ण मार्ग छोड़ कर अन्य मार्ग अपनाने में सहायता मिलेगी क्योंकि वह, विशेषकर अपने प्रथम चरण में, जनता के असीम क्लेशों और कष्टों का प्रतीक है।

ऐसे व्यक्ति अपने प्रवक्ता, व० व० (वोरोन्त्सोव), युज्हाकोव और अन्य नरोदनिकों द्वारा सदा यही कहा करते थे कि "पूंजीवाद का प्रश्न बीच में लाये बिना ही कार्यक्षेत्र में उतरना ठीक होगा" और वे सदा यही सिद्ध करने का प्रयत्न करते कि उन्हीं का मार्ग ठीक है। मार्क्सवादियों के प्रति इन व्यक्तियों के रोष की तुलना उस व्यक्ति के रोष से की जा सकती है जो शल्य-क्रिया की अनिवार्यता नहीं समझता और जब वह शल्य-क्रिया करने की बजाय शल्य-चिकित्सक को शांति के साथ रोगी को शल्य-क्रिया के समस्त पीड़ाओं और असुविधाओं को सहन कराते देखता है, तो उसकी निर्दयता पर खीझ उठता है।

व्लादीमिर इल्यीच ने "बिना पूंजीवाद को बीच में लाये हुए ही कार्य करने की" प्रवृत्ति के विरोध में अपने तत्कालीन भाषणों तथा अपने उन आदि लेखों में ज़ोरदार आवाज़ उठाई जो मुख्यतया नरोदनिक विचारों के खंडन में लिखे गये थे। इनमें सबसे विशिष्ट लेख वे थे जिनका उल्लेख पहले किया जा चुका है अर्थात् "'जनता के मित्र' कौन कौन हैं और वे सामाजिक-जनवादियों का किस प्रकार विरोध करते हैं"। इस लेख की नक़ल की हुई कुछ प्रतियाँ नवयुवकों में बांटी गई थीं जिनके मध्य यह लेख इतना लोकप्रिय हुआ कि इन प्रतियों को एक के बाद दूसरे से होकर अनेकानेक हाथों में जाना पड़ा और आख़िर में उनके पृष्ठ तक फट फटा कर बरबाद हो गये।

१८६३ की शीत ऋतु में, जब व्लादीमिर इल्यीच के लेख प्रकाश में भी न आये थे, उन्होंने मास्को में नरोदनिकों के विरुद्ध भाषण किये। यह बात उस समय की है जब व्लादीमिर इल्यीच बड़े दिन की छुट्टियों में हमसे मिलने आये थे। छुट्टियों के काल में प्राय: सायं कालीन पार्टियाँ हुआ करती थीं। एक ऐसी ही पार्टी में, जो कि उनके कुछ विद्यार्थी-मित्रों के एक फ़्लैट में हुई थी, उन्होंने पारस्परिक वार्तालाप के दौरान में नरोदनिकों के विरुद्ध कुछ उद्‌गार व्यक्त किये और उसका परिणाम यह हुआ कि दोनों की अच्छी ख़ासी मुठभेड़ हो गई। उनका मुख्य प्रतिद्वंद्वी प्रसिद्ध नरोदनिक लेखक व०व० (वोरोन्त्सोव) था। व्लादीमिर इल्यीच की व०व० से पहले कभी भेंट न हुई थी इसलिए वे यह न जान पाये थे कि उनकी मुठभेड़ किससे हो रही है। बाद में व्लादीमिर इल्यीच ने अपना गुस्सा अपने उन मित्र* पर उतारा जो उन्हें बिना यह बताये हुए वहाँ ले गये थे कि उनका प्रतिद्वंद्वी कौन है। इसमें संदेह नहीं कि वहाँ पर व्लादीमिर इल्यीच ने जिस प्रकार से बातचीत की उससे यह प्रकट होता था कि उन्हें अपने विषय का अच्छा ज्ञान है और वे अपने विचारों में पूर्ण आस्था रखते हैं। व० व० के समर्थकों ने इस नवयुवक की बातों को अनुचित समझा था, परन्तु मार्क्सवादी विचारधारा के नवयुवकों को इस अप्रत्याशित समर्थन से बड़ी प्रसन्नता हुई थी। हाँ, उस समय उन्हें निराशा अवश्य हुई जब वह अपरिचित व्यक्ति व० व० से तर्क करने के तुरन्त बाद वहाँ से चला गया।

बाद में व्लादीमिर इल्यीच को अपने वहाँ जाने पर खेद भी हुआ था। वास्तविकता यह थी कि जिस अधिकार के साथ व०व० अपने पुराने एवं पिटे-पिटाये विचारों का प्रतिपादन कर रहा था

---

* म० प० यास्नेवा-गोलुबेवा — अ०ए०

उससे व्लादीमिर इल्यीच खीज उठे थे और अपरिचितों के सामने बिना भेद-भाव के उन्होंने अपने विचारों को व्यक्त कर डाला था। इस समय वे मास्को की पुलिस के चंगुल से बच गये थे क्योंकि एक तो उस समय की पुलिस अपनी छुट्टियों में आमोद-प्रमोद में व्यस्त थी और दूसरे व्लादीमिर इल्यीच को उनके नाम से वहां कोई जानता भी न था। लोग उन्हें "पीटर्सबर्ग से आया हुआ व्यक्ति" समझते थे। परन्तु उनके भाषण ने मास्को के नवयुवक मार्क्सवादियों पर बड़ा प्रभाव डाला क्योंकि उसमें बहुत-सी समस्याओं पर प्रकाश डाला गया था और उन्हें आगे बढ़ने की प्रेरणा दी गई थी।

उस शीत काल में व्लादीमिर इल्यीच के पीटर्सबर्ग में अधिक मित्र न बन सके थे। जिन थोड़े लोगों से उन्होंने मित्रता की थी वे उद्योगशास्त्रियों के वर्ग के कुछ सदस्य थे। यह मित्रता क्रासिन भ्राताओं के कारण हुई थी जिनका परिचय उन्होंने नीज्नी नोवगोरोद में अपने मित्रों द्वारा प्राप्त किया था। उनके कुछ मित्र ऐसे श्रमिक भी थे जो राजनीतिक समस्याओं को दूसरों से अधिक समझते थे और जो सक्रिय कार्यकर्त्ता थे। इनमें से एक बाबुशकिन था (जिसे १९०५ की क्रान्ति के पश्चात् साइबेरिया में गोली से उड़ा दिया गया था) और दूसरा व० अ० शेलगुनोव, जो इस समय बिल्कुल अन्धा है और मास्को में अपने संस्मरण सुनाया करता है।*

व्लादीमिर इल्यीच ने प० ब० स्त्रुवे तथा अ० न० पोत्रेसोव जैसे वैधानिक मार्क्सवादी विचारधारा के लेखकों से भी परिचय प्राप्त किया। उन्हीं की तरह ये लेखक भी नरोदनिकों के विरुद्ध संघर्ष कर रहे थे और इसीलिए दोनों को मित्रता के लिए समान आधार मिल गया। पोत्रेसोव बाद के वर्षों में भी उनका निकट का मित्र बना रहा।

---

*व० अ० शेलगुनोव की मृत्यु १९३९ में हुई थी—सम्पादक।

दोनों ही "इस्क्रा" में साथ साथ काम करते रहे और उस समय तक एक दूसरे के बिल्कुल निकट रहे जब तक कि १९०३ में रूसी सामाजिक-जनवादी श्रमिक दल की द्वितीय महासभा में दोनों के बीच मत-भेद नहीं हो गया। स्त्रुवे से कंधे से कंधा मिला कर नरोदनिक विचारधारा के विरुद्ध संघर्ष करते हुए व्लादीमिर इल्यीच ने उसमें विरोधी प्रवृत्तियों की झलक पायी थी। उन्हें ऐसा अनुभव हुआ था कि स्त्रुवे क्रान्तिकारी नहीं है, वह मार्क्सवाद के सिद्धान्तों को पूर्णतया नहीं मानता और उसका मार्क्सवाद केवल वैधानिक शैक्षिक तथा पूंजीवादी प्रकार का है। व्लादीमिर इल्यीच ने यह अनुभव किया था कि स्त्रुवे एक भावी वैधानिक जनवादी* है। फलत: उन्होंने क० तूलिन के नाम से अपने एक लेख में उसकी नीति-परिवर्तन की, जो भविष्य में खतरनाक सिद्ध हो सकती थी, भर्त्सना की थी। यह लेख "हमारे आर्थिक विकास का स्वरूप" शीर्षक एक संग्रह में, सम्मिलित किया गया जिसे पोत्रेसोव ने १८९५ में प्रकाशित किया था।

उस काल में प्लेखानोव ने बेल्तोव के कल्पित नाम से "इतिहास की मानिस्टिक विचारधारा" शीर्षक एक पुस्तक प्रकाशित की थी जिसमें नरोदनिकों के विरोध में बहुत कुछ कहा गया था और क्रान्तिकारी मार्क्सवादियों की विचारधाराओं का स्पष्टीकरण किया गया था। इस पुस्तक पर केवल उसके शीर्षक के कारण सेन्सर की कैंची

---

* "वैधानिक-जनवादी पार्टी" रूस की एक मुख्य पूंजीवादी (उदार-राजतंत्रवादी पूंजीवादी) पार्टी थी जो अक्तूबर १९०५ में स्थापित की गई थी। जनवाद के नाम से अपनी अस्लियत छिपाते और "जन-स्वातंत्र्य दल का नाम लेते हुए वैधानिक-जनवादियों ने कृषक वर्ग को अपने पक्ष में फोड़ने का प्रयत्न किया था। उन्होंने एक वैधानिक राजतन्त्र के रूप में ज़ारशाही कायम रखने की भी कोशिश की थी—सम्पादक।

नहीं चली जब कि पोत्रेसोव का उपर्युक्त लेख-संग्रह तूलिन के लेख के कारण सेंसर द्वारा रोक दिया गया था यद्यपि उस लेख-संग्रह के अन्य लेखों में अनेकानेक आंकड़ों के कारण कई स्थानों पर रुक्षता थी। यह पुस्तक जला डाली गई और उसकी केवल थोड़ी-सी ही प्रतियाँ बचाई जा सकीं। अतएव व्लादीमिर इल्यीच के उस लेख को अधिकांश व्यक्ति न देख सके।

इस प्रकार वैधानिक मार्क्सवाद तथा सामाजिक-जनवादियों के क्रान्तिकारी मार्क्सवाद में क्या अन्तर है इसका स्पष्टीकरण भी सेन्सर की कृपा से लोगों को हो गया। कुछ क्रान्तिकारी नरोदनिक यह समझने लग गये थे कि उनके सामाजिक-जनवादी प्रतिद्वंद्वी भी क्रान्तिकारी हैं और ये प्रतिद्वंद्वी वैधानिक मार्क्सवादियों से भिन्न हैं। वैधानिक मार्क्सवादियों का कहना था कि रूस को "पूँजीवाद से सबक़ लेना चाहिए" (स्त्रुवे की "रूस के आर्थिक विकास की आलोचनात्मक टिप्पणियाँ" शीर्षक पुस्तक का मुद्रालेख), जबकि उन्होंने इस संबंध में अपने कोई निष्कर्ष नहीं निकाले थे कि वर्तमान सामाजिक व्यवस्था से मोर्चा लेना अवश्यक है या नहीं।

"नरोदनया वोल्या" के कुछ युवक सदस्य, जो इस बात से सहमत न थे कि रूस में ग्राम शासनप्रणाली (कम्यून) ही सर्वाधिक आवश्यक है (जैसा कि हम अलेक्सान्द्र इल्यीच और उसके साथियों के उदाहरण से जान ही चुके हैं), सामाजिक-जनवादियों के निकट सम्पर्क में आने लगे थे, क्योंकि वे समझने लगे थे कि ये लोग राजनीतिक संघर्ष से भागते नहीं, अपितु अपने ध्वजों तक को राजनीतिक नारों से सुशोभित करते हैं।

"नरोदनया वोल्या" के कुछ सदस्यों को विचारधारा में यह नया परिवर्तन होने का प्रमाण हमें उस समय भी मिला जब कि उसकी पीटर्सबर्ग शाखा ने, जिसके पास (लाख़्ता में) अपना निजी

मुद्रणालय था, अपनी ओर से सामाजिक-जनवादी पत्रकों और पैम्फ़्लेटों को छापने का प्रस्ताव रखा। उनका कहना था कि सामाजिक-जनवादियों से उनका केवल एक ही बात में मतभेद था और वह यह थी कि वे (सामाजिक-जनवादी) क्रान्ति को केवल श्रमिकों तक ही सीमित कर देना चाहते थे तथा समाज के अन्य वर्गों को उसमें सम्मिलित न होने देना चाहते थे। व्लादीमिर इल्यीच के बहुत से पैम्फ़्लेट लाख़्ता मुद्रणालय में छपे थे। उनमें उनका "अर्थदंड विषयक" एक पैम्फ़्लेट भी था। उसका दूसरा पैम्फ़्लेट, जो "हड़ताल विषयक" था, उस समय नष्ट कर डाला गया जब मुद्रणालय पर छापा मारा गया था।

यह बात बाद की है। व्लादीमिर इल्यीच ने पीटर्सबर्ग में अपना पहला जाड़ा व्यतीत किया। तत्पश्चात् वे १८९४ में गर्मी की ऋतु में सपरिवार कुज़मिन्की चले आये जो मास्को-कुर्स्क रेलवे लाइन पर मास्को के निकट बसा हुआ एक गांव था। वहाँ वे प्राय: अकेले रहने लगे और अपने अध्ययन में लग गये। यहाँ उन्होंने बहुत अधिक पढ़ा। मनोरँजन के लिए वे अपने छोटे भाई तथा बहन के साथ आस-पास बहुत दूर तक घूमने निकल जाते और रास्ते में उन्हें सामाजिक-जनवाद के मूल सिद्धान्तों को समझाया करते। वे मास्को के कुछ सामाजिक-जनवादियों से भी मिले जिनमें प्रमुख थे — मित्सकेविच, जिनसे उनकी नीज्नी नोवगोरोद की जानपहचान थी, गानशिन तथा मसलेनिकोव भ्राता। इन साथियों ने उनकी "'जनता के मित्र' कौन कौन हैं और वे सामाजिक-जनवादियों का किस प्रकार विरोध करते हैं?" शीर्षक नोटबुकों को छपाने का ज़िम्मा लिया और यह संग्रह मास्को और पीटर्सबर्ग में, १८९४ की शरद ऋतु में, मिमियोग्राफ़ के रूप में प्रकाशित हुआ।

मुझे उस समय की बात याद है जब मैंने मिखाइलोव्स्की के विषय में लिखी गई उनकी उन टिप्पणियों को मास्को में तलाश किया था जिन्हें हस्तलेख में पढ़ने का मुझे तब तक समय नहीं मिल सका था।

यह कार्य आसान न था क्योंकि मिखाइलोव्स्की ने सामाजिक जनवादियों के विरुद्ध जो विषवमन किया था उससे लोगों में रोष की लहर व्याप्त हो गई थी और इसके लिए उसे बहुत से जवाब दिये गये थे जो या तो हस्तलेखों के रूप में या आदिकालीन भ्रष्ट छपाई के रूप में मास्को में बांटे जा रहे थे। ये जवाब वैधानिक तरीक़े पर नहीं छापे जा सकते थे। वे मिखाइलोव्स्की के विरोधों की विशेष रूप से एक घृणित प्रतिक्रिया के रूप में थे। वह जानता था कि वह ऐसे लोगों का विरोध कर रहा है और उन्हें बदनाम कर रहा है जिन्हें जवाब देना नहीं आता।

मेरी ढूंढ-तलाश में मेरी सहायता करने के लिए मेरे मित्रों ने मुझे उपर्युक्त जवाबों में से दो या तीन सुनाये भी थे और कहा था कि "एक जवाब तो बड़ा मौंजूं है, परन्तु उसकी शब्दावली ज़रा तीखी है"।

"जैसे?" मेरे मुंह से निकल पड़ा।

"जैसे यह कहना कि मिखाइलोव्स्की ने अपने आपको कढ़ाई में डाल दिया"।

"हाँ, हाँ, मुझे यही चाहिए, कृपया ला दें," मैंने उत्तर दिया, क्योंकि मुझे विश्वास था कि ये उद्‌गार केवल वोलोद्या की लेखनी से ही निकल सकते हैं। बाद में हम लोग इस बात पर एक साथ ख़ूब हंसे थे कि मैंने वोलोद्या की शब्दावली को किस तरक़ीब से पहचाना था।

'अर्थवादियों' से संघर्ष

नरोदनिकों तथा "वैधानिक मार्क्सवादियों" के अलावा व्लादीमिर इल्यीच की मुठभेड़ें तथाकथित "अर्थवादियों" से भी हुईं। इन अर्थवादियों के मतानुसार श्रमिकों द्वारा राजनीतिक संघर्ष छेड़े जाने तथा

उनके मध्य आन्दोलन शुरू करने तथा उत्तेजना फैलाने की कोई आवश्यकता न थी। उनका कहना था कि हमें श्रमिकों की दैनिक आवश्यकताओं और माँगों के दृष्टिकोण से, एतत्संबंधी उनकी समस्याएँ हल करने के लिए, स्वाभाविक तथा समुचित ढंग से अपनी आवाज़ उन तक पहुँचाने का प्रयत्न करना चाहिए। (ये श्रमिक राजनीतिक दृष्टि से अशिक्षित थे और अभी तक ज़ार में उनका विश्वास बना हुआ था)। इस समय साधारण जनता के हित में अपने प्रयास जारी रखना आवश्यक था। उस काल में यह ज़रूरी था कि उन्हें सचेत किया जाय और उनमें यह बात भर दी जाय कि वे मनुष्य हैं और उनके साथ मानवोचित व्यवहार होना चाहिए और यह कि उनका उद्धार तभी हो सकता है जब वे सब आपस में मिलजुलकर एक हों और इस एकता को क़ायम रखने के लिए प्राणपण से जुट जायँ। परन्तु जिन आधारों पर श्रमिकों का संगठन किया जा सकता था वे थीं उनकी तात्कालिक और प्रत्यक्ष आवश्यकताएँ जिनमें से पहली और सबसे ज़रूरी थी मालिकों के स्वच्छन्द और मनमाने कार्यों के ख़िलाफ़ तीव्र विरोध। मालिकों द्वारा अनेकानेक तिकड़मों से उत्तरोत्तर काम के घंटे बढ़ाने और मज़दूरियाँ काट लेने के विरुद्ध आवाज़ बुलन्द करना, खाने की छुट्टी में गर्म पानी की व्यवस्था, श्रमिकों को सार्वजनिक स्नानगृहों का उपयोग करने के लिए शनिवार को जल्दी छुट्टी दी जाने की व्यवस्था, अनुचित जुर्मानों की समाप्ति तथा अभिमानी और दुष्ट फोरमैनों का निकाला जाना आदि ऐसी माँगें थीं जिन्हें नया से नया और सबसे पिछड़ा हुआ मज़दूर तक समझ सकता था और उसे इन आधारों पर संघटित किया जा सकता था।

श्रमिकों ने अपनी इन दिन-प्रतिदिन की कठिनाइयों को दूर करने के लिए कंधे से कंधा मिला कर चलना सीखा और अपने समस्त

वर्ग के हितार्थ वे दृढ़ता तथा एकता के साथ संघटित हुए। इस संघर्ष में समय समय पर उन्हें जो सफलताएँ मिलीं उनसे उन्हें अपनी शक्ति का आभास हुआ और उनके संगठन को बल मिला। उन्होंने जो पहले-पहल हड़तालें कीं उनमें उन्हें सफलता मिली। उनकी माँग जितनी ही छोटी और न्यायोचित होती सफलता उन्हें उतनी ही अधिक मिलती थी। इस प्रकार उन्हें आन्दोलन की अपेक्षा इन हड़तालों से कहीं अधिक प्रेरणा मिली और बल प्राप्त हुआ। अब श्रमिकों के संघटन के कारण उनकी दशाओं में सुधार होने लगा और उन्हें पढ़ने-लिखने तथा अन्य प्रकार से आत्मोन्नति करने के अवसर मिले। यही कारण था कि सामाजिक-जनवादी जब श्रमिकों से मिलते-जुलते, तो उनसे आर्थिक प्रश्नों पर ही बात करते। स्वयं व्लादीमिर इल्यीच अपने पत्रकों में विभिन्न फ़ैक्ट्रियों के श्रमिकों के लिए सबसे आवश्यक माँगों की ओर अधिकारियों का ध्यान आकृष्ट करते जिसका श्रमिकों पर गहरा प्रभाव पड़ता। यदि मालिक इन माँगों की पूर्ति न करते, तो श्रमिकों से हड़ताल कर देने की सिफ़ारिश की जाती। यदि किसी एक फ़ैक्ट्री की हड़ताल में भी श्रमिकों को सफलता मिल जाती तो इससे दूसरी फ़ैक्ट्री के श्रमिकों को भी अपने संघर्ष के लिए यही मार्ग अपनाने की प्रेरणा मिलती थी।

अब समय आ गया था जबकि जनसमूह के बीच काम करने की ज़रूरत थी। उस समय के कार्यकर्ता अब अपने विचारों को गोष्ठियों (मत-प्रचार) तक ही सीमित नहीं रखते थे, अपितु उन्होंने अपना कार्यक्षेत्र श्रमिकों के बीच (आन्दोलन के रूप) भी फैला लिया था। व्लादीमिर इल्यीच इस संक्रमण के समर्थक थे। प्लेखानोव ने मत-प्रचार तथा आन्दोलन के अन्तर की इस प्रकार परिभाषा की है—"मतप्रचारक श्रमिकों के एक छोटे से समूह के समक्ष एक साथ बहुत

सी बातें रखता है और आन्दोलनकर्ता बड़े बड़े जनसमूहों के सामने केवल एक ही बात।"

यह ठीक है कि अत्यधिक पिछड़े हुए श्रमिकों के लिए पहले-पहल उनकी तात्कालिक आर्थिक जरूरतों का प्रश्न उठाना श्रेयस्कर था, परन्तु व्लादीमिर इल्यीच ने आरम्भ से ही सबसे अधिक इस बात पर ज़ोर दिया कि आथिक प्रश्न केवल आरम्भिक चरण की बातें हैं और यह आवश्यक है कि उनमें पहली बातचीतों और पहले पत्रकों द्वारा ही राजनीतिक चेतना पैदा की जाय। मुझे याद है कि एक बार पीटर्सबर्ग में १८९५ की शरद् ऋतु में, उनकी गिरफ़्तारी के कुछ ही पहले, इस विषय पर मेरी और उनकी बातचीत हुई थी।

मैंने पूछा था कि "जो साधारण श्रमिक ज़ार को दूसरा भगवान मानते हैं और स्वयं अपनी माँगों के पत्रकों को बड़े भय के साथ और लुकछिप कर इस सतर्कता से पढ़ते हैं कि कहीं कोई देख न ले, उनके गले तले हम राजनीतिक विषयों को कैसे उतार सकते हैं। ऐसा करके क्या हम उन्हें अपने से दूर न कर देंगे?" उस समय मेरी कल्पना के सामने मास्को के श्रमिक घूम रहे थे जो पीटर्सबर्ग के श्रमिकों से कहीं अधिक अनुभवहीन थे।

उस अवसर पर व्लादीमिर इल्यीच ने मुझे समझाया था कि यह बात हमारे कहने के ढंग पर निर्भर करती है।

"बेशक यदि आप सीधे सीधे ज़ार और उसकी शासन प्रणाली का विरोध करने लगें तो मानी हुई बात है कि श्रमिक नहीं समझेंगे, नहीं मानेंगे। परन्तु 'राजनीति' तो दैनिक जीवन का ताना-बाना है। यदि आप उन्हें समझाएँ कि उनके नगर का पुलिस या सैनिक सिपाही उनके साथ कितना मनमाना और कितना कठोर व्यवहार करता है और मालिकों और मज़दूरों के झगड़ों में उल्टे सीधे सिर्फ़ मालिक का ही समर्थन करता है, और साथ ही यह भी

बताएँ कि हड़तालों से उसे क्या क्या लाभ हो सकते हैं, तो वह जल्दी ही हमारी बातें समझ लेगा और अपना मार्ग निश्चित कर लेगा।

"ये बातें हमें अपने प्रत्येक पत्रक में और प्रत्येक लेख में कहनी चाहिए और स्थानीय पुलिस तथा सैनिक पुलिस की बदमाशियों का स्पष्ट शब्दों में पर्दाफ़ाश करना चाहिए। इस प्रकार पाठक पर उसका प्रभाव पड़ेगा और उसे आगे सोचने विचारने और अपने निष्कर्ष निकालने का अभ्यास होगा। इस बात पर आरम्भ से ही ज़ोर दिया जाना चाहिए ताकि वे सदा यही न समझते रहें कि केवल मालिकों से मोर्चा लेने में ही उनका कल्याण है।" व्लादीमिर इल्यीच ने आगे कहा, "इसी नये फ़ैक्ट्री ऐक्ट को ले लीजिए (मुझे निश्चित रूप से याद नहीं है कि उन्होंने किस ऐक्ट का हवाला दिया था — अ०ए०)। चाहिए तो यह कि इसे श्रमिकों को समझाया जाय और उन्हें बताया जाय कि इससे स्वयं उन्हें और मालिकों को क्या क्या लाभ होंगे। जो समाचारपत्र हम प्रकाशित करना चाहते हैं उसमें 'हमारे मंत्री क्या सोच रहे हैं?' शीर्षक एक सम्पादकीय स्तम्भ होगा। इस स्तम्भ से श्रमिकों को पता चल जाया करेगा कि हमारे क़ानून किस तरह के हैं और वे किसके हितों की रक्षा करते हैं। हम जानबूझ कर मंत्रियों के विषय में कह रहे हैं न कि ज़ार के विषय में। किन्तु यह राजनैतिक लेख होगा। यदि हम श्रमिकों के बीच राजनीतिक चेतना पैदा करना चाहते हैं तो हमारे समाचारपत्र के प्रत्येक अंक का सम्पादकीय स्तंभ भी वैसा ही होना चाहिए।" व्लादीमिर इल्यीच ने "रबोचेये देलो" (श्रमिक उद्देश्य नामक) समाचारपत्र के प्रथम अंक के लिए उक्त आधारों पर एक लेख तैयार भी किया था। परन्तु यह समाचारपत्र कभी भी प्रकाश में न आ सका और, जैसा पाठकों को याद होगा; जब ६ दिसम्बर १८९५ को वोलोद्या और उनके साथियों को गिरफ़्तार

किया गया, तो समाचारपत्र भी जब्त कर दिया गया था। मैंने "रबोचेये देलो" के प्रथम अंक के लिए, जो उस समय तैयार किया जा रहा था, लिखे गये सभी लेखों को पढ़ा था। समाचारपत्रों के सभी पृष्ठों को मुद्रणार्थ तैयार करना टेढ़ी खीर थी और इसके लिए कई दिन पहले से कार्य आरम्भ किया जा चुका था। मुझे अच्छी तरह याद है कि वोलोद्या ने अपने लेख में मंत्री की कितनी चुटकियाँ ली थीं और लेख कितनी लोकप्रिय तथा प्रभावशाली शैली में लिखा गया था।

मैंने इन बातों का कुछ विस्तार के साथ वर्णन किया है किन्तु मेरा उद्देश्य केवल यही दिखाना है कि जो लोग "अर्थवाद" से चिपके हुए थे वे कितने भ्रम में थे। ऐसे लोगों ने बाद में यह कहकर अपनी बातों का औचित्य सिद्ध करने की कोशिश की कि उस समय स्वयं व्लादीमिर इल्यीच ने भी आर्थिक विषयों पर पत्रक लिखे थे। "रबोचेये देलो" के प्रथम अंक को, जो तब भी हस्तलिखित रूप में था और जिसके सम्पादकीय का विषय राजनीतिक था, ज़ब्त किये जाने और उसके बाद व्लादीमिर इल्यीच के गिरफ़्तार और तत्पश्चात् ४ वर्ष के लिए निष्कासित कर दिये जाने के फलस्वरूप इन "अर्थवादियों" को अपनी बातों का प्रचार करने का मौक़ा मिल गया, यद्यपि व्लादीमिर इल्यीच ने अपने कारावास तथा निष्कासन के बीच के थोड़े से काल में और बाद में निष्कासन काल में इस विषय पर अपने विचारों को साफ़ साफ़ व्यक्त किया था और उस पर जो "अर्थवाद" का आरोप किया जा रहा था उसका ज़ोरदार शब्दों में खंडन किया था। उदाहरणार्थ यह कहना काफ़ी होगा कि जब वे निष्कासित थे उस समय उन्होंने कुस्कोवा के "क्रेडो"* का खंडन किया था।

---

* किसी के विचारों का स्पष्टीकरण करना। (पृष्ठ १०७ देखिये—सम्पादक)

इल्यीच में यह राजनैतिक प्रवृत्ति आरम्भ से ही विद्यमान थी जिसका कारण यह था कि उन्होंने मार्क्स के सिद्धान्तों को ठीक ठीक समझा था। यह प्रवृत्ति रूस के आरम्भिक सामाजिक-जनवादियों, "श्रम उद्धार" दल, और विशेष रूप से उसके संस्थापक, प्लेख़ानोव, के विचारों के अनुकूल थी। व्लादीमिर इल्यीच प्लेख़ानोव के विचारों से भली भांति अवगत थे क्योंकि उन्होंने उसकी पुस्तकें पढ़ी थीं और बाद में १८९५ के ग्रीष्म में विदेश यात्रा में उनसे भेंट भी की थी। व्लादीमिर इल्यीच की विदेशयात्रा का उद्देश्य औपचारिक रूप से निमोनिया के बाद स्वास्थ्य-सुधार करना, और अनौपचारिक रूप से "श्रम उद्धार" दल के सदस्यों से सम्पर्क स्थापित करना था।

व्लादीमिर इल्यीच को अपनी यात्रा से बड़ा सन्तोष हुआ क्योंकि उससे उन्हें बड़ा लाभ हुआ। वे प्लेख़ानोव की बड़ी इज़्ज़त करते थे। विदेश में अक्सेलरोद से भी उनका निकट का परिचय हुआ था। वापसी पर उन्होंने बताया था कि प्लेख़ानोव के साथ उनके जो संबंध स्थापित हुए हैं वे अच्छे होते हुए भी दूर के हैं, किन्तु अक्सेलरोद तो उनका निकट का मित्र बन गया है। इन दोनों के विचारों ने व्लादीमिर इल्यीच को बड़ा प्रभावित किया था। बाद में, जब वे निष्कासन का दंड भुगत रहे थे उस समय उन्होंने उन्हें प्रकाशन के लिए "रूसी सामाजिक-जनवादियों के कार्य" शीर्षक अपना एक पैम्फ़्लेट भेजा था।

और जब मैंने व्लादीमिर इल्यीच को यह संवाद पहुंचाया कि उन कर्मठ लेखकों ने इस पैम्फ़्लेट को कितना पसन्द किया था, तो मुझे उनका यह उत्तर मिला था: "इन बूढ़े लोगों ने मेरे विचारों का जो समर्थन किया है उससे अधिक मूल्यवान वस्तु की मैं कल्पना भी नहीं कर सकता।" प्लेख़ानोव और अक्सेलरोद से मिलने के बाद वे और अधिक शक्ति और संकल्प के साथ रूस में सामाजिक-जनवादियों की एक राजनैतिक पार्टी का संघटन करने में जुट गये।

विदेशयात्रा से लौटने के बाद व्लादीमिर इल्यीच ने हमसे मास्को में भेंट की और हमें अपनी यात्रा और जिन जिन लोगों से उन्होंने बातचीत की थी उस सबका हाल सुनाया। वे बड़े प्रसन्न, उत्तेजित और मैं तो यहाँ तक कहूँगी कि उत्साहित भी थे। मैं समझती हूँ कि उनके उत्साहित होने का मुख्य कारण यह था कि वे विदेशों से अवैध साहित्य लाने में सफल हो गये थे।

व्लादीमिर इल्यीच को यह मालूम था कि उनकी पारिवारिक विचारधारा की पृष्ठभूमि के कारण उन पर कड़ी निगरानी रखी जायगी; इसीलिए पहले उन्होंने अपने साथ अवैध साहित्य लाने का निश्चय नहीं किया था। परन्तु अन्त में वे इस लोभ का संवरण नहीं कर सके। फलतः उन्होंने एक सन्दूक़ खरीदा जिसका पेंदा दोहरा था। उन दिनों अवैध साहित्य लाने-ले जाने के लिए यही एक तरीक़ा प्रयोग में लाया जाता था। ये सन्दूक़ विदेशों में बनते थे और बड़े सुन्दर तथा आकर्षक होते थे। परन्तु पुलिस को इस चाल का पता था। व्लादीमिर इल्यीच ऐसे साहित्य को केवल इसी आशा के भरोसे लाये थे कि ज़रा ज़रा-सी चीज़ों की कौन जांच करेगा। परन्तु कस्टम में उनके सन्दूक़ को उलटा गया और उसे नीचे से थपथपाया गया। व्लादीमिर इल्यीच ने हमें बताया था कि उन्हें यह मालूम था कि कस्टम के अनुभवी अधिकारी थपथपाकर दोहरे पेंदे का भेद मालूम कर लेते हैं। अतएव जब सन्दूक़ को नीचे से थपथपाया गया तो उन्होंने समझा कि अब आई आफ़त। परन्तु उन्हें नहीं रोका गया और उनका सन्दूक़ सही सलामत पीटर्सबर्ग तक पहुँच गया जहाँ उसके पेंदे में से तुरन्त ही सारी चीज़ें निकाली गयीं। यही कारण था कि जब वे मास्को पहुँचे, तो बड़े प्रसन्न दिखाई दे रहे थे।

पुलिस का पीछे लगना तथा गिरफ़्तारी

व्लादीमिर इल्यीच के हृदय में एक शंका यह भी उठी थी कि वास्तव में वे जो अवैध साहित्य लाये हैं उसका पता पुलिस को चल गया है और यदि वे गिरफ़्तार नहीं किये गये हैं, तो इसमें पुलिस की चाल है क्योंकि इस ढंग से वह उन सभी व्यक्तियों को गिरफ़्तार करना चाहती है जिन्हें यह साहित्य मिलता है और जो उसका वितरण करते हैं। इस प्रकार पुलिस एक सनसनीख़ेज़ मुक़दमा खड़ा कर देना चाहती है। सम्भव है व्लादीमिर इल्यीच की यह शंका ठीक रही हो।

१८९५ की शरद् ऋतु तक तो पुलिस व्लादीमिर इल्यीच के बिल्कुल ही पीछे पड़ गई और जहाँ जहाँ वे जाते उनका पीछा किया जाता। उन्होंने मुझे यह बात उस समय बताई जब मैंने, जैसा पहले कहा जा चुका है, उनसे उस वर्ष की शरद् ऋतु में भेंट की थी। उन्होंने मुझे यह भी बताया था कि यदि वे गिरफ़्तार हो जायं, तो माता जी को पीटर्सबर्ग न जाने दिया जाय क्योंकि उनकी ओर से विभिन्न विभागों को अनुनयपत्र आदि लिखना उनके बूते का नहीं है। सबसे बड़े पुत्र की याद अब भी उनके मस्तिष्क में ताज़ी बनी हुई है। अपने भाई के साथ हुई उस भेंट के दौरान में मेरी मुलाक़ात व०अ०शेलगुनोव नामक एक व्यक्ति से हुई जो उस समय एक हृष्टपुष्ट नवयुवक कार्यकर्ता था।

व्लादीमिर इल्यीच ने पीछा करने वाली पुलिस को चकमे देने के अपने अनेक अनुभव हमें सुनाये थे। उनकी तेज़ दृष्टि तथा फुर्तीले पैरों ने उनकी बड़ी सहायता की थी। वे इन कहानियों को चुस्कियाँ ले लेकर सुनाते और बीच बीच में क़हक़हे लगाते जाते, ये

कहानियां बड़ी रोचक होती थीं। मुझे विशेष रूप से ऐसी एक कहानी अभी तक याद है। पीटर्सबर्ग का एक जासूस व्लादीमिर इल्यीच का पीछा कर रहा था और वे यह नहीं चाहते थे कि यह जासूस भी उनके पीछे पीछे उसी जगह पहुंच जाय जहां वे जाना चाहते थे। परन्तु वे उससे पिण्ड भी न छुड़ा सकते थे। इल्यीच ने अपने इस अवांछित साथी की ओर घूरा और वे मकानों के एक ब्लाक के एक ऐसे घर तक चले गये जिसमें गाड़ियां खड़ी हो सकती थीं और अन्दर से रास्ता था। उनका साथी पीछे लगा था। वे उसे चकमा देकर उस घर के मुख्यद्वार से तेज़ी के साथ आगे बढ़ गये और उसी मकान के एक द्वार में घुस कर ग़ायब हो गये और वहां से अपने इस चकराये हुए साथी की ओर देखने लग जो अब अपने छिपने की जगह छोड़कर निस्सहाय इधर-उधर ताक रहा था।

उन्होंने बताया कि "मैं मज़े से दरबान की कुर्सी पर जाकर बैठ गया जहां से मैं स्वयं तो किसी को दिखाई न पड़ता था, हां शीशे के पीछे से खुद सब कुछ देख सकता था। मैं उस समय अपने दोस्त की परेशानी का लुत्फ़ उठा रहा था। उस समय ज़ीने से उतरते हुए एक व्यक्ति ने दरबान की कुर्सी पर जब मुझे नये आदमी को बैठे और किसी की खीज पर क़हक़हे लगाते देखा, तो वह भी आश्चर्य में पड़ गया।"

इसमें सन्देह नहीं कि कभी कभी अपने चातुर्य के कारण व्लादीमिर इल्यीच जासूसों को चकमा दे जाते थे, परन्तु उनका पीछा करने वालों, पुलिस, दरबानों (जिनसे उस समय गृह पुलिस का काम भी लिया जाता था) तथा सादे वर्दीधारी जासूसों आदि की सख्या इतनी अधिक थी कि उनसे बच निकलना असम्भव था। अन्ततः उन्होंने व्लादीमिर इल्यीच और उनके साथियों का पता चला लिया, जो संख्या में कम होते हुए भी अनेकानेक कार्यों को सम्पन्न किया करते

थे जैसे गुप्त सभाएँ करना, पुलिस द्वारा पीछा किये जाने के समय श्रमिकों से उनके घरों पर भेंट करना, अवैध साहित्य इकट्ठा करना, पत्रक लिखना, टाइप करना तथा अपने साहित्य का वितरण करना। उनमें आपस में काम का कोई बटवारा न था क्योंकि उनकी संख्या कम थी। इसका परिणाम यह हुआ कि शीघ्र ही वे पुलिस की निगाहों में चढ़ गये। सड़कों पर पीछा करने वालों के अलावा पुलिस के कुछ अन्य एजेन्ट भी होते थे जो ऊपर ऊपर से हम लोगों से मिले रहते और अपने को "हमी" जैसा बताते थे। ऐसा ही एक जीव मिखाइलोव नामक दन्तकार था जो यद्यपि व्लादीमिर इल्यीच के दल का सदस्य न था तो भी अन्य दलों के बारे में अच्छी जानकारी रखता था। मिखाइलोव की तरह के एजेन्ट श्रमिक दलों में भी काम कर रहे थे और तत्कालीन श्रमिक जो अनुभवहीन हुआ करते थे इनके चक्कर में फँस जाया करते थे। उन दिनों अवैध कार्य बहुत अधिक काल तक न चल पाता था। उस समय यह अवैध कार्य केवल १८९५ की शरद् ऋतु में आरम्भ हुआ था और उसी वर्ष ९ दिसम्बर तक व्लादीमिर इल्यीच और उनके बहुत से साथी अपने अपने कार्य-क्षेत्र से "हटा दिये गये"।

इस प्रकार व्लादीमिर इल्यीच के क्रिया-कलापों का पहला दौर उनकी गिरफ़्तारी में समाप्त हुआ। परन्तु इन ढाई वर्षों में स्वयं उन्होंने तथा सामाजिक-जनवादियों के आन्दोलन ने बहुत कुछ काम कर लिया था। उन्होंने नरोदनिकों से संघर्ष किया जिसमें उन्हें सफलता मिली। उन्होंने यह दिखला दिया कि वे क्रान्तिकारी मार्क्सवादी हैं। उन्होंने एतदर्थ ऐसी अनेक बातों का खंडन किया जिनमें लोगों ने उन पर अपने सिद्धान्तों को बदल देने के आरोप लगाये थे। उन्होंने विदेश में बसने वाले उन रूसी मार्क्सवादियों से भी सम्पर्क स्थापित किया जिन्होंने सबसे पहले मार्क्सवाद का प्रचार रूस में किया था। परन्तु सबसे आवश्यक बात यह थी कि व्लादीमिर इल्यीच ने व्यावहारिक

काम आरम्भ किया। उन्होंने श्रमिकों से सम्पर्क स्थापित किया और उस समय जब रूस में व्याप्त तत्कालीन दशाओं के कारण किसी पार्टी को बनाना तक सम्भव न था उन्होंने न केवल अपनी पार्टी का संघटन किया, अपितु उसका नेतृत्व भी किया। जिस समय इस पार्टी की स्थापना हुई थी (पार्टी का प्रथम अधिवेशन) उस समय निष्कासन में होने के कारण वे उसमें शरीक न हो सके थे, किन्तु पार्टी की स्थापना स्वयं उनके निजी दबाव के कारण और उस समय हुई जब वे पीटर्सबर्ग में सामाजिक-जनवादियों के प्रथम राजनीतिक संघटन की स्थापना कर चुके थे, जब उन्होंने प्रथम राजनीतिक समाचारपत्र का आलेख तैयार कर लिया था और जब उन्होंने उन प्रथम बड़ी बड़ी हड़तालों का नेतृत्व किया था जिनमें सारे मास्को और पीटर्सबर्ग के श्रमिकों ने भाग लिया था।

व्लादीमिर इल्यीच जेल में

गिरफ़्तारी के समय व्लादीमिर इल्यीच का स्वास्थ्य अच्छा न था और इसका कारण यह था कि उन्होंने गिरफ़्तारी के पूर्व के दिनों में बहुत अधिक कार्य किया था और उसका असर उनके स्नायुओं पर पड़ा था। १८९६ की प्रसिद्ध "अखरान्का" फ़ोटो देख कर हमें उनके स्वास्थ्य के संबंध में कुछ जानकारी होती है कि वे उस समय कैसे लग रहे थे।

पहली बार पूछताछ हो जाने के पश्चात् उन्होंने नदेज्दा कोन्स्तान्तीनोवना क्रूप्स्काया से कहा था कि वे हमसे मिलें। सांकेतिक चिह्नों की भाषा में लिखे गये एक पत्र में उन्होंने नदेज्दा से अनुरोध

किया था कि वह हम लोगों को जल्दी से जल्दी यह ख़बर पहुंचा दे कि सन्दूक़ के बारे में पूछताछ के समय उन्होंने (व्लादीमिर इल्यीच ने) यह कहा था कि यह सन्दूक़ वे विदेश से लाये हैं और वह मास्को में हम लोगों के पास है।

"वे तुरन्त ही ऐसा एक सन्दूक़ ख़रीद लें... जल्दी करना अन्यथा गिरफ़्तार कर ली जाओगी।" यह उनकी ख़बर थी और मुझे इसलिए और भी अच्छी तरह याद है कि मुझे वह सन्दूक़ ख़रीदने और उसे घर तक लाने में बड़ी सतर्कता बरतनी पड़ी थी। यद्यपि बाहर बाहर से यह सन्दूक़ वैसा ही लगता था जैसा कि नदेज्दा कोन्स्तान्तीनोवना ने हमें समझाया था, परन्तु वह उस दोहरे तल्ले वाले सन्दूक़ से बिल्कुल भिन्न था। सन्दूक़ एकदम नया न लगे इसलिए जब मैं अपने भाई से मिलने तथा यह पूछने के लिए पीटर्सबर्ग गई कि उसके ख़िलाफ़ क्या क्या आरोप लगाये गये हैं, तो मैं उस सन्दूक़ को अपने साथ ही लेती गई थी।

काफ़ी लम्बे अर्से तक उस सन्दूक़ की चर्चा रही। अनेक बार जब पीटर्सबर्ग में मैं अपने साथियों से बातचीत करती, या सांकेतिक भाषा में भाई को पत्र लिखती या उनसे भेंट के समय बातचीत करती, तो इस सन्दूक़ का इतनी बार ज़िक्र आता कि मैं उकता उठती। मुझे ऐसे सन्दूक़ों से इतनी घृणा हो गई थी कि जब मैं किसी ऐसी दूकान से होकर गुज़रती जहां सन्दूक़ दिखाई पड़ जाते थे, तो मैं अपना मुंह फेर लेती। उन सन्दूकों की तरफ़ देखना भी मेरे लिए असह्य हो जाता। यद्यपि पहली पूछताछ के समय सन्दूक़ का ज़िक्र अवश्य आया था फिर भी उस रहस्य का अधिकारियों को कोई पता न लगा। फलतः, अन्य ऐसे आरोपों की मौजूदगी में, जिनसे अधिकारियों को व्लादीमिर इल्यीच के विरुद्ध अन्य सबल प्रमाण मिल गये थे, सन्दूक़ वाला आरोप न चल सका।

इस प्रकार अधिकारियों ने यह सिद्ध कर लिया कि उन लोगों का व्लादीमिर इल्यीच से सम्पर्क था जो प्राय: उन्हीं दिनों गिरफ़्तार हुए थे जिन दिनों व्लादीमिर इल्यीच को गिरफ़्तार किया गया था। ऐसे लोगों में वनेयेव नामक एक व्यक्ति भी था जिसके पास अवैध "रबोचेये देलो" की एक हस्तलिखित प्रति थी। अधिकारियों ने यह प्रमाणित कर दिया कि वनेयेव का उन अध्ययन-मण्डलियों के श्रमिकों से सम्पर्क था जिनका संचालन व्लादीमिर इल्यीच नेव्स्की गेट के बाहर किया करते थे। इस प्रकार अधिकारियों ने इधर उधर के प्रमाणों से यह स्पष्ट कर दिया था कि पुलिस द्वारा जांच पड़ताल की आवश्यकता है।

भाई की गिरफ़्तारी के बाद हम लोगों से मिलने के लिए दूसरा जो व्यक्ति आया वह था मिखाइल अलेक्सान्द्रोविच सीलविन जो व्लादीमिर इल्यीच के दल का एक सदस्य था। किसी प्रकार मिखाइल ने अपने को गिरफ़्तार होने से बचा लिया था। उसने हमें एक पत्र के बारे में बताया जिसे व्लादीमिर इल्यीच ने जेल से लिखा था। यह पत्र उसके एक मित्र के नाम था, जिसके साथ वह रह रहा था। पत्र लम्बा चौड़ा था, जिसमें उन्होंने अपने उस कार्य की योजना पर प्रकाश डाला था जिसे वे वहां पूरा करना चाहते थे। वे वहां "रूस में पूंजीवाद का विकास" नामक एक पुस्तक लिखना चाहते थे और इसके लिए उन्हें सामग्री प्राप्त करनी थी। यही उनकी योजना थी। इस पत्र की भाषा कुछ गंभीर क़िस्म की थी और उसमें अनेकानेक पुस्तकों तथा आंकड़ा संबंधी पर्यवेक्षणों की एक लम्बी सूची दी गई थी। यह पत्र उनके गुप्त उद्देश्य की अभिव्यक्ति में एक आवरण के समान था। इसे अधिकारियों ने सेन्सर से भी पास कर दिया था क्योंकि वे इस पत्र के रहस्य को न समझ पाये थे। वस्तुत: व्लादीमिर इल्यीच ने पत्र में यह पूछा था कि कौन कौन लोग गिरफ़्तार हुए हैं? यह बात उन्होंने बिना किसी पूर्व-निश्चित योजना के किन्तु एक ऐसे

ढंग से पूछी थी जिससे गिद्ध-दृष्टि रखने वाले आर्गुसों* को शक भी न हो और उसके साथी भी उसके संदेश को समझ जायं तथा उसका जवाब दे सकें।

"अपने पहले ही पत्र में व्लादीमिर इल्यीच ने हमसे गिरफ़्तार हुए व्यक्तियों के बारे में पूछा है और हमने उन्हें बता भी दिया है," सीलविन ने मुझे बड़ी प्रसन्नता के साथ बताया।

दुर्भाग्यवश केवल वह पत्र ही इस समय सुरक्षित है। उसके साथ पुस्तकों की जो सूची थी वह संभवत: उसी समय कहीं खो गई होगी जबकि उनके साथी उनके लिए पुस्तकों की तलाश कर रहे थे। सूची की बहुत सी पुस्तकें तो व्लादीमिर इल्यीच को अपनी पुस्तक तैयार करने के लिए वास्तव में ज़रूरी थीं। फलत: यह पत्र दो उद्देश्यों की पूर्ति का एक प्रयास था जो बाद में सफल भी हुआ। इस समय मुझे व्लादीमिर इल्यीच द्वारा प्रयुक्त केवल थोड़े से ही शीर्षक याद रह गये हैं, जिन्हें उन्होंने बड़ी चतुरता के साथ सूची के दूसरे शीर्षकों से संबद्ध कर दिया था। यह अपने साथियों के संबंध में जानकारी प्राप्त करने की एक कला थी। संबद्ध शीर्षकों के आगे एक प्रश्नवाचक चिह्न सा लगा रहता था, जिसका सदैव यही अर्थ होता है कि लेखक को पुस्तक के शीर्षक की, जिसे वह केवल अपनी स्मृति से ही लिख रहा है, शुद्धता के विषय में संदेह है। परन्तु इन शीर्षकों का वास्तविक अर्थ यह था कि वे किसी पुस्तक के विषय में नहीं अपितु अपने साथियों के विषय में पूछ रहे हैं। एतदर्थ उन्होंने अपने साथियों के उपनामों का प्रयोग किया था। ऐसे कुछ उपनाम उन पुस्तकों के शीर्षकों

---

*आर्गुस — यूनानी पौराणिक कथाओं का शताक्षी दैत्य जिसे देवी हीरो ने एक पादरणी की रक्षा के आदेश किये थे। उक्त देवी ने पादरणी को एक गाय बनाकर रखा हुआ था — सम्पादक।

के साथ, जिनकी उन्हें आवश्यकता पड़ सकती थी, इतने मौजूं बैठते थे कि किसो को उनपर शक भी न हो सकता था। उदाहरणार्थ उन्होंने वसोलि वसोल्येविच स्तरकोव के बारे में इस प्रकार पूछा था —"व०व० रूस में पूंजोवाद का भवितव्य"। स्तरकोव का उपनाम "व०व०" था। वनेयेव और सीलविन के बारे में — ये दोनों नीज्नो नोवगोरोद के थे और लोग इन्हें "मीनिन" और "पोजार्स्की" के नाम से जानते थे — उन्होंने जिस शीर्षक का प्रयोग किया था उससे कारावास के किसी सतर्क सेन्सर को यह पता अवश्य लग सकता था कि जिस पुस्तक का उन्होंने उल्लेख किया है उससे उनकी उस पुस्तक का कोई संबंध नहीं है जिसे वे लिखना चाहते थे। इस उल्लिखित पुस्तक का नाम था "संकटकालीन नायक", जिसके लेखक का नाम था कोस्तोमारोव। यह इतिहास संबंधो एक सुन्दर पुस्तक थी और उन अधिकारियों से, जिन्हें ढेरों पत्रों की जांच पड़ताल करनी रहती है, यह आशा करना व्यर्थ था कि वे उसके गूढ़ार्थ का पता लगा सकेंगे। परन्तु पुस्तकों के शीर्षकों के साथ इतनी सरलतापूर्वक सारे उपनामों का निभाना सम्भव न था। फलत: व्लादीमिर इल्यीच को कुछ अन्य पुस्तकों के, जिनकी उन्हें आवश्यकता होती थी, नामों के बाद ब्रेम की "छोटे रोडेन्ट्स" का नाम लिखना पड़ता था। इस शीर्षक के सामने एक प्रश्नवाचक चिह्न लगा दिया जाता था और जानने वाले जान लेते थे कि उस चिह्न का अभिप्राय क्रज्हिजानोवस्की से होता था जिन्हें लोग "गोफर" के नाम से जानते थे। इसो प्रकार मायन रीड की "मिनोगा" (जिसे अंग्रेज़ी में लिखा जाता था) से तात्पर्य नदेज्दा कोन्स्तान्तीनोवना क्रूप्स्काया से होता था जो "मछली" अथवा "मिनोगा" के नाम से प्रसिद्ध थी। इन शीर्षकों से सेन्सर अधिकारियों को सचेत हो जाना चाहिए था। परन्तु पत्र की भाषा कुछ इतनो गंभीर थी, पुस्तकों की सूची इतनी बड़ी थी और साथ

ही दूसरे पन्ने में (जो अब खो गया है) भाग्यवश कहीं यह लिखा था "विविध प्रकार की पुस्तकों से वातावरण की शुष्कता कम होने में सहायता मिलेगी" कि वहां अधिकारियों की गिद्ध-दृष्टि भी काम न कर सकी और पत्र न रोका गया।

दुर्भाग्यवश इस समय तक मुझे केवल थोड़े से ही शीर्षक याद रह गये हैं, और इन शीर्षकों पर हमने उस समय बड़े क़हक़हे लगाये थे। मुझे एक काल्पनिक नाम 'goutchoul' या 'goutchioule' भर याद रह गया है। इसकी हिज्जे जानबूझकर फ्रेंच तरीक़े पर लिखी गई है। यह एक ऐतिहासिक पुस्तक (जिसका नाम मुझे याद नहीं रह गया है) के लेखक का नाम था। परन्तु इससे वास्तव में 'हुत्सूल' अर्थात् ज़पोरोज्हेत्स का बोध होता है। मुझे याद है कि "संकटकालीन नायक" शीर्षक पुस्तक का हवाला देते हुए — जैसा कि सोलविन ने हमें बताया था — साथियों ने लिखा था कि "इसका एक ही खंड पुस्तकालय में है" जिसका अर्थ यह था कि वनेयेव गिरफ़्तार हो चुका है सोलविन नहीं।

व्लादीमिर इल्यीच को एक प्राथमिक निरोध कारागृह में नज़रबन्द रखा गया था जिसके कारण उन्हें अपेक्षाकृत अच्छी सुविधाएं प्राप्त थीं। प्रत्येक एक महीने की नज़रबन्दी के बाद प्रति सप्ताह दो बार मुलाक़ातों की अनुमति रहती थी — एक, अलग अलग व्यक्ति से, दूसरे, सामान्य रूप से कई लोगों से एक साथ। बातचीत के समय बन्दियों और मुलाक़ात के लिए आये हुए लोगों के बीच जेल के सीखचे होते थे। पहली भेंट वार्डर की उपस्थिति में होती थी और आधे घंटे तक चलती थी और दूसरी एक घंटे तक। दूसरी भेंट के समय दो वार्डर उपस्थित रहते थे, एक मुलाक़ातियों के पीछे, और दूसरा सीखचों के उस पार क़ैदियों के पीछे, इधर से उधर चक्कर लगाया करता था। उस समय कोलाहल के बीच अल्पबुद्धि वाले उन वार्डरों को कितनी कठिनाई का सामना करना पड़ता था और परिश्रम

के कारण हुई थकावट की वजह से उनका कितना बुरा हाल हो जाता था इसका ठीक ठीक वर्णन कर सकना मेरे लिए असम्भव है। उस समय इन वार्डरों समक्ष यदि कुशलता के साथ कोई गोपनीय बात भी कह दी जाती थी, तो भी वे उसे न समझ सकते थे। खाने की पोटरियां सप्ताह में तीन बार और पुस्तकें सप्ताह में दो बार भेजी जा सकती थीं। पुस्तकों की जांच पुलिस के सिपाहियों द्वारा नहीं बल्कि अभियोक्ता कार्यालय के क्लर्कों द्वारा की जाती थी। यह कार्यालय पास ही में होता था और चूंकि पुस्तकों की संख्या बहुत अधिक होती थी अतएव उनका सूक्ष्म निरीक्षण सम्भव न हो पाता। पुस्तकों पर कोई विशेषोल्लेखनीय प्रतिबंध नहीं थे और वे क़ैदियों को काफ़ी स्वतंत्रता के साथ दी जाती थीं। क़ैदियों को मासिक पत्र-पत्रिकाएं और बाद में साप्ताहिक पत्र-पत्रिकाएं मंगाने की अनुमति रहती थी। इस प्रकार वहां की व्यवस्था कुछ ऐसी थी कि क़ैदियों को बाहरी दुनिया का हाल-चाल मिल जाया करता था। वहां जेल का एक पुस्तकालय भी था जिसमें ढेरों पुस्तकें रहती थीं जो प्राय: दान के रूप में लोगों से प्राप्त होती थीं। इस पुस्तकालय की सहायता से अनेक साथी और मुख्य रूप से श्रमिक वर्ग के लोग अपना बहुत कुछ ज्ञान-वर्द्धन कर लेते थे।

व्लादीमिर इल्यीच के दिमाग़ में कारावास की एक लम्बी अवधि तथा बाद में दूरस्थ प्रदेशों में निष्कासन के दृश्य घूम रहे थे। अत: उन्होंने "रूस में पूंजीवाद का विकास" शीर्षक अपनी प्रस्तावित पुस्तक के लिए पीटर्सबर्ग के पुस्तकालयों का उपयोग करने का निश्चय किया। उनके पत्रों में पुस्तकों की एक लम्बी सूची तथा आंकड़ों के पर्यवेक्षणों की मांग रहा करती थी। हम लोग यह सब सामग्री विज्ञान अकादमी पुस्तकालय, विश्वविद्यालय पुस्तकालय तथा अन्य पुस्तकालयों से मंगा मंगा कर उन्हें पहुंचाया करते थे। व्लादीमिर इल्यीच के कारावास काल

को अधिकतर अवधि तक मैं और माताजी पीटर्सबर्ग में रहे। मेरा काम उन तक ढेरों पुस्तकें पहुंचाना और इस प्रकार किताबों के उस ढेर में वृद्धि करना था जो उनकी कोठरी के एक कोने में पड़ा हुआ था। इल्यीच बराबर अपने काम में लगे रहते कभी आंकड़ा सामग्री से उद्धरण लेते, कभी कुछ पुस्तकों से और कभी रूसी तथा अन्य विदेशी भाषाओं का साहित्य पढ़ा करते जिनमें गम्भीर प्रकार की पुस्तकें भी होतीं और कहानी क़िस्सों की भी। बाद में जेलों में दी जाने वाली सुविधाएं कम कर दी गई और क़ैदियों को दी जाने वाली पुस्तकों की संख्या भी बड़ी कंजूसी के साथ कम कर दी गई।

व्लादीमिर इल्यीच के पास जो ढेरों पुस्तकें भेजी जाती थीं उनसे हम लोगों के लिए सन्देश भेजने तथा मंगाने में बड़ी आसानी होती। उन्होंने अपनी गिरफ़्तारी के पूर्व हमें सांकेतिक भाषा में अपने विचारों को अभिव्यक्त करना सिखा दिया था जिसकी सहायता से हम परस्पर पत्र-व्यवहार किया करते थे। हम केवल अक्षरों को काट कर अथवा उनके नीचे कुछ बिन्दु लगा लगा कर तथा उस अक्षर की पृष्ठ संख्या तथा पुस्तक का नाम आदि एक पूर्वनिश्चित तरीक़े से लिख कर अपना काम चलाते थे।

इस प्रकार हमने अपनी आंखें ख़राब कर लीं। परन्तु हमें अपने गुप्त कार्यों संबंधी संवादों को उनके पास भेजने में सफलता मिलती और यह कार्य बड़े महत्व का होता। जेल की मोटी मोटी दीवालें तथा सख़्त पहरेदारी भी हमारे संबंध का विच्छेद न कर सकीं। हम उनके पास केवल आवश्यक विषयों के संबंध में ही नहीं लिखते अपितु उन्हें ऐसी ऐसी ख़बरें भी पहुंचाया करते थे जिन्हें मैं अपनी सारी तिकड़मों और छल-कपट का प्रयोग करके भी मुलाक़ातों के समय उन तक न पहुंचा पाती थी। इसी प्रकार वे भी मुझे अनेक कार्य सौंपा करते थे और कभी कभी अपने साथियों तक कोई विशेष सन्देश पहुंचा देने के लिए

कहा करते थे; जैसे जिस बाड़े में वे (अर्थात् उनके साथी) अभ्यास किया करते थे वहां अमुक तख़्ते में फ़लां विषय का एक नोट रोटी के एक टुकड़े के साथ खुंसा हुआ है, उसे वे ले लें। उन्होंने अपने साथियों से सम्पर्क स्थापित किया था और जेल-पुस्तकालय की पुस्तकों के माध्यम से बाक़ायदा पत्र-व्यवहार आरम्भ कर दिया था। वे जेल के अपने अन्य साथियों के लिए चिन्तित रहते और जिन लोगों के विषय में उन्हें यह पता चल जाता कि उनमें भय या घबड़ाहट का संचार हो रहा है उन्हें वे उत्साहवर्द्धक पत्र लिखा करते; वे हमसे कहा करते कि हम उन तक पुस्तकें पहुंचाएं और ऐसे लोगों से मुलाक़ातें करने की व्यवस्था करें जिनसे अभी तक मुलाक़ात नहीं की गई थी। इन चिन्ताओं में उनका तथा हमारा दोनों का ही बड़ा समय नष्ट हो जाता। उनकी प्रसन्नता तथा विनोदी प्रकृति, जो उनके पत्रों से ही प्रकट हो जाती थी, उनके साथियों के उत्साहवर्धन में बड़ी सहायक सिद्ध होती।

भाग्यवश इल्यीच के लिए तत्कालीन जेल की दशाएं इतनी ख़राब सिद्ध न हुई जितनी कि आशा की जाती थी। बेशक उनका वज़न घट गया था और उनका चेहरा पीला पड़ गया था, परन्तु उनका मेदा, जो पहले से ही ख़राब रहता था और जिसके उपचार के लिए विदेश में उन्होंने एक स्विस डाक्टर से परामर्श भी किया था, इन बारह महीनों में (जब तक वे जेल में रहे), जेल के तत्काल पूर्व के बारह महीनों की तुलना में कहीं अधिक अच्छा था। माताजी उनके लिए सप्ताह में तीन बार भोजन की पिटारी ले जातीं। यह भोजन वे उक्त स्विस डाक्टर द्वारा निर्दिष्ट खाद्य-पदार्थों से स्वयं पकाती थीं। इसके अतिरिक्त उन्हें दोनों वक़्त का खाना और दूध जेल से ही मिल जाता जिसके लिए उन्हें रुपया देना होता था। जेल जीवन से उन्हें दूसरा लाभ यह हुआ कि इस शाहाना रूसी

"आरोग्याश्रम" में वे नियमित जीवन-यापन करने लगे, जिसकी अवैध कार्यों की अधिकता के कारण जेल के बाहर वे आशा भी नहीं कर सकते थे।

मुलाक़ातों के समय हमारी बातचीत दिलचस्प और साभिप्राय हुआ करती थी। जिनकी मुलाक़ातें वैयक्तिक आधार पर नहीं होती थीं वे खास तौर से फ़ायदे में रहते थे। हम लोग सांकेतिक प्रकारान्तरों में बातचीत करते तथा "हड़ताल" अथवा "पत्रक" जैसे शब्दों के लिए विदेशी शब्दों का प्रयोग किया करते। मैं तमाम खबरों को पढ़पढ़ा कर आती थी और यही कोशिश करती कि उन्हें व्लादीमिर इल्यीच तक पहुंचा दूं। वे भी अपनी बातें मुझ तक पहुंचाने का प्रयत्न करते और मुझसे प्रश्न पूछा करते। और जिस समय हम किसी जटिल बात को पूरी या सार रूप में समझ लेते उस समय खुशी के मारे क़हक़हे लगाना शुरू कर देते। हमारी मुलाक़ातों से ऐसा लगता कि हम निश्चिन्त होकर साधारण सी बातों पर बातचीत कर रहे हैं। परन्तु वास्तविकता यह थी कि हम एक दूसरे की बातें समझने-समझाने तथा उन्हें अपने अपने दिमाग़ों में रखे रहने की कोशिश करते जिसके फलस्वरूप हमारे मस्तिष्क को बड़ी क़वायद करनी पड़ जाती। मुझे याद है कि एक बार झोंक में हम बहुत से विदेशी शब्दों का प्रयोग कर गये थे जिसका नतीजा यह हुआ था कि व्लादीमिर इल्यीच के पीछे खड़ा हुआ वार्डर वहीं से गुर्रा उठा था: "सिर्फ़ रूसी में ही बात की जा सकती है। विदेशी भाषाएं बोलना मना है।" "मना है," वार्डर की तरफ़ घूमते हुए व्लादीमिर इल्यीच नें पूछा, "अच्छा तो मैं रूसी बोलूंगा। इन स्वर्ण सज्जन से कह दो..." और हमारी बातें चलती रहीं।

मैं हंस दी और मैंने सिर हिला दिया। मैंने उनका अभिप्राय समझ लिया था। स्वर्ण सज्जन से उनका मतलब गोल्डमैन से था।

विदेशी भाषा के शब्दों का बोलना मना था। अतएव वोलोद्या ने वार्डरों से उस व्यक्ति का नाम छिपाने के लिए, जिसका वे मुझे हवाला दे रहे थे, जर्मन से उसका रूसी भाषा में अनुवाद कर दिया था।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि जेल में भी व्लादीमिर इल्यीच ने अपनी अलौकिक कार्यकुशलता का परिचय दिया था। उन्होंने अपने जीवन का कुछ ऐसा ढर्रा बना लिया था कि वे सारे दिन व्यस्त रहते। मुख्यतया वे "रूस में पूंजीवाद का विकास" नामक अपनी पुस्तक की तैयारी में लगे रहते। जेल में उन्होंने इस पुस्तक के लिए बहुत कुछ मसाला इकट्ठा कर लिया था और वे उसमें जुटे हुए थे। एक बार जब उनकी नज़रबन्दी की अवधि ख़त्म होनेवाली थी, तो मैंने उन्हें ख़बर दी कि उनका मुक़दमा समाप्त होने वाला है, जिस पर साश्चर्य उनके मुंह से निकल गया था "इतनी जल्दी... अभी तो मैं अपनी पुस्तक के लिए सारी सामग्री भी नहीं जुटा पाया हूं।"

परन्तु पुस्तक लिखने का यह महान् कार्य भी उनके लिए काफ़ी न था। वे अवैध कार्यों में जुट जाने तथा क्रान्तिकारी जीवन में प्रवेश करने के लिए उत्सुक रहते। १८९६ की ग्रीष्म ऋतु में पीटर्सबर्ग के वस्त्रोद्योग श्रमिकों की बड़ी बड़ी हड़तालें हुईं। मास्को भी इनसे अछूता न रहा। वहां भी अनेकानेक हड़तालें हुईं। ये हड़तालें श्रमजीवियों के क्रान्ति आन्दोलन के एक नये युग की प्रतीक थीं। इन हड़तालों ने सरकारी क्षेत्रों में कितना तहलका मचा रखा था और इनके फलस्वरूप स्वयं ज़ार को दक्षिण से पीटर्सबर्ग आने में कितना डर लगता था ये सर्वप्रसिद्ध बातें हैं। यह वह काल था जब सारे शहर में उत्तेजना फैली हुई थी। जनता के हर्ष और उमंगों की सीमा न थी। निकोलाई द्वितीय के राज्याभिषेक के वर्ष में, जिस समय ख़ोदिनका वाली

कुख्यात घटना भी घट चुकी थी*, दोनों प्रमुख केन्द्रों के श्रमिकों ने एक होकर एक स्वर से जो सामूहिक कार्यवाही की थी वह इतिहास की चिरस्थायी निधि रहेगी। इस कार्यवाही के फलस्वरूप ज़ारों का तख़्ता चरमरा उठा था और उनके पैरों की ज़मीन खिसकने लगी थी। इसमें सन्देह नहीं कि श्रमिकों का झुकाव राजनीति की ओर न था, फिर भी उन्होंने अपनी शक्ति को संगठित करना सीख लिया था और अब वे एक दूसरे से कन्धे से कन्धा मिलाकर चलने लगे थे। इस समय हमारे नवयुवक साथी उन हड़तालों और श्रमिक संगठनों का महत्व भले ही न आंक सकें, परन्तु हम सबके लिए, जिन्होंने १८८० से १९०० तक की प्रतिक्रियाएं देखी हैं और उनके परिणामस्वरूप चूहे बिल्लियों की ज़िन्दगी बिताई है, लुक-छिप कर कोने कुचैलों में बातें की हैं और अपने कार्यक्रम बनाये हैं, ये हड़तालें बहुत बड़ी घटनाएं हैं। हड़तालों को देखकर ऐसा लगता था मानों "किसी अन्धीकूप कालकोठरी की दीवालें भरभरा कर गिर गयी हों और दिन की उजियाली ने वहां अपने सम्पूर्ण तेज के साथ प्रवेश किया हो।" उस समय हमें प्रतीत होता था कि होने वाली घटनाओं के परे हम श्रमिकों के आन्दोलन के उस भावी स्वरूप को देख रहे हैं जिससे होकर क्रान्ति को गुज़रना है और जिसके परिणामस्वरूप उसे कामयाब भी

---

* इस शब्द का नाम खोदिनका क्षेत्र के नाम पर पड़ा है जहां १८ मई १८९६ को निकोलाई द्वितीय के राज्याभिषेक के अवसर पर एक जन समारोह का आयोजन किया गया था। अधिकारियों की असावाधानी और उपेक्षा के कारण—अधिकारी वहां शान्ति और सुव्यवस्था बनाये रखने में विफल हो गये थे—वहां लगभग २००० व्यक्ति दब कर मर गये थे और हज़ारों पंगु हो गये थे—सम्पादक।

होना है। उस समय सामाजिक-जनवाद की विचारधारा हमारी नस नस में समा गई थी। मार्क्सवादी किताबी कोड़ों के लिए तो वह काल्पनिक रामराज्य ही थी। ऐसा प्रतीत होता था कि सामाजिक-जनवाद श्रमजीवियों तथा समाज के अन्य वर्गों के लिए संजीवनी शक्ति का काम कर रहा। इन परिवर्तित परिस्थितियों में हमें लगता कि रूसी निरंकुशता रूपी अन्धकारपूर्ण कालकोठरी में कहीं कोई खिड़की खुल गई है और हम बड़ी उत्सुकता के साथ ताज़ी हवा का आनन्द लेते हुए खुशियाँ मना रहे हैं तथा अपने में अभूतपूर्व शक्ति का अनुभव कर रहे हैं जैसा पहले कभी नहीं किया था।

व्लादीमिर इल्यीच ने एक जनोपयोगी समाज की स्थापना की थी जिसका नाम उस समय, जब वे जेल में ही थे, बदलकर "श्रमिकवर्ग उद्धार संघर्ष संघ" कर दिया गया था। यह संघ दिन प्रतिदिन लोकप्रिय होता जा रहा था। अनेक फ़ैक्ट्रियों के श्रमिक अपनी अपनी मांगों के पत्रकों के लिए अनुरोध करते। कुछ लोग शिकायतें भी करते "संघ हमें क्यों भूल गया है?" सामान्य प्रकार के पत्रकों की भी, विशेष रूप से मई दिवस के लिए, ज़रूरत होती थी। जो साथी जेलों से बाहर थे उन्हें यह खेद बराबर बना रहता कि यदि व्लादीमिर इल्यीच मुक्त होते तो पत्रक लिखने का काम वे ही करते क्योंकि उनके पत्रकों में जान होती थी। स्वयं व्लादीमिर इल्यीच भी इन पत्रकों को लिखना चाहते थे। इसके अतिरिक्त उन्होंने कुछ पैम्फ़लेटों की भी योजना बनाई थी जैसे "हड़ताल विषयक" पैम्फ़लेट।

व्लादीमिर इल्यीच के दिमाग़ में एक और समस्या भी चक्कर काट रही थी और वह थी कार्यक्रम की समस्या। अतएव उन्होंने जेल में ही अवैध विषयों पर लेख लिखना आरम्भ कर दिया। ऐसे लेखों

को सांकेतिक प्रणाली द्वारा लिखना व्यावहारिक रूप से सम्भव न था। उन्हें गुप्त लेखन-प्रणाली अपनानी पड़ी जिसे जेल के बाहर पढ़ने योग्य बनाया जा सकता था। इस समय उन्हें बच्चों का एक खेल याद आ गया। फलत: उन्होंने पुस्तकों की पंक्तियों के बीच दूध से लिखना शुरू कर दिया और जब इन पृष्ठों को लालटेन की सहायता से गरम किया जाता, तो अक्षर निखर उठते और पूरा लेख पढ़ लिया जाता। उन्होंने एतदर्थ डबल रोटियों की दावातें बनाई थीं ताकि यदि उन्हें पता चले कि कोई जासूस कुछ सूंघ रहा है तो वे उसे चट से मुंह में रख लें और एक बार उन्होंने क़हक़हों के बीच मुझे यह बताया था कि दुर्भाग्यवश एक दिन तो उन्हें छ "दावातें" निगलनी पड़ीं।

मुझे याद है कि व्लादीमिर इल्यीच, अपने जेल जीवन के पहले और बाद, प्राय: यही कहा करते कि "उनके पास ऐसी कोई चातुरी नहीं है जिसका विकास हम लोग न कर सकें"। और जब वे जेल में थे तो उन्होंने तदर्थ अपने समस्त साधनों का अधिक से अधिक उपयोग किया भी था। उन्होंने पत्रक लिखे और "हड़ताल विषयक" एक पैम्फ़्लेट भी, जो लाख्ता छापाख़ाना ज़ब्त करते समय ज़ब्त कर लिया गया था। यह पैम्फ़्लेट नदेज्दा कोन्स्तान्तीनोवना क्रूप्स्काया द्वारा रोशनी में गर्म करके पठनीय बनाया गया था और स्वयं उन्होंने उसकी प्रतिलिपि भी तैयार की थी। इसके पश्चात् व्लादीमिर इल्यीच ने पार्टी का कार्यक्रम तैयार किया और साथ ही उसके लिए एक व्याख्यात्मक टिप्पणी भी लिखी, जिसका एक अंश नदेज्दा कोन्स्तान्तीनोवना की गिरफ़्तारी के बाद स्वयं मैंने नक़ल किया था। यह कार्यक्रम कभी भी प्रकाशित न हुआ। कार्यक्रम लिख लेने के बाद मैंने उसे अ०न० पोत्रेसोव को दे दिया था जिसे, उसकी गिरफ़्तारी के बाद एक ऐसे व्यक्ति ने नष्ट कर डाला जिसे

पोत्रेसोव ने यह कार्यक्रम रखने के लिये दिया था*। इसके अलावा नदेज्दा कोन्स्तान्तीनोवना से मुझे अवैध साहित्य का एक गुप्त संग्रह भी मिला जो इल्यीच के लिए, स्वयं उनके सुझावों के अनुसार, उनके एक बढ़ई साथी द्वारा बनाई गई एक गोल मेज़ में सुरक्षित था। यह मेज़ केवल बीच के एक पाये पर सधी थी जो कुछ अधिक चौड़ा था। पाये में सबसे नीचे की ओर लकड़ी की एक गोल ढिबरी सी लगी थी, जिस पर कलापूर्ण खुदाई की हुई थी। बाहर से ऐसा लगता कि ढिबरी मेज़ के पाये का ही एक भाग है। पाया अन्दर से खोखला था तथा ढिबरी के घुमाते ही उसका वह भाग नीचे से दिखाई पड़ जाता। इस खोखले भाग में काग़ज़ के बड़े बड़े बंडल रखे जा सकते थे। इसी पाये में मैं, रात्रि के अन्धकार में, नक़ल किये हुए अपने काग़ज़-पत्र बड़ी सावधानी के साथ रख दिया करती और उन पृष्ठों को फाड़ दिया करती थी जिन्हें मैं लालटेन से गरम करके पढ़ती और तत्पश्चात् लेख को नक़ल करती। इस मेज़ ने हमारी बड़ी मदद की। व्लादीमिर इल्यीच और उसके बाद नदेज्दा कोन्स्तान्तीनोवना के यहां की गई तलाशियों तक में किसी को इसकी गोपनीयता का पता न चल सका। अतएव कार्यक्रम के अन्तिम भाग की प्रतिलिपि बचाई जा सकी क्योंकि नदेज्दा कोन्स्तान्तीनोवना की माता जी ने वह प्रतिलिपि, मेज़ सहित, बाद में मुझे दे दी थी।

---

*लिखित रूप में यह व्याख्यात्मक टिप्पणी भी ज़ब्त कर ली गई थी। इसके विषय में बहुत दिनों तक यह समझा जाता रहा कि वह खो गई है। व्लादीमिर इल्यीच की मृत्यु के पश्चात् इसकी एक अपूर्ण प्रति मिली थी और उसे "प्रोलेतार्स्काया रेवोल्यूत्सिया" अंक ३(२६), १९२४ में प्रकाशित किया गया था। (व्ला०इ० लेनिन, ग्रन्थावली, चतुर्थ रूसी संस्करण, खंड २, पृष्ठ ७७-१०४ देखें—संपादक)—अ०ए०

मेज़ की सूरत शकल से किसी को कभी कोई संदेह न हुआ, परन्तु ज़्यादा प्रयोग में लाये जाने के कारण ढिबरी अधिक स्पष्ट झलकने लगी थी।

पहले पहल व्लादीमिर इल्यीच पत्रकों तथा अन्य अवैध लेखों को दूध से नक़ल कर लेने के पश्चात् फाड़ दिया करते थे, परन्तु बाद में अपनी इस ख्याति का लाभ उठाकर कि वे सदा अपने गवेषणा-कार्यों में लगे रहते हैं उन्होंने इन प्रतिलिपियों को आंकड़े संबंधी तथा अन्य ऐसे उद्धरणों के साथ रखना आरम्भ कर दिया जिन्हें वे महीन महीन अक्षरों में लिखा करते थे। इसके अलावा कार्यक्रम की व्याख्यात्मक टिप्पणी जैसी चीज़ नष्ट भी नहीं की जा सकती थी क्योंकि उसमें सदा संशोधन और विस्तार की सम्भावनाएं बनी रहतीं फिर उस टिप्पणी की नक़ल में भी पूरा पूरा दिन लग सकता था और इतना समय उनके लिए बड़ा मूल्यवान था। एक बार जब मैं उनसे मुलाक़ात करने गयी तब उन्होंने अपने चिर-अभ्यस्त हंसी-मज़ाक़ के लहजे में मुझे एक पुलिस अफ़सर द्वारा अपनी कोठरी की तलाशी की कहानी सुनाते हुए बताया थी कि उस अफ़सर ने कोठरी के कोने में पड़ी हुई ढेरों पुस्तकों, चार्टों और अवतरणों में से कुछ पर सरसरी निगाह डालने के बाद मज़ाक़ ही मज़ाक़ में तलाशी न लेने की ग़रज़ से कहा था "आंकड़ों को देखने दाखने का आज मौक़ा नहीं है। देखो तो आज गर्मी कितनी अधिक है!" भाई ने मुझे यह भी बताया था कि उन्हें कोई परेशानी नहीं हुई थी क्योंकि उस अफ़सर को उस ढेर में से काम की "कोई चीज़ भी तो हाथ न लगती," और तब उन्होंने क़हक़हों के बीच मुझसे भी कहा था: "रूसी साम्राज्य के अन्य नागरिकों से मेरी स्थिति कहीं अच्छी है। कम से कम वे मुझे गिरफ़्तार तो नहीं कर सकते।" वे हंस रहे थे परन्तु मुझे चिन्ता हो रही थी। इसलिए मैंने उनसे कहा

कि आपको अधिक सतर्क रहने की ज़रूरत है। यह ठीक है कि आपको गिरफ़्तार नहीं किया जा सकता, परन्तु अगर पकड़ गये तो सज़ा तो बढ़ ही सकती है अथवा जेल में अवैध साहित्य लिखने के लिए आपको काला पानी तो हो ही सकता है।

यही कारण था कि जब वे मुझे दूध में लिखी हुई कोई पुस्तक देते, तो मुझे किसी न किसी संकट की आशंका होने लगती। मुझे अच्छी तरह याद है कि मैं उस पुस्तक की व्यग्रता के साथ प्रतीक्षा करती रहती जिसमें कार्यक्रम के संबंध में व्याख्यात्मक टिप्पणियाँ होती थीं। मुझे मालूम रहता था कि उस पुस्तक की पंक्तियों के बीच दूध से लिखे हुए लेख हैं। मुझे सदा इस बात का डर बना रहता था कि कहीं जेल के अधिकारी आशंकित न हो उठें या पुस्तक लेने देने में देर हो जाने के कारण कहीं उसके दुग्धाक्षर चमक न जायँ जैसा कि पहले एक-आध बार हो चुका था जब कहीं कहीं गाढ़े दूध के अक्षर लिख गये थे। और एक बार तो मेरा भय बहुत ही बढ़ गया जब ऐसी पुस्तकें, जिसमें दुग्धलिखित पुस्तक भी एक थी, मुझे उस दिन न दी गईं जिस दिन उनकी मुझे मिलने की आशा थी। क़ैदियों द्वारा बृहस्पतिवार को दी गई पुस्तकें उनके सगे-संबंधियों को उसी दिन दे दी गयी थीं, परन्तु जब मेरी बारी आई तो वार्डर मुझ पर गुर्रा पड़ा "तुम्हारे लिए कोई नहीं है।" मुझे मालूम था कि इसे पुस्तकें दे दी गई हैं क्योंकि उसके पास मैं व्लादीमिर इल्यीच से मुलाक़ात करने के बाद गई थी और उन्होंने मुझे बता दिया था कि पुस्तकें वापस कर दी गई हैं। ऐसा उस दिन पहली बार हुआ था और मुझे तो ऐसा लगा कि अब व्लादीमिर इल्यीच ज़रूर पकड़ जायंगे और शीघ्र ही उन पर कोई नई आफ़त आ जायगी। ऐसा समझने का एक कारण और था। मुझे उस वार्डर का, जो पुस्तकें दिया करता था, सदा ही भयानक लगनेवाला चेहरा उस दिन कुछ

अधिक भयानक लग रहा था। उससे तुरन्त पुस्तकें देने के लिए कहना बेकार था। इससे लाभ तो कुछ होता नहीं, हाँ, मुफ़्त में उसके दिल में शंका पैदा हो जाती। फलत: किसी प्रकार मैंने बड़ी व्यग्रता तथा चिन्ता के साथ चौबीस घंटे व्यतीत किये। तब कहीं दूसरे दिन मुझे पुस्तकें दी गईं जिसमें कार्यक्रम वाली पुस्तक भी थी।

कभी कभी व्लादीमिर इल्यीच भी बिना किसी कारण के चौकन्ने हो उठते। १८९६ की शीत ऋतु में कुछ लोगों की गिरफ़्तारी के पश्चात् (सम्भवत: यह बात पोत्रेसोव की गिरफ़्तारी के बाद की है) एक दिन मुझे आने में कुछ देर हो गई और मैं मुलाक़ातियों की आख़िरी टोली के साथ ही वहाँ पहुंच सकी — ऐसा मैंने सामान्यतया इसके पहले कभी नहीं किया था — उस समय व्लादीमिर इल्यीच ने समझा कि मैं गिरफ़्तार हो गई हूँ। फलत: उन्होंने किसी विषय पर अपने एक आलेख को, जो अस्वच्छ प्रति के रूप में ही था, उसी समय फाड़ डाला था।

व्लादीमिर इल्यीच बड़े संतुलित मस्तिष्क के व्यक्ति थे। अत्यधिक आपवादिक मामलों में ही, जैसे जब नई गिरफ़्तारियाँ की जाती थीं, उनके माथे पर शिकन दिखाई देती, अन्य मामलों में नहीं। मुलाक़ातों के समय प्राय: वे शान्त, स्थिर और प्रसन्नचित्त दिखाई पड़ते और हमारी चिन्ताएँ भी उनके क़हक़हों में बाधक न हो पातीं।

क़ैदियों के संबंधियों को यह अनुमान भी न लग पाता कि क़ैदियों को क्या सज़ा होनेवाली है। "नरोदनया वोल्या" के सदस्यों की तुलना में सामाजिक-जनवादियों को प्राय: हल्की सज़ायें मिला करतीं। फिर भी पीटर्सबर्ग के एक मामले में, जिसमें म०ई० ब्रुसनेव तथा अन्य कुछ लोग अभियुक्त थे, उनके नेता को चार वर्ष के एकान्तवास तथा पूर्वी साइबेरिया में दस वर्षों के निष्कासन का दंड मिला था।

हम लोगों को भय था कि हमारे संबंधी क़ैदियों को लम्बी लम्बी

सज़ाएँ होंगी और सम्भव है बहुतों की तो हिम्मत ही टूट जाय। जहाँ तक मेरे भाई का प्रश्न था मुझे यह भय था कि उनके स्वास्थ्य को गहरा धक्का लगेगा। ऐसे अनेक मामले देखने-सुनने में आये थे जब कि क़ैदियों के स्वास्थ्य ख़राब हो चुके थे, उदाहरणार्थ, ज़पोरोज्हेत्स को उसके कारावास के पहले साल के ही अन्त में स्नायु दौर्बल्य का रोग हुआ जो बाद में बढ़ कर एक मानसिक रोग हो गया और उससे वह कभी अच्छा न हुआ; वनेयेव का वज़न कम हो गया और उसके पीछे खांसी का रोग लग गया (वह जेल छोड़ने के एक वर्ष बाद, निष्कासन की अवधि में, क्षय रोग से मर गया); क्रज्हिजानोव्सकी तथा उसके अन्य साथियों को भी स्नायु दौर्बल्य का अनुभव हुआ था।

यही कारण था कि जब व्लादीमिर इल्यीच को ३ वर्ष के लिए पूर्वी साइबेरिया में निष्कासन का दंड सुनाया गया, तो सबों ने सन्तोष की सांस ली।

सज़ा की अवधि फ़रवरी १८९७ से आरम्भ हुई। माताजी के सतत प्रयासों के परिणामस्वरूप व्लादीमिर इल्यीच को स्वयं अपने ख़र्च से साइबेरिया जाने की अनुमति मिल गई और उन्हें क़ैदियों की भांति लाद कर वहाँ तक न ले जाया गया। इस प्रकार उन्हें बड़ी सुविधा हो गई क्योंकि यदि उन्हें उसी प्रकार वहाँ ले जाया जाता जैसे कि एक जेल से दूसरे जेल में निष्कासित क़ैदियों को ले जाया जाता था तो उन्हें बड़ी परेशानी होती और उनकी शक्ति का काफ़ी ह्रास हो गया होता।

मुझे अच्छी तरह याद है कि जिस दिन मेरे भाई को जेल से रिहा किया गया था उस दिन साथी याकूबोवा दौड़ती हुई हमारे उस कमरे में आई थी जिसमें मैं तथा माताजी रह रही थीं और आते ही उसने मेरे भाई को चूमा था। उस समय वह ख़ुशी के मारे पागल हो रही थी।

मुझे यह भी स्पष्ट याद है कि जब जेल से छूटने के बाद पहली बार व्लादीमिर इल्यीच हार्स-ट्राम के सबसे ऊपर के डेक पर चढ़े थे

अधिक भयानक लग रहा था। उससे तुरन्त पुस्तकें देने के लिए कहना बेकार था। इससे लाभ तो कुछ होता नहीं, हाँ, मुफ़्त में उसके दिल में शंका पैदा हो जाती। फलत: किसी प्रकार मैंने बड़ी व्यग्रता तथा चिन्ता के साथ चौबीस घंटे व्यतीत किये। तब कहीं दूसरे दिन मुझे पुस्तकें दी गईं जिसमें कार्यक्रम वाली पुस्तक भी थी।

कभी कभी व्लादीमिर इल्यीच भी बिना किसी कारण के चौकन्ने हो उठते। १८९६ की शीत ऋतु में कुछ लोगों की गिरफ़्तारी के पश्चात् (सम्भवत: यह बात पोत्रेसोव की गिरफ़्तारी के बाद की है) एक दिन मुझे आने में कुछ देर हो गई और मैं मुलाक़ातियों की आख़िरी टोली के साथ ही वहाँ पहुंच सकी — ऐसा मैंने सामान्यतया इसके पहले कभी नहीं किया था — उस समय व्लादीमिर इल्यीच ने समझा कि मैं गिरफ़्तार हो गई हूँ। फलत: उन्होंने किसी विषय पर अपने एक आलेख को, जो अस्वच्छ प्रति के रूप में ही था, उसी समय फाड़ डाला था।

व्लादीमिर इल्यीच बड़े संतुलित मस्तिष्क के व्यक्ति थे। अत्यधिक आपवादिक मामलों में ही, जैसे जब नई गिरफ़्तारियाँ की जाती थीं, उनके माथे पर शिकन दिखाई देती, अन्य मामलों में नहीं। मुलाक़ातों के समय प्राय: वे शान्त, स्थिर और प्रसन्नचित्त दिखाई पड़ते और हमारी चिन्ताएँ भी उनके क़हक़हों में बाधक न हो पातीं।

क़ैदियों के संबंधियों को यह अनुमान भी न लग पाता कि क़ैदियों को क्या सज़ा होनेवाली है। "नरोदनया वोल्या" के सदस्यों की तुलना में सामाजिक-जनवादियों को प्राय: हल्की सज़ायें मिला करतीं। फिर भी पीटर्सबर्ग के एक मामले में, जिसमें म०ई० ब्रूसनेव तथा अन्य कुछ लोग अभियुक्त थे, उनके नेता को चार वर्ष के एकान्तवास तथा पूर्वी साइबेरिया में दस वर्षों के निष्कासन का दंड मिला था।

हम लोगों को भय था कि हमारे संबंधी क़ैदियों को लम्बी लम्बी

सज़ाएँ होंगी और सम्भव है बहुतों की तो हिम्मत ही टूट जाय। जहाँ तक मेरे भाई का प्रश्न था मुझे यह भय था कि उनके स्वास्थ्य को गहरा धक्का लगेगा। ऐसे अनेक मामले देखने-सुनने में आये थे जब कि क़ैदियों के स्वास्थ्य ख़राब हो चुके थे, उदाहरणार्थ, ज़पोरोज्हेत्स को उसके कारावास के पहले साल के ही अन्त में स्नायु दौर्बल्य का रोग हुआ जो बाद में बढ़ कर एक मानसिक रोग हो गया और उससे वह कभी अच्छा न हुआ; वनेयेव का वज़न कम हो गया और उसके पीछे खांसी का रोग लग गया (वह जेल छोड़ने के एक वर्ष बाद, निष्कासन की अवधि में, क्षय रोग से मर गया); क्रज्हिजानोव्सकी तथा उसके अन्य साथियों को भी स्नायु दौर्बल्य का अनुभव हुआ था।

यही कारण था कि जब व्लादीमिर इल्यीच को ३ वर्ष के लिए पूर्वी साइबेरिया में निष्कासन का दंड सुनाया गया, तो सबों ने सन्तोष की सांस ली।

सज़ा की अवधि फ़रवरी १८९७ से आरम्भ हुई। माताजी के सतत प्रयासों के परिणामस्वरूप व्लादीमिर इल्यीच को स्वयं अपने ख़र्च से साइबेरिया जाने की अनुमति मिल गई और उन्हें क़ैदियों की भांति लाद कर वहाँ तक न ले जाया गया। इस प्रकार उन्हें बड़ी सुविधा हो गई क्योंकि यदि उन्हें उसी प्रकार वहाँ ले जाया जाता जैसे कि एक जेल से दूसरे जेल में निष्कासित क़ैदियों को ले जाया जाता था तो उन्हें बड़ी परेशानी होती और उनकी शक्ति का काफ़ी ह्रास हो गया होता।

मुझे अच्छी तरह याद है कि जिस दिन मेरे भाई को जेल से रिहा किया गया था उस दिन साथी याकूबोवा दौड़ती हुई हमारे उस कमरे में आई थी जिसमें मैं तथा माताजी रह रही थीं और आते ही उसने मेरे भाई को चूमा था। उस समय वह ख़ुशी के मारे पागल हो रही थी।

मुझे यह भी स्पष्ट याद है कि जब जेल से छूटने के बाद पहली बार व्लादीमिर इल्यीच हार्स-ट्राम के सबसे ऊपर के डेक पर चढ़े थे

और उन्होंने वहाँ से मेरी ओर देख कर बड़ी प्रसन्नता के साथ सिर हिलाया था उस समय उनका पीला और मुरझाया हुआ चेहरा कितना खिल उठा था।

उन्हें पीटर्सबर्ग की सड़कों पर ट्राम से आने-जाने और अपने साथियों से मिलने-जुलने की सुविधा दी गई थी, क्योंकि रिहा हुए सभी "दिसेम्ब्रस्टिों" की तरह उन्हें भी, साइबेरिया जाने से पूर्व, राजधानी में तीन दिन तक ठहरने की अनुमति थी। यह अभूतपूर्व सुविधा सर्वप्रथम यू०ओ० त्सेदेरबौम (मारतोव) की माता ने, पुलिस विभाग के डाइरेक्टर ज़्वोल्यान्सकी द्वारा, जिन्हें वे किसी न किसी प्रकार जानती थीं, अपने बेटे के लिए प्राप्त की थी। इस प्रकार जब एक पूर्वोदाहरण स्थापित हो चुका था तो पुलिस विभाग का अध्यक्ष दूसरों को यह सुविधा देने से कैसे इन्कार करता? इसके परिणामस्वरूप ऐसा प्रत्येक व्यक्ति, जो जेल से छूटा था, अपने अन्य सभी संगी-साथियों से मिला और इस अवसर पर सब की एक साथ फ़ोटो भी खींची गई (यह फ़ोटो बड़ी प्रसिद्ध है)। साथ ही उस समय सांयकालीन सभाओं का भी आयोजन किया गया। पहली सभा स्तेपान इवानोविच राद्चेन्को के निवासस्थान पर हुई और दूसरी त्सेदेरबौम के यहाँ। ऐसा कहा जाता है कि पुलिस अधिकारियों ने बाद में यह अनुभव किया कि उन्होंने सामाजिक-जनवादियों को, जो शान्तिप्रियता से दूर से थे, छूट देकर बड़ी सख़्त ग़लती की है। यह भी सुनने में आया था कि इस ग़लती के लिए ज़्वोल्यान्सकी को सख़्त चेतावनी दी गई थी। जो भी हो, इस प्रकार की सुविधा बाद में इतने बड़े पैमाने पर कभी न दी गई। हाँ, बहुत थोड़े से मामलों में यह सुविधा अवश्य दी जाती रही जैसे बीमार होने की दशा में अथवा उस समय जब अभियुक्त के लिए उसे अपने किसी सगे-संबंधी के पास कोई सन्देश भेजना अत्यधिक आवश्यक हो जाता। ऐसी सभाओं

में 'पुराने' और 'नये' दोनों ही प्रकार के साथी एकत्र हुए थे और इसमें सभी प्रकार की तिकड़मों पर विचार-विमर्श भी हुआ था। विशेष रूप से पहली सभा, जो राद्चेन्को के मकान पर हुई थी, बिल्कुल राजनीतिक प्रकार की थी और दूसरी में, जो त्सेदेरबौम के यहाँ हुई थी, कुछ जोश-खरोश का प्रदर्शन किया गया था। पहली सभा में "दिसेम्ब्रस्टि" तथा उन लोगों के बीच वाद-विवाद छिड़ा था जिन्होंने बाद को "रबोचया मीस्ल" का समर्थन किया था।

व्लादीमिर इल्यीच को अपने परिवार के साथ मास्को में तीन दिन तक और रहने की अनुमति मिल गई थी। उन्होंने यह निश्चय किया था कि अपने साथियों से मिल लेने के बाद वे मास्को में अपने को गिरफ़्तार करवा देंगे और बाक़ी का रास्ता उन्हीं के साथ साथ तय करेंगे। क्रासनोयार्स्क की रेलवे लाईन अभी हाल ही में पूरी हुई थी और आने-जाने की व्यवस्था इतनी ख़राब नहीं रह गई थी जितनी पहले थी। उस समय केवल दो ही जेलें ऐसी थीं जिनसे होकर निष्कासन के लिए भेजा जाया करता था—एक मास्को में और दूसरी क्रासनोयार्स्क में। उसके अतिरिक्त व्लादीमिर इल्यीच स्वयं अपने लिए ऐसी एक भी सुविधा प्राप्त न करना चाहते थे जो उनके दूसरे साथियों को न दी जाती रही हो। मुझे याद है कि इससे माताजी को बड़ी व्याकुलता हुई थी क्योंकि उन्होंने अपने ख़र्चे पर वोलोद्या की यात्रा के लिए जो अनुमति प्राप्त की थी उससे उन्हें बड़ा सन्तोष हुआ था। माताजी ने कुछ लोगों से सुन रखा था कि पुराने क़ैदी यही कहा करते हैं कि "निष्कासन का दंड हम एक बार और भुगत लेंगे, परन्तु वहाँ तक भेजे जाने में जो कष्ट होता है उसे हम कभी सहन नहीं कर सकेंगे" और उनके बहुत से परिचितों और हितैषियों ने भी उन्हें यही राय दी थी कि निष्कासन के लिए भेजे जाने के निमित्त स्वयं अपने ख़र्चे से निर्दिष्ट गन्तव्य स्थान तक जाने

के लिए वोलोद्या को अनुमति दिलाना आवश्यक है। अपनी आत्मा के सन्तोष के लिए उन्होंने अनुमति भी प्राप्त की, परन्तु जब व्लादीमिर इल्यीच ने उस सुविधा को स्वीकार करने से इन्कार कर दिया, तो माताजी पर वज्राघात हुआ।

परन्तु बात कुछ उलटी हो गई। पीटर्सबर्ग के "दिसेम्ब्रिस्ट" तीन दिन की अतिरिक्त अवधि व्यतीत हो जाने पर भी वापस न लौटे। उस समय मास्को के "ओखरान्का" ने, जो इस घटना के कारण काफ़ी बदहवास हो चुका था, व्लादीमिर इल्यीच को बुलाया और उन्हें यह अल्तिमेत्थम दिया कि या तो वे अगले दिन अपना पास बनवा लें नहीं तो उन्हें जेल में डाल दिया जायगा। इस आकस्मिक आ जाने वाली परिस्थिति ने उन्हें चक्कर में डाल दिया। बिना अपने सगे-संबंधियों से छुट्टी लिए हुए जेल जाना और वहाँ अपने साथियों के आने का अनिश्चित काल तक के लिए इन्तज़ार करना उन्हें उचित न जँचा। निश्चय ही वे अपने साथियों के साथ जाना पसन्द करते थे, परन्तु चूंकि अब स्थिति बदल गई थी अतएव उन्होंने प्रतीक्षा में समय और शक्ति नष्ट करना ठीक न समझा। वे हमेशा यही सोचा करते थे कि वास्तविक संघर्ष के लिए शक्ति संचय की आवश्यकता है न कि शौर्यानुभूतियों के प्रदर्शन की। ऐसी दशा में उन्होंने अगले दिन अपनी यात्रा आरम्भ करने का निश्चय किया। मैं, माताजी, मेरी बहन मरीया तथा मेरे पति मार्क तिमोफ़ेयेविच उनके साथ तूला तक गये।

इस समय तक उनके बहुत से साथियों ने उन्हें अपना नेता मान लिया था। अब उनका नेता निष्कासन-अवधि बिता रहा था। पार्टी के प्रथम अधिवेशन में, जो १८९८ में आरम्भ हुआ था, उन्हें पार्टी के पत्र का सम्पादन-कार्य सौंपा गया और उनसे पार्टी का कार्यक्रम तैयार करने का अनुरोध भी किया गया। हमारे सामाजिक-जनवादी

आन्दोलन ने प्रथम और सर्वाधिक कठिन कार्य अपने हाथ में लिया—वह था एक पार्टी की नींव डालना और बड़े पैमाने पर जन-संघर्ष छेड़ने की तैयारी करना। इसके थोड़े ही समय बाद प्रायः सभी नेताओं को जेलों में ठूँस दिया गया और इस प्रकार प्रथम अधिवेशन में भाग लेने वालों को रास्ते से हटा दिया गया। परन्तु पार्टी की नींव पड़ चुकी थी। हमारे संघर्ष का प्रथम चरण पूर्ण हो चुका था।

निष्कासन

व्लादीमिर इल्यीच के लिए निष्कासन की दशाएँ भी अपेक्षाकृत ख़राब न थीं। माताजी के अनुनय-पत्र पर उन्हें, अनिश्चित स्वास्थ्य के कारण, अपनी निष्कासन अवधि साइबेरिया के एक स्वास्थ्यकर स्थान, मिनुसींस्क ज़िले में, व्यतीत करने की अनुमति मिल गई थी। उन्हें शूशेन्सकोये के ग्राम में, जिसे संक्षेप में शूशा कहा जाता था, भेजा गया था। उनके अलावा वहाँ दो तीन पोलिश कार्यकर्त्ता भी थे। एक ही मुक़दमे में सज़ा पाये हुए व्यक्तियों को अलग अलग गांवों में रखा गया था। सबसे अधिक ख़राब हालत यू० ओ० त्सेदेरबौम (मारतोव) की हुई, क्योंकि वह एक यहूदी था। उसे निष्कासित करके तुरुखान्स्क भेज दिया गया था जो सबसे उत्तर में है। इस इलाक़े का संबंध अगम्य दलदल तथा कीचड़ के कारण शेष दुनिया से कट सा गया था। इस प्रकार पूरी दंडावधि तक वह अपने साथियों से अलग रहा और उसे किसी की कोई खोज-ख़बर न मिल सकी। बाक़ी लोग एक दूसरे तक आ जा सकते थे, विशेष अवसरों जैसे शादी विवाह, नव-वर्ष समारोहों आदि पर साथ साथ उठ बैठ सकते थे अथवा चिकित्सा के लिए जब तब क्रासनोयार्स्क जाने की अनुमति प्राप्त कर सकते थे।

एक बार मेरे भाई अपने दांतों का इलाज कराने वहाँ गये भी थे। परन्तु मारतोव के साथ सम्पर्क बनाये रखने का केवल एक ही साधन था और वह था पत्र-व्यवहार। और पत्र-व्यवहार सदैव बड़े ज़ोरों का होता था।

व्लादीमिर इल्यीच बड़ी नीरसता के साथ अपने दिन बिता रहे थे। वे सदा अपने कार्यों में लगे रहते। निष्कासन काल में उन्होंने "रूस में पूंजीवाद का विकास" नामक अपनी पुस्तक पूरी की थी। यह पुस्तक अप्रैल १८६६ में प्रकाशित हुई। इसके अतिरिक्त उन्होंने "वैधानिक मार्क्सवादियों" की पत्रिका "नोवोये स्लोवो" के लिए भी समय समय पर लेख लिखे थे जो उस पत्रिका में प्रकाशित भी हुए थे। बाद में ये सब लेख "आर्थिक अध्ययन तथा लेख" शीर्षक एक छोटे से संग्रह में प्रकाशित किये गये।

वे नियमित रूप से काम करने के इतने आदी हो गये थे कि ऐसे मौक़ों पर भी, जब विश्राम प्रायः अपरिहार्य समझा जाता था, जैसे यात्रा के समय अथवा किसी चीज़ की प्रतीक्षा के समय, वे अपने कार्यों में शिथिलता न आने देते। ऐसे दो एक उदाहरण उल्लेखनीय हैं एक बार जब उन्हें क्रास्नोयार्स्क में अपने अन्तिम गन्तव्य स्थान के संबंध में अधिकारियों का निश्चय जानने के लिए लगभग एक महीने तक वहाँ ठहरना पड़ा था तब उन्होंने वहाँ के मर्चेन्ट यूदिन के पुस्तकालय का उपयोग किया था। यह पुस्तकालय नगर के बाहर लगभग तीन मील पर था। इसके पूर्व भी, एक अवसर पर जब उन्हें मास्को में अपने परिवार के साथ तीन दिन तक रहने की अनुमति दी गई थी तब भी उन्होंने अपना अधिकांश समय रुम्यान्त्सेव लाइब्रेरी में अध्ययन करने में बिताया था। उनकी इस कार्यप्रियता पर एक युवक विद्यार्थी याकोव्लेव तो बेहद मुग्ध हो गया था। याकोव्लेव का हमारे परिवार से उस समय का परिचय था

जब वह केवल बच्चा ही था। यह विद्यार्थी हमारे यहाँ व्लादीमिर इल्यीच से मिलने उस समय भी आया था जब वे अपने तीन वर्ष के निष्कासन के सिलसिले में प्रस्थान करने वाले थे। व्लादीमिर इल्यीच कार्योपरान्त विश्राम के लिए जंगलों में जाकर घूमना तथा ख़रगोश और अन्य उन जानवरों का शिकार करना अधिक पसन्द करते जो उन दिनों जंगलों में बहुतायत से पाये जाते थे।

व्लादीमिर इल्यीच ने अपने एक पत्र में, जो उन्होंने निष्कासन-काल में लिखा था, उस "शू-शू-शू"— मज़ाक़ में वे अपने गाँव को इसी नाम से पुकारा करते थे— ग्राम का वर्णन किया था जहाँ उन्हें भेजा गया था।

उन्होंने लिखा था "यह एक बड़ा गाँव है— जहाँ अनेक सड़कें हैं, परन्तु जिनमें अधिकतर कूड़ा-कबाड़ और धूल तथा वह सारी गन्दगी मौजूद है जिसकी आप वहाँ कल्पना कर सकती हैं। गाँव परती भूमि के बीच बसा हुआ है जहाँ न तो फलों के बाग़ बग़ीचे ही दिखाई पड़ते हैं और न दूर तक हरियाली ही। गाँवों के चारों ओर गोबर तथा कूड़े-करकट के ढेर पड़े हुए हैं, क्योंकि यहाँ के लोग गाँवों की गन्दगी गाड़ियों पर ढो ढो कर खेतों में नहीं डालते बल्कि उसे सीमावर्ती मेड़ों पर जमा कर देते हैं। अतः जब कभी कोई गाँव से बाहर जाना चाहे तो यह तय है कि बिना कूड़े-कबाड़ से गुज़रे हुए उसके लिए आगे बढ़ना सम्भव नहीं। गाँव से (या यह कहिए कि जहाँ मैं ठहरा हुआ हूँ— गाँव काफ़ी लम्बा चौड़ा है) क़रीब एक डेढ़ मील पर शूश नदी येनिसेई नदी में उस स्थान पर गिरती है जहाँ बहुत से द्वीप तथा जलमार्ग बन गये हैं और परिणामतः येनिसेई की मुख्य धारा के बीच होकर जाना संभव नहीं है। मैं सबसे गहरे जलमार्ग में तैरता हूँ, परन्तु यह जलमार्ग भी अब धीरे धीरे छिछला होता जा रहा है। दूसरी ओर (शूश नदी के

उस पार) दो-एक मील दूर एक स्थान है जिसे यहाँ के किसान "जंगल" कह कर पुकारते हैं। यद्यपि वास्तव में वहाँ छोटे छोटे झाड़ी जैसे वृक्ष हैं जो एक दूसरे से दूर दूर पर हैं लेकिन सच पूछो तो इन वृक्षों से छाया तक नहीं मिलती। (परन्तु उनमें ढेरों झड़बेर लगे हुए हैं!)। यह स्थान साइबेरिया के तैगा (चीड़ का घन जंगल) के समान भी नहीं है (मैंने अभी तक तैगा के बारे में केवल सुना ही सुना है उसे देखा नहीं—यह यहाँ से बीस-पचीस मील दूर है)। पहाड़... इनके बारे में मैं कुछ ग़लत लिख गया था, क्योंकि वे यहाँ से तीस मील पर हैं और उस समय दिखाई पड़ जाते हैं जब वे बादलों से ढके हुए नहीं होते ठीक उसी प्रकार जैसे आप जेनेवा में माउन्ट ब्लैंक को देखती हैं। मेरी कविता* की पहली (और आख़िरी) पंक्ति में कुछ हद तक काव्यातिशयोक्ति (कविता में यह अलंकार भी है) के दर्शन हो सकते हैं जब मैं "... के शिखरों का टीला" के संबंध में लिखता हूँ। आपके इस प्रश्न के उत्तर में कि 'वहाँ मैं किन किन पहाड़ों पर चढ़ा हूँ' मैं केवल यही कह सकता हूँ कि उस तथाकथित 'जंगल' में मैं रेतीली पहाड़ियों पर चढ़ा हूँ—यहाँ रेत की बिल्कुल कमी नहीं है"।**

उस समय साइबेरिया में रहन-सहन के व्यय कम थे। व्लादीमिर इल्यीच को वहाँ प्रथम वर्ष ८ रूबल मासिक भत्ता मिलता था।

---

* व्लादीमिर इल्यीच ने क्रास्नोयार्स्क से लिखे गये अपने पत्र में हमें यह सूचना दी थी कि उन्हें शूशेन्स्कोये के गाँव में रखा गया है। इसी पत्र में उन्होंने परिहास में हमें लिखा था कि उन्होंने वहाँ एक कविता लिखनी आरम्भ कर दी है जिसकी पहली पंक्ति है "शूशा में, अल्ताई के शिखरों का टीला"।—अ० ए०

** व्ला० इ० लेनिन, संबंधियों को पत्र, १९३४ पृ. ५६—५७—सम्पादक।

निष्कासित बन्दी के रूप में वे इतना ही भत्ता पाने के अधिकारी थे। इस धन से वे एक कृषक परिवार में एक कमरा लेकर अपना पूरा खर्च चला सकते थे।

एक वर्ष पश्चात् नदेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना क्रूप्स्काया, जिसके साथ उनकी सगाई हो चुकी थी, अपनी माता के साथ उनके पास रहने के लिए आ गई। अब वे एक बड़े क्वार्टर में चले गये थे जहाँ वे एक पारिवारिक व्यक्ति के रूप में रहने लगे। नदेज्दा कोन्स्तान्ती-नोवना को निष्कासित करके पहले-पहल ऊफ़ा भेजा गया था, परन्तु बाद में उन्हें भी शूशेन्सकोये भेज दिया गया जहाँ व्लादीमिर इल्यीच पहले से ही रह रहे थे। धनोपार्जन की दृष्टि से वहाँ व्लादीमिर इल्यीच ने नदेज्दा कोन्स्तान्तीनोवना के साथ वेब्स की "ट्रेड-यूनियनिज़्म" विषयक एक अंग्रेज़ी पुस्तक का अनुवाद किया था।

इन वर्षों में मैंने तथा इल्यीच ने एक दूसरे को बहुत से पत्र लिखे। साधारण पत्रों में वे मुझसे पुस्तकों की माँग करते, मेरे ज़िम्मे कुछ ऐसे काम कर देते जिन्हें वे मुझसे अपने लिए करवाना चाहते और अपने साहित्यिक कार्यों, अपनी जीवनचर्या तथा अपने साथियों के बारे में लिखा करते। रासायनिक पदार्थों की सहायता से लिखे जाने वाले पत्रों में मैं उन्हें रूस में क्रान्ति संबंधी कार्यों और संघर्षों की प्रगति के बारे में लिखती और वे मुझे प्रकाशनार्थ पीटर्सबर्ग में "संघर्ष संघ" अथवा विदेशों में "श्रम-उद्धार" दल को भेजने के लिए लेख भेजते।

इसी प्रकार उन्होंने मुझे "रूसी सामाजिक-जनवादियों के कार्य" शीर्षक एक पैम्फ़्लेट भेजा था जो बाद में विदेशों में प्रकाशित हुआ था। इस लेख के साथ प० ब० अक्सेलरोद की एक भूमिका भी थी। उनका एक दूसरा लेख "अर्थवादियों" के एक ज्ञापक का, जिसे कुस्कोवा और प्रोकोपोविच ने तैयार किया था, जवाब था। इस

ज्ञापक को 'क्रेडो' और फलतः उसके जवाब को 'क्रेडो-विरुद्ध' की संज्ञा दी गयी थी। 'क्रेडो-विरुद्ध' में व्लादीमिर इल्यीच ने इस मत का ज़ोरदार खंडन किया था कि श्रमिकों को अपने को केवल आर्थिक संघर्ष तक ही सीमित करके सन्तुष्ट हो जाना चाहिए और राजनीतिक संघर्ष उदारवादियों पर छोड़ देना चाहिए। यह कार्य सामाजिक-जनवादियों के एक दल का था जो संघर्ष में अग्रणी न होते हुए भी तत्कालीन नवयुवकों पर अपना अच्छा प्रभाव रखते थे। इसके अतिरिक्त ज्ञापक के जवाब में इस बात पर भी प्रकाश डाला गया था कि "अर्थवादियों" की उक्त विचारधारा का श्रमिकों पर कितना बुरा प्रभाव पड़ेगा। यह जवाब सामाजिक-जनवादियों के एक समूह के सामने, जो भिन्न भिन्न गाँवों से आकर इकट्ठे हुए थे, पढ़कर सुनाया गया और वहीं इसे अंगीकार किया गया तथा "१७ सामाजिक-जनवादियों का उत्तर" शीर्षक से—पार्टी के साहित्य में यह जवाब इसी नाम से प्रसिद्ध है—प्रकाशनार्थ भेज दिया गया।

निष्कासन को भेजे जाने वाले व्यक्तियों की इच्छाओं के बिल्कुल विपरीत, व्लादीमिर इल्यीच न तो यही चाहते थे कि उन्हें किसी ऐसी जगह भेज दिया जाय जहाँ चहल-पहल रहती हो और न यही कि उनका वहाँ से कहीं दूसरी जगह स्थानान्तरण कर दिया जाय। जब (साल, डेढ़ साल, बाद) माताजी ने उन्हें किसी शहर में स्थानान्तरित किये जाने की कोशिश करने का प्रस्ताव रखा, तो उन्होंने यही लिखा था कि यह ठीक नहीं है क्योंकि वे समझते थे कि मिनुसींस्क और क्रास्नोयार्स्क में स्थायी रूप से रहने के बजाय वहाँ कभी कभी हो आना अधिक अच्छा है। और ऐसा लिखने का कारण यही था कि किसी शान्तिपूर्ण गाँव में स्थायी रूप से बसे रहने से अध्ययन-क्रम के निर्बाध रूप से चलते रहने की सम्भावना सदा ही बनी रहती है और ऐसी जगह पढ़ने-लिखने की गुंजाइश भी बहुत रहती

है। ऐसे शान्त वातावरण में रहना उन स्थानों में रहने की अपेक्षा कहीं अच्छा है जहाँ अधिक संख्या में निष्कासित व्यक्ति रहते हों क्योंकि उन जगहों पर आलस्य तथा निष्क्रियता के कारण प्राय: लड़ाई-झगड़े हुआ करते हैं। ऐसी ही एक घटना के संबंध में, जिसमें न० ए० फ़ेदोसेयेव को वेर्खोलेन्स्क में आत्महत्या करनी पड़ी थी, व्लादीमिर इल्यीच ने मुझे लिखा था "नहीं आप लोग इस बात की इच्छा कभी न करें कि मेरे यहाँ, शूशा, में बौद्धिक वर्ग का कोई साथी आ जाय"। "निष्कासन संबंधी सबसे ख़राब बात यहाँ निष्कासन-घटनाओं का होना है"।*

कभी कभी व्लादीमिर इल्यीच तीस-तीस और साठ-साठ मील दूर बसने वाले अपने साथियों से मिलने जाया करते या शूशा में उनसे मुलाक़ात किया करते और इस कार्य में उन्हें बड़ी प्रसन्नता होती। उस काल में इस प्रकार की यात्राओं की अनुमति नव वर्ष, शादी विवाह तथा जन्म दिवसों आदि के अवसरों पर दे दी जाया करती थी। ऐसे समय जब वे एक दूसरे के साथ मिलते-जुलते तो समय बड़े आनन्द से कट जाता। मिलने-जुलने का यह क्रम तीन-तीन चार-चार दिनों तक चला करता। एक बार इल्यीच ने मुझे लिखा था कि गर्मी में अपने साथियों के साथ तैरने, घूमने-घामने, शिकार, तथा जाड़े में स्केटिंग और शतरंज खेलने में "हम सबको बड़ा आनन्द आता"। वे लोग भिन्न भिन्न विषयों पर बातचीत करते, व्लादीमिर इल्यीच की पुस्तक के अध्यायों को ज़ोर ज़ोर से पढ़ते अथवा साहित्य या राजनीति की नयी प्रवृत्तियों के संबंध में विचार-विमर्श करते। एक बार उपरिलिखित "क्रेडो" के संबंध में विचार विनिमय करने

---

* व्ला० इ० लेनिन: संबंधियों को पत्र, १९३४, पृ० ८८, १२५।—सम्पादक।

के लिए सारे साथी लेपेशीन्स्की की पुत्री के जन्म-दिवस की पार्टी में सम्मिलित होने के बहाने एक साथ इकट्ठे हुए थे। अपने निष्कासन-काल की अवधि में दो या तीन बार व्लादीमिर इल्यीच इलाज के बहाने इसी प्रकार मिनुसीन्स्क तथा क्रासनोयार्स्क गये थे।

अपने निष्कासित साथियों से बातचीत के दौरान में व्लादीमिर इल्यीच अपने विचारों को उनके सामने बिना किसी संकोच के रखते और उनके मानसिक विकास के अनुरूप उन्हें ऐसी ऐसी पुस्तकें आदि पढ़ने का सुझाव देते थे जो उनके लिए उपयोगी हो सकती थीं। उन्होंने वहाँ के किसानों की जीवनचर्या में बड़ी दिलचस्पी दिखाई। इनमें से कुछ लोग उन्हें आज भी याद करते हैं। इन लोगों ने व्लादीमिर इल्यीच के विषय में अपने संस्मरण भी भेजे हैं। परन्तु वे कृषकों से बातचीत करने में, स्वभावतया, सतर्क रहते थे। दूरस्थ साइबेरिया प्रदेशों की तो बात ही क्या उस समय मध्य रूस के किसानों में भी राजनीतिक जागरूकता न आ पाई थी। इसके अतिरिक्त, पुलिस की देख-रेख में रहते हुए अपने मत का वहाँ के किसानों में प्रचार करना न केवल अव्यवहार्य था अपितु असंगत भी था।

फिर भी व्लादीमिर इल्यीच किसानों से दिल खोल कर बातें करते जिससे उन्हें उनके संबंध में जानकारी प्राप्त करने तथा उनका दृष्टिकोण समझने में सहायता मिलती। वे उन्हें स्थानीय, और मुख्यतया वैधानिक, मामलों से संबद्ध हर बात के विषय में सलाह देते। वैधानिक मामलों के संबंध में उनसे राय लेने के लिए दूर दूर के किसान उनके पास आया करते। कभी कभी व्लादीमिर इल्यीच को अनेक विषयों पर अपना परामर्श देना पड़ता। इन विषयों का उल्लेख किसानों तथा नदेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना के लेनिन विषयक संस्मरणों में किया गया है। इस प्रकार जब तक वे उस गाँव में रहे उन्होंने इन बातचीतों तथा शिकार के समय लोगों के साथ की गयी बातों

से धीरे धीरे — जैसा कि उन्होंने इसके पहले वोल्गा ग्रामों के विषय में किया था — कृषक वर्ग और उसके मनोविज्ञान के विषय में अच्छा-खासा ज्ञान प्राप्त किया जिसने उनके क्रान्तिकारी कार्यों में और बाद में उस समय उनकी बड़ी सहायता की जब उन्होंने देश की बागडोर अपने हाथ में ली थी।

वे दूसरों से सीधे सरल ढंग से बातचीत करने में इतने पटु हो गये थे कि लोग उनके सामने अपने अन्तस् तक की बात कह डालने में न हिचकते।

निष्कासन काल समाप्त होते होते उनके व्यक्तित्व में अभूतपूर्व विकास हो गया। अब वे एक अनुभवी क्रान्तिवादी और गुप्त आन्दोलन के एक मान्य नेता थे। इस समय तक वे एक विद्वतापूर्ण कृति के रचयिता हो चुके थे। कृषकों के बीच तीन वर्षों तक रहने के कारण व्लादीमिर इल्यीच ने रूसी जनसंख्या के इस प्रमुख अंश के बारे में बहुत अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया था।

इस प्रकार व्लादीमिर इल्यीच ने तीस वर्ष की अवस्था में पुनः क्रान्तिकारी कार्यों को अपने हाथों में लिया। परन्तु इस समय उनका कार्यक्षेत्र पूर्वापेक्षा बहुत अधिक व्यापक था। इस समय उन्होंने रूस के समस्त क्रान्तिवादी सर्वहाराओं का नेतृत्व संभाला और अन्त में उनकी विजय हुई तथा उनकी चिरभिलाषा की पूर्ति भी।

निष्कासन से वापसी और समाचारपत्र "इस्क्रा" का विचार

फ़र्वरी १९००। हम सब और विशेष रूप से हमारी माताजी, इस महीने की बड़ी व्यग्रता के साथ प्रतीक्षा कर रही थीं। व्लादीमिर इल्यीच की निष्कासन अवधि समाप्त होनेवाली थी और हम सब यह आशा कर रहे थे कि शीघ्र ही वे साइबेरिया से वापस लौटेंगे। हम लोगों ने उन्हें पूरे तीन वर्षों से नहीं देखा था और हम बड़ी बेसब्री के साथ उनके लौटने की प्रतीक्षा कर रहे थे। हम सोच रहे थे कि कब एक बार फिर हम सब एक साथ होंगे। सच पूछा जाय तो उनकी दंडावधि जनवरी के आखिर में समाप्त होने वाली थी, क्योंकि तीन वर्ष पूर्व लगभग इसी समय उनकी दंडावधि पर अधिकारियों के हस्ताक्षर हुए थे। परन्तु रिहा होने के बाद उन्हें मिनुसींस्क से क्रास्नोयार्स्क तक की २२० मील की दूरी एक घोड़ा गाड़ी पर और शेष रेलगाड़ी द्वारा तय करनी थी। इसके अलावा हम सबको यह चिन्ता भी सता रही थी कि किसी अप्रत्याशित बाधा के कारण कहीं उनकी सज़ा बढ़ा तो नहीं दी गई है। हमारी धारणा और चिन्ता निराधार न थी। आखिर हम लोग एक निरंकुश शासन के अधीन

रह रहे थे और जहाँ तक निष्कासन का प्रश्न है उसकी अवधि घटाना बढ़ाना शासनाधिकारियों की मर्ज़ी पर था। अधिकारियों से तनिक भी कहा सुनी हुई, किसी स्थानीय निर्दय अधिकारी को थोड़ा सा भी बदला लेना हुआ कि निष्कासन की अवधि बढ़ गई।

मुख्यतया ऐसी बातें निष्कासन-स्थल पर किये गये अपराधों के कारण ही होती थीं, परन्तु कभी कभी केन्द्रीय शासन से भी अवधि बढ़ा देने के आदेश प्राप्त हो जाया करते थे। ये आदेश विभिन्न आधारों पर निकाले जाते थे, उदाहरणार्थ क्रान्तिवादी आन्दोलन में विस्तार हो जाने के कारण जब उन क्रान्तिवादियों को, जिनका जनता पर अच्छा ख़ासा असर होता था, उनके दंड-स्थानों से वापस बुलाना अनिष्टकर तथा अवांछनीय समझा जाता था तो केन्द्रीय आदेशों द्वारा उन्हें वहीं रोक दिया जाता था।

यही कारण था कि यद्यपि व्लादीमिर इल्यीच ने वहाँ शान्तिपूर्वक अपनी अवधि व्यतीत कर ली थी और अधिकारियों द्वारा लगाये गये किसी भी प्रतिबन्ध का उल्लंघन नहीं किया था, फिर भी भविष्य के लिए वे आकुल हो उठे थे और जैसे ही जैसे उनकी निष्कासन-अवधि समाप्त होती जा रही थी उनकी आकुलता बढ़ती जा रही थी।

उन्होंने लिखा था कि "यदि मेरी निष्कासन-अवधि बढ़ा न दी गई, तो मैं यहाँ से अमुक दिन प्रस्थान करूंगा।"

परन्तु उनकी शंका फलीभूत न हुई और उन्होंने वहाँ से अपनी योजनानुसार ही प्रस्थान किया। उनके पत्रों और एक तार से (कौन से तार या पत्र से यह मुझे याद नहीं) हमें उनके पहुंचने का दिन तथा समय मालूम हो गया था और हम उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

उनका छोटा भाई दिमित्री पहली बार सज़ा काट चुकने के बाद मास्को गुबेर्निया स्थित पोदोल्स्क में पुलिस की निगरानी में रह रहा था। पोदोल्स्क में वह भी उसी साइबेरियन ट्रेन में बैठ गया जिसमें

व्लादीमिर इल्यीच मास्को आ रहे थे। इस प्रकार दोनों भाई एक साथ मास्को पहुंचे।

उस समय हम लोग मास्को के बाहर की बस्ती में बखमेत्येव स्ट्रीट पर रह रहे थे जो कामेर-कोलेज्स्की रैम्पर्ट से भी दूर थी। जैसे ही हमने गाड़ी को रुकते हुए देखा हम सब व्लादीमिर इल्यीच के डिब्बे की ओर उनसे मिलने को दौड़े। सबसे पहले उनसे माताजी बोली थीं और उन्होंने बड़े दुख के साथ कुछ तेज़ आवाज़ में उनसे पूछा था—

"तुमने यह क्यों लिखा था कि तुम्हारा वज़न बढ़ गया है? देखते नहीं कितने दुबले हो गये हो।"

"मेरा वज़न बढ़ा ज़रूर था, परन्तु अभी हाल ही में, लौटने के कुछ ही पहले, थोड़ा घट गया है।"

नदेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना ने हमें बताया था कि जिस समय इल्यीच की निष्कासन-अवधि समाप्त होने वाली थी उस समय उनकी चिन्ता बढ़ गई थी। वे बराबर परेशान रहते और सोचा करते कि यह अवधि समाप्त भी होगी या नहीं। इसी कारण मेरे भाई का वज़न, जो पहले बढ़ गया था, अब घट गया है।

वोलोद्या ने भोजन के कमरे में आकर अपना कोट उतार कर टांगा ही था तथा कुशल-क्षेम पूछने-पाछने का तांता अभी समाप्त ही हुआ था कि हम पर प्रश्नों की बौछारें शुरू हो गयीं—

"यूली आया कि नहीं? उसका कोई पत्र मिला है? कोई तार?"

यूली त्सेदेरबौम को भी, जिसने बाद में अपना कल्पित नाम मारतोव रख लिया था, तुरुखान्स्क में निष्कासित किया गया था। दोनों ही को एक अवधि के लिए और एक ही अपराध में निष्कासन-दंड मिला था। यूली यहूदी था इसलिये उसे येनीसेई क्षेत्र के सबसे दूरस्थ तथा भयानक स्थान में रखा गया था।

और जब हमने व्लादीमिर इल्यीच को यह बताया कि अभी हाल तक हमें न तो यूली से ही कोई सूचना मिली है और न उसके बारे में ही, तो वे बहुत परेशान हो उठे।

"यह सब क्या तमाशा है? मैंने उसके साथ कुछ कार्यक्रम बनाया था। हुँह... इसका मतलब क्या है?" कमरे में पैर पटकते हुए उन्होंने कहा, "मैं उसे तार दूँगा। अभी... तुरन्त। दिमित्री तुम तार दे आओ।"

वे तार लिखने बैठ गये और उन्होंने अपने भाई को इस सम्बन्ध में ज़रूरी निर्देश देना शुरू कर दिया। उस समय दिमित्री और हम सबों को बड़ी निराशा हुई, क्योंकि हम सब यही चाहते थे कि पहले कुछ क्षण वे केवल हमें ही दें तथा अपने दिमाग में कोई बाहरी बातें न आने दें।

आश्चर्य मुझे इस बात पर हुआ कि आते ही वे मारतोव को क्यों पूछने लगे। मुझे मालूम था कि निष्कासन से पहले वोलोद्या की उनके दल के पुराने सदस्यों क्र्जिह्जनोव्स्की और स्तारकोव की अपेक्षा मारतोव से घनिष्ठता कम थी, क्योंकि वह उनके दल में नया नया आया था। मुझे यह भी मालूम था कि व्लादीमिर इल्यीच निष्कासन-काल में अपने इन दोनों पुराने साथियों से अधिक दूर नहीं रह रहे थे (लगभग ३० मील) और वे उनसे प्रायः मिला करते थे। ऐसी दशा में लोग पूर्वापेक्षा प्रायः एक दूसरे के और अधिक निकट आ जाते हैं। फिर भी व्लादीमिर इल्यीच ने इनके बारे में तो थोड़ी सी ही पूछताछ की और वह भी साधारण और रस्मी किस्म की जबकि मारतोव के बारे में सूचना प्राप्त करने की वे बड़ी बेसब्री से प्रतीक्षा करते रहे।

बाद में जब हमारी व्लादीमिर इल्यीच से बात हुई, तो हमें वस्तुस्थिति का पता चला। वे अपने भावी कार्यों के लिए त्सेदेरबौम को

अपना सबसे निकट का साथी मानते थे। इन कार्यों में सारे रूस के लिए एक समाचारपत्र निकालना सर्वप्रमुख था। वे यूली के क्रान्तिवादी स्वभाव से बड़े प्रभावित हुए थे। उस समय तक उन्हें बड़ी चिन्ता बनी रही जब तक कि यूली की यह ख़बर न आ गई कि वह तुरुखान्स्क से सही-सलामत चल चुका है। उन्होंने हमारे सामने एक गीत गाया जिसकी रचना त्सेदेरबौम ने अपने निष्कासन काल में की थी :

जो शिकार के हित व्याकुल हो सदा घूमते,
उन जंगल के पशुओं का
यह शोर नहीं है, गरज नहीं है—
यह हैं क्रुद्ध पवन के झोंके—
उत्तेजित हिम-पात प्रबल है—
रोषपूर्ण तूफ़ान भेदता
विजयी हास्य सुनाई देता है दुश्मन का।
साहस, साहस, अरे साथियों!
आओ, क़िस्मत को ललकारें
अपने शौर्य और गीतों में—
अपनी धधक रही नफ़रत में—
इस अपनी रूसी-धरती पर
अनगिन ऐसे लोग मिलेंगे
जिन में क़िस्मत से टकराने,
लोहा लेने का बल होगा।
वे नायक कहलाने के अधिकारी होंगे।
किन्तु, बहुत ऐसे भी होंगे
जिनसे साथ न निभ पायेगा।
ऐसे भाग्यहीन अपने भी

इसी नरक में सड़ जायेंगे,
और, उन्हें हम सड़ने देंगे।
किन्तु, सुरा का पान और शोभाहृत-जीवन
सिखलायेगा शीघ्र
दम्भ से बचना उनको।

इल्यीच गा रहे थे तथा उनकी बहन पियानो पर उनका साथ दे रही थी। वे इस गाने को पोलिश क्रान्तिवादी गीतों की धुन पर गाये जा रहे थे। ये गीत उन्होंने निष्कासित पोलिश श्रमिकों से अंशतया पोलिश भाषा में, और अंशतया क्ज्हिजानोव्स्की द्वारा अनूदित रूसी भाषा में, सीखे थे।

गीतों के शीर्षक थे "अत्याचारियो बके जाओ", "वर्शावियान्का", "लाल ध्वज"। मुझे अच्छी तरह याद है कि व्लादीमिर इल्यीच अपने खाने के कमरे में टहलते हुए बड़े जोश के साथ गाया करते थे:

इस झंडे का रंग लाल है
क्योंकि श्रमिक के लाल-रुधिर से
इस झंडे को रंगा गया है।

वे पोलिश श्रमिकों के क्रान्तिकारी गीतों की प्रशंसा करते और प्रायः कहा करते कि रूस में भी इसी प्रकार के गीतों की आवश्यकता है।

उन वर्षों में निष्कासन से लौटने वाले व्यक्तियों को रूस में लगभग ६० स्थानों पर रहने की अनुमति न थी।

राजधानियों तथा विश्वविद्यालय वाले नगरों के अलावा इन निषिद्ध स्थानों में ऐसे सभी औद्योगिक केन्द्र आ जाते थे जहाँ श्रमिक आन्दोलन तेज़ी पर होता था। इस प्रकार १९०० के अन्त तक इन

निषिद्ध नगरों के अन्तर्गत प्रायः सभी औद्योगिक केन्द्र आ गये थे। अतः निष्कासित व्यक्तियों को यह तय करने की सुविधाएं बहुत कम थीं कि वे किन नगरों में रहें। जब व्लादीमिर इल्यीच साइबेरिया में ही थे उस समय उन्होंने त्सेदेरबौम तथा पोत्रेसोव (जो व्यात्का गुबेर्निया में निष्कासित था) की सलाह से प्स्कोव में, जो पीटर्सबर्ग के सबसे निकट बसा हुआ एक नगर था, रहना निश्चित किया था। वे अपने इन मित्रों के साथ एक अखिल रूसी समाचारपत्र निकालने का विचार कर रहे थे। त्सेदेरबौम पीटर्सबर्ग होकर प्स्कोव पहुँचा जहाँ वह अपने माता पिता से मिला। व्लादीमिर इल्यीच के मास्को से चले जाने के पश्चात् पोत्रेसोव ने हम लोगों से मास्को में मुलाक़ात ली।

मुझे इस समय याद नहीं पड़ रहा है कि हमने अपने भाई के साथ कितने दिन बिताये थे। जब तक वे हम लोगों के साथ रहे उनसे मिलने के लिए येकातेरिनोस्लाव से एक व्यक्ति आया करता जिसका नाम था इ०ख० ललायान्त्स। व्लादीमिर इल्यीच इस व्यक्ति को समारा में उस समय से जानते थे जब वह सामाजिक-जनवादी पार्टी तथा "यूज्नी रबोची" (दक्षिण के श्रमिक) के सम्पादक मंडल का सदस्य था। ललायान्त्स हमारे साथ तीन दिनों तक ठहरा और दोनों ने अपने कार्यों के सम्बन्ध में विस्तारपूर्वक बातें कीं।

बाद में व्लादीमिर इल्यीच ने मुझे बताया कि उन लोगों ने अपनी पार्टी का दूसरा अधिवेशन आयोजित करने के सम्बन्ध में विशेष रूप से विचार-विमर्श किया था। उनकी योजना यह थी कि यह अधिवेशन रूस में ही किया जाय। अप्रैल १९०० में दक्षिण में जो गिरफ़्तारियाँ हुई थीं—उन गिरफ़्तार व्यक्तियों में ललायान्त्स भी था—उनसे व्लादीमिर इल्यीच को यह विश्वास हो गया था कि रूस में ऐसा अधिवेशन करना असम्भव है। इसके बारे में उन्होंने मुझे जून

में, अपनी विदेश-यात्रा से पूर्व, बताया था और साथ ही मुझे एक अखिल रूसी समाचारपत्र निकालने की योजना भी विस्तारपूर्वक समझायी थी। उनका कहना था कि इस प्रकार के समाचारपत्र से रूस के कोने कोने में जागरण की एक लहर फैलेगी और हमारे इस विशाल तथा महान् देश में जो दल तथा समितियाँ बिखरी हुई पड़ी हैं उन्हें कुछ मूलभूत सिद्धान्तों के आधार पर एक सूत्र में पिरोने में सहायता मिलेगी।

उनका कहना था कि यदि अधिवेशन की तैयारियों से ही हमारे ऊपर ऐसी ऐसी विपत्तियाँ आ सकती हैं और हमारे प्रमुख कार्यकर्ताओं की गिरफ़्तारी द्वारा हमारे संघटन को धक्का पहुंच सकता है, तो हमारे लिए निरंकुश रूस में ऐसे अधिवेशनों का आयोजन करना किसी प्रकार भी उचित नहीं। अतएव पार्टी को सबल बनाने के लिए हमें अन्य साधन अपनाने होंगे और इन साधनों में से एक है अखिल रूसी समाचारपत्र जो विदेश में प्रकाशित किया जाय। इस पत्र से हम अपनी पार्टी का ठीक उसी प्रकार संगठन तथा निर्माण कर सकेंगे जैसे मचानों की सहायता से भवन का किया जाता है।

व्लादीमिर इल्यीच के इसी विचार ने "इस्क्रा" को जन्म दिया जिसका आदर्श वाक्य था "चिनगारी बढ़ते बढ़ते किसी दिन ज्वाला का रूप लेगी"। और वास्तव में "इस्क्रा" ने पार्टी का संगठन करने तथा क्रान्ति की ज्वाला को प्रज्वलित करने का अपना कार्य पूरा किया।

इल्यीच की तीसरी गिरफ़्तारी ऊफ़ा जाना तथा विदेश के लिए प्रस्थान

साइबेरिया से इल्यीच के वापस आने पर हम सबको बड़ी खुशी हुई थी, परन्तु वे अधिक दिन हमारे साथ न रह सके। मास्को में थोड़े दिन रह चुकने के पश्चात् वे प्स्कोव चले गये और मई में यह दुखद संवाद मिला कि वे पीटर्सबर्ग में गिरफ़्तार हो गये हैं। मुझे याद है कि इस ख़बर से हम सबकी, और विशेषकर माताजी की, क्या दशा हुई थी। माताजी ने पिछले कई अवसरों पर कष्टों को झेलने में जिस संयम और धैर्य का परिचय दिया था वह इस अवसर पर काम न आया। अब वे निराश हो चली थीं। गिरफ़्तारियों की ख़बरें सुन सुन कर उनके कान पक गये थे: जिस समय व्लादीमिर इल्यीच निष्कासन में थे उनके छोटे भाई दिमित्री को, जो पांचवें वर्ष का विद्यार्थी था, गिरफ़्तार कर लिया गया और उसे नौ महीने जेल में काटने पड़े। अभियोक्ता उसके विरुद्ध कोई जुर्म न सिद्ध कर सके। मुकदमे में ही महीनों लग गये और उसके ख़िलाफ़ ऐसे एक भी तथ्य न मिले जिन पर वे अभियोग को आधारित करते। आत्म-शिक्षा के लिए उसने जो अध्ययन-मंडल क़ायम किया था उसमें अपराध के वर्ग में रखी जा सकने वाली

कोई बात न थी और यह बात भी कभी प्रकाश में न आई कि वह गुज्हों फ़ैक्ट्री में काम करने वाले श्रमिकों के लिए अध्ययन कक्षाएं चलाता था। दिमित्री को मास्को की जेल की दशाएँ अनुकूल न पड़ीं। इसी चिन्ता में माताजी बीमार पड़ गईं। ब्लादीमिर इल्यीच के निष्कासन से आने के थोड़े ही दिन बाद उनकी बहन मरीया को गिरफ़्तार कर लिया गया। इस समय तो उसे गिरफ़्तार करने का कोई बहाना भी न था। ब्रुसेल्स यूनिवर्सिटी के उसके अध्ययन में बाधा पड़ी और उसे नीज्नी नोवगोरोद में निष्कासित कर दिया गया। इन सब कारणों से माताजी बड़ी परेशान हो जाया करतीं। कभी वे दिमित्री से मिलने तूला जातीं और कभी मरीया से मिलने नीज्नी। हम लोगों ने किसी प्रकार मरीया को वापस घर लाने तथा दिमित्री को मास्को गुबेर्निया स्थित पोदोल्स्क में, जहाँ हम लोग स्वयं गर्मी में जाने की सोच रहे थे, रखवाने की व्यवस्था कर ली थी। इसी समय हम पर एक नई मुसीबत आ पड़ी जो पहली मुसीबतों से अधिक कष्टकर थी। वोलोद्या, जो इस समय तक एक प्रमुख क्रान्तिवादी के रूप में प्रसिद्ध हो चुके थे, पीटर्सबर्ग में गिरफ़्तार हो गये। पीटर्सबर्ग जाना उनके लिए प्रतिषिद्ध था। गिरफ़्तारी के समय उनके पास से विदेश-यात्रा के लिए एक पासपोर्ट भी बरामद हुआ था।

इसका अर्थ था कि अब वे विदेश-यात्रा न कर सकेंगे। क्यों? यदि अधिकारी मरीया का पासपोर्ट ले सकते थे और उसे विदेश में अध्ययन करने की अनुमति न दे सकते थे तो वोलोद्या को ही देश छोड़ने की अनुमति क्यों दी जाती?

हम लोग सदा यही मनाया करते कि ब्लादीमिर इल्यीच किसी प्रकार विदेश चले जायँ क्योंकि उनकी क्रान्तिवादी रुझान के कारण उनके लिए रूस में रह सकना सम्भव न था। इतना ही नहीं। उनकी गिरफ़्तारी का अर्थ एक दूसरा बड़ा मुकदमा भी हो सकता था। हमें

यह बिल्कुल न मालूम हो सका कि वे कैसे, क्यों और किन परिस्थितियों में गिरफ़्तार हुए हैं और हमें उनके उस पत्र पर पूरा पूरा तस्कीन न हुआ जिसे उन्होंने एक सैनिक पुलिस अफसर की मार्फ़त भेजा था और जिसमें हम लोगों से यह कहा था कि हम लोग चिन्ता न करें। जहाँ तक मुझे याद है हमें उनकी गिरफ़्तारी की बात इसी पत्र से मालूम हुई थी। जब गिरफ़्तार हुए व्यक्ति अपने सगे सम्बन्धियों को अपनी गिरफ़्तारी के तुरन्त बाद के कुछ दिनों में सांत्वना देते हुए यह लिखते थे कि उनकी नज़रबन्दी केवल पन्द्रह-बीस दिन की अथवा एक महीने की है तो अपने कटु अनुभवों के आधार पर हम जानते थे कि इसके क्या माने हैं और यह थोड़ी सी अवधि अन्त में कितनी लम्बी सिद्ध होती है। परन्तु इस बार हमें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि दो ही तीन हफ़्तों के बाद वोलोद्या को रिहा कर दिया गया और वे अपने पासपोर्ट के साथ पोदोल्स्क में हमारे पास आ गये। बाद में यह पता चला कि उनके ख़िलाफ़ कोई भी प्रमाण न मिला था। व्लादीमिर इल्यीच और त्सेदेरबौम, जो साथ ही साथ गिरफ़्तार हुए थे, केवल इसी अपराध के दोषी पाये गये कि उन्होंने अनधिकृत रूप से पीटर्सबर्ग में प्रवेश किया था।

मेरे भाई ने हमें अपनी इस गिरफ़्तारी का किस्सा सुनाया था। वे दोनों पीटर्सबर्ग गये हुए थे और अपने साथ एक बक्सा भर किताबें भी ले गये थे। फिर भी यदि वे गुप्त कार्यों से संबद्ध कौशल का बहुल प्रयोग न करते तो कुछ न होता। बात यह हुई कि अपने आपको छिपाने के लिए, उन्होंने पीटर्सबर्ग जाते समय अपनी गाड़ी बदली, परन्तु यह ध्यान न रखा कि उन्हें उस लाइन से होकर जाना पड़ेगा जो त्सारस्कोये सेलो से होकर जाती है। यह ज़ार का निवास स्थान था। फलतः यहाँ पुलिस का सख्त पहरा था। "ओखरान्का"

पुलिस ने उनकी इस तरकीब का मज़ाक भी उड़ाया था। फिर भी उन्हें वहाँ उसी समय गिरफ़्तार न किया गया। पीटर्सबर्ग पहुंचने पर उन्होंने अपना बक्सा अपने किसी साथी को दिया तथा वहाँ वे अपने मित्रों से मिले। पुलिस को इसकी कानोकान ख़बर न लगी। उन्होंने रात्रि कज़ाची गली के आसपास किसी स्थान पर बिताई। परन्तु प्रातःकाल जैसे ही वे वहाँ से चलने लगे कि गुप्तचरों ने उन्हें धर लिया। व्लादीमिर इल्यीच ने हमें बताया कि उन्हें दोनों कुहनियाँ बाँध कर गिरफ़्तार किया गया था ताकि वे अपनी जेब की कोई चीज़ बाहर न फेंक सकें। गाड़ी में भी दो जासूस सारे रास्ते उनकी दोनों कुहनी पकड़े बैठे रहे। इसी प्रकार त्सेदेरबौम को भी गिरफ़्तार किया गया था और उसे दूसरी गाड़ी में ले जाया गया था।

व्लादीमिर इल्यीच सबसे अधिक परेशान उस पत्र के कारण थे जिसे उन्होंने रासायनिक द्रवों की सहायता से प्लेखानोव को लिखा था। यह पत्र एक साधारण से कागज़ पर था और उसपर ऊपर से एक बिल की नक़ल थी। देखने वाले उसे एक बिल ही समझते थे। इस पत्र में वस्तुतः एक अखिल रूसी समाचारपत्र की योजना का उल्लेख था और यदि वह अधिकारियों के हाथ में पड़ गया होता, तो फिर व्लादीमिर इल्यीच की खैर न थी। पूरे तीन सप्ताह तक उन्हें यह न मालूम हो सका कि पत्र को सेंक सांक कर पढ़ने योग्य बनाया गया या नहीं। उनकी मुख्य परेशानी यह थी कि रासायनिक स्याही से लिखे गये शब्द अपने आप न चमक जायं जैसा कभी कभी हो चुका था। परन्तु पत्र के साथ कोई घटना न घटी। पुलिस ने इस पत्र पर कोई ध्यान न दिया और उसे बिना किसी रद्दोबदल के मेरे भाई को वापस कर दिया गया। जब व्लादीमिर इल्यीच हमसे मिलने पोदोल्स्क आये तो अत्यधिक प्रसन्न थे। उनकी तथा त्सेदेरबौम की

विदेश यात्रा में अब कोई बाधा न थी। अब वे एक अखिल रूसी समाचारपत्र की अपनी योजना कार्यान्वित कर सकते थे।

उस वर्ष बसन्त ऋतु के आरम्भ में हम लोग पोदोल्स्क गये जहाँ हमने केद्रोव के मकान में अपने रहने के लिए किराये पर एक फ़्लैट लिया। यहाँ हम गर्मी भर रहना चाहते थे। यह मकान पखरा नदी के किनारे शहर से कुछ बाहर था। वोलोद्या वहाँ हमारे साथ लगभग एक सप्ताह तक रहे और घूमने-घामने तथा पोदोल्स्क के आसपास की मनोहर प्राकृतिक छटा के बीच नावों द्वारा सैर करने में बराबर हमारा साथ देते रहे। वहाँ वे मैदान में क्रोकेट भी खेलते थे। उनसे मिलने के लिए लेपेशीन्स्की और बाद में शेस्तेरनीन तथा उसकी पत्नी सोफ़िया पावलोव्ना आईं। ये दोनों एक रात हम लोगों के साथ रहे।

मुझे आज भी अच्छी तरह याद है कि इनसे बातचीत के दौरान में वोलोद्या ने विदेशों में "रबोचेये देलो" की स्थिति की निन्दा की थी और उन दोनों ने उसके समर्थन में अपना पक्ष रखा था। वोलोद्या से मिलने के लिए अन्य लोग भी आया करते जिनसे वे सांकेतिक पद्धति में पत्र-व्यवहार करने के सम्बन्ध में बातचीत करते तथा इस बात पर विशेष ज़ोर देते कि वे लोग अखिल रूसी समाचारपत्र के लिए, जिसकी योजना बन चुकी थी, अपने लेख तथा अन्य उपयोगी सामग्री भेजते रहें। परन्तु इस विषय की बातें वे केवल अपने घनिष्ठ मित्रों से ही करते।

विदेश जाने के पूर्व वोलोद्या अपनी पत्नी नदेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना से मिलने ऊफ़ा जाना चाहते थे। उनकी पत्नी की गिरफ़्तारी की अवधि मार्च १९०१ में समाप्त होने वाली थी।

माताजी इसका प्रबन्ध करने के लिए पीटर्सबर्ग गईं और वे अपने प्रयत्न में सफल हुईं जिस पर हमें कुछ आश्चर्य भी हुआ था।

पुलिस हेडक्वार्टर्स में माता जी ने कहा था कि वे अपने पुत्र के साथ जाना चाहती हैं। फलतः उन्हें इसकी अनुमति मिल गई। इस प्रकार हम तीनों रेल द्वारा नीज्नी नोवगोरोद गये जहाँ हमें स्टीमर द्वारा आगे जाना था।

मुझे इस यात्रा की अच्छी तरह याद है। जून का महीना था। नदी में पानी अपने पूरे वेग पर था और पहले वोल्गा, फिर कामा और अन्ततः बेलाया नदियों से होकर नाव पर यात्रा करने में विचित्र आनन्द आ रहा था। हम लोग प्रत्येक दिन डेक पर ही जमे रहते और वहीं सारे का सारा दिन बिता डालते। वोलोद्या का उत्साह इस समय बहुत बढ़ा-चढ़ा था। नदी तथा उसके तटों पर बसे हुए वन अपनी स्वाभाविक सुरभि से आसपास के वातावरण को जीवन प्रदान कर रहे थे और वोलोद्या इन क्षणों का आनन्द ले रहे थे। मुझे याद है कि हम लोग कामा तथा बेलाया नदियों में से गुज़रते हुए इस छोटे से जहाज़ के ऊपरी डेक पर कितनी रातें बातों में काट देते। जब माताजी थक जातीं, तो सोने के लिए अपने कमरे में चली जातीं। वहाँ जो अन्य थोड़े से यात्री थे वे पहले ही अपने अपने कमरों में चले जाते थे। फलतः सारे डेक पर केवल हमीं दो का कब्ज़ा रहता और हम उस समय निश्चिन्त होकर गुप्त मामलों पर बातचीत करते। उस समय व्लादीमिर इल्यीच ने बड़े उत्साह तथा विस्तार के साथ मुझे अखिल रूसी समाचारपत्र की अपनी योजना समझायी थी। यह समाचारपत्र पार्टी को सुदृढ़ बनाने के लिए एक मज़बूत स्तम्भ के रूप में था। उनका कहना था कि निरन्तर गिरफ़्तारियों के कारण रूस में सम्मेलन आयोजित करना बिल्कुल असम्भव है। उसी वर्ष अप्रैल के महीने में सारे दक्षिण में बड़ी संख्या में जो गिरफ़्तारियाँ हुई थीं उनसे कई संघटन तो समाप्तप्राय हो चुके थे, जिनमें से एक येकातेरीनोस्लाव

में "यूज्नी रबोची" का सम्पादक-मण्डल भी था। व्लादीमिर इल्यीच का समारा का मित्र इ०स० ललायान्त्स यहाँ भी (दक्षिण में) गिरफ़्तार हुआ था। पाठकों को ललायान्त्स के बारे में याद होगा। यह व्यक्ति व्लादीमिर इल्यीच से मिलने के लिए उस समय आया था जब वे फ़रवरी में प्स्कोव जाते हुए कुछ दिनों के लिए हमारे साथ मास्को में ठहरे थे और वहाँ उसने उनसे पार्टी के प्रस्तावित द्वितीय सम्मेलन के सम्बन्ध में बातचीत की थी।

"यदि सम्मेलन की तैयारियों मात्र से ऐसी विभीषिकाएं सामने आयें और अनेक लोगों को कुरबानियाँ करनी पड़ें तो रूस में ऐसा संघटन बनाना पागलपन है। ऐसी दशा में विदेशों में प्रकाशित पत्र ही "अर्थवाद" जैसी प्रवृत्तियों से निरन्तर मोर्चा ले सकता है और सामाजिक-जनवाद के उन सिद्धान्तों के आधार पर पार्टी का संघटन कर सकता है जिन्हें लोगों ने ठीक ठीक समझा है। अन्यथा, यदि सम्मेलन हो भी जाय तो, पहले सम्मेलन की भाँति, उसके समाप्त होने के पश्चात् फिर सब कुछ करा कराया मिट्टी हो जायगा।"

इन तमाम वर्षों के बाद यद्यपि मैं इस समय अपनी बातचीत के पूरे विवरण तो नहीं दे सकती, हाँ सामान्य रूप से मुझे बातचीत का विषय तथा आशय अच्छी तरह याद है। हमने "श्रम-उद्धार" दल तथा "रबोचेये देलो" दल की स्थिति तथा उनके बीच जो संघर्ष चला आ रहा था उसके विषय में ढेरों बातें की थीं। व्लादीमिर इल्यीच "श्रम-उद्धार" दल के समर्थक थे। उन्होंने व्यक्तिगत रूप से प्लेखानोव का समर्थन किया और उन पर अपने साथियों के साथ सद्व्यवहार न करने और उद्धत स्वभाव होने का जो आरोप लगाया जाता था तथा सम्पूर्ण दल को जड़ता तथा शक्तिहीनता की जो संज्ञा दी जाती थी उसकी भी

भर्त्सना की। मैंने उन्हें यह समझाया था, जैसा कि शेस्तेरनीन तथा व्यावहारिक क्षेत्र में काम करने वाले अन्य साथियों ने भी किया था, कि हमारे लिए यह हितकर न होगा कि हम "रबोचेये देलो" से अपना सम्बन्ध विच्छेद कर लें, क्योंकि केवल उन्हीं से हमें आवश्यक साहित्य प्राप्त होता था, वे ही हमारे पत्रों को प्रकाशित करते थे और वे ही हमारे कार्यों को पूरा करते थे। उदाहरणार्थ, मास्को समिति ने उन्हें प्रकाशनार्थ एक पत्रक भेजा था जो मई दिवस, १९०० के सम्बन्ध में तैयार किया गया था। इसके विपरीत "श्रम-उद्धार" दल की तो हालत यह थी कि वे प्रायः हमारे पत्रों का उत्तर तक नहीं देते थे। व्लादीमिर इल्यीच का कथन था कि "श्रम-उद्धार" दल व्यावहारिक कार्यों के लिए पुराना पड़ चुका है और उसकी उपयोगिता कम हो गई है। इसलिए यह आवश्यक है कि हमारे युवक साथी इस दिशा में उसकी सहायता करें। परन्तु उन्हें इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि वे इस दल की परिपक्व सैद्धान्तिक विचारधारा का अनुसरण करते रहें और अपना एक नया दल न बनायें। स्वयं व्लादीमिर इल्यीच भी अपने कार्य और विदेशों में रहने वाले अपने अन्य साथियों के विषय में यही सोचा करते थे।

हम लोगों ने "क्रेडो" तथा "क्रेडो-विरोधी", बर्न्शटीन और कौत्स्की, तथा तत्कालीन आम चर्चा के प्रायः सभी विषयों पर बातचीत की। वोलोद्या में उत्साह था, उमंग थी और अपने कार्यों को सम्पन्न करने की उत्कट अभिलाषा भी थी। हमारी यह यात्रा चिरस्मरणीय रहेगी।

ऊफ़ा में व्लादीमिर इल्यीच स्थानीय साथियों से मिले। मुझे याद है कि वे अपने एक साथी क्रोख्माल से सांकेतिक प्रणाली अपनाये जाने

की एक विशिष्ट व्यवस्था के सवाल पर भी सहमत थे। मुझे यह भी याद है कि उनसे मिलने के लिए आसपास के क्षेत्रों से निष्कासन-दण्ड भुगते हुए लोग भी आया करते थे। माता जी तीन दिनों के पश्चात् वहाँ से चली आई थीं परन्तु ब्लादीमिर इल्यीच वहीं रहे। कुछ समय बाद ट्रेन द्वारा वे वापस चले आये। लौटते समय वे समारा में भी ठहरे थे। जहाँ जहाँ वे गये उन्होंने पत्रव्यवहार द्वारा तथा सांकेतिक भाषा में लेखादि लिखने का प्रबन्ध किया। पोदोल्स्क वापस आने के तुरन्त बाद वे विदेश चले गये। एक पखवारे बाद मैं भी उनसे मिलने के लिये चल पड़ी।

द. इ. उल्यानोव और म. इ. उल्यानोवा

लेनिन

विषयक संस्मरणों के अवतरण

स्कूल में

दिमित्री उल्यानोव द्वारा

१

व्लादीमिर इल्यीच की पढ़ाई-लिखाई पाठशाला में भली भांति चलती रही। प्रत्येक कक्षा में उन्हें सबसे अधिक अंक प्राप्त होते तथा प्रथम पुरस्कार भी मिलते। १७ वर्ष की उम्र में उन्होंने स्कूल छोड़ा और वहां से स्वर्ण पदक प्राप्त किया।

जब कभी स्कूल में उन्हें निबन्ध-लेखन का काम दिया जाता, तो वे अपने अन्य साथियों की तरह यह काम रातों-रात नहीं कर डालते। इस काम में जल्दबाज़ी करने के वे आदी न थे। इसके विपरीत होता यह था कि जब कक्षा में घर के लिए कोई लेख दिया जाता और यह बताया जाता कि निबन्ध अमुक दिन देना है — प्रायः यह निबन्ध एक पखवारे के बाद देना होता था — तो व्लादीमिर इल्यीच उसे पूरा करने के लिए स्वयं अपना कार्यक्रम निश्चित करते। निबन्ध निर्दिष्ट किये जाने के तुरन्त ही बाद वे उस पर विचार करना आरम्भ कर देते। एक काग़ज़ पर वे निबन्ध की रूप-

रेखा तैयार करते और भूमिका तथा निष्कर्ष पहले ही लिख डालते। तत्पश्चात् वे एक पूरा काग़ज़ लेते, इसे लम्बाई की तरफ़ से आधा मोड़ते और बाईं तरफ़ अपनी योजनानुसार यह टांक लेते कि निवन्ध में क्या क्या और कितना लिखना है। दाईं तरफ़ का आधा भाग वे ख़ाली छोड़ देते। बाद में यदि वे अपने निवन्ध में लिखे जाने वाले विषयों में कुछ घटाना बढ़ाना चाहते, तो उसे दाहिनी तरफ़ लिख लिया करते। कभी कभी वे दाहिनी ओर सम्बद्ध साहित्य के अभिदेश भी टांक लिया करते... जैसे अमुक पुस्तक का अमुक पृष्ठ देखो।

धीरे धीरे उक्त काग़ज़ के दाहिनी तरफ़ का भाग टिप्पणियों, परिष्कारों, अभिदेशों आदि से भर जाता। तत्पश्चात्, निर्दिष्ट समय के कुछ पहले वे साफ़ काग़ज़ लेते और पूरा निबन्ध लिख जाते तथा साथ ही साथ वे उन अवतरणों को भी देखते जाते जिन्हें वे पुस्तकों में चिन्हित कर लेते। सम्बद्ध पुस्तकों की वे पहले से ही व्यवस्था कर लेते और निवन्ध लिखने के समय ये पुस्तकें उनके पास ही उपलब्ध रहतीं। इस लेख में अनेक स्थान पर काट-छाँट रहती। एक बार सम्पूर्ण निवन्ध लिख लेने के बाद स्याही से वे उसकी एक स्वच्छ प्रति तैयार करते।

यहाँ यह कह देना असंगत न होगा कि व्लादीमिर इल्यीच स्कूल के वर्षों में जब कभी कुछ लिखने बैठते तो अस्वच्छ प्रति के लिए वे सदा पेंसिल का ही प्रयोग करते। पेंसिल बनाना भी उनके लिए एक कला थी। वे अपनी पेंसिल को ख़ूबसूरती के साथ बनाते और उसकी नोक महीन रखते। इसका परिणाम यह होता कि जब वे लिखने लगते तो ऐसा लगता कि धागे में मोती पिरते चले जा रहे हैं। जब कभी नोक मोटी हो जाती या टूट जाती तो वे उसे फिर बनाने में नये उत्साह के साथ जुट जाते और तब तक जुटे

रहते जब तक कि वह उनकी इच्छानुसार बन कर तैयार न हो जाती।

उस समय, जब व्लादीमिर इल्यीच स्कूल के विद्यार्थी थे, मेरी उम्र यही कोई बारह-तेरह बरस की रही होगी। उन्हें निबन्ध लिखते देखना न जाने क्यों मुझे बड़ा अच्छा लगता। जब वे अपने स्थान पर न रहते तो मैं चुपके से उनका पन्ना उठा ले जाता और यह देखकर मुझे आश्चर्य होता कि पृष्ठ का पूर्वार्द्ध नई नई पंक्तियों से कितनी जल्दी भर जाता था। फ़्योदोर मिखाइलोविच केरेन्स्की, जो एक प्रसिद्ध सामाजिक-क्रान्तिकारी के पिता और सिम्बिर्स्क पाठशाला के प्रधान थे, व्लादीमिर इल्यीच को रूसी पढ़ाया करते। वे व्लादीमिर इल्यीच के निबन्धों की बड़ी सराहना करते जिससे बराबर उनका उत्साहवर्द्धन होता रहता। प्रायः ऐसा होता कि वे व्लादीमिर इल्यीच को उनके निबन्ध के लिए सबसे अधिक अंक देने के साथ साथ उसके आगे एक योग चिह्न (+) भी लगा दिया करते। फ़्योदोर मिखाइलोविच हमारी माता जी को बताया करते थे कि व्लादीमिर इल्यीच के लेखों की विशेषता यह थी कि वे एक सुविचारित पद्धति पर आधारित होते उत्कृष्ट विचारों से ओत-प्रोत रहते और उनकी अभिव्यक्ति सीधी-सादी, सरल तथा प्रवाहयुक्त भाषा में होती।

माता जी व्लादीमिर इल्यीच के स्कूल दिवसों के कुछ निबन्ध बहुत समय तक अपने पास रखे रहीं, परन्तु दुर्भाग्यवश, कई बार एक नगर से दूसरे नगर आने जाने और स्थान-परिवर्तन तथा सैनिक पुलिस द्वारा ली गई तलाशियों के कारण वे सभी खो गये।

अपने स्कूल के दिनों में ही व्लादीमिर इल्यीच ने अपने पूर्वजों के इस सिद्धान्त पर अमल करना आरम्भ कर दिया था कि जो कुछ लिखा जाय उसमें "विचारों की बहुलता तथा वेग तो हो, परन्तु शब्दों की न्यूनता की लगाम बराबर लगी रहे।"

मारिया उल्यानोवा द्वारा

२

जब व्लादीमिर इल्यीच पाठशाला की उच्च कक्षाओं के विद्यार्थी थे उस समय वे अपनी संध्याएं पुस्तकों के अध्ययन में व्यतीत करते और अपने आपको क्रान्तिकारी कार्यों के लिए तैयार करते, क्योंकि वही उनके भावी जीवन का प्रमुख लक्ष्य था। मुझे विशेष रूप से उस समय की आज भी याद है जब स्कूल छोड़ने के बाद तथा पीटर्सबर्ग जाने के पहले वे कज़ान और समारा में हमारे यहां ठहरे थे।

१८८७ की बसन्त ऋतु में (जिस वर्ष व्लादीमिर इल्यीच ने स्कूल छोड़ा था) हमें अपने सबसे बड़े भाई की फांसी का दुखद समाचार मिला। यद्यपि तब से अब बीसियों वर्ष हो चुके हैं, परन्तु आज भी मेरी निगाहों के आगे व्लादीमिर इल्यीच की सारगर्भित आकृति नाच रही है और मुझे उनकी यह आवाज़ बराबर सुनाई पड़ रही है "नहीं, हम उस रास्ते पर न चलेंगे। वह रास्ता ठीक नहीं।" और वे उस रास्ते की ओर अग्रसर होने के लिये कटिबद्ध हुए जिसके विषय में उनका विचार था कि वह विजय-पथ की ओर ले जाने वाला मार्ग है; और जिस पर चल कर वास्तव में हमें विजय मिली।

जब हम समारा गुबेर्निया के एक गांव में रहा करते थे उस समय व्लादीमिर इल्यीच प्रत्येक दिन प्रातःकाल, नाश्ते के पश्चात्,

उद्यान के एक एकान्त स्थल में निकल जाते जहां एक मेज़ तथा एक बेंच पड़ी रहती। वे अपने साथ ढेरों कापियां किताबें ले जाते और प्रायः सारा दिन वहीं अध्ययन में लगा देते। उन्होंने केवल पढ़ने की गरज़ से नहीं पढ़ा। वे लेखकों के सम्बन्ध में भी अध्ययन करते तथा अपने नोट और उद्धरण अलग लिखा करते। मैं व्लादीमिर इल्यीच के पास उनके उक्त अध्ययन-स्थल पर उनसे भाषाएं पढ़ने जाया करती थी और यद्यपि उस समय बच्ची ही थी फिर भी जब मैं यह देखती कि व्लादीमिर इल्यीच जिस काम को उठाते उसे वे कितनी मेहनत और संयम के साथ पूरा करते, तो मुझे बड़ा आश्चर्य होता। वे लोगों में यह अनुभूति पैदा कर देते कि मनुष्य के लिए दुनियां में कोई काम असम्भव नहीं और वह सब कुछ बिना उन्हें खुश किये अथवा उनका अनुमोदन प्राप्त किये हुए ही कर सकता है।

व्लादीमिर इल्यीच दिन भर अपनी पुस्तकों से माथा-पच्ची करते थे और अध्ययन के बीच थोड़ा सा विश्राम तब लिया करते जब वे आस-पास घूमने निकलते या अपने दोस्तों के साथ बातचीत या बहस में पड़ जाते। उनके दोस्त उनकी ही तरह क्रान्तिकारी कार्यों के लिए तैयारी कर रहे थे। वे सारी ज़िन्दगी इसी संयम और इसी क्षमता के साथ कार्य करते रहे। निष्कासन के समय जहां जहां वे रहे और विदेशों में जहां जहां वे गये उन्होंने अपना खाली समय पुस्तकालय में ही बिताया। व्लादीमिर इल्यीच की अनेक नोटबुकें तथा उद्धरण आज भी मौजूद हैं और इन्हें देखकर कोई भी यह अनुमान लगा सकता है कि वे कितनी अधिक पुस्तकों का अध्ययन किया करते थे। वे आजीवन पढ़ते रहे और उन्होंने बड़े बड़े दार्शनों तथा वास्तविक

जीवन, सिद्धान्त और व्यवहार, तथा तथ्य और आंकड़ों आदि का गहन अध्ययन किया। पाठशाला तो आरम्भ मात्र थी।

– यदि व्लादीमिर इल्यीच को अपने स्कूल के वर्षों में कठिन परिश्रम की आदत न होती और यदि वे आजीवन अपने कार्यों के प्रति निष्ठावान न रहते तो अपनी स्वाभाविक प्रतिभा के होते हुए भी वे मानव कार्यक्षेत्र के उस धरातल तक न पहुंच पाते जिस तक अपने जीवन में पहुंच चुके थे।

समारा (अलाकायेव्का) काल (१८८९—९३)

गांव और नगर में

मारिया उल्यानोवा द्वारा

१

मई १८८९ में हम कज़ान से समारा आ गये। माता जी ने एक फ़ार्म ख़रीदने का निश्चय किया था वे एतदर्थ उस रुपये को ख़र्च करना चाहती थीं जो उन्हें सिम्बिर्स्क में अपना मकान बेच देने से मिला था। उन्होंने म० त० येलिज़ारोव, जिनसे बाद में मेरी सबसे बड़ी बहन का विवाह हुआ था, की सहायता से सिबिरयाकोव नामक व्यक्ति से एक फ़ार्म ख़रीदा जो समारा से ३३ मील दूर था।

सिबिरयाकोव साइबेरिया निवासी एक धनी-मानी व्यक्ति और सोने की खानों का उद्योगपति था। उसने एक बड़े और प्राविधिक रूप से, आधुनिक यंत्रादि से, सुसज्जित फ़ार्म की स्थापना करने के उद्देश्य से समारा के उन जागीरदारों से, जो तब गरीबी में गुज़र बसर कर रहे थे, १८७०-८० के आसपास, काफ़ी ज़मीनें ख़रीद ली थीं। उसका दृष्टिकोण बाम-उदारवादी, अथवा उससे भी कुछ श्रेष्ठ था और वह किसानों के बीच क्रान्तिवादी प्रचार करने के लिये बड़ा

लालायित रहा करता। तात्पर्य यह कि उसका ऐसे लोगों से सम्पर्क था जिन्हें राजनीतिक कारणों से निष्कासन दण्ड दिया जाता था।

वह ऐसे नारोदनिकों की उदारतापूर्वक सहायता किया करता जो १८७०-८० के अन्त से अलाकायेवका के आस-पास क्रान्तिकारी कार्यों में निरन्तर लगे रहा करते थे। अलाकायेवका हमारा ही फ़ार्म था और इसका यह नाम एक पड़ोस के गांव के नाम पर पड़ा था। सिबिर्याकोव अपने एक ग्राम स्कोलकोवो में रहता था। यहीं १८७० के उत्तरार्द्ध में ग्लेब उसपेन्सकी तथा उसकी पत्नी भी रहती थी। वे सिबिर्याकोव द्वारा बनवाई गयी एक प्राथमिक पाठशाला की अध्यापिका थीं। उसपेन्सकी ने अपनी प्रसिद्ध कहानी "तीन गांव" वहीं लिखी थी। इस कहानी में उसमें स्कोलकोवो, ज़ग्ल्यादिनो और ग्वारदेयत्सी गांवों तथा वहां के वास्तविक निवासियों का वर्णन किया है।

इसी क्षेत्र में नरोदनिकों ने कृषि-बस्तियाँ स्थापित करने के लिए एक के बाद एक कई प्रयत्न किये (काकेशियन दल*, जिसका प्रधान था ओरलोव, जो बाद में सामाजिक-क्रान्तिवादी हो गया और जिसने काकेशस में भी एक वैसी ही बस्ती बसाई थी; तथा अ० अ० प्रेओब्राजेन्स्की की बस्ती, जो अलाकायेवका से लगभग दो मील पर शारनेल की फ़ार्म-बस्ती में स्थापित हुई थी और उस समय भी काम कर रही थी जब हम वहां रहते थे)।

सिबिर्याकोव की कृषि-बस्ती के संगठन पर बहुत सा धन ख़र्च हुआ था और ऐसी धारणा थी कि यह एक बहुत बड़ी बस्ती, बनेगी परन्तु वैसा न हुआ। सिबिर्याकोव के पास आधुनिकतम प्रकार के कृषि उपकरण—दो वाष्पचालित हल भी—थे जिन्हें उसने विदेशों से

करोनिन (पेत्रोपाव्लोव्स्की) ने इस बस्ती का वर्णन अपनी "बोर बस्ती" शीर्षक कहानी में किया है—म० उ०

ख़रीदा था। इसके अलावा उसके पास ढेरों ईंट तथा मवेशियों और कृषि-उपकरणों को रखने के लिये फ़ार्मों में बने हुए अनेक बाह्यकक्ष भी थे। परन्तु सिबिर्याकोव को उसमें बराबर घाटा हो रहा था। अतएव अन्त में वह योजना समाप्त कर दी गई। बाद में ये समस्त उपकरण एक जर्मन के हाथ नगण्य मूल्य पर बेच दिये गये जो समारा में छोटी छोटी मशीनों तथा कृषि-उपकरणों का व्यापारी था। अब सिबिर्याकोव अपनी ज़मीनें भी बेचने लगा। उसके पास एक कृषि स्कूल चलाने भर के लिए एक छोटा सा गाटा रह गया था। अलाकायेवका से लगभग ढाई मील दूर कोन्स्तान्तीनोव्स्की में उसने इस स्कूल के लिए इमारतें आदि बनवा दी थीं तथा अध्यापकों की नियुक्तियां की जा रही थीं।

अध्यापकों में थे—तोल्स्तोय का एक अनुगामी अलेक्सेयेव, जो कभी यासनया पोल्याना में तोल्स्तोय की जागीर पर रहा था, ज़ुब्रीलिन जो पेत्रोव्स्की-रज़ुमोव्स्की अकादमी का स्नातक था, तथा अन्य लोग।

परन्तु अधिकारियों ने स्कूल खोले जाने की अनुमति नहीं दी। इसमें सन्देह नहीं कि इस अस्वीकृति का कुछ संबंध सिबिर्याकोव और राजनीतिक कार्यकर्ताओं के सम्पर्क से अवश्य था। स्वेरवेयेव, जो समारा गुबेर्निया का तत्कालीन गवर्नर था, सामान्यतया इस प्रकार के सांस्कृतिक उपक्रमों का समर्थक नहीं था। कुछ भी हो इस घटना के बाद सिबिर्याकोव अपनी सारी सम्पत्ति बेचने में जुट गया और पीटर्सबर्ग चला आया (इसके पहले भी वह कभी कभी समारा गुबेर्निया में आया करता था)।

भाग्य ने हमें इसी स्थान पर ला पटका था।

इस छोटी सी जायदाद ख़रीदने से माता जी को यह आशा हुई थी कि व्लादीमिर इल्यीच अब कृषि कार्यों में रुचि लेने लगेंगे,

परन्तु उनका रास्ता तो दूसरा ही था। नदेज्दा कोन्स्तान्तीनोवना ने बताया था कि बाद में व्लादीमिर इल्यीच ने उससे कहा कि "माता जी चाहती हैं कि मैं फ़ार्म से चिपका रहूँ। परन्तु जैसे ही मैंने फ़ार्म पर काम शुरू किया कि ऐसा लगा मानों मैं यह काम न कर सकूंगा। किसानों से मेरे सम्बन्ध असामान्य रूप से बढ़ते जा रहे थे।"

अलाकायेवका में फ़ार्म सम्बन्धी कार्यों में हमें कोई सफलता न मिली। हमने उसका विचार तक छोड़ दिया था। फिर भी वह स्थान गाँव में रहने के लिए बहुत अच्छा था और हम लोग अपनी गर्मियाँ वहीं बिताया करते। वहाँ की जलवायु तथा चारों तरफ़ का शान्त वातावरण बड़ा मोहक था।

इस एक-मंज़िले मकान से थोड़ी ही दूर एक उपेक्षित उद्यान था जो सीधा एक झरने के पास जा कर समाप्त हो जाता। यहाँ हर व्यक्ति ने अपने मन-पसन्द अड्डे बना रखे थे, हम लोग "ओल्या के मैपिल" के बारे में प्रायः बातचीत करते और वास्तविकता यह थी कि मेरी दूसरी बहन एक पुराने लम्बे मैपिल वृक्ष के नीचे किताबी दुनियाँ में व्यस्त मिलती। आन्ना सबसे अधिक बर्च वृक्षों के कुंजों को पसन्द करती। लाइम वृक्षों के कुंजों में, जिनकी देख-रेख दूसरे वृक्षों से कुछ अधिक रखी जाती थी, छाया का बाहुल्य था। ऐसा प्रतीत होता कि इन वृक्षों की ऊपरी शाखाएं एक गुंबज की तरह हैं। प्रायः हम इस कुंज में या तो घूमते नज़र आते या बैठ कर गप्पें लड़ाते।

इस मकान से लगभग दस मिनट चल कर एक तालाब था जहाँ हम तैरा करते थे, इस तालाब के चारों ओर पहाड़ियाँ, घाटियाँ अथवा बन दिखाई पड़ते थे।

वहीं पास में मुरावेलनी नाम का एक बन था जहाँ वनैली

रसभरियाँ उगा करती थीं। हम लोग उन्हें बटोरने प्रायः वहाँ जाते। हमारे साथ व्लादीमिर इल्यीच भी जाया करते। उन्हें गाँवों से प्रेम था और जब वे विदेशों में थे तो प्रायः कहा करते कि "वास्तविक प्रकृति" के एकांत स्थानों तथा बन-प्रदेशों में घूमना एक ऐसा आनन्द और मनोविनोद है जो मुझे सबसे अधिक पसन्द है।

मकान में कोई बरामदा न था। अतएव हम लोग दालान को काम में लाते। यह दालान काफ़ी बड़ी थी जहाँ चाय की मेज़ के चारों ओर परिवार के सारे सदस्य बैठ सकते थे। शाम के समय हम लोग इस दालान में एक लालटेन जला लेते (ऐसा हम इसलिए करते थे कि कमरे में मच्छर आदि न भर जायं) और फिर हम सब नवयुवक अपनी अपनी किताबें लेकर मेज़ पर जम जाते।

हमारी सबसे बड़ी बहन आन्ना ने ऐसी एक संध्या की अपनी अनुभूतियों का वर्णन निम्नलिखित एक कविता में किया है—

सघन रात है,
पृथ्वी सपनों में खोई है,
सभी दिशाओं में चुप्पी है,
गगन ढक गया है मेघों से,
नहीं सितारे जगमग करते—
शांत, मौन, नीरव रजनी में।
केवल इस बरामदे में ही, यहाँ,
मोमबत्ती जलती है
और मेज़ के पास पांत में
हम—कि पढ़ाई में डूबे हैं—
हम बैठे हैं,

इन भारी भारी ग्रंथों पर शीश झुकाये!
एक शब्द भी नहीं फूटता जैसे मुंह से,
यद्यपि सच है, — बहुत देर से,
अपनी 'मेरी' निद्रातुर हो, ऊंघ रही है।
और, बहुत खुश हैं परवाने
नाच रहे हर ओर ज्योति के —
अपनी ओर खींचते हमको,
दिखलाने को
अपना उत्सुक और सतत संघर्ष
वर्त्तिका की जलती उस लौ से।
लौ कि भुला सकती है सचमुच
सर्दी-पानी के प्रभाव को —
लगता है इस मधुरिम क्रम से
मधुर ग्रीष्म लौटा है जैसे।

. . . .

इसी दालान में हम लोग प्रायः भूरी रोटी के साथ दूध पी लिया करते। यह दूध हमारे मकान में बने हुए एक तहखाने से एक बालाकीर (एक प्रकार का बर्तन) में भर कर लाया जाता था।

बरामदे से होकर हम एक छोटे से कमरे में जा सकते थे जिसकी दाहिनी ओर व्लादीमिर इल्यीच का कमरा पड़ता था। परन्तु इस कमरे में वे रात को केवल सोया भर करते। प्रातःकाल नाश्ते के बाद अपनी पुस्तकें, कापियां और कोश उठाते तथा बाग़ में चल देते। उनके कमरे की खिड़की पर गहरे रंग के पर्दे अथवा कम्बल पड़े रहते "ताकि मक्खियां न आ सकें।" मक्खियों से उनका हमेशा युद्ध होता रहता।

बाग़ में व्लादीमिर इल्यीच के बैठने का एक निश्चित स्थान था। वहां लाइम वृक्षों की साया में उन्होंने लकड़ी की एक मेज़ तथा एक बेंच जड़वा ली थी और थोड़ी ही दूर कुछ उंचाई पर ज़मीन के समानान्तर एक छड़ भी लगवा ली थी जहाँ वे व्यायाम किया करते। व्लादीमिर इल्यीच वहां प्रातःकाल से लेकर दोपहर के खाने तक अपने कामों में व्यस्त रहते। वे काम करने का ढंग जानते थे और नियमित रूप से तथा कठोर परिश्रम के साथ काम करने के अभ्यस्त थे। वे पुस्तकें केवल पढ़ते ही न थे, अपितु उनका गहन अध्ययन भी करते थे। वे एक निश्चित योजना के अनुसार साहित्य पढ़ा करते। मुझे याद है कि बाद के वर्षों में वे कहा करते थे कि विविध पुस्तकें इधर उधर पढ़ लेने से पाठक के ज्ञान में अभिवृद्धि नहीं होती। व्लादीमिर इल्यीच ने साइबेरिया से लिखे गये अपने एक पत्र में हम लोगों से यह पूछा था कि हमारा भाई दिमित्री, जो उस समय जेल में था, पढ़ रहा है या नहीं और साथ ही पढ़ने के सम्बन्ध में यह सुझाव भी दिया था—"उसे एक क्रमबद्ध तरीके पर अध्ययन करना चाहिए क्योंकि केवल 'पढ़ाई' से कोई विशेष लाभ नहीं होता।"

व्लादीमिर इल्यीच का विचार था कि यदि पढ़ना ही है, तो सबसे अच्छा तरीका यह है कि पहले एक विषय निश्चित कर लिया जाय और फिर नियमित रूप से उसपर मेहनत की जाय। वे स्वयं इसी रीति से काम करते। प्रातःकाल, जब मस्तिष्क प्रायः ठीक रहता है, वे अधिक जटिल विषयों का अध्ययन करते और साथ में अपनी टिप्पणियां तथा उद्धरण भी नोट करते जाते। कभी कभी वे अपनी पुस्तकें एक ओर रख देते और उस पगडण्डी पर इधर-उधर घूमने लगते जो कि उनकी मेज़ से लगी थी। इस प्रकार वे जो कुछ पढ़ते उसपर मनन भी करते जाते।

तत्पश्चात् वे फिर पुस्तक पर जुट जाते और अपने अध्ययन में खो जाते।

प्रातःकाल मैं व्लादीमिर इल्यीच के अध्ययन स्थल पर जाती और उनसे भाषाएं पढ़ा करती थी। प्रायः मैं फ़्रेंच या जर्मन की कोई पुस्तक पढ़ती और व्लादीमिर इल्यीच के सामने उसकी व्याख्या करती, परन्तु वे यही कहते कि मुझे सदा अपने कामों में आत्म-निर्भर होना चाहिये और उनकी सहायता केवल विशेष कठिन स्थलों के स्पष्टीकरण के लिए ही लेनी चाहिए। मैं कभी ऐसे शब्दों को, जिन्हें मैं नहीं जानती थी, किसी अलग कापी पर नहीं लिखती थी, जैसा कि साधारणतया किया जाता है और अगले दिन मेरे भाई मुझसे उन्हीं शब्दों के सम्बन्ध में पूछते और जैसे ही जैसे वे पाठों में आते वे मेरा ध्यान उनकी ओर आकृष्ट किया करते थे।

कभी कभी व्लादीमिर इल्यीच दोपहर के बाद भी अपने उसी अध्ययन-स्थल पर पहुंच जाते और वहाँ हल्की फुल्की पुस्तकें पढ़ते। कभी कभी हमारी बहन ओल्गा भी उनके साथ बैठ जाती और तब दोनों ही साथ पढ़ते (मुझे याद है कि ग्लेब उस्पेन्स्की की कृतियों को वे दोनों पढ़ा करते थे)। ओल्गा प्रायः उन्हीं की उम्र की थी और दोनों की रुचियाँ भी प्रायः एक जैसी ही थीं।

कभी कभी सायंकाल व्लादीमिर इल्यीच तथा ओल्गा दोनों ही साथ साथ गाते। व्लादीमिर इल्यीच गाने-बजाने के बड़े शौकीन थे और या तो स्वयं गाते अथवा दूसरों का गाना सुना करते। वे म० त० येलीज़ारोव का संगीत बहुत पसन्द करते। उन्हें जन-साधारण में प्रचलित गाने भी अच्छे लगते। मुझे याद है कि जब वे ऊँचे स्वरों में एक गीत की अन्तिम कड़ी "तुम्हारे प्यारे प्यारे नैन" गुनगुनाते, तो उन्हें उसमें कितना आनन्द आता और जब वे यह गाते "तुम्हारे मादक नैन निहार न हो जाऊँ मैं क्यों बलिहार" तब तो हंसते और

अपने हाथों को हिलाते-डुलाते कहते "तुम्हारे नैनों ने मुझे मार डाला, सचमुच मार डाला"।

एक बार साइबेरिया से व्लादीमिर इल्यीच ने हमें ग० म० क्रज्हि-जानोवस्की के लिए कुछ गीतों की सुरतालिका भेजने को लिखा था। उन्होंने यह भी लिखा था—"मरीया ने जो यह पूछा है कि ग्लेब की आवाज़ कैसी है? मैं क्या कहूँ! मध्यम!—क्या गाता है? ठीक वैसे ही जैसे हम मार्क के साथ 'शोर मचाया करते थे' (जैसा कि हमारा नर्स कहा करती थी)।"

ओल्गा ने हमारे साथ अलाकायेवका में केवल दो गर्मियाँ बितायीं। उसकी स्वाभाविक प्रतिभा बड़ी प्रखर थी। वह उद्यमी थी। पाठशाला के अन्तिम वर्ष में उसे स्वर्ण पदक मिला था। अपनी शिक्षा का विकास करने के लिए वह कठोर परिश्रम करती तथा मेहनत से पढ़ती-लिखती। उसने अंग्रेज़ी का अध्ययन किया, संगीत सीखा और ढेरों पुस्तकें पढ़ीं। वह चिकित्सा शास्त्र का अध्ययन करना चाहती थी अतएव उसने हेलसिंगफ़ोर्स जाने का निश्चय किया, क्योंकि उस समय पीटर्सबर्ग में महिलाओं का मेडीकल स्कूल बन्द था। उसने स्वेडिश भाषा सीखनी आरम्भ कर दी और उसमें तरक्की भी की। उसने स्वेडिश भाषा से अनुवाद भी किये। फिर भी वह हेलसिंगफ़ोर्स विश्वविद्यालय में प्रवेश न पा सकी, क्योंकि बाद में उसे मालूम हुआ कि वहाँ प्रवेश पाने के लिए स्वेडिश भाषा के अलावा फ़िनिश भाषा का ज्ञान होना भी अनिवार्य है। फलतः दूसरी भाषा सीखने में लगने वाला समय बचाने की दृष्टि से उसने पीटर्सबर्ग में महिलाओं के उच्च पाठ्यक्रमों (बेस्टूज्हेव पाठ्यक्रम) की गणित तथा भौतिक शास्त्र की फ़ैकल्टी में प्रवेश पाने के लिए प्रार्थना-पत्र दिया। १८९०-९१ की शीत ऋतु में उसने सख्त मेहनत की और बसन्त ऋतु में उसे टाइफ़ाइड हो गया। इसके साथ ही उसे मुंहासे का भी रोग हुआ और ८ मई १८९१ को उसका स्वर्गवास हो गया।

हमारे परिवार के अन्य सदस्यों की भांति व्लादीमिर इल्यीच भी संकोची स्वभाव के थे। जब अपरिचित लोग हमसे मिलने आते — ऐसा कभी-कभी ही होता था — तो या तो वे अपने कमरे में ही बैठे रहते अथवा खिड़की के रास्ते बाग़ में निकल जाते। जब कभी हमसे मिलने ऐसे लोग आते, जिनमें उन्हें कोई रुचि न रहती, उस समय वे ऐसा ही करते। अलाकायेवका में हम लोग एक प्रकार से एकान्तवासी ही रहे वहाँ हमारे परिचितों की संख्या बस गिनी-चुनी ही थी। परन्तु व्लादीमिर इल्यीच ने वहाँ के कुछ लोगों से दोस्ती पैदा कर ली थी।

मैंने ऊपर कहीं इस बात का उल्लेख कर दिया है कि काकेशियन दल—जिसे वहाँ के कृषक "कपकाज़त्सी" कह कर पुकारते थे — की अलाकायेवका से प्राय: दो मील दूर अपनी एक बस्ती थी। वहाँ पर बहुत से नरोदनिकों ने सिबिर्याकोव से रिआयती मूल्य पर ज़मीनें ख़रीद ली थीं और वे वहीं बस गये थे। उनके वहाँ बसने का उद्देश्य एक आदर्श कृषि बस्ती की स्थापना तथा संघटन करना था। परन्तु उन्हें सफलता न मिली और अ० अ० प्रेओब्राज्हेन्स्की को छोड़ कर सभी लोग वहाँ से चले गये। व्लादीमिर इल्यीच उनसे मिला करते तथा बातचीत करते करते कभी कभी रात में उस सड़क पर घूमते-घामते काफ़ी दूर निकल जाते जो हमारे फ़ार्म से लेकर शार्नेल के फ़ार्म तक तथा उससे भी आगे चली गई थी।

प्रेओब्राज्हेन्स्की ने व्लादीमिर इल्यीच की जान-पहचान कुछ ऐसे कृषकों से करा दी थी जिनमें कुछ अलौकिक योग्यता थी।

व्लादीमिर इल्यीच की मित्रता द० अ० गोनचारोव से भी हुई जो चिकित्सा-शास्त्र का एक विद्यार्थी था तथा एक प्रदर्शन में भाग लेने के कारण १८८७ में कज़ान विश्वविद्यालय से निकाला गया था। गोनचारोव अलाकायेवका से लगभग ५-७ मील बसे हुए ग्राम, त्रोसत्यानका — में एक डाक्टर के सहायक के रूप में कार्य करता था। उस समय

उसका किसी भी राजनीतिक दल से कोई सम्बन्ध न था, परन्तु उसके विचार अवश्य क्रान्तिकारी थे। वह व्लादीमिर इल्यीच की बड़ी इज़्ज़त करता था।

जाड़ा बिताने के लिए हम लोग समारा चले आये जहाँ हम अपनी विवाहिता बहन और उसके पति, म० त० येलिज़ारोव के साथ रहे। उस समय मैं पाठशाला की छात्रा थी। व्लादीमिर इल्यीच घर के लिये दिये गये पाठों को तैयार करने में मेरी बड़ी सहायता करते थे। यदि शाम को उन्हें कहीं जाना होता, तो प्राय: वे मुझे बता देते और साथ ही मुझे यह भी बता देते कि मैं पढ़ने के लिए उस दिन उनके पास ज़रा जल्दी आ जाऊँ। अपने पाठों के दौरान में मुझे उनके विषय में यह अनुभव हुआ था कि जिस काम को भी वे उठाते उसे पूरा करने के लिए अपनी सारी शक्ति लगा देते। मुझे भी उन्होंने यही शिक्षा देने का प्रयत्न किया था।

मुझे याद है कि एक बार मुझे घर पर युरोप का नक्शा खींचने को दिया गया था। इधर उधर कुछ खींच-खांच लेने के पश्चात् जब मैंने उसे अनुमोदनार्थ व्लादीमिर इल्यीच को दिखाया, तो उन्होंने उसे यह कह कर अस्वीकार कर दिया कि इसमें गलतियाँ हैं। उन्होंने मुझे फिर से नक्शा तैयार करने के लिए कहा। साथ ही उन्होंने मुझे विस्तारपूर्वक यह समझाया कि कम्पास की सहायता से दूरियाँ कैसे नापनी चाहिए और यह चेतावनी दी कि मुझे "सिर्फ़ देख कर ही" नक्शा न बना लेना चाहिए जैसा मैंने कर दिया था। मैंने उनके निर्देशानुसार अपना काम फिर शुरू किया और जब उन्होंने मेरे नक्शे का अनुमोदन कर दिया, तो मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई थी। व्लादीमिर इल्यीच के साथ मैंने इस प्रकार जो काम लिये उनसे नक्शे खींचने की कला के अलावा भी मैंने एक अधिक महत्व का पाठ सीखा। उन्होंने मेरे सामने यह आदर्श रखा था कि सामान्यतया मनुष्य को काम के प्रति कौन सा

रुख अपनाना चाहिए। जल्दी से जल्दी पूरा करने के लिए काम के मामले में बेगार न भुगतनी चाहिये, परन्तु उसे एक सुविचारित योजना के अनुसार ठीक ठीक और बड़े संयम के साथ उस समय तक करते रहना चाहिये जब तक कि परिणाम वास्तव में अच्छे न निकलें और वह स्वयं उससे सन्तुष्ट न हो जाय।

काम करने के विषय में व्लादीमिर इल्यीच की पैनी बुद्धि तथा शुद्धता कभी कभी छोटी छोटी बातों में भी प्रकट हो जाती थी। एक बार मैं एक कापी सिलाना चाहती थी। फलत: मेरे हाथ जल्दी में जो भी तागा पड़ गया उसी से मैंने सिलना शुरू कर दिया। मैं काले धागे से सफ़ेद कापी सिल रही थी। व्लादीमिर इल्यीच ने देख लिया और मुझे तुरन्त रोक दिया, साथ ही यह बताया कि देखने में यह अच्छा नहीं लगता, मुझे सफ़ेद धागा ही इस्तेमाल करना चाहिए था।

मुझे याद है कि समारा में जो लोग हम से मिलने आया करते उनमें अ० प० स्क्ल्यरेन्को, इ० ख़० ललायान्त्स, व० व० वोदोवोज़ोव, म० इ० लेबेदेवा और म० प० गोलुबेवा भी थे। व० व० वोदोवोज़ोव प्राय: हमारी बड़ी बहन से मिलने आया करते। वे दोनों साथ साथ इटैलियन पढ़ा करते थे। मुझे अ० इ० येरामासोव और व० अ० इओनोव के नाम भी याद पड़ रहे हैं। ये लोग भी हमसे मुलाक़ात के लिए प्राय: आ जाते।

येरामासोव म० त० येलिज़ारोव और इओनोव का एक सीज़रन दोस्त था और वे ही उसे हमारे यहाँ लाये थे। उसने हमसे अपनी मुलाक़ात का वर्णन इन शब्दों में किया है—

"जब मैं उल्यानोव से, जिन्होंने भाग्य की बहुत सी ठोकरें खाई थीं, पहले पहल मिलने के लिए गया... उस समय येलिज़ारोव पोचतोवाया और सकोलनिचाया सड़कों पर रह रहे थे। उनके निवास स्थान, जैसा कि एक गवर्नर ब्रयन्चानीनोव (यदि मैं भूल नहीं कर रही हूँ)

ने कहा था, 'निर्वासितों' के क्वार्टर, अर्थात् उस क्वार्टर से दूर न थे जहाँ क्रान्ति की बातें सोचने-विचारने और उन्हीं के अनुरूप काम करने वाले लोग प्रायः रहा करते थे। मुझे याद है कि हम देर से पहुंचे थे। जब हम पहुंचे उस समय चाय का समय हुआ ही था। परिवार के सभी लोग खाने के कमरे में इकट्ठा हो चुके थे। वहाँ मेरा म० अ०, अ० इ०, म० इ० और व० इ० से परिचय कराया गया। इसके अतिरिक्त म० त० का भतीजा भी, जो अपने चाचा के साथ रहता तथा पाठशाला में पढ़ता था, चाय के समय मौजूद था।

"बातचीत तत्कालीन विषयों पर चलती रही—नरोदनिक, पूंजीवाद का भविष्य, व० व० और निकोलाई—आदि-आदि। व्लादीमिर इल्यीच ने न केवल साहित्य सम्बन्धी अपनी विद्वत्ता का परिचय दिया, अपितु नरोदनिकों के सिद्धान्तों और मिखाइलोवस्की की विचारधारा के विषयी विज्ञानवादियों की कमज़ोरियों आदि को इंगित करने में भी अद्भुत क्षमता दिखाई। चाय के बाद हम लोग बातचीत करने के लिए व्लादीमिर इल्यीच के कमरे में चले गये। मेरे मित्र इओनोव ने भी इसमें भाग लिया। वे रूस में पूंजीवाद का विकास तथा कृषकों के बीच भेदभाव की प्रक्रियाओं का अध्ययन कर रहे थे और इन प्रश्नों पर आंकड़ा-स्रोतों तथा कृषक-दशाओं के सम्बन्ध में अपने व्यक्तिगत अध्ययन के आधार पर आवश्यक सामग्री एकत्र कर रहे थे।

म० त० ने समारा गुबेर्निया के, जहाँ उस समय यह भेदभाव अपनी चरम सीमा पर था, कृषक-जीवन के सम्बन्ध में अपने अनुभव सुनाये।

"मुझे याद है कि इस बातचीत में स्वयं आन्ना ने भी भाग लिया था।

"आज भी मुझे भली भाँति याद है कि व्लादीमिर इल्यीच के कमरे में, अन्य चीज़ों के अलावा, एक छोटी सी मेज़ के ऊपर दीवाल पर 'रूस्किये वेदोमोस्ती' की एक फ़ाइल टंगी रहती थी। वे उस

फ़ाइल में इस पत्र के वे अंक लगा दिया करते थे जिन्हें वे पढ़ चुकते थे और ऐसे अंकों को विशेष रूप से चिह्नित कर देते थे जिनमें उनकी पसन्द का कोई न कोई विषय रहता था।"

इस पहली मुलाक़ात के बाद अ० इ० येरमासोव जब भी समारा आता तब हम लोगों से ज़रूर मिला करता।

अपने संस्मरणों में येरमासोव ने इस बात का उल्लेख किया है कि व्लादीमिर इल्यीच ने 'कम्युनिस्ट घोषणापत्र' का भी अनुवाद किया था। इस हस्तलिखित प्रति को अनेक हाथों से होकर गुज़रना पड़ा था। अन्त में हम उसे सीज़रन लाये। वहाँ मैंने यह अनुवाद एक अध्यापक को दे दिया जिसे मैं जानता था। अधिकारीगण इस अध्यापक के विषय में यह समझते थे कि राजनीतिक दृष्टि से वह एक अविश्वसनीय व्यक्ति था।

"इस अध्यापक को सिम्बिर्स्क में पीपुल्स स्कूलों के डाइरेक्टर के कार्यालय में बुलाया गया था। उसकी माता को यह भय हुआ कि कहीं सैनिक पुलिस उसके घर की तलाशी लेने न आ धमके। अतएव उसने अनुवाद की प्रति नष्ट कर डाली। इस सुन्दर अनुवाद के नष्ट हो जाने के अपराध का दोषी स्वयं मैं भी था। इसलिए जब यह घटना मुझे याद आती है तो मेरा सिर शर्म से झुक जाता है।"

येरमासोव सीज़रन में रहता था। अतएव हमसे वह अधिक नहीं मिल पाता था। फिर भी हमने उससे निकट का सम्बन्ध तथा आजीवन मित्रता बनाये रखी। उसने स्वयं तो क्रान्तिकारी कार्यों में प्रत्यक्षत: कोई भाग नहीं लिया, परन्तु जब तक पार्टी अपना कार्य गुप्त रूप से करती रही वह उसकी रुपये-पैसे से बराबर मदद करता रहा — वह उस समय धनाढ्य था। जब कभी हमें संकटों का सामना करना पड़ता हम "उस सन्यासी" (यह नाम उसे व्लादीमिर इल्यीच ने दिया था) से सहायता लेने पहुंच जाते।

क्रान्ति के कुछ समय बाद तक येरमासोव पार्टी का सदस्य बना रहा, परन्तु बीमारी के कारण (वह फेफड़ों तथा गुर्दे के क्षय से पीड़ित था) उसे अपनी सदस्यता छोड़नी पड़ी। तत्पश्चात् कुछ समय के लिए उसने जनशिक्षा-संग्रहालय में भी कार्य किया, परन्तु यह कार्य भी उसे बीमारी के कारण छोड़ देना पड़ा। अब उसकी कोई आमदनी न रह गई थी और उसे संकटों का सामना करना पड़ रहा था, परन्तु वह इतना विनीत तथा संकोची था कि उसने इस सम्बन्ध में न तो कभी व्लादीमिर इल्यीच को ही लिखा और न हमारे परिवार के अन्य किसी व्यक्ति को ही। अन्त में हम लोगों को उसकी दयनीय अवस्था का पता चला और हमने उसके लिए एक पेंशन की व्यवस्था कर दी। १९२७ की बसन्त ऋतु में सीज़रन में उसकी मृत्यु हो गई।

समारा में व्लादीमिर इल्यीच ने अपनी परीक्षाओं की तैयारी में बड़ा परिश्रम किया और उन्होंने बाह्य-छात्र के रूप में वे परीक्षाएं १८९१ में पास कीं। तत्पश्चात् वे समारा वापस आ गये और अ०न० खारदिन के अधीनस्थ जूनियर बैरिस्टर के रूप में वकालत (नाम निर्देशन द्वारा) करने लगे।

समारा में हम लोगों का प्रिय खेल था शतरंज। व्लादीमिर इल्यीच, मेरे छोटे भाई दिमित्री और मार्क तिमोफ़ेयेविच भी अच्छी शतरंज खेलते थे। इन सबों को भी अ०न० खारदिन के रूप में एक उस्ताद खिलाड़ी मिल गया था जो अव्वल दर्जे की शतरंज खेलता था। प्राय: हम लोग सायंकाल लोगों को निमंत्रित करते और हमारे यहाँ शतरंज का जमाव होता। बाद में व्लादीमिर इल्यीच केवल कभी कभी ही शतरंज खेलते। आखिर में उन्होंने इसे बिल्कुल ही छोड़ दिया।

१८९३ की शरद् ऋतु में व्लादीमिर इल्यीच तो पीटर्सबर्ग चले आये और हमारे परिवार के बाकी सदस्य मास्को चले गये जहाँ

दिमित्री विश्वविद्यालय में दाखिल हुआ। हमें अलाकायेवका की जायदाद बेच देनी पड़ी क्योंकि अब गर्मियों में भी इसका प्रयोग करना हमारे लिए सम्भव न रह गया था। इसे दनीलिन नामक एक सज्जन ने ख़रीदा था जो एक धनी-मानी स्थानीय व्यापारी था और उसकी दिलचस्पी केवल ज़मीन और मिल तक ही थी। कुछ ही दिनों बाद न वहाँ मकान का नामोनिशान रह गया न बाग़ का। दनीलिन ने मकान तो नेयालोवका ग्राम में बनवा लिया और बाग़ के पेड़ों को कटवा दिया। १९०५ या १९०६ में किसानों ने दनीलिन को मार डाला।

* * *

मैं १९२७ में अलाकायेव्का गई और वहाँ के किसानों ने मेरा हार्दिक स्वागत किया। उन्होंने व्लादीमिर इल्यीच के बारे में मुझसे प्रश्नों की झड़ी लगा दी। वे बार बार यह दुहराते, "कैसे दुख की बात है। हमें यह भी न मालूम हो सका कि हमारे बीच रह कौन रहा है।" उन्होंने मुझसे आन्ना के बारे में भी पूछा क्योंकि उसने १८९२ में हैजे के प्रकोप के समय दवाइयाँ तथा परामर्श देकर पीड़ितों की सहायता की थी।

अलाकायेव्का के गाँव में अब भी एक सामूहिक फ़ार्म है जिसका नाम है "लेनिन कोण"। यह आवश्यक है कि व्लादीमिर इल्यीच की यादगार में उस फ़ार्म को आदर्श फ़ार्म बनाने के लिए सभी प्रयत्न किये जायं। इस फ़ार्म के चेयरमैन हैं "चचा कोस्त्या"—कोन्स्तन्तीन दिमित्रीयेविच फ़िलिपोव—जिन्होंने १९३३ में मास्को के सामूहिक फ़ार्मों के तूफ़ानी कमकर सम्मेलन में भाग लिया था। यद्यपि चचा कोस्त्या नवयुवक नहीं हैं फिर भी वे एक तूफ़ानी कमकर (श्रेष्ठ श्रमिक) हैं और फ़ार्म को जो सफलता मिली है उसका बहुत कुछ श्रेय उन्हीं को है। सामूहिक खेती करने वाले किसानों की प्रेरणा से उस स्थान पर

एक स्कूल बनवा दिया गया है जहाँ पहले कभी एक लकड़ी का वह छोटा-सा घर था जिसमें व्लादीमिर इल्यीच अपनी गर्मियाँ व्यतीत करते और क्रान्तिकारी कार्यों के लिए अपनी तैयारियाँ किया करते।

दिमित्री उल्यानोव द्वारा

२

अलाकायेवका में हम लोग लकड़ी के एक छोटे से मकान में रहा करते थे, जिसके सामने ही एक उपेक्षित सा बाग़ था जहाँ झाड़-झंखाड़ लगे थे। मकान और आगे की परती भूमि के बीच एक खाई पड़ती थी। बाग़ के उत्तर-पश्चिम के कोने में एक स्थान पर वोलोद्या की एक लकड़ी की मेज़ और एक बेंच लगी हुई थी। उस स्थान पर हरियाली अधिक थी, जिससे छन कर सूर्य की किरणें भी नीचे नहीं आ पाती थीं।

शीघ्र ही वोलोद्या ने अपनी मेज़ के पास १०-१५ क़दम की एक पगडण्डी बना ली थी। वे इस पगडण्डी का प्रयोग उस समय करते जब उन्हें पढ़ी हुई किसी बात पर मनन अथवा विचार करना होता। ऐसे समय वह इस पगडण्डी पर इधर से उधर और उधर से इधर घूमने लग जाते। प्राय: वे वहाँ अपनी किताब कापियाँ लेकर प्रात: ९ बजे पहुंच जाते और अविराम दो बजे तक काम करते। १८८९ से लेकर १८९३ तक के पांच वर्षों में वह स्थल व्लादीमिर इल्यीच का "अध्ययन स्थल" रहा। वे इतने नियमित रूप से काम करते कि मुझे तो ऐसे एक दिन की भी याद नहीं है जब उन्होंने वहाँ बैठ कर अध्ययन न किया हो।

अपनी मेज़ से लगभग १५ गज़ की दूरी पर उन्होंने अपने लिए व्यायाम के निमित्त ज़मीन के समानान्तर एक सीधी मोटी छड़ गाड़ रखी थी। यह छड़ दो पायों के सहारे ठहरी हुई थी। उन वर्षों में व्लादीमिर इल्यीच छड़ों पर कसरत किया करते थे और इसीलिए उन्होंने मैपिल लकड़ी की अच्छी रन्दा की हुई दो छड़ें बनवाई थीं और उन्हें लगभग आठ फ़ीट की उंचाई पर जड़वा लिया था। पैर की अंगुलियों पर खड़े होकर जब वे अपने दोनों हाथों को ऊपर उठाते, तो उनकी उंगलियाँ छड़ तक पहुंच जातीं। फिर वे एक उछाल मारते और छड़ उनके हाथों में आ जाती। अब वे उस पर झूलते, कभी पैर आगे करते कभी पीछे और कभी उस पर पेट के बल लेट जाते। तत्पश्चात् वे उस पर बैठ जाते और अनेक प्रकार का व्यायाम करते रहते। छड़ पर वे पीठ के बल लेटने की कला बहुत दिन तक नहीं सीख सके थे। यह बात देखने योग्य थी कि वे कितने संयम और कितने परिश्रम के साथ यह कला सीखने की कोशिश करते—बार बार वे प्रयत्न करते और बार बार असफल होते। अन्त में एक दिन उन्होंने मुझसे कहा "चलो छड़ तक चलें। पिछली रात और आज सुबह मैं छड़ पर अपना बदन सँभाल लेने में सफल हो गया हूं। चलो देखो।"—और उन्होंने इस मुश्किल काम को बड़ी सफलता के साथ पूरा कर लिया। यद्यपि श्रम के कारण उस समय उनका श्वास ज़ोर ज़ोर से चल रहा था फिर भी उनके चेहरे पर सन्तोष की झलक थी। अब वे छड़ पर जम कर बैठ गये थे। इस पैंतरे के लिए वे अपने शरीर को घसीटते और अपने घुटने के बल लटक कर सड़ाक से जांघों को छड़ पर ले जाते, उसके बाद वे उसपर शरीर के बल लेट जाते, फिर बिना सन्तुलन खोये हुए वे छड़ पर आराम से बैठ जाते। मैं कभी इस पैंतरेबाज़ी में सफलता न पा सका यद्यपि यह ठीक है कि मैंने उनकी छड़ पर बहुत थोड़ा अभ्यास किया था।

अलाकायेवका समारा के पूर्व में उससे लगभग ३५ मील पर बसा हुआ है। उसके आस-पास की ज़मीन प्राय: परती है, किन्तु अलाकायेवका के समीप उस समय कुछ वन थे। इनमें से दो के नाम थे — किसानों का "मुरावेलनी" वन और क्राउन लैन्ड्स बोर्ड का "ग्रेम्याची" वन। शहर से अपने स्थान तक जाने में हमें समारा-ज़लतोऊस्त रेलवे पर स्मिश्लायेव्का स्टेशन तक तो ट्रेन द्वारा जाना होता और बाकी रास्ता, लगभग २० मील, एक गाड़ी में, जिसमें हमारा घोड़ा, बुलांका, जुता होता। मुझे प्राय: स्टेशन जाना पड़ता। जब मुझे वोलोद्या के साथ इस गाड़ी पर जाना होता तो मुझे समय के मामले में बड़ा सतर्क रहना पड़ता क्योंकि उनका हर काम घड़ी की सुइयों की नोक पर होता था। जब वर्षा न होती तो वे मुझसे गाड़ी तेज़ हाँकने की ज़िद करते। ऐसा करने के लिए मुझे अपने सुस्त बुलांका को कोड़े लगाने पड़ते और इस बात पर नज़र रखनी होती कि उसकी चाल बराबर एक सी बनी रहे। वोलोद्या स्वयं गाड़ी चलाने के कभी शौकीन न रहे और न उन्हें घोड़ों में कोई खास दिलचस्पी ही रही। रास्ता खेतों और परती ज़मीन से होकर था और जंगल अलाकायेवका के समीप ही शुरू होते थे। उस समय धूल भरी समारा के पश्चात् अलाकायेवका की वायु में कितनी मादकता की अनुभूति होती थी इसका वर्णन नहीं किया जा सकता।

अलाकायेवका के समीप कोई नदी न थी परन्तु घर से थोड़ी ही दूर पर एक तालाब था जिसमें किनारों के पास अधिक परिमाण में जल-वनस्पतियाँ उगी हुई थीं। हम वहाँ, साधारणतया दिन में दो बार, तैरने जाते। इस प्रयोजन के लिए हमने वहाँ कपड़े रखने की तख़्तों वाली एक कोठरी सी बनवा ली थी।

वोलोद्या अच्छे तैराक थे और अपने दोनों हाथों को सिर के नीचे रख कर भी गतिहीन मुद्रा में तैर सकते थे। मैं इस तालाब

में मछलियाँ मारने तथा बतखों का शिकार करने जाया करता था। इल्यीच को मछली मारना अच्छा न लगता परन्तु शिकार भी वे तभी पसन्द करते जब इसके लिए दूर दूर तक घुमाई हुई हो। यही कारण था कि अपने अलाकायेवका काल में हम वन-मुर्गों का शिकार करने के लिए आस-पास के जंगलों में घूमा करते।

अधिकतर तो व्लादीमिर इल्यीच बिना बन्दूक़ लिये प्राय: अकेले कभी कभी हममें से किसी के साथ—मेरी बहनों या माँ के साथ या जब मार्क येलिज़ारोव अलाकायेवका आते थे तो उनके साथ—चले जाया करते।

शाम को हम लोग तथा व्लादीमिर इल्यीच अपनी दालान में अपने लैम्प के चारों ओर बैठ जाते और सैकड़ों मक्खी मच्छर हमारे आस-पास उड़ा करते। उस समय मैंने वोलोद्या को कोष की सहायता से अंग्रेज़ी में रिकार्डो को पढ़ते हुए अनेक बार देखा था। मुझे यह भी याद है कि वे गिज़ो की "हिस्तुअर दे ला सिविलिज़स्यों" का रूसी अनुवाद पढ़ा करते थे। इस पुस्तक के कई खंड थे और—यदि मैं भूल नहीं करता,—वे इन खण्डों को समारा के सार्वजनिक पुस्तकालय से मंगाया करते थे।

उन दिनों समारा में व० व० वोदोवोज़ोव नामक एक व्यक्ति रहा करता था जो एक प्रसिद्ध लेखिका का, जिसने "युरोपवासियों का जीवन" शीर्षक एक पुस्तक की रचना की थी, पुत्र था। समारा आने से पूर्व वोदोवोज़ोव अर्खांगेल्स्क गुबेर्निया स्थित शेन्कुर्स्क में निष्कासन का दण्ड भुगत रहा था। हमारे समारा निवास के पहले के कुछ वर्षों में वह हम लोगों से मिलने के लिए प्राय: आया करता। परन्तु बाद में उसका आना जाना एक प्रकार से बन्द हो गया। व्लादीमिर इल्यीच उसे अधिक पसन्द न करते। वोदोवोज़ोव का अपना एक बड़ा-सा पुस्तकालय था। उसके कमरे में पुस्तकों की अनेक

अलमारियाँ थीं। उसकी सारी पुस्तकें साफ़-सुथरी थीं यहाँ तक कि उनके आवरण तक नये थे। वह अपने पुस्तकालय का बड़ा ध्यान रखता और मनुष्यों से अधिक किताबों को चाहता। जहाँ तक पांडित्य प्रदर्शन की बात थी वह नगर में सर्वश्रेष्ठ था। उसका अध्ययन गम्भीर अवश्य था, परन्तु उसमें मौलिकता नाम की कोई चीज़ न थी। न वह मार्क्सवादी था न नरोदनिक। उसे एक प्रकार का चलता फिरता कोष ही कहना चाहिये! हम उसके यहाँ केवल किताबें लेने जाते, स्वयं उसमें हमारी कोई दिलचस्पी न थी। मुझे बताया गया कि जब मेरे भाई अलेक्सान्द्र को ज़ार की हत्या करने के अपराध में गिरफ़्तार किया गया, तो वोदोवोज़ोव के मुंह से तत्काल जो शब्द निकले थे वे थे "अफ़सोस, वह मुझसे एक मूल्यवान पुस्तक माँग कर ले गया है। सम्भव है अब न मिले..."

एक बार १८६०-१६०० के आरम्भ में कोसिच नामक किसी व्यक्ति को, जो एक गवर्नर था (मैं समझता हूँ, सरातोव गुबेर्निया का), नौकरी से बरख़ास्त कर दिया गया था। कहा जाता है कि वह एक उदारवादी व्यक्ति था और निष्कासित व्यक्तियों के साथ अच्छा व्यवहार करता था। इसके बारे में हमें वोदोवोज़ोव ने बतलाया था और वोदोवोज़ोव तथा उसके दल के लोगों ने यह सुझाव दिया था कि राजनीतिक कार्यकर्ताओं और सामान्यतया वाम-दलीय लोगों की ओर से उक्त गवर्नर को एक मानपत्र दिया जाय। इस सुझाव के फलस्वरूप समारा में बड़ी बहसें हुईं। जब इल्यीच को इस मानपत्र के बारे में मालूम हुआ, तो वे इसके खिलाफ़ बोले थे और उन्होंने इस सुझाव का तीव्रता के साथ विरोध किया था। मैं समझता हूँ कि इस मानपत्र का सुझाव कार्यान्वित नहीं किया गया। समारा काल में मेरे भाई के दोस्तों में से मुझे अलेक्सेई पावलोविच स्क्ल्यारेन्को, इसाक ख़िरस्तोफ़ोरोविच ललायान्त्स, जिन्हें मार्क तिमोफ़ेयेविच येलिज़ारोव

"कोलम्बस" के नाम से पुकारा करता था — उसने यह कल्पित नाम क्रान्ति-कार्यों के बाद के वर्षों में रखा था — और वदीम अंद्रेयेविच इओनोव, जो अल्पायु में ही मर गया था, के नाम अच्छी तरह याद हैं।

मुझे मारिया पेत्रोवना गोलुबेवा की भी याद है। वह प्रायः हमारे यहाँ आती और राजनीतिक चर्चाओं में सक्रिय भाग लेती।

स्कल्यारेन्को पाठशाला और धर्मिक विद्यालय की उच्च कक्षाओं के नवयुवकों को पीसरेव, चेरनिशेव्स्की आदि का अर्द्ध-वैध साहित्य पढ़ने को दिया करता। हम नवयुवकों के लिए तो वह जादूगर सिद्ध हो रहा था। उसकी आकृति-प्रकृति ही हमें उसकी इज़्ज़त करने के लिए बाध्य कर देती। वह लम्बा चौड़ा तथा गठीले बदन का हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति था और अपने साथ सदैव एक गांठदार छड़ी रखता था। उसकी आंखों पर गहरे रंग का एक चश्मा लगा रहता जो पूरा फ़्रेम न होने के कारण नाक पर बैठा हुआ सा दिखाई देता था।

उस काल में व्लादीमिर इल्यीच किसानों की जोतों के आंकड़े संग्रह करने में व्यस्त थे। उन्होंने इन जोतों को भारवाहक ढोरों की संख्या, फसलों के क्षेत्रफल, जिसमें फ़स्लें बोई जाती थीं और भूमि के पट्टों आदि के अनुसार कई वर्गों में विभाजित किया था। इन आंकड़ों से यह प्रमाणित होता था कि किसानों के बीच आर्थिक असमानता बढ़ रही है और एक ओर तो वे समृद्ध और आर्थिक रूप से सम्पन्न वर्ग में और दूसरी ओर गरीब किसानों के वर्ग में, अर्थात् ग्राम पूंजीवादी वर्ग और सर्वहारा अथवा अर्द्ध-सर्वहारा कृषक समूहों में, बँट गये थे। इन तथ्यों से नरोदनिकों की इस भ्रामक धारा का खण्डन होता था कि कृषक वर्ग एकरूप है और आर्थिक दृष्टि से उसके कोई वर्ग आदि नहीं हैं। इस प्रकार इन आंकड़ों से यह प्रमाणित होता था कि रूस में पूंजीवाद का विकास हो रहा है। साथ ही वे इस बात की भी

पुष्टि करते थे कि मार्क्सवादी नीति ही सर्वोत्तम और ठीक है और रूसी क्रान्तिवादियों को यही नीति अपनानी चाहिये।

इल्यीच के मित्र—स्क्ल्यारेन्को, ललायान्त्स तथा इओनोव—भी उस समय उन्हीं विषयों के आंकड़े एकत्र कर रहे थे जिन पर स्वयं व्लादीमिर इल्यीच काम कर रहे थे। इस समय मेरे पास स्क्ल्यारेन्को की छोटी सी हस्तलिखित प्रति की एक नक़ल मौजूद है। यह प्रति मैंने १८९३ में तैयार की थी। इस प्रति से यह पता चलता है कि व्लादीमिर इल्यीच के दल के लोग अपना अपना कार्य किस प्रकार किया करते थे।

मुझे याद है कि १८९३ में मैंने "रूस में भूदासत्व प्रथा की समाप्ति के कारण" शीर्षक साथी फ़ेदोसेयेव का एक लेख पढ़ा था जो हस्तलिखित प्रति के रूप में समारा के मार्क्सवादियों में घुमाया गया था। मुझे यह याद नहीं पड़ रहा है कि इसकी प्रति मुझे किससे मिली थी। दुर्भाग्यवश मैं इसकी कोई प्रति अपने पास न रख सका। यह एक लम्बा चौड़ा लेख था और मुझे बहुत थोड़े से समय के लिए ही दिया गया था। लेख बड़ा रोचक था जिसमें फ़ेदोसेयेव ने यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया था कि १८६१ के सुधार उच्च-वर्गीय लोगों की उदार वृत्तियों के फलस्वरूप नहीं हुए हैं और उनका यह दावा किसी प्रकार भी ठीक नहीं है। उन्होंने इन राजनीतिक विचारों के आधार पर सुधार किये हैं कि ऊपर से किसानों को 'आज़ादी देना' नीचे से आज़ादी ले लिये जाने की अपेक्षा कहीं अच्छा है। ये सुधार केवल आर्थिक कारणों से ही हुए हैं। बड़े बड़े जागीरदार, जिनकी जायदाद पर उत्पादन की नवीन से नवीन प्रणालियों की सहायता ली जाती थी, इस "आज़ादी" के पक्ष में थे क्योंकि पैसे दे कर काम कराने से उनको अपेक्षाकृत अधिक लाभ रहता था। कृषि क्षेत्र में नवीनतम तथा अधिक लाभकर प्रणालियों का अधिकाधिक

प्रसार करने की दिशा में भूदासत्व की प्रथा एक रोड़े के समान थी। उस समय—४० वर्ष पूर्व—जब उदारवादियों और कुछ सीमा तक जनसाधारण में भी यह भ्रामक धारणा फैलने लगी थी कि ज़ार और उसके निकटस्थ परामर्शदाता स्वतन्त्रता देने के पक्ष में है, फ़ेदोसेयेव जैसे नवयुवक मार्क्सवादी के लिए यह बड़ा आवश्यक था कि किसानों को मिलने वाली इस "आज़ादी" की पोल खोल दे और उन भ्रामक धारणाओं का भण्डाफोड़ करे जो जनसमूह के लिए हानिकर थीं। यह दिखाना आवश्यक था कि जो सुधार किये जा रहे हैं वे यदि सम्पूर्ण-तया शासक वर्ग के हित में नहीं तो कम से कम शासक वर्ग के सब से समृद्ध और आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न लोगों के हित में अवश्य हैं। फ़ेदोसेयेव ने अपने लेख में स्क्रेबीत्सकी की "अलेक्सान्द्र द्वितीय के शासन-काल में कृषकों की समस्या" नामक पुस्तक के अनेक खंडों से उद्धरण दे देकर यह सिद्ध किया था कि सबसे बड़े जागीरदार और विशेष रूप से वे जागीरदार जो बाल्टिक प्रान्तों में रह रहे थे और जिनके आस्थान दूसरों से अधिक समुन्नत थे (खेतीबारी की भरपूरता और अभिनवीकृत प्रणालियों की दृष्टि से) "आज़ादी" देने के पक्ष में थे; अर्थात् वस्तुतः वे गुलामी को एक ऐसा नया रूप देने के समर्थक थे जो उनके स्वार्थों की सिद्धि में अधिक लाभकर हो। ऐसे छोटे छोटे जागीरदार, जिनके आस्थान पिछड़े हुए थे और जो कर्ज़ों से लदे हुए थे, इन सुधारों के विरुद्ध थे।

इस समय यह बात प्रत्येक मार्क्सवादी की समझ में आ रही है, परन्तु उस ज़माने में इसे तथ्यों के आधार पर प्रमाणित करने की आवश्यकता थी। यही कारण था कि व्लादीमिर इल्यीच फ़ेदोसेयेव के कार्यों की बड़ी सराहना करते और उनसे मित्रता पैदा करना चाहते थे।

दिमित्री उल्यानोव द्वारा

३
शतरंज

व्लादीमिर इल्यीच ने शतरंज खेलना उस समय से आरम्भ किया जब वे केवल आठ या नौ वर्ष के थे। वे पिता के विपक्ष में खेलते। इस क्षेत्र में हमारे पिता उनके पहले गुरू थे। कभी वे हमारे बड़े भाई अलेक्सान्द्र के विपक्ष में और कभी हम छोटों—मैं तथा मेरी बहन ओल्गा—के विपक्ष में खेलते। मेरे लिए तो वे शतरंज के शिक्षक ही थे—साधारण नहीं कठोर शिक्षक। इसीलिए मैं अपने पिता के विपक्ष में खेलता था क्योंकि वे मुझे अपनी चालें वापस ले लेने दिया करते थे।

व्लादीमिर इल्यीच के खेलने का एक अच्छा सिद्धान्त था और वे स्वयं इस सिद्धान्त का पालन करते। वे सदा अपने प्रतिद्वन्द्वी से इस बात की माँग करते कि वह भी इस सिद्धान्त का अक्षरश: पालन करे कि यदि उसने गोट छू दी है तो उसे वह गोट चलनी पड़ेगी और यदि गोट चल चुकी है तो उसे वापस नहीं लिया जा सकता। शौकिया खिलाड़ी इस नियम को प्राय: तोड़ दिया करते हैं; वे अपनी चालों को वापस ले लेते हैं और फिर सोच कर दुबारा चलते हैं। इस ख़राब आदत से खेल और खिलाड़ी दोनों ही खराब हो जाते हैं। यदि पहले से अनेक चालें और विपक्षी की उत्तर-चालें सोचने के बाद गोट चली जाय तो खेल में मज़ा आता है और खिलाड़ियों को चाल चलने के पहले ही अनेक चालें सोचने का मौका मिलता है। यदि इस नियम का पालन करने के बजाय खिलाड़ी बिना

भली भांति सोचे विचारे अललटप्पू गोटें चलने लगें तो सारा खेल ख़राब हो जायगा और खिलाड़ी घबड़ा जायंगे।

मुझे एक घटना की याद है जो समारा में शतरंज के एक टूर्नामेंट के समय घटी थी। कई बिसातों पर खेल जमे थे और बहुत से लोग इन खेलों को देख रहे थे। एक बिसात पर दो मोटे मोटे खिलाड़ी बैठे हुए थे। वे परस्पर एक दूसरे को अपनी चालें वापस ले लेने देते और इसके परिणामस्वरूप बहसें होतीं, उत्तेजना फैलती और कोलाहल मचता। इत्तफ़ाक से उनमें से एक ने अपनी बेगम ऐसी जगह रख दी जहाँ उसका प्रतिद्वन्द्वी उसे पीट सकता था। प्रतिद्वन्द्वी ने उसे तुरन्त छीन लिया और कस कर पकड़ लिया। इस पर दोनों हुल्लड़ करने लगे, मेज़ पर से उछलने लगे और एक दूसरे पर भौंकने लगे। जिसकी बेगम पिट रही थी वह अपने प्रतिद्वन्द्वी से उसे वापस ले लेने की कोशिश कर रहा था। व्लादीमिर इल्यीच देख रहे थे। वहीं से बोले "इसे झट से जेब में रख लो, काम आयेगी" और सब हंस पड़े।

व्लादीमिर इल्यीच गम्भीर खेल खेलते। "आसान" कहे जाने वाले खेल उन्हें पसन्द न थे। जब वे कमज़ोर खिलाड़ियों के विपक्ष में खेलते तो कभी कभी अपने प्रतिद्वन्द्वी की पिटती हुई गोट भी जानबूझ कर छोड़ देते और जब उनका प्रतिद्वन्द्वी घमण्ड में आकर उन्हें ऐसा न करने देता, तो प्रायः कहते "बराबर बराबर संख्या में गोटें रख कर खेलने का मज़ा ही क्या जब सोचने-समझने, चालें लड़ाने और कठिन परिस्थितियों से अपने मोहरे निकालने का मौका ही न मिले।" वे उस व्यक्ति से कमज़ोर ही बने रहना अधिक पसन्द करते थे जिसे वे उपर्युक्त प्रकार की रिआयत देते थे। जब मैं बारबार उस बाज़ी को जीतने लगा जिसमें वे अपना हाथी हटा कर खेलते थे—तो मैंने उनसे अनुरोध किया कि अब वे मेरे साथ हाथी

के बजाय घोड़ा हटाकर खेलें। इस पर वे तत्काल ही एक शर्त रख देते "अच्छा लगातार तीन बाज़ियाँ जीतो तब।"

प्राय: ऐसा होता है कि मेहनत चाहे जितनी ही कम क्यों न की जाय, दिमाग़ चाहे जितना थोड़ा ही क्यों न लगाया जाय परन्तु लोग बाज़ी जीतना बहुत पसन्द करते हैं। व्लादीमिर इल्यीच का मत कुछ दूसरा ही था। शतरंज में सबसे ज़्यादा वे इस बात को पसन्द करते कि बढ़िया से बढ़िया चाल चलने और कठिन और कभी कभी असम्भव परिस्थितियों में फंसी हुई अपनी गोटों को निकालने के लिए बराबर प्रयत्न किया जाय। हारना जीतना उनके लिए बाद की बात थी। जब कभी मैं खेल के दौरान में कोई चूक कर जाता और वे आसानी से बाज़ी जीत जाते तो हंसते हुए मुझसे कहते "भाई यह मेरी जीत नहीं है, हाँ तुम्हारी हार ज़रूर है।"

जब व्लादीमिर इल्यीच १५ वर्ष के थे तभी से खेल में वे पिता जी से जीत जाते। मुझे याद है कि एक बार इल्या निकोलायेविच (१८८५—१८८६ की शीत ऋतु में) खाने के कमरे में आये और कहने लगे, "वोलोद्या तुम शतरंज में मुझे हराने लगे हो, अब तुम्हें अमुक अमुक से बाज़ी लेनी चाहिये।" (मुझे याद है कि एक इल्यीन था जो सिम्बीर्स्क में शतरंज का सबसे अच्छा खिलाड़ी समझा जाता था। वह कभी हम लोगों के पास नहीं आता था।)

१८८६ की ग्रीष्म ऋतु में व्लादीमिर इल्यीच ने अलेक्सान्द्र के साथ शतरंज की अनेक बाज़ियाँ खेली थीं। उन्होंने आपस में एक मैच खेलने का निश्चय किया था, और खेला भी था, परन्तु दुर्भाग्यवश मुझे न तो यही पता है कि उसकी शर्तें क्या थीं और न यही कि उसमें कौन जीता तथा कौन हारा था। मैच तगड़ा था, दोनों घन्टों मौन खेलते रहे और बीच में एक मिनट के लिए भी बिसात से न उठे। उस समय मैं उनके खेल को ज़रा भी न समझ पाया था। यह

बहुत कठिन था। खेल के दौरान में न तो किसी ने आपस में बातें कीं, न बहसें कीं और न वे इतने जोश में ही आये कि दूसरों का ध्यान उनकी ओर आकृष्ट होता।

इन दोनों की शतरंज खेलने की क्षमता का पता हमें निम्नलिखित घटना से लगता है। उक्त गर्मी की ऋतु में अलेक्सान्द्र कज़ान गुबेर्निया में कोकूश्किनो गांव में रहता था। वहाँ उसने बिना देखे हुए चालें चल चल कर एक ऐसे व्यक्ति के विपक्ष में शतरंज में विजय प्राप्त की जिसका रोब कज़ान में तत्कालीन सर्वोत्तम शतरंज-खिलाड़ी भी मानते थे। इस प्रकार के खेल के अलावा अलेक्सान्द्र पांच गेंदों वाला बिलियर्ड भी खेला करते थे और उसमें भी उन्हें अच्छी सफलता मिलती थी।

व्लादीमिर इल्यीच तथा अलेक्सान्द्र शतरंज केवल शाम को ही खेलते चाहे दिन भर छुट्टी हो और चाहे उनके पास कोई काम हो या न हो। मुझे ऐसी एक भी मिसाल नहीं मालूम जब वे दोपहर के खाने के पहले किसी समय शतरंज पर जमे हों। प्रातःकाल वे गम्भीर प्रकार के काम करते थे। मेरी समझ में यह एक उल्लेखनीय बात है और इससे उनके आचरण तथा स्वभाव के सम्बन्ध में प्रकाश पड़ता है विशेष रूप से जब हम यह देखते हैं कि अलेक्सान्द्र बीस वर्ष का और व्लादीमिर इल्यीच केवल १६ वर्ष का था।

पिता की मृत्यु के पश्चात् की पहली ग्रीष्म ऋतु में हमारे पास रहने के लिए अपने मकान का आधा भाग (मोस्कोव्स्कया स्ट्रीट में) ही रह गया था। हमारा यह भाग स्वियागा के सामने पड़ता था। हमने अपने मकान का दूसरा आधा भाग, जो शहर के सबसे अधिक चहल-पहल वाले भाग के सामने पड़ता था, किराये पर उठा रखा था। हमारे रहने के भाग में सबसे नीचे की मंज़िल में एक छोटा सा कमरा था जिसकी खिड़कियाँ आंगन में खुलती थीं। दोनों भाई शतरंज प्रायः यहीं खेला करते।

इसी प्रसंग में मुझे एक और घटना याद आ गई। एक बार वे अपने कमरे में बैठे हुए शतरंज खेल रहे थे। पास ही में एक लालटेन रखी थी। खिड़की खुली थी, परन्तु उसमें जाली लगी हुई थी। हम सब बच्चे आंगन में खेल रहे थे और लालटेन की रोशनी में अच्छी तरह से उन दोनों मूर्तियों को चुपचाप गोटें धरते-उठाते देख रहे थे। लगभग १२ वर्ष की एक छोटी सी लड़की खिड़की तक दौड़ती हुई गई और चिल्लाती हुई बोली "देखो, देखो, दोनों कैसे चोरों की तरह सीखचों के पीछे बैठे हुए हैं!" दोनों का ध्यान बंटा और जैसे ही उन्होंने उसकी ओर घूरा कि वह भागती हुई दिखाई दी। उस समय तक उन्हें सच्चे सीखचों का कोई अनुभव नहीं हुआ था, परन्तु वे यह जान अवश्य रहे थे कि किसी न किसी समय उन्हें सीखचे देखना होंगे क्योंकि उनके लिए वे अपरिहार्य थे।

१८८८-८९ की जाड़े की ऋतु में व्लादीमिर इल्यीच ने खूब शतरंज खेला। कभी कभी तो वे अपने एक भतीजे के साथ एक शतरंज क्लब भी चले जाया करते थे। उस समय हम लोग कज़ान में पेरवाया पहाड़ी पर ओरलोव के मकान में रह रहे थे। एक दिन वे बिना देखे शतरंज खेलना चाहते थे। उन्होंने मुझे कमरे में बुलाया और कहा कि वे मुझ से बिना देखे शतरंज खेलना चाहते हैं। मैंने ऐसा खेल पहले कभी नहीं देखा था और चूंकि मैंने यह समझा था कि यह खेल बड़ा कठिन होता है, अतएव मैं अपनी जीत का विश्वास करते हुए शतरंज पर जम गया। मैंने निश्चय किया था कि मैं, इस आशा में कि वे यह तो समझ ही न पायेंगे कि मैं क्या कर रहा हूँ, उन्हें अपनी असाधारण चालों और सभी प्रकार के कौशल से चकित कर दूंगा। वे बिस्तर पर बैठ गये और उन्होंने अपनी चालें बोलना शुरू कर दीं। थोड़ी ही देर में मैं हार गया और मेरा सारा कला-कौशल जहां की तहाँ धरा रह गया। परन्तु सामान्यतया व्ला-

दीमिर इल्यीच बिना देखे खेलना पसन्द न करते और मुझे याद भी नहीं पड़ रहा है कि उन्होंने फिर कभी ऐसे खेला हो। इसी सिलसिले में मैं यह कहना चाहता हूँ कि ऐसे खेलों का बाह्य चमत्कार कुछ भी क्यों न हो परन्तु वे होते बड़े हानिकर हैं। निस्सन्देह इससे खेल का कौशल कम हो जाता है और खिलाड़ी के दिमाग़ पर बहुत अधिक ज़ोर पड़ता है।

उसी वर्ष जाड़े के मौसम में मार्क तिमोफ़ेयेविच येलिज़ारोव ने व्लादीमिर इल्यीच और अ०न० खारदिन, जो समारा में शतरंज का सर्वोत्तम खिलाड़ी था, के बीच पत्र-व्यवहार द्वारा शतरंज के खेल की व्यवस्था की। वे डाक द्वारा, साधारणतया पोस्टकार्डों पर, अपनी चालें भेजा करते थे। व्लादीमिर इल्यीच ने पत्र द्वारा अपनी एक चाल की सूचना दे देने के पश्चात् और प्रतिद्वन्द्वी की चाल आने के बीच के समय में बिसात पर मोहरों को कई बार बिठाया और आख़िर कहने लगे "मुझे आश्चर्य है कि अब वे कौन सी चाल चलेंगे और इस कठिन परिस्थिति में अपनी बाज़ी कैसे बचाएंगे। मुझे स्वयं इस स्थिति से उबरने का कोई मार्ग नहीं मालूम..." अन्त में उत्तर में एक चाल आ गई जिसकी उसे बहुत दिनों से प्रतीक्षा थी। उन्होंने तदनुसार मुहरें बिठाईं। उस समय तक मुझे उनके शतरंज में मज़ा आने लगा था। मुझे खारदिन की चाल कुछ जंची नहीं। पहले तो व्लादीमिर इल्यीच भी चकराये परन्तु कुछ समय बाद जब उन्होंने बाज़ी पर विचार किया, तो उनके मुंह से यही निकला "बड़ा सख्त खिलाड़ी है।"

मुझे यह मानना पड़ेगा कि शतरंज की दुनिया में खारदिन का एक विशिष्ट स्थान था। १८८०-९० में उसने मास्को के अच्छे से अच्छे खिलाड़ियों को हरा दिया था और उसके पश्चात् उसने चिगोरिन के साथ खेलकर भी सफलता प्राप्त की थी। यद्यपि बड़े बड़े टूर्नामेंटों में

खारदिन कोई भाग नहीं लेता था फिर भी चिगोरिन उसे रूस के सबसे अच्छे खिलाड़ियों में से एक मानता था (उदाहरण के लिए ड्युफ़रेन के रूसी रूपान्तर में चिगोरिन की पाद-टिप्पणी देखें)। व्लादीमिर इल्यीच पत्र-व्यवहार से खेली जाने वाली बाज़ी हार चुके थे, परन्तु कज़ान से हमारे समारा (१८८९ की बसन्त ऋतु में) चले आने के पश्चात् वे खारदिन से मिले और उसने उनके साथ पहले-पहले घोड़ा हटा कर शतरंज खेली। दो एक साल बाद वे भी बाज़ियाँ जीतने लगे और फिर खारदिन उनके साथ एक एक प्यादा और एक एक चाल छोड़ कर खेलने लगा, परन्तु इस प्रकार व्लादीमिर इल्यीच की हार अधिक होती—जीत कम।

अन्द्रेई निकोलायेविच खारदिन एक बैरिस्टर था और उसे शतरंज का अत्यधिक शौक था। वह शतरंज सम्बन्धी विदेशी प्रकाशन मंगाया करता और घंटों बाज़ी जमाये बैठा रहता। वह कहा करता था कि "मेरे अच्छा शतरंज खेलने का कारण है और वह यह कि एक बार जब मैं किसी दूरस्थ नई जगह पर गया हुआ था और वहाँ मेरे पास बहुत सा ख़ाली समय था तब वहाँ मैं शतरंज विषयक पुस्तकों और इस खेल के सिद्धान्तों आदि का गहन अध्ययन किया था। एक साल या इससे भी अधिक से मुझे शतरंज खेलने को न मिला था, परन्तु जब मेरा एकान्तवास समाप्त हुआ तो मैं चिगोरिन से मिला और यह साबित कर दिया कि मैं अव्वल दर्जे का खिलाड़ी हूं।"

१८८९-९० की जाड़े की ऋतु में हमारा सारा परिवार समारा में (ज़वोद्स्काय स्ट्रीट पर), जो वोल्गा के किनारे था, करकोव के मकान में रहा करता था। उस समय व्लादीमिर इल्यीच को शतरंज खेलने का जितना शौक था उतना पहले या बाद में कभी भी नहीं रहा। वे अधिकतर खारदिन से और कभी कभी समारा के दूसरे

खिलाड़ियों से भी खेल लिया करते थे। एक बार इन लोगों ने एक टूर्नामेंट किया जिसमें ८ या १० खिलाड़ियों ने भाग लिया। चूंकि खिलाड़ियों की क्षमता भिन्न भिन्न थी इसलिए वे मोहरे छोड़ छोड़ कर भी खेलते थे।

इस टूर्नामेंट में प्रथम श्रेणी में केवल खारदिन ही था, दूसरी श्रेणी में व्लादीमिर इल्यीच तथा एक अन्य व्यक्ति और बाकी सब या तो तीसरी श्रेणी में थे या चौथी में। व्लादीमिर इल्यीच विजेता घोषित हुए। प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार १५ रूबल के आसपास रखा गया था। प्रतियोगियों ने इस धन की कोई वस्तु नहीं ख़रीदी थी। उनमें से एक ने यह रूबल व्लादीमिर इल्यीच को देना चाहे क्योंकि वह विजेता थे। परन्तु व्लादीमिर इल्यीच ने रूबल लेने से इन्कार कर दिया और बाद में वे रूबल कहीं अन्यत्र दे दिये गये।

व्लादीमिर इल्यीच खारदिन से मिलना-जुलना बहुत पसन्द करते; पहले तो इसलिए कि दोनों शतरंज के अच्छे खिलाड़ी थे और दूसरे इसलिए कि जब व्लादीमिर इल्यीच ने अपनी कानून की परीक्षा पास की तो उन्होंने खारदिन के अधीनस्थ जूनियर बैरिस्टर के रूप में वकालत करनी शुरू कर दी। अब दोनों हम-पेशा थे।

शतरंज में सबसे अच्छा प्रतिद्वन्द्वी था खारदिन। यदि व्लादीमिर इल्यीच ने शतरंज साहित्य का गम्भीरतापूर्वक अध्ययन किया होता तो वे भी उसे पकड़ सकते थे, बल्कि उससे अच्छे सिद्ध हो सकते थे। उदाहरणार्थ, उन्होंने उन वर्षों में अलाकायेवका में गर्मी के जो महीने बिताये थे यदि उनमें वे शतरंज खेले होते अथवा उन्होंने उसके सिद्धान्तों का अध्ययन किया होता, तो वे भी निश्चय ही एक ऊंचे दर्जे के खिलाड़ी होते। इसमें कोई सन्देह नहीं कि यदि वे अपनी योग्यता कार्यक्षमता और श्रमप्रियता का इस क्षेत्र में प्रयोग करते, तो थोड़े ही वर्षों में इस खेल में भी उनका कोई सानी न रहता।

परन्तु व्लादीमिर इल्यीच ने शतरंज को खेल और मनबहलाव के एक साधन के अलावा और कुछ न समझा। मुझे याद है कि जब मैं पाठशाला में अध्ययन कर रहा था और ज़ालिम लैटिन और ग्रीक के बोझ से दबा जा रहा था उस समय मैंने एक दिन उनसे शतरंज के खेल के समय कहा था कि यदि इन मृत भाषाओं के स्थान पर मानसिक प्रशिक्षण के लिए पाठशाला में शतरंज का पाठ्यक्रम रख दिया गया होता, तो कितना अच्छा होता।

और उन्होंने जवाब दिया था "अगर ऐसा सुधार कर दिया जाय, तो इस पर आसमान से गिरा और खजूर में अटका वाली कहावत ही चरितार्थ होगी। तुम्हें यह न भूलना चाहिए कि शतरंज केवल एक खेल है उससे अधिक कुछ नहीं। यह गम्भीर विषय नहीं है।"

व्लादीमिर इल्यीच ने शायद ही कभी शतरंज-साहित्य पढ़ा हो। पाठक जानते होंगे कि इसका साहित्य बड़ा विशाल है। वे केवल आखिरी चालें— इनमें उनकी विशेष पटुता थी— और शुरू की कुछ चालें जानते थे जो उस समय साधारणतया प्रयोग में लाई जाती थीं। कुछ भी हो उन्होंने शतरंज सिद्धान्त का क्रमबद्ध अध्ययन, जो किसी भी उच्च कोटि के खिलाड़ी के लिए अनिवार्य है, करने का कोई प्रयत्न नहीं किया।

व्लादीमिर इल्यीच शतरंज की जिस रूप में सराहना करते थे प्राय: वैसे ही सराहना कार्ल मार्क्स और विल्हेम लीब्क्नेख्त, जिन्हें शतरंज से बड़ा शौक था, भी करते थे। मार्क्स सम्बन्धी अपने संस्मरणों में वि० लीब्क्नेख्त ने लिखा है—"हम लोगों ने अपना अध्ययन नियमित रूप से पुन: आरम्भ कर दिया था इसलिए शतरंज हमारे लिए मुख्य चीज़ न रह गई थी। शतरंज के खिलाड़ी के रूप में अपने छोटे से दायरे में मेरी कुछ ख्याति अवश्य थी, परन्तु मुझे

शतरंज के सम्बन्ध में लेसिंग का यह कथन ठीक मालूम हुआ कि शतरंज के लिए 'खेल के समय बहुत अधिक गम्भीरता और गम्भीरता के लिए बहुत अधिक खेल' की अपेक्षा होती है। कुछ प्रसिद्ध खिलाड़ियों ने मुझे टूर्नामेंट के लिए आमंत्रित किया था। वे इस कला के पंडित थे। उनकी संगत में मुझे ऐसी ऐसी चालों का ज्ञान हुआ जिन्हें लोग मुझसे सौ वर्ष पहले भी जानते थे। मुझे इस बात पर बड़ा गर्व हुआ। मैंने अपने को पिरेनीज़ के उस किसान की स्थिति में पाया जिसने लुई फ़िलिप के समय में गुम्बज़ में लगाई जाने वाली उस घड़ी का पुन: आविष्कार किया था जो उससे ४०० साल पहले ईजाद हो चुकी थी। मुझे ज्ञात हुआ कि शतरंज के सम्बन्ध में बहुत अधिक साहित्य उपलब्ध है और यदि मैं शतरंज का एक सफल खिलाड़ी बनना चाहूँ, तो मुझे यह साहित्य पढ़ना होगा और अपना सारा समय शतरंज को ही देना होगा। परन्तु शतरंज तो मेरे जीवन का उद्देश्य नहीं है..."

मैं यह बात पहले ही कह चुका हूँ कि अपने टूर्नामेंट के समय व्लादीमिर इल्यीच और अलेक्सान्द्र दोपहर के खाने के पहले शतरंज पर कभी न बैठते। उस समय वे अपनी पुस्तकों और नोटबुकों का अध्ययन करते। दोपहर के खाने के बाद और कभी कभी सायं-काल को वे शतरंज पर जमा करते जब व्लादीमिर इल्यीच बाद में अलाकायेवका में रहने लगे तब वे प्रात:काल गम्भीर प्रकार के कार्य करते। पास के एक बाग़ में घने छायादार वृक्षों के नीचे उनकी एक मेज़ और एक बेंच पड़ी रहती जहाँ वे प्राय: सुबह के समय ही अपनी कापी किताबें लेकर बैठ जाया करते पास ही में १०, १५ क़दम लम्बी एक पगडंडी सी थी जहाँ वे विचारशील मुद्रा में प्राय: टहलते हुए दिखाई पड़ा करते वहाँ शतरंज या मनोविनोद का कोई प्रश्न न था। उस स्थान में शतरंज के टूर्ना-

मेंटों के लिए नहीं गम्भीर संघर्षों की तैयारी करने के लिए आवश्यक अध्ययन करने की ही अपेक्षा की जा सकती थी। हमने अलाकायेवका में पांच वर्ष बिताये। इतनी बड़ी अवधि में मुझे ऐसे तीन चार दिनों की भी याद नहीं है जब व्लादीमिर इल्यीच ने अपने नियम को तोड़ा हो और अपने निश्चित समय पर अपनी मेज़ और बेंच तथा पास की चिरपरिचित पगडंडी का प्रयोग न किया हो।

१८९३ के बाद से व्लादीमिर इल्यीच ने शतरंज का खेल बहुत ही कम कर दिया और अब वे यदा कदा ही खेला करते। लेपेशीन्स्की के एक लेख में पाठक उन खेलों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकता है जिन्हें वे साइबेरिया में अपने निष्कासन-काल में (क्रज्हिजानोव्स्की, स्तरकोव और लेपेशीन्स्की के साथ) खेला करते थे।

व्लादीमिर इल्यीच के साथ शतरंज की आखिरी बाज़ी मैंने १९०३ में जेनेवा में खेली थी। उस समय उनके घर पर शतरंज की गोटें तक न थीं और हमें शतरंज खेलने के लिए एक कैफ़े में जाना पड़ा था। वहाँ व्लादीमिर इल्यीच ने मुझसे पूछा था कि मैं क्या पीना चाहता हूँ और मैंने म्यूनिच बियर के पक्ष में अपनी स्वीकृति दी थी। उन्होंने कैफ़े की दासी से एक पाइन्ट बियर और एक कप काली काफ़ी लाने को कहा। "मैं बियर नहीं पीना चाहता", उन्होंने कुछ संकोच के साथ कहा... हमने एक बाज़ी खेलने में चार घंटे लगा दिये। हम इतने ध्यानमग्न खेल रहे थे कि अन्त में आसपास की मेज़ों पर बैठे हुए लोगों ने हमारा मज़ाक उड़ाना शुरू कर दिया।

क्रान्ति के बाद व्लादीमिर इल्यीच ने शतरंज खेलना प्रायः बन्द कर दिया। उनका कहना था कि शतरंज मनुष्य को थका डालता है। अब वे शतरंज के बजाय अपने खाली समय में गोरोदकी खेलते, दूर दूर तक टहल आते और शिकार खेला करते।

दिमित्री उल्यानोव द्वारा

४

अरेपयेव से मुठभेड़

१८९०-१९०० के आरम्भ में हम माता जी के साथ समारा में रह रहे थे। उस समय व्लादीमिर इल्यीच जूनियर बैरिस्टर थे। मैं और मारिया पाठशाला में पढ़ रहे थे। आन्ना तथा उसके पति मार्क तिमोफ़ेयेविच भी हमारे साथ रहा करते थे। मुझे याद है कि उस समय मार्क तिमोफ़ेयेविच राजस्व कार्यालय में किसी छोटे-मोटे पद पर काम कर रहे थे।

१८९२ की गर्मी की ऋतु में व्लादीमिर इल्यीच और येलिज़ारोव सीज़रान गये। वहाँ से वे कुछ दिनों के लिए बेस्तूज्हेवका गांव जाना चाहते थे जहाँ मार्क येलिज़ारोव के भाई का एक फ़ार्म था। परन्तु वहाँ तक पहुंचने के पूर्व वोल्गा नदी पार करके उसके बाएँ तट तक जाना आवश्यक था।

उस समय सीज़रान में यात्रियों को नदी के आर पार लाने ले जाने का एकाधिकार अरेप़येव नामक एक धनी व्यापारी के हाथ में था। उसके पास एक छोटा सा स्टीमर तथा एक बजरा (एक प्रकार की बड़ी नाव) था जिनमें वह यात्रियों तथा घोड़े गाड़ियों आदि को नदी के दूसरी ओर लें जाया करता। यह व्यापारी अपने इस एकाधिकार के प्रति बड़ा सतर्क रहता था और दूसरे मल्लाहों को घाट उतराई का काम न करने देता। यही कारण था कि जब कोई मल्लाह यात्रियों को अपनी नाव पर चढ़ा कर ले जाने लगता, तो

अरेफ़्येव का स्टीमर उसके निर्देशानुसार नाव तक जाकर उन्हें फिर वापस ले आता।

व्लादीमिर इल्यीच को स्टीमर का इन्तज़ार करना और इसमें अपना समय नष्ट करना पसन्द न आया। अतएव उन्होंने मार्क येलिज़ारोव से नाव ले लेने का अनुरोध किया। पहले तो मल्लाह उन्हें पार ले जाने को राज़ी न हुए क्योंकि वे अरेफ़्येव से डरते थे। उनका कहना था कि अगर वे चले भी तो वह उन्हें वापस कर देगा। परन्तु व्लादीमिर इल्यीच ने किसी प्रकार एक मल्लाह को पार उतारने के लिए राज़ी कर लिया। उन्होंने मल्लाह को बताया कि यदि अरेफ़्येव नाव वापस कर देगा, तो उस पर वैध कार्यों में मनमाने हस्तक्षेप के अपराध में कानूनी कार्यवाही की जा सकेगी।

दोनों नाव में बैठ गये और पार के लिए चल पड़े। जब अरेफ़्येव ने, जो घाट पर एक समीवर (चाय बनाने का एक बरतन विशेष) के पास बैठा हुआ था, यह देखा तो मार्क को, जिनके बारे में वह यह जानता था कि वे उसी के प्रदेश के निवासी हैं, सम्बोधित करते हुए उसने परछत्ती से ही आवाज़ लगाई:

"ठहरिये, क्या कर रहे हैं मार्क तिमोफ़ेयेविच? आपको तो मालूम है कि उतराई के काम के लिए मैं सरकार को टैक्स देता हूँ और मल्लाहों को यात्रियों को पार नहीं ले जाने देता। आइये हमारे साथ चाय पीजिये। अपने मित्र को भी अपने साथ लेते आइये। आपको जाना मेरे ही स्टीमर में होगा क्योंकि यदि नाव न लौटी, तो मुझे आपकी नाव लौटाने की आज्ञा देनी होगी।"

अब व्लादीमिर इल्यीच ने इस बात पर और भी ज़ोर देना शुरू किया कि नाव न रुके और मल्लाह अरेफ़्येव की बातों पर कोई ध्यान न दे। मल्लाह ने उदास होकर उत्तर दिया:

"हम अपना समय नष्ट कर रहे हैं। वह हमें निश्चय ही वापस

कर देगा। उसका स्टीमर हमारी नाव घेर लेगा और आपको उसमें ज़बरदस्ती चढ़ा लेगा।"

"क्या तुम यह भी नहीं समझते" व्लादीमिर इल्यीच कहते जा रहे थे "कि उसे ऐसा करने का कोई अधिकार नहीं है। यदि वह हमें रोकेगा और हमें ज़बरदस्ती अपने स्टीमर पर चढ़ायेगा, तो उसे इस हस्तक्षेप के लिए जेल भेजा जा सकता है, समझे?"

"उसने पचासों बार नावें रोकी हैं और कभी कुछ नहीं हुआ। और किसमें हिम्मत है कि उसके ख़िलाफ़ कानूनी कार्रवाई करे। सीज़रान में वह बड़ा शक्तिशाली है। मैं तो समझता हूँ कि खुद जज भी उसके लंगोटिया यार हैं। आपको मालूम भी है वह यह नदी शहर से ख़रीद कर लाया है, इसका टैक्स देता है और उसके कामों में हमारा कोई चारा नहीं।"

व्लादीमिर इल्यीच की ज़िद के कारण नाव बाएँ किनारे की तरफ़ बढ़ती गई, यद्यपि यह स्पष्ट होता जा रहा था कि अरेफ़्येव अपनी धमकी को कार्यान्वित करने ही वाला है। मुश्किल से वे लोग नदी के बीच में पहुंचे होंगे कि स्टीमर की सीटी सुनाई पड़ी और वह अपना बजरा पीछे छोड़ कर हमारा पीछा करने के लिए चल पड़ा।

"आ गये न पार, लीजिये वह मुसीबत पीछे आ रही है" मल्लाह कह रहा था "अब आपको वापस जाना होगा। उसके ख़िलाफ़ कुछ न्याय नहीं हो सकता। उसका पक्ष हमेशा ठीक ही साबित होगा।"

स्टीमर पास आ चुका था। उसके दो-तीन नाविकों ने बड़ी आसानी के साथ नाव में एक हुक लगाया और उसे स्टीमर की तरफ़ मोड़ लिया। साथ ही उन्होंने यात्रियों से स्टीमर पर चढ़ आने के लिए प्रार्थना की।

व्लादीमिर इल्यीच ने स्टीमर के सेवकों से इस बात पर बहस आरम्भ कर दी कि उन्हें हम लोगों को रोकने का कोई अधिकार नहीं और यदि वे न मानेंगे, तो उनपर कानूनी कार्रवाई होगी, वे गिरफ़्तार किये जायेंगे और उन्हें जेल भुगतनी पड़ेगी।

वे उन सेवकों को समझा रहे थे—"हमसे इससे कोई मतलब नहीं कि अरेफ़्येव ने उतराई का ठेका ले रखा है या नहीं। यह उसका काम है वह जाने हमारा नहीं और न इससे उसे या आप लोगों को वोल्गा में अपना कानून बघारने और ज़बरदस्ती लोगों को रोकने का ही कोई अधिकार मिलता है।"

परन्तु कप्तान ने आपत्ति की "इन बातों से हमारा कोई सरोकार नहीं। स्टीमर के मालिक ने हमें आदेश दिये हैं और हमें उन्हें मानना तथा उनके अनुसार कार्रवाई करना है। कृपया स्टीमर पर चले आएँ। हम आपको आगे न जाने देंगे।"

उन्हें झुकना पड़ा। दूसरा कोई रास्ता न था। परन्तु व्लादीमिर इल्यीच ने तत्काल उन समस्त सेवकों के नाम लिख लिये जो नाव रोक रहे थे। साथ ही उन्होंने गवाहों के रूप में मल्लाह तथा दूसरे कुछ लोगों के नाम भी लिखे।

सीज़रान के तट पर उन्हें उतराई के लिए कुछ समय तक प्रतीक्षा करनी पड़ी। उस समय अरेफ़्येव विजेता जैसे स्वर में बराबर यही कहता जा रहा था कि मैं टैक्स देता हूँ किसी दूसरे को यात्रियों को नदी पार ले जाने का कोई हक़ नहीं। इसीलिए "मैं नावें रोकता और मुसाफ़िरों को लौटा लाता हूँ।"

इसमें सन्देह नहीं कि दूसरे कुछ लोगों ने भी यही समझा था कि अरेफ़्येव कानून तोड़ रहा है परन्तु या तो वे उसके ख़िलाफ़ कोई कानूनी कार्रवाई करना नहीं चाहते थे या फिर ऐसा करने की उनमें हिम्मत ही न थी। कुछ ने सोचा था कि इसमें कौन अपना पैसा

बरबाद करे, कुछ ने बिना बुलाई मुसीबत की कल्पना की थी और कुछ ने इसलिए इसमें हाथ डालना मुनासिब न समझा था कि उस समय कानूनी कार्यवाहियों में लाल फीते और "रूसी" सुस्ती का बोलबाला था।

इल्यीच कुछ ही घंटों के लिए उस दूषित वातावरण में रहे होंगे परन्तु इतने ही समय में उन्होंने वहाँ तहलका मचा दिया था, मुख्य अपराधी को सज़ा देने की ठान ली थी और मल्लाहों को यह सिखा दिया था कि अपने अधिकारों की रक्षा कैसे करनी चाहिये।

कुछ दिनों पश्चात् जब वे समारा वापस आये तो उन्होंने अरेफ़्येव के ख़िलाफ़ एक मुक़दमा दायर कर दिया और उस पर वैधिक अधिकारों में हस्तक्षेप करने का अभियोग लगाया। मुक़दमा बिल्कुल साफ़ था और ऐसा कोई भी वकील न था जो व्यापारों के कार्यों को हस्तक्षेप के अतिरिक्त और कुछ समझता हो। इस अपराध की सज़ा उस काल में केवल जेल थी और जेल के स्थान पर जुर्माना नहीं किया जा सकता था।

परन्तु अभियौग में सफलता प्राप्त करने के लिए व्लादीमिर इल्यीच को बड़ी परेशानियाँ उठानी पड़ीं। मुक़दमे की सुनवाई के लिए समारा से लगभग ७० मील दूर सीज़रान के निकट कोई ज़ेम्स्त्वो कार्यालय* निश्चित किया गया था। व्लादीमिर इल्यीच को अपनी ओर से अभियोग चलाने की कार्यवाही करने के लिए वहाँ जाना था। इस बात के होते हुए भी कि मुक़दमा बिल्कुल साफ़ था ज़ेम्स्त्वो के अधिकारी को पेशी बढ़ा देने का बहाना मिल ही गया। जब दूसरी

---

* ज़ेम्स्त्वो के अधिकारी ग्रामक्षेत्रों में ज़ारशाही के प्रतिनिधि होते थे जिन्हें कृषकों के सम्बन्ध में प्रशासकीय एवं वैधानिक अधिकार प्राप्त थे। वे स्थानीय जागीरदारों में से चुने जाते थे — सम्पादक।

पेशी पड़ी उस समय तक जाड़े की ऋतु आरम्भ हो चुकी थी। व्लादीमिर इल्यीच वहाँ एक बार फिर गये, परन्तु इस बार भी किसी न किसी कानूनी तिकड़म की आड़ में अधिकारी ने पेशी बढ़ा दी।

अरेफ़्येव को मालूम था कि उसे इस मुकदमे को जीतने की तनिक भी आशा नहीं है और साथ ही उसे यह भी पता था कि हार जाने पर सज़ा होगी। अतएव वह लोगों से मिलजुल कर इस बात की कोशिश में लगा हुआ था कि किसी प्रकार मुकदमे की सुनवाई अधिक से अधिक टलती जाय। उसे तथा उसके वकील का ख्याल था कि व्लादीमिर इल्यीच कब तक ७० मील की दौड़ लगाते रहेंगे! इस मुकदमे से उन्हें लाभ ही कौन सा है आख़िर चुपा कर बैठ रहेंगे। परन्तु वे यह न समझ पाये कि उनका पाला किसी ऐसे असाधारण व्यक्ति से पड़ा है जिसका संकल्प मार्ग की कठिनाइयों के अनुपात में ही दृढ़ से दृढ़तर होता है।

जब तीसरी बार व्लादीमिर इल्यीच को सम्मन मिला उस समय जाड़े का मौसम शुरू हो चुका था। यह बात १८९२ की है। उन्होंने यात्रा की तैयारी आरम्भ कर दी। उस समय ट्रेन या तो प्रातःकाल बहुत तड़के छूटती या सायंकाल बड़ी देर में। उनके सामने विकराल रात, जिसमें नींद का तो सवाल ही नहीं है, रेलवे स्टेशन पर गाड़ी की प्रतीक्षा, ज़ेम्स्त्वो का दफ़्तर आदि अनेक कठिनाइयाँ थीं। मुझे अच्छी तरह याद है कि माता जी ने मेरे भाई को समझाया था कि वे वहाँ न जायं।

"छोड़ो भी इस दुष्ट अरेफ़्येव को, वे फिर पेशी बढ़ा देंगे, तुम्हारा वहाँ तक जाना बेकार होगा। सिवा शरीर को थका डालने के और कुछ हाथ न आयेगा। हाँ यह न भूलना कि वे सब तुम्हारे दुश्मन हैं।"

"नहीं अब मैंने इसमें हाथ डाल दिया है, अतएव इसे आख़िर

तक निभाऊँगा। इस बार वे पेशी बढ़ाने में सफल न हो सकेंगे" और वे माता जी को सान्त्वना देने में लग गये।

वस्तुत: उस बार ज़ेम्स्त्वो अधिकारी पेशी बढ़ाने का कोई बहाना न गढ़ सका। उसे तथा अरेफ़्येव के वकील को यह अच्छी तरह से मालूम हो गया कि उनका पाला किसी विकट आदमी से पड़ा है जिसने मुकदमे की पैरवी के लिए अच्छी खासी तैयारी की है।

कुछ भी हो ज़ेम्स्त्वो अधिकारी को कानून के अनुसार एक महीने की सज़ा सुनाने के लिए मजबूर होना पड़ा।

दो साल बाद मैं सीज़रान के समीप ट्रेन से यात्रा कर रहा था कि अकस्मात् उसी डिब्बे में मार्क येलिज़ारोव के एक मित्र से भेंट हो गई। बातचीत के दौरान में उसने मुझसे मार्क और उसके परिवार के बारे में पूछताछ की और व्लादीमिर इल्यीच का समाचार जानने की भी उत्सुकता प्रकट की।

"आपको मालूम है उस समय अरेफ़्येव को एक महीने की जेल काटनी पड़ी थी। सारी तिकड़मों के बावजूद वह कुछ न कर सका था। उसके लिए यह बड़ी बेइज़्ज़ती की बात थी। सज़ा के बारे में सारे नगर को मालूम हो गया था और इस प्रश्न को लेकर घाट पर बड़ी बमचख रही। आज भी वह उस बात को नहीं भूल सका है।"

दिमित्री उल्यानोव द्वारा

उनका संगीत प्रेम

जब व्लादीमिर इल्यीच बच्चे ही थे तभी उन्होंने पियानो बजाना सीख लिया था। माताजी का कहना था कि उसके कान संगीत-प्रिय हैं और उसमें संगीत के प्रति रुचि है। आठ वर्ष की अवस्था में वे पियानो पर बच्चों की धुनें बजा सकते थे और किसी बड़े के साथ मिल कर सहवादन कर सकते थे। परन्तु जब वे पाठशाला में भरती हुए तो उन्होंने संगीत छोड़ दिया, इसलिए नहीं कि इससे उनकी पढ़ाई-लिखाई में बाधा पड़ती थी, अपितु इसलिए कि अपनी स्वाभाविक योग्यता के कारण उन्हें अध्ययन ही आसान पड़ता था। शायद उन्होंने पियानो इसलिए छोड़ दिया हो कि उस समय पियानो-वादन लड़कों के लिए अनुपयुक्त समझा जाता था। परन्तु व्लादीमिर इल्यीच आजीवन संगीत से प्रेम करते रहे और सदैव ही उन्होंने उसकी मधुर सूक्ष्मताओं की सराहना की।

मुझे अच्छी तरह याद है कि जब हम लोग १८८८ के जाड़े के मौसम में कज़ान में रहते थे उस समय मैं उनके साथ ऑपेरा गया

हुआ था। हमारी सीटें गैलरी में काफ़ी ऊंचाई पर थीं। ऑपेरा से छूटने के बाद हम रात का भोजन — रोटी और दूध — करने के लिए घर की ओर चल पड़े। व्लादीमिर इल्यीच पर अभी तक संगीत का भूत सवार था और — उस समय घर के सारे लोग सो रहे थे — वे संगीत की उन पंक्तियों को गुनगुना रहे थे जिन्होंने उन्हें बड़ा प्रभावित किया था। वे उस समय बड़े खुश दिखाई पड़ रहे थे क्योंकि वे दूरस्थ एकाकी कोकूश्किनो गांव से, जहाँ वे पुलिस की निगरानी में रह रहे थे, सीधे ऑपेरा गये थे।

माताजी को पियानो का बड़ा शौक था। वे पियानो पर पुरानी धुनें और प्रेम-संगीत बजाया तथा गाया करती थीं। विशेष रूप से उन्हें "ऐसकाल्ड की कब्र" ऑपेरा के कुछ गाने बड़े प्रिय थे। उनके पास संगीत की कुछ पुरानी स्वर-तालिकाएं थीं जिनके लेख मद्धम पड़ चुके थे। हम लोग माताजी से ऑपेरा के कुछ गाने और पियानो पर उनकी धुनें, सुनना बहुत पसन्द करते। वोलोद्या भी प्राय: ऑपेरा के संगीत गुनगुनाते रहते।

उन वर्षों में — १८८८-९० — वोलोद्या प्राय: ओल्या के साथ गाया करते। ओल्या के बारे में लोग बहुत कम जानते हैं। वह बालकाल तथा युवावस्था दोनों में ही वोलोद्या की सर्वोत्तम तथा सबसे निकट की साथी थी। वह वोलोद्या से उम्र में छोटी ज़रूर थी परन्तु उसे जितनी सफलताएँ मिली थीं वे वोलोद्या से कम न थीं। जब वह १८ वर्ष की ही थी उस समय वह जर्मन, फ़्रेंच, अंग्रेज़ी, तथा स्वेडिश भाषाएं बोल सकती थी। उसके बारे में यह कहा जाता है कि उसका काम तभी रुकता था जब वह सो जाती थी। उसकी मृत्यु टायफ़ायड के कारण १८९१ में हुई थी।

व्लादीमिर इल्यीच सदैव उसकी प्रतिभा और परिश्रम की सराहना किया करते। दोनों प्राय: एक समवेत-गान — यज़ीकोव कृत "तैराकी रे, है मित्र हमारा यह सागर" — बड़ी उमंगों के साथ गाया करते। मुझे इस गान की अन्तिम कुछ पंक्तियाँ बहुत अच्छी लगी थीं।

लहरें केवल उन्हें किनारे पहुँचाती हैं
जिनके अन्तर दृढ़ होते हैं —
साहस, मेरे बंधु-बांधवो।
आता है तूफ़ान कि आये —
नैया अपनी उसे सौंप दो,
और, लगा देने दो तट पर
पहिले से भी कहीं शीघ्रतर।

वोलोद्या को दर्गोमीज्हस्की का "विवाह संगीत" बहुत प्रिय था।

गिरजाघर में ब्याह हमारा नहीं हुआ है,
नहीं जलाई गईं बत्तियाँ,
गाये गये न गीत ब्याह के,
किसी पादरी से आशीष न हमने पाई,
बजे न घंटे वहाँ ख़ुशी के।

वे हिने की एक कविता प्राय: गुनगुनाते। उन्हें इस कविता की यह पंक्ति "तुम्हारे मादक नैन निहार न हो जाऊँ मैं क्यों बलिहार" बड़ी अच्छी लगती और इसे वे उच्च स्वर के साथ गाते, इसके बाद हँसते हुए कह उठते "तुम्हारे नैनों ने मुझे मार डाला, सचमुच मार डाला"।

मुझे ऐसा कोई समय याद नहीं पड़ता जब नवयुवक व्लादीमिर इल्यीच कभी भी मन्दोत्साह दिखाई पड़े हों। वे सदैव विश्वास, साहस और ख़ुशमिज़ाजी के स्रोत बने रहे।

उनका दूसरा प्रिय गीत "फ़ास्ट" ऑपेरा में नायक वैलेन्टाइन द्वारा गाया गया गीत—"परमात्मा तू देवता है प्रेम का"—था। वे प्राय: यही गाते क्योंकि ये शब्द उस गाने के ही एक अंश थे और उनका परित्याग नहीं किया जा सकता था, परन्तु जो अंश उन्हें सबसे अधिक प्रिय था—क्योंकि इसमें स्वयं उनकी अपनी उत्साहपूर्ण आत्मा प्रति-बिंबित होती थी—वह था—

धू धू करती वहाँ युद्ध की ज्वाल में
लेता हूँ मैं शपथ प्रथम बलिदान की
शपथ मुझे मैं रहूं अग्रणी

आज भी जब मैं गुनोद का संगीत सुनता हूँ तो व्लादीमिर इल्यीच द्वारा गाई जाने वाली ये पंक्तियाँ बरबस मेरी कल्पना के समक्ष आकर खड़ी हो जाती है।

मैंने १८८६ की ग्रीष्म ऋतु में पहली बार "अन्ताराष्ट्रीय" नामक गीत सुना था। उस समय शायद ही रूस में कोई इसके बारे में जानता रहा हो। हम लोग समारा क्षेत्र में अलाकायेवका फ़ार्म में रह रहे थे। ओल्गा पियानो बजा रही थी और उसने "मारसीलेज़" संगीत समाप्त ही किया था। मैं भागता हुआ उसके पास गया और मैंने उससे फिर वही धुन बजाने का अनुरोध किया। ठीक उसी समय व्लादीमिर इल्यीच भी आ गये। उस समय उनके आने की कोई आशा भी नहीं कर सकता था क्योंकि वह प्रात:काल का समय था और उन्हें उनकी पुस्तकों के बीच से हटा लाना स्वयं शैतान के बूते की भी बात न थी। वे हमारे पास आये और हमसे "अन्ताराष्ट्रीय" सुनाने का अनुरोध करने लगे। ओल्गा के साथ वे पियानो पर बैठ गये और दोनों ही उस नई धुन में बह गये—और फिर

उन्होंने साथ मिल कर शान्तिपूर्वक फ़ान्सीसी भाषा में वह गान गाया।

मारिया ने बाद में मुझे बताया कि व्लादीमिर इल्यीच को इस बात का बड़ा अफ़सोस रहा कि वे पियानो अथवा बेला का अध्ययन जारी न रख सके।

प्रावदा नं० २१
२१ जनवरी, १६४१

दिमित्री उल्यानोव द्वारा
निष्कासन से वापसी

पुलिस अध्यक्ष
पेरफ़िल्येव से झपट

१६०० के प्रारम्भ में व्लादीमिर इल्यीच तीन वर्ष के निष्कासन का दंड भुगत चुकने के पश्चात् साइबेरिया से वापस आ गये। साइबेरिया में वे येनिसी गुबर्निया स्थित मिनुसिन्सकी प्रदेश के शुशेन्सकोये ग्राम में रह रहे थे। वापसी में वे अकेले ही आये क्योंकि नदेज्हदा कोन्स्तानतीनोवना की निष्कासन-अवधि पूरी नहीं हुई थी और इसलिए उसने व्लादीमिर इल्यीच का साथ केवल ऊफ़ा तक ही दिया था। ऊफ़ा में उसे रुक जाना पड़ा था और पुलिस की निगरानी में रहना पड़ा था।

मुझे उनके आने के समय की सूचना मिल चुकी थी और चूंकि मैं मास्को से लगभग तीस मील दूर पदोल्स्क में रह रहा था अतएव मैं उनसे वहीं मिला। मैंने देखा कि वे लम्बी यात्रा वाली गाड़ी में तीसरे दर्जे में आ रहे थे। उस ट्रेन के अन्य यात्री देश के सर्द भागों से आ रहे थे। अतएव फ़र के कोट, भेड़ की खाल वाले जैकेट, कानों तक लटकते हुए साइबेरिया के टोपे, फ़ेल्ट-बूट, गर्म कपड़े आदि सीटों और

रैकों पर बिछे थे। व्लादीमिर इल्यीच उस समय काफ़ी तन्दुरुस्त दिखाई पड़ रहे थे। उस समय उनका स्वास्थ्य मुक़दमे के समय के उनके स्वास्थ्य से कहीं अच्छा था। उन्होंने सबसे पहले अपने परिवार के बारे में तथा माता जी के स्वास्थ्य के बारे में पूछताछ की और तत्पश्चात् तत्कालीन बातों के बारे में। हम लोगों को शीघ्र ही यह मालूम हो गया कि उन्हें उन बातों की जानकारी मुझसे अधिक थी यद्यपि वे अभी निष्कासन अवधि पूरी करके आ रहे थे और मैं मास्को के समीप ही रहता था।

बातचीत का विषय वह विवाद था जो उस काल में जर्मन सामाजिक-जनवादी बर्न्सटाइन की एक पुस्तक पर उठा हुआ था। बर्न्सटाइन एक परिवर्तनवादी तथा अवसरवादी व्यक्ति था और व्लादीमिर इल्यीच ने उसकी कड़ी आलोचना तथा मार्क्सवाद को विकृत करने के लिये उसकी भर्त्सना की थी। उनका कहना था कि बर्न्सटाइन वह रोग है जिसके विरुद्ध निर्मम तथा निश्चयात्मक संघर्ष किया जाना चाहिये। इसके साथ ही उन्होंने रूसी अवसरवादिता की—"अर्थवादियों" तथा उनके समाचारपत्र "रबोचेये देलो" तथा "रबोचाया मीस्ल"—भी आलोचना की।

मास्को आने के बाद हमने बखमेतयेव्सकया सड़क के लिये एक गाड़ी ली जहां हमारे लोग हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे। मैं प्रसन्न था और मुझे गर्व था कि मैं परिवार के अन्य सदस्यों से लगभग डेढ़ घंटा पहले ही व्लादीमिर इल्यीच से मिल चुका हूँ और अब स्वयं उन्हें घर लिये जा रहा हूं।

पुलिस ने व्लादीमिर इल्यीच को यह अनुमति दे दी थी कि राजधानियों और विश्वविद्यालय के नगरों को छोड़ कर और कहीं भी वे रह सकते हैं। शायद फ़ैक्टरी वाले नगर भी उनके लिये वर्जित थे। उन्होंने प्स्कोव में रहना पसन्द किया यद्यपि वे वहां पहले कभी

नहीं गये थे और न वहां किसी को जानते ही थे। परन्तु यह नगर पीटर्सबर्ग से, जो उस समय उनके दिमाग़ में सबसे अधिक चढ़ा हुआ था, बहुत समीप था। वे बड़ी आसानी से पीटर्सबर्ग आ जा सकते थे और उस समय वहां श्रमिकों के आन्दोलन का निकट से अध्ययन कर सकते थे, वहां के अपने साथियों से सीधा सम्पर्क स्थापित कर सकते थे और आन्दोलन को आगे बढ़ाने में सहायक हो सकते थे। वे कई बार वहां गये भी परन्तु उनकी आख़िरी कोशिश विफल हो गई और वे पुलिस के हाथों पड़ गये।

वे मारतोव के साथ पीटर्सबर्ग गये हुए थे। मारतोव उस समय उन्हीं के मत का समर्थक था। वे जानते थे कि सीधे वारसा स्टेशन जाना खतरनाक होगा। अतएव उन्होंने एक दूसरे स्टेशन से होकर जाना तय किया क्योंकि उन्हें विश्वास था कि उस स्टेशन पर जासूस नहीं हैं। वे प्स्कोव से गटचीन गये। फिर उन्होंने भूतपूर्व त्सार्सकोये सेलो के लिये गाड़ी बदली। यहां उन्हें एक बार और गाड़ी बदलनी पड़ी। अब वे समझ रहे थे कि वे निरापद पीटर्सबर्ग पहुंच जायंगे। अगले दिन प्रात:काल जैसे ही व्लादीमिर इल्यीच उस फ़्लैट को, जहां वे रात भर रहे थे, छोड़ कर जाने वाले हुए कि सहसा पुलिस ने उन्हें घर लिया और, जैसा कि वे कहा करते थे, "एक ने मेरा बायाँ हाथ पकड़ा तो दूसरा दायें पर झपटा ताकि मैं हिल-डुल न सकूं और यदि कोई चीज़ निगल भी जाना चाहूं तो वैसा न करूं"। उन्हें धकिया कर लारी में बिठाला गया और गाड़ी उन्हें पुलिस हेडक्वार्टर की ओर ले गयी। वहां उनकी तलाशी ली गई। परन्तु उनके पास से कोई चीज़ बरामद न हुई। फिर भी उन्हें जेल की कोठरी में भेज दिया गया और उनसे सवाल जवाब शुरू हो गये। "आप यहां क्यों आये? यह तो आप जानते ही हैं कि आपकी राजधानी में आने की इजाज़त नहीं है?" अधिकारियों ने पूछा, "और आपने रास्ता

भी कौन सा चुना? त्सार्सकोये सेलो होते हुए! क्या आप नहीं जानते कि वहां जगह जगह नज़र रखी जा रही थी?"

म्युनिसिपल जेल की कोठरियों की दशा नज़रबंदियों की जेल से अधिक ख़राब थी। व्लादीमिर इल्योच कहते थे कि "कीड़े-मकोड़े मुझे रात दिन कभी चैन नहीं लेने देते। यहां की गन्दगी असह्य है और रोज़ रात के समय मेरे कान उन पुलिसमैनों और जासूसों के हुल्लड़ों से भन्ना उठते हैं जो मेरी कोठरियों के समीप बैठे ताश खेला करते हैं।"

परन्तु व्लादीमिर इल्यीच को वहां दो सप्ताह से अधिक न काटने पड़े। उन्हें इस बात की बड़ी चिन्ता थी कि कहीं पुलिस उनका विदेशी पासपोर्ट, जो उस समय उनके पास था, न ज़ब्त कर ले। उनकी सारी योजनाएं इसी पर निर्भर थीं। वे विदेश जाना चाहते थे और वहां से राजनीतिक विचारधारा का एक समाचारपत्र "इस्क्रा" निकालना चाहते थे जिसका उद्देश्य "अर्थवादियों" आदि के विरुद्ध क्रांतिकारी सामाजिक-जनवाद की आवाज़ बुलन्द करना था। इस पत्र द्वारा अनेक स्थानों से सम्पर्क रखा जा सकता था तथा इसी के माध्यम से सर्वहाराओं की पार्टी को संगठित किया जा सकता था।

जेल से छूटने के पश्चात् व्लादीमिर इल्यीच पदोल्स्क गये जहां हम लोग माता जी के साथ ठहरे हुए थे। एक सिपाही उन्हें मेयर के कार्यालय से ले गया। इस सिपाही को यह आदेश दिये गये थे कि वह व्लादीमिर इल्यीच को सीधे पदोल्स्क के पुलिस अध्यक्ष, पेरफ़िल्येव, के पास ले जाय। पेरफ़िल्येव स्वभाव का दुष्ट था तथा बात बात में बौखला उठता था। परन्तु था बड़ा काँचू। उसने व्लादीमिर इल्यीच से अपने काग़ज़ात पेश करने को कहा और उन्होंने उसे अपना विदेशी पासपोर्ट दे दिया। उसे देख लेने के पश्चात् पेरफ़िल्येव ने उसे मेज़ पर रख दिया और कहा "आप जा सकते हैं। पासपोर्ट मैं रखूंगा"।

यह तो सबसे बुरा हुआ। पासपोर्ट ज़ब्त कर लिया गया और वह भी एक छोटे से नगर के नौकरशाही अनुयायी द्वारा। "मुझे मेरा पासपोर्ट चाहिए" — व्लादीमिर इल्यीच ने कहा — "मुझे फ़ौरन दे दें"। पुलिस अध्यक्ष गुर्राया "सुना नहीं मैंने क्या कहा! तुम जा सकते हो, पासपोर्ट यहीं रहेगा"। व्लादीमिर इल्यीच ने फिर प्रतिवाद किया और कहा कि जब तक पासपोर्ट न मिलेगा वे वहां से नहीं टलेंगे। अधिकारी हठी था। अतः व्लादीमिर इल्यीच जाने के लिये मुड़े और कमरे के बाहर निकलने लगे, परन्तु जाते जाते उन्होंने कह ही तो दिया "आपके गैरक़ानूनी बरताव के संबंध में मैं आपकी शिकायत पुलिस विभाग से करूंगा"। अधिकारी डर गया और व्लादीमिर इल्यीच से, जो इस समय तक कमरे से बाहर निकल चुके थे, चिल्लाकर बोला — "सुनिये मिस्टर उल्यानोव, लौट आइये और अपना पासपोर्ट ले जाइये।"

घर पर हम सब उनके लौटने का बड़ी बेसब्री से इन्तज़ार कर रहे थे। जब वे मकान वापस आये, उस समय उन्होंने हमें उस "बेवकूफ़ और दुष्ट" पुलिस अध्यक्ष की करतूत सुनाई। इस झपट के बाद वे बड़े ख़ुश दिखाई दे रहे थे। कहने लगे "सोचो तो, वह बेवकूफ़ मुझसे मेरा पासपोर्ट लेना चाहता था। मैंने भी उसे क़ानून की धमकी दी और बच्चू की अक़ल ठिकाने आ गई" और ऐसा कहकर वे कहकहे लगाने लगे।

मारिया उल्यानोवा द्वारा

परिवार वालों को लेनिन के पत्र*

लेनिन के लेखों का पूरा संग्रह उपलब्ध है और लेनिनवाद पर काफ़ी बड़ा साहित्य (वैज्ञानिक तथा लोकप्रिय रचनाएं) मौजूद है। परन्तु दक्षता एवं बहुज्ञता की दृष्टि से लेनिन के व्यक्तित्व का पूरी तरह चित्रण नहीं हुआ है।

यह कमी आंशिक रूप से उन पत्रों द्वारा पूरी होती है जो व्लादीमिर इल्यीच ने अपने परिवारवालों, माता तथा बहन को लिखे थे।** इन पत्रों का लेखन-काल १८९४ से लेकर १९१७ तक है, अर्थात्

---

* देखिये—व्ला० इ० लेनिन — संबंधियों को पत्र, १८९४ — १९१९। लेनिनग्राद, पार्तिज़्दात, १९३४, पृष्ठ ४८४; सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति की मार्क्सवाद-लेनिनवाद संस्था। — सम्पादक

** ये पत्र परिवार के सारे सदस्यों के पढ़ने के उद्देश्य से लिखे जाते थे जो एक साथ रहा करते थे। ऐसा करने का उद्देश्य उस समय को बचाना था जो भिन्न भिन्न लोगों को एक ही बात लिखने में नष्ट होता था।

ये पत्र व्लादीमिर इल्यीच के क्रान्तिकारी कार्यों के प्रथम वर्ष से लेकर फ़रवरी की क्रांति के पश्चात् उनके रूस लौटने तक के समय के हैं। इन पत्रों से लेनिन के जीवन, उनके स्वभाव, उनकी रुचियां, लोगों के साथ उनके संबंध आदि की कुछ जानकारी होती है। परन्तु इससे हमारे सामने उनका पूरा चित्र नहीं आ पाता क्योंकि हमारे पास वे सब पत्र नहीं हैं जो उस काल में उन्होंने अपने परिवारवालों को लिखे थे। बहुत से पत्र तो इसलिये खो गये क्योंकि उनके परिवारवालों को कई बार अपने निवास स्थान बदलने पड़े थे। कुछ इसलिए नष्ट हो गये क्योंकि उनके परिवारवालों के यहां आये दिन तलाशियाँ और गिरफ़्तारियां हुआ करती थीं और प्राय: पत्र ज़ब्त कर लिये जाते थे। बहुत से पत्र रास्ते में ही खो गये थे विशेष रूप से साम्राज्यवादी युद्ध के दौरान में। अतएव प्राय: लगातार एक के बाद दूसरे कुछ पत्रों में एक ही विषय की आवृत्ति हुई है। ज़ार काल में पुलिस-शासन के कारण भी पत्रों पर प्रभाव पड़ा। क्रांतिकारी आंदोलन, पार्टी-जीवन आदि से संबद्ध विषयों के पत्र प्राय: पुस्तकों और पत्र-पत्रिकाओं के भीतर तथा "सुरक्षित" पतों पर*, रासायनिक द्रवों की सहायता से लिख कर, भेजे जाते थे। परन्तु व्यक्तिगत जीवन और क्रांतिकारी कार्य आपस में कुछ इतने गुथे-मिले रहते थे कि वैध पत्र कम से कम लिखे जाते थे क्योंकि इन पत्रों की आड़ में पुलिस परिवारवालों को तंग किया करती थी। व्लादीमिर ने, अपनी बहन मारीया को, जो उस समय वोलोग्दा में निष्कासन में थी, एक पत्र में लिखा था—"हमारे लिए वह सब कुछ लिखना वास्तव में बड़ा कठिन है जो हम लिखना चाहते हैं।"

---

* रूस में व्याप्त दशाओं के कारण इन पत्रों को सुरक्षित रख सकना असंभव था। केवल थोड़े से पत्रों की नकल रखी जा सकी और यह नकल भी विदेशों में ही की गई थी—स० उ०

यह बात न केवल मारीया पर अपितु परिवार के सभी सदस्यों पर घटित होती थी क्योंकि अपने परिवार वालों से व्लादीमिर इल्यीच का रिश्ता केवल खून का ही रिश्ता न था अपितु उनकी राजनीतिक विचारधाराओं तथा मान्यताओं में भी साम्य था। सभी (जिनमें आन्ना के पति म० त० एलिज़ारोव भी थे) सामाजिक-जनवादी पार्टी की क्रांतिवादी शाखा के सदस्य थे और न्यूनाधिक क्रांतिकारी कार्यों में भाग लिया करते थे। स्वयं माता जी भी, जो १८८०—१८६० के काल में, जब हमारे परिवार में तलाशियों और गिरफ़्तारियों का ताँता बंधा हुआ था, तन-मन से हमारे साथ थीं। वे इस समय ६० वर्ष की हो चुकी थीं।

क्रान्तिकारियों के सभी वैध पत्रों की पुलिस द्वारा जांच पड़ताल की जाती थी और यदि किसी को हमसे हमारी रुचि के किसी प्रश्न पर अथवा किसी मित्र के विषय में कुछ पूछने की ज़रूरत होती थी, अथवा यह पुष्ट करने की ज़रूरत होती थी कि कौनसा अवैध पत्र प्राप्त हो गया है, आदि, आदि, तो उसे संकेतों अथवा द्वयार्थकों का प्रयोग करना पड़ता था।

हमें डाक द्वारा व्लादीमिर इल्यीच से जो पत्र प्राप्त होते थे उनमें वे नाम तो शायद ही कभी लिखते थे, क्योंकि कभी कभी इससे उस व्यक्ति पर विपत्ति आ सकती थी जिसे पत्र भेजा जाता था। अतएव यदि यह विपत्ति बचाई जा सकती थी तो वे पत्रों में नाम लिखने के कायल न थे। जहां वे नाम लिखते भी थे वहां वे प्राय: उन्हीं साथियों तथा मित्रों के हुआ करते थे जिनका हमारे साथ किसी कारणवश कोई संबंध रहता था। इसे पुलिस वाले भली भांति जानते थे (जैसे एक ही मामले में साथ साथ निष्कासित, एक ही स्कूल के विद्यार्थी इत्यादि)। कभी कभी वे व्यापारियों (प्रकाशक, पुस्तक विक्रेता आदि) के नाम भी दे दिया करते थे। किसी ऐसे परिचित व्यक्ति का, जो गैरक़ानूनी कार्यों में रत रहा

करता था, नाम न देने के लिये वे कल्पित नामों तथा संकेतों की एक पद्धति का प्रयोग किया करते थे विशेषकर उस समय जब वे अपने किसी साथी से कुछ कहना चाहते थे अथवा उसे बधाई या शुभकामनाएं भेजना चाहते थे। इन संकेतों में ऐसे किसी तथ्य या घटना का हवाला दिया होता था जिससे हम सब परिचित होते थे। उदाहरणार्थ इ० इ० स्क्वोर्तसोव-स्तेपानोव को वे "इतिहासकार" कहा करते थे (क्योंकि उसने ऐतिहासिक पुस्तकों की रचना की थी)। उन्हें वे आन्ना और मारिया की मारफ़त बड़े रोचक पत्र लिखा करते थे। जब उन्होंने व० व० वरोव्सकी को, जो वोलोग्दा में मारिया के साथ निष्कासन दंड भुगत रहा था, शुभकामनाएं भेजी थीं तो लिखा था— "मेरे पोलिश मित्रों को मेरी शुभकामनाएं। मेरी कामना है कि वे सभी प्रकार से सहायता करेंगे"। हम अ० प० स्कल्यारेन्को को "चीनी यात्री" के नाम से जानते थे क्योंकि वह उस समय मंचूरियन रेलवे की नौकरी में था। इसी प्रकार व० अ० लेवित्सकी था "वह व्यक्ति जिसके साथ हम लोग पिछले वर्ष नौकाविहार किया करते थे"।

अवैध प्रकाशनों के प्रेषण, गुप्त पत्र-व्यवहार, रासायनिक द्रवों से लिखे गये पत्रों आदि के बारे में हम लोग लाक्षणिक शब्दावली का प्रयोग करते थे।

दिसम्बर १६०० के अन्त में मैंने ग० ब० क्रासीन की मार्फ़त, जो उस समय विदेश यात्रा को जा रहा था, "सामाजिक-क्रांतिकारियों की पार्टी का घोषणापत्र", एक फ़ोटो-चित्रावली में रख कर भेजा था। व्लादीमिर इल्यीच को पार्सल पाकर बड़ी प्रसन्नता हुई। उन्होंने १६ जनवरी १६०१ के अपने पत्र में लिखा था कि "आपने मुझे जो पुस्तकें और विशेष रूप से जो ख़ूबसूरत और दिलचस्प चित्र भेजे हैं उनके लिये मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। मुझे ये चित्र मेरे चचेरे भाई ने वियना से अग्रसारित किये थे। मैं चाहूँगा कि आप मुझे इसी प्रकार के उपहार और भेजें।"

"इस्क्रा" तथा अन्य अवैध प्रकाशन लिफ़ाफ़ों में रखकर "सुरक्षित" पतों पर भेजे जाते थे। कभो कभी व्लादीमिर इल्यीच हमें उनके भेज दिये जाने की पूर्व-सूचना दे दिया करते थे और हम काफ़ी समय पूर्व यह पता लगा लिया करते थे कि वे प्राप्त हो चुके हैं या नहीं। यह स्पष्ट था कि ऐसी ही एक सूचना १४ दिसम्बर १६०० के उनके एक पत्र में दी गई थी "मैं तुम्हें यह बताना तो भूल ही गया कि मैंने तुम्हें ६ दिसम्बर को कुछ ऐसी चीज़ भेजी है जिसे तुम पसन्द करोगी।" नदेज्हदा कोन्स्तानतीनोवना ने ८ फ़र्वरी १६१६ को लिखा था "आपका लम्बा पत्र पाकर वोलोद्या बड़े प्रसन्न हैं। सम्भव है आप उन्हें फिर कभी लिखें।" जब हम एक दूसरे को साधारण डाक द्वारा पत्र डालते तो उन्हें संक्षेप में लिखा करते थे। साम्राज्यवादी युद्ध के दौरान में जब उपर्युक्त पत्र लिखा गया था उस समय हम लोग मुख्यतया पोस्टकार्ड ही भेजा करते थे, और चूंकि उस काल में पत्रादि प्रायः खो जाया करते थे इसलिए हम लोग उन्हें रजिस्ट्री डाक द्वारा भेजते थे। उक्त पत्र मिलने पर हम समझ गये कि इसमें उस लम्बे चौड़े और अवैध पत्र का हवाला है जो रासायनिक द्रव की सहायता से लिख कर भेजा गया था।

१६०० में जब व्लादीमिर इल्यीच पहले-पहल विदेश गये थे उस समय उन्होंने ठिकाने से न बस पाने के कारण और साथ ही सुरक्षा की वजह से भी हमें अपना निजी पता नहीं भेजा। जब वे स्विटज़रलैंड या म्यूनिच में रह रहे थे उस समय हम पेरिस अथवा प्राग की मार्फ़त पत्र भेजा करते थे। उन्होंने २ मार्च १६०१ के अपने एक पत्र में हमें अपना पता दिया था और साथ हो यह भी लिखा था कि "मैं अपने मालिक मकान के साथ एक नये मकान में आ गया हूँ।" वास्तव में फ़्रांज़ मोद्राचेक ने, जिनके पते पर हम अपने पत्र भेजा करते थे, अपना मकान बदला था परन्तु व्लादीमिर इल्यीच म्यूनिच में अपने पुराने मकान में ही रहते रहे।

* * *

व्लादीमिर इल्यीच को सफ़ाई तथा समय की पाबन्दी का बड़ा शौक़ था। रुपये-पैसे के मामले में, और विशेष रूप से अपने ऊपर होने वाले ख़र्चों के विषय में, वे बड़े मितव्ययी थे। सम्भवत: उनमें इन गुणों का प्रादुर्भाव माता जी के कारण हुआ था। वे कई बातों में माता जी के समान थे।

वे निजी व्ययों के मामले में कितने सतर्क रहते थे इसकी जानकारी हमें उनके ५ अक्तूबर १८९५ के एक पत्र से होती है। इस पत्र में उन्होंने लिखा था: "जीवन में पहली बार मैंने अब आय-व्यय का हिसाब रखना आरम्भ किया है ताकि मैं बराबर यह देखता रहूं कि मेरा यहां रहने पर कितना ख़र्च होता है। ऐसा लगता है कि एक महीने — २८ अगस्त से २७ सितम्बर तक — में मैंने ५४ रूबल ३० कोपेक ख़र्च किये (इसमें निजी चीज़ों का व्यय शामिल नहीं है, जो लगभग १० रूबल होता है)। इसके अतिरिक्त एक क़ानूनी मामले में भी मुझे कुछ व्यय करने हैं (लगभग १० रूबल)। यह ठीक है कि ५४ रूबल के इस व्यय का एक भाग प्रति मास ख़र्च नहीं हुआ करेगा (जूतों के कवर, कपड़ों, किताबों, गणना यंत्र आदि पर—१६ रूबल) फिर भी ख़र्च बहुत अधिक (३८ रूबल प्रति मास) है। मैं अधिक ख़र्च कर रहा हूं जैसे मैंने १ रूबल ३६ कोपेक केवल ट्राम पर ही ख़र्च कर दिये। यदि मुझे यहां रहना ही है तो मुझे अपने ख़र्च में कमी करनी पड़ेगी"।

और वास्तव में उन्होंने ख़र्च में कमी की, खास तौर से उस समय जब उनकी अपने काम से कोई आमदनी न थी, तथा रुपया माता जी से मंगाना पड़ता था। वे इतने मितव्ययी थे कि जब वे पीटर्सबर्ग में, १८९५ में, रह रहे थे उस समय "रूस्किये वेदोमोस्ती"*

---

* "रूस्किये वेदोमोस्ती" उन दिनों के मध्यवर्गियों के समाचार-पत्रों में सबसे अच्छा तथा सबसे दिलचस्प पत्र था। म०उ०

भी न ख़रीद सकते थे, और उन्होंने उसे "पिछले दो हफ़्तों से" सार्वजनिक पुस्तकालय में पढ़ा था। उन्होंने अपनी बहन को अपने एक पत्र में लिखा था "हो सकता है कि जब मुझे यहां कुछ काम मिल जाय तब मैं भी उसका ग्राहक बन जाऊं।"

रुपये-पैसे के मामले में वे, न केवल उस समय जब विदेश में थे और उन्हें अपनी साहित्यिक कृतियों के प्रकाशन के लिये प्रकाशक ढूढ़ने में कठिनाई होती थी* तथा प्राय: आर्थिक संकटों का सामना करना पड़ता था अपितु उस समय भी बड़े मितव्ययी बने रहे जब १९१७ की क्रांति के बाद से उनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हो गयी थी।

पुस्तकों के मामले में वे मितव्ययिता न कर पाते। पुस्तकों की उन्हें अपने कार्य के लिये, रूस में होने वाले नवीनतम परिवर्तनों की जानकारी के लिये और विदेशी राजनीति तथा अर्थशास्त्र आदि का अध्ययन करने के लिये आवश्यकता पड़ती थी।

उन्होंने माता जी को बर्लिन से भेजे गये २९ अगस्त १८९५ के एक पत्र में लिखा था: "मुझे खेद के साथ लिखना पड़ता है कि आर्थिक कठिनाइयों ने मुझे फिर घेर लिया है। पुस्तकें आदि ख़रीदने की उत्कंठा इतनी तीव्र हो उठती है कि मुझे पता ही नहीं चल पाता कि रुपया चला कहां जाता है।" अतएव उन्होंने पुस्तकों पर कम रुपया ख़र्च करने का प्रयत्न किया। प्राय: वे पुस्तकालय चले जाते और वहां आराम से काम करते तथा उस शोरगुल आदि से बचे रहते जो स्वदेश छोड़ कर आये हुए अपरिचित लोग मचाया करते थे तथा जिससे कभी कभी उनका मन बहुत खीज उठता था।

---

* यह उल्लेखनीय है कि "कृषि विषयक प्रश्न" शीर्षक उनकी पुस्तक १९१७ में उसके प्रकाशन के १० वर्ष पहले से ही हस्तलिखित रूप में पड़ी हुई थी।

व्लादीमिर इल्यीच न केवल विदेशों में अपितु उस समय भी पुस्तकालयों में पढ़ने जाते जब वे रूस में रह रहे थे। पीटर्सबर्ग से माता जी को लिखे गये एक पत्र में उन्होंने कहा था कि वे अपने नये कमरे में बहुत खुश हैं, क्योंकि वह "बीच नगर से बहुत दूर नहीं है (पुस्तकालय से केवल १५ मिनट की दूरी पर)।" निष्कासन के लिये प्रस्थान करने के तत्काल पूर्व के कुछ दिनों में उन्होंने मास्को के रुमयान्तसेव संग्रहालय में काम किया था। जब वे मिनूसिन्स्क प्रदेश जाने के लिये क्रास्नोयार्स्क में नौ-यात्रा का मौसम चालू होने की प्रतीक्षा कर रहे थे उस समय भी उन्होंने यूदिन पुस्तकालय में अध्ययन किया था यद्यपि वहां तक पहुँचने के लिये प्रतिदिन उन्हें लगभग तीन मील चलना पड़ता था।

निष्कासन में, जहां पुस्तकालयों का कोई **प्रश्न** ही नहीं उठ सकता था, व्लादीमिर इल्यीच ने हमें डाक द्वारा पुस्तकालय की पुस्तकें भेजने के लिए लिखा था। हमने ऐसा करने की कई बार कोशिशें कीं परन्तु पुस्तकें भेजने तथा उन्हें प्राप्त करने में बहुत अधिक समय लग जाता था (लौटा फेरी में लगभग एक महीना), अतएव हम सफल न हो सके क्योंकि पुस्तकें पुस्तकालय से केवल निर्दिष्ट अवधि के लिये ही ली जा सकती थीं।

बाद में उन्होंने ३१ जनवरी १९२४ को आन्ना को भेजे गये अपने एक पत्र में लिखा था: "जहां तक १९०५—१९०८ के आपराधिक मामलों के आंकड़ा-सार का संबंध है कृपया इसे खरीदना मत (यह बड़ी महंगी है)। इसे किसी पुस्तकालय (बैरिस्टर परिषद् पुस्तकालय अथवा स्टेट ड्यूमा पुस्तकालय) से लेकर मुझे एक महीने के लिये भेज देना।"

जब वे विदेश में थे उस समय नियमित रूप से पुस्तकालयों में जाया करते। बर्लिन में वे इम्पीरियल पुस्तकालय में काम करते थे। जेनेवा में उनका एक प्रिय "क्लब" (सोसायती दे लेकतूर) था;

उन्हें वहां पुस्तकालय में पढ़ने के लिये प्रार्थनापत्र और साथ ही कुछ सदस्यता-शुल्क भी देना पड़ा था। पेरिस में वे राष्ट्रीय पुस्तकालय में अपने समय का सदुपयोग करते थे, यद्यपि उनका कथन था कि "इस पुस्तकालय की व्यवस्था ख़राब है।" लन्दन में वे ब्रिटिश संग्रहालय में पढ़ा करते थे। म्यूनिच के बारे में उनका कहना था कि वहां पुस्तकालय न होने के कारण उन्हें कठिनाई हो रही है। दूसरा स्थान क्रैको था जहां वे प्राय: पुस्तकालय का अधिक उपयोग न कर पाते। अपने २२ अप्रैल १९१४ के पत्र में उन्होंने मारिया को लिखा था कि "यहां (क्रैको में — म० उ०) पुस्तकालय ख़राब और तकलीफ़देह है परन्तु मैं वहाँ कभी कभी ही जाता हूँ।" क्रैको में अन्वेषण करने के लिये उनके पास समय भी कम था। वे समाचारपत्र ("प्रावदा") के लिये काम करते और अपने उन साथियों के साथ प्राय: सभी प्रकार का सम्पर्क रखते जो फ़्रांस अथवा स्वीटज़रलैंड की अपेक्षा वहां उनसे अधिक संख्या में मिलने के लिये आया करते थे। वे स्टेट ड्यूमा में सामाजिक-जनवादियों के कार्यों का संचालन किया करते और पार्टी के सम्मेलनों तथा उसकी बैठकों में भाग लिया करते। व्लादीमिर इल्यीच ने लिखा है कि "हमें एक से अधिक बार जेनेवा निवास की याद आई जहां हम अच्छी तरह काम कर सकते थे, जहां का पुस्तकालय अधिक आरामदेह था और जहां का जीवन इतना अनुपयुक्त एवं शरीर को थका डालने वाला न था।"

और तत्पश्चात् साम्राज्यवादी युद्ध के आरम्भ में गैलीशिया में अपनी गिरफ़्तारी के बाद वे जेनेवा लौट आये। उस समय उन्होंने लिखा था: "यहां अच्छे पुस्तकालय हैं और अब मुझे पुस्तकों की दिक़्क़त नहीं पड़ती। समाचारपत्र में दिन भर जुट कर काम करने के पश्चात् जब मुझे पढ़ने को पुस्तकें मिल जाती हैं उस समय हृदय प्रसन्न हो जाता है।" कुछ ही समय पश्चात् वे नदेज्हदा कोन्स्तानतो-

नोवना के साथ बर्न से ज्यूरिच गये। वहां जाने का एक उद्देश्य यह भी था: "यहां के पुस्तकालयों में अध्ययन" (यहां पार्टी के राजनीतिक कार्यों को भी पूरी लगन के साथ आगे बढ़ाने का काम था जैसा कि कार्पिन्सकी के साथ उनके पत्र-व्यवहार से, जो "लेनिन ग्रन्थावली" के खंड ११ में प्रकाशित हुई है, विदित होगा)। स्वयं व्लादीमिर इल्यीच के शब्द हैं कि ये पुस्तकालय "बर्न के पुस्तकालयों से कहीं अच्छे हैं।" जब व्लादीमिर इल्यीच विदेश में थे उस समय पुस्तकालयों में उन्हें विभिन्न बिषयों की विदेशी पुस्तकें तथा पत्र-पत्रिकाएं पढ़ने की सुविधाएं थीं। परन्तु वहां उन्हें रूसो साहित्य का अभाव बड़ा खलता था। उन्होंने अपने २ अप्रैल १६०२ के एक पत्र में लिखा था कि "मुझे जर्मनी की पुस्तकें बड़ी आसानी से मिल सकती हैं क्योंकि उनकी यहां कोई कमी नहीं, परन्तु रूसी पुस्तकें बहुत थोड़ी हैं।"

जिस समय व्लादीमिर इल्यीच विदेश में थे उस समय रूसी साहित्य न मिल सकने के कारण उनके कार्यों में बाधा पड़ी थी। यही कारण था कि हम उनके पत्रों में पुस्तकों के संबंध में की गई मांगों की बराबर पूर्ति करते रहते और उनके कामों (आंकड़े, कृषि तथा दर्शनशास्त्र आदि विषय) के बारे में उन्हें जिन पुस्तकों की आवश्यकता होती उन्हें हम लोग एक एक दो दो करके उनके पास भेज दिया करते। साथ ही हम उन्हें नये प्रकाशन, पत्र-पत्रिकाएं और कहानी-उपन्यास भी भेजा करते थे। उनके पत्रों और मांगे गये साहित्य से हम यह समझ लेते थे कि किसी समय विशेष पर उनकी दिलचस्पी किस विषय में रहती थी और वे अपनी किस पुस्तक को पूरा करने के लिये किताबों का इस्तेमाल करना चाहते हैं।

इस साहित्य का अधिकांश आंकड़ों के संबंध में रखी जाने वाली सामग्री होती थी।

उन्होंने आंकड़ों — "शुद्ध तथ्यों, अकाट्य तथ्यों" — पर अधिक बल दिया और यह बात उनकी पुस्तकों, उनकी अस्वच्छ प्रतियों, उनके उद्धरणों और उनकी गणनाओं से, जिनकी पुस्तकों की रचना के समय सहायता ली जाती थी, स्पष्ट हो जाती है। एतद्विषयक उनकी प० पिरयुचेव कृत (इस नये कल्पित नाम का उन्होंने इसलिए प्रयोग किया था कि पुस्तक के प्रकाशन के मार्ग में कोई कठिनाई न उपस्थित हो) एक अपूर्ण और अभी तक अप्रकाशित कृति "आंकड़ा तथा समाज-शास्त्र"* विशेष उल्लेखनीय है। इस पुस्तक का विषय था "राष्ट्रीय आंदोलनों के महत्व तथा उनके कार्य और राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र का पारस्परिक संबंध।"

इस पुस्तक में निम्नलिखित अवतरण अवलोकनीय है —

"सामाजिक समस्या के क्षेत्र में छोटे-मोटे इधर-उधर बिखरे हुए तथ्यों को संकलित करने और फिर उदाहरणों के रूप में उनका प्रयोग करने से अधिक व्यापक और अधिक अरक्षणीय और कोई विधि नहीं है। सामान्य रूप से उदाहरण प्रस्तुत करने में अधिक मेहनत नहीं लगती। इसका कोई भी महत्व नहीं। इसका मूल्य पूर्णतया नकारात्मक है क्योंकि सम्पूर्ण विषय का संबंध इस बात से है कि किन विशिष्ट ऐतिहासिक दशाओं में अलग अलग कौन सी घटनाएं होती हैं। सम्पूर्ण रूप से देखने पर और उनके पारस्परिक अन्तर्सम्बन्धों पर ध्यान रखते हुए जब तथ्य प्रस्तुत किये जाते हैं तो वे न केवल 'अकाट्य' ही अपितु निस्संदेह ठोस भी होते हैं। छोटे छोटे तथ्यों को अलग अलग और उनके अन्तर्सम्बन्धों पर ध्यान दिये बिना संकलित किया जायगा और यदि उन्हें खंडों में और मनमाने ढंग पर चुना

---

* व्ला० इ० लेनिन ग्रन्थावली, चौथा संस्करण, खंड २३, पृष्ठ २६५-२७१ — सम्पादक

जाय तो वे तमाशा बनकर रह जायंगे अथवा उससे भी निकृष्ट सिद्ध होंगे। चाहिए तो यह कि निश्चित और निर्विवाद तथ्यों के आधार पर एक विश्वसनीय नींव खड़ी कर ली जाय और फिर उसके आधार पर निष्कर्ष निकाले जायं। इन निष्कर्षों का किन्हीं भी 'सामान्य' अथवा 'आदर्श' तर्कों से, जिनका आजकल कुछ देशों में बहुत अधिक दुरुपयोग किया जाता है, भेद दिखाया जा सकता है। सुदृढ़ नींव तैयार करने के लिये बिखरे हुए तथ्यों को नहीं अपितु विचाराधीन समस्या पर प्रकाश डालने वाले सभी तथ्यों को लेना चाहिए और एक भी तथ्य छोड़ना नहीं चाहिए अन्यथा निश्चित रूप से यह सन्देह — और जो उचित भी होगा — पैदा होगा कि तथ्यों को मनमाने ढंग पर चुना गया है और वे सम्पूर्णतया ऐतिहासिक समस्याओं के वास्तविक संबंधों पर अन्योन्याश्रित होने की बजाय 'व्यक्तिगत' निष्कर्षों के स्रोत बनते जा रहे हैं ताकि अनुपयुक्त और अनुचित समस्याओं को उचित ठहराया जा सके। इस प्रकार की चीज़ प्राय: देखने में आती है।" *

१९०२ में व्लादीमिर इल्यीच ने हमसे यह अनुरोध किया था कि हम उन्हें उन पुस्तकों में से, जो उनके पास साइबेरिया में थीं, "सभी आंकड़ा साहित्य" ** भेज दें क्योंकि (जैसा कि उन्होंने २ अप्रैल १९०२ के एक पत्र में

---

* व्ला० इ० लेनिन, ग्रन्थावली, चौथा संस्करण, खंड २३, पृष्ठ २६६ — २६७ — सम्पादक

** "रूस में पूंजीवाद का विकास" शीर्षक पुस्तक की तैयारी में लेनिन ने जिन आंकड़ों का प्रयोग किया था वे, लेनिन की अन्य पुस्तकों के साथ साथ, १९२९ में लेनिन इन्स्टीट्यूट द्वारा विदेशों से प्राप्त किये गये थे। इन पुस्तकों में उल्लिखित उद्धरणों तथा टिप्पणियों से हमारे लिये लेनिन के कार्यों के संबंध में अपना ज्ञान-वर्द्धन सम्भव हो सकेगा — म० उ०

लिखा था) बिना उसके: "मैं कुछ एकाकीपन का अनुभव कर रहा हूँ।" बाद में जब उन्होंने विभिन्न नगरों से आंकड़ा संबंधी और अधिक सामग्री मंगानी चाही तो एतदर्थ उन्होंने डाक्टरों तथा प्राकृतिक-विज्ञानविदों के उस सम्मेलन से प्रार्थना की * जो १६०८—१६०६ में मास्को में हो रहा था (इस सम्मेलन में आंकड़ा संबंधी एक विशेष उपसमिति भी बनाई गई थी)। इसके परिणाम-स्वरूप उन्हें अनेक प्रान्तीय नगरों से आंकड़ा संबंधी बहुत सी सामग्री उपलब्ध हो गई और उन्होंने २ जनवरी १६१० के एक पत्र में लिखा कि "मुझे आंकड़ों के संबंध में र्याज़ां से एक पत्र भी मिला है। इतनी जगहों से सहायता मिलना वास्तव में कितनी बड़ी चीज़ है।"

१६०८ में "भौतिकवाद तथा अनुभवसिद्ध आलोचना" शीर्षक पुस्तक की रचना करते समय व्लादीमिर इल्यीच ने अवेनारियस तथा उसका सम्प्रदाय शीर्षक प्रोफ़ेसर चेलपानोव की एक पुस्तक, "अन्तरस्थ दर्शन" तथा अन्य कुछ पुस्तकें मंगाई थीं। उन्होंने अपनी पुस्तक के बारे में अपनी बहन को लिखा था कि "मैंने महीस्टों का गहन अध्ययन किया है और मैं समझता हूँ कि अब मैं उनकी अकथ्य महत्वहीनता की (और "एम्पीरियोमनीज़्म" की भी) सतह तक पहुंच गया हूँ।"

यह पूछते हुए कि "साम्राज्यवाद — पूंजीवाद का अन्तिम चरण" नामक पुस्तक की उनकी हस्तलिखित प्रति प्राप्त हुई है या नहीं, उन्होंने लिखा था: "मैं अर्थशास्त्र संबंधी इस पुस्तक का विशेष महत्व समझता हूँ और इसे यथासम्भव शीघ्र तथा सम्पूर्ण रूप में प्रकाशित देखना चाहता हूँ" (२२ अक्तूबर १६१६)। जैसा कि हम सब जानते हैं, उनकी यह इच्छा पूरी न हो सकी (यद्यपि व्लादीमिर इल्यीच ने जैसा

---

* इस प्रार्थनापत्र का प्रकाशन इसलिए सम्भव हो सका है क्योंकि वह मास्को पुलिस के अभिलेख में सुरक्षित था—म० उ०

कि उन्होंने २ जुलाई १९१६* के म० न० पकरोव्स्की के एक पत्र में लिखा था: "नियमों के अनुसार काम करने के लिये यथासंभव सभी कुछ किया था")। इस पुस्तक में बहुत से संशोधन तथा काटछांट की गई थी और तब कहीं वह प्रकाशित हो पाई थी। दस वर्षों बाद यह पुस्तक अपने मूल रूप में प्रकाशित हुई।

अपने परिवार को लिखे जाने वाले पत्रों में व्लादीमिर इल्यीच ने इस बात पर प्रकाश डाला था कि उन्होंने "अद्ययुगीन कृषि में पूंजीवाद"** (जो अभी तक अप्रकाशित है) शीर्षक पुस्तक लिखना क्यों प्रारम्भ किया? २२ अक्तूबर १९१६ को उन्होंने अपनी बहन को लिखा था कि "तुम कहती हो कि प्रकाशक 'कृषि विषयक प्रश्न' को पुस्तक के रूप में प्रकाशित करना चाहता है न कि पैम्फ्लेट के रूप में। मैं इसका अर्थ यह समझता हूं कि मुझे इसी सिलसिले की और सामग्री (अर्थात् अमरीका संबंधी सामग्री के अतिरिक्त जर्मनी विषयक सामग्री भी, जिसके लिए मैं बचनबद्ध हूं) भेजना चाहिए। मैं जैसे ही उस कार्य को पूरा कर लूंगा, जिसे मैं कर रहा हूं और जिसके लिये मुझे पुराने प्रकाशक से अग्रिम पैसा भी मिल चुका है, वैसे ही मैं इस काम में जुट जाऊंगा।" इस पुस्तक की अपूर्ण हस्तलिखित प्रति इन्स्टीट्यूट में सुरक्षित है। ऐसा लगता है कि क्रांति के कारण व्लादीमिर इल्यीच इस काम को पूरा न कर सके।

उनके पत्रों से हमें उन दशाओं का कुछ ज्ञान होता है जिनमें उनकी हस्तलिखित प्रतिलिपियां तैयार हुई थीं और साथ ही हमें उन

---

* व्ला०इ०लेनिन, ग्रन्थावली, चतुर्थ संस्करण, खंड ३५, पृष्ठ १७९ — सम्पादक

** व्ला०इ०लेनिन, ग्रन्थावली, चतुर्थ संस्करण, खंड १६, पृष्ठ ३८०-४१० — सम्पादक

कठिनाइयों का भी पता चलता है जो अपने वैध लेखों को प्रकाशित कराने के समय उन्हें झेलनी पड़ी थीं। इन कठिनाइयों के कारण क्रांतिपूर्व-काल में उनके कार्यों में बड़ी बाधा पड़ी थी। (प्रथम क्रांति-काल तथा १९१२-१९१४—"ज़्वेज़्दा" और "प्रावदा" काल—के वर्षों को छोड़कर जबकि वे वैध समाचारपत्रों के लिये काम कर सकते थे; उस समय कुछ काल के लिये पार्टी का अपना एक वैध प्रकाशन-गृह था)। विदेश में उनकी कठिनाइयां इस कारण और भी बढ़ गई थीं कि उन्हें अपने कार्य के लिये प्रायः रूसी पुस्तकें तथा अन्य सामग्री उपलब्ध न हो पाती थी।

सेंसर संबंधी विनियम भी व्लादीमिर इल्यीच के लिये गम्भीर कठिनाइयां उपस्थित कर देते थे। उनके लेखों को या तो काट छांट कर छोटा अथवा विकृत कर दिया जाता था (उदाहरणार्थ "अनालोचनात्मक आलोचना") या उनकी पुस्तकों को ज़ब्त कर लिया जाता था (जैसे "कृषि विषयक प्रश्न", दूसरा खंड) इत्यादि। उनके रास्ते की दूसरी बाधा यह थी कि वे रूस से दूर थे, अतएव प्रकाशकों से सीधा संबंध बनाये रखना उनके लिए असम्भव था। उन्होंने ग्रनात के एनसाइक्लोपीडिया कोश का काम प्राप्त करने की कई कोशिशें की थीं और २२ दिसम्बर १९१४ को इस संबंध में अपनी बहन को लिखा था कि "मैं इस कोश के संबंध में काम करना चाहता हूं परन्तु यदि सम्पादक मंडल के मंत्री से परिचय न हो तो यह काम प्राप्त करना बहुत कठिन है।" व्लादीमिर इल्यीच का मंत्री से कोई व्यक्तिगत परिचय न था। अतएव उन्होंने सीधे बोर्ड को लिखा और उससे काम प्राप्त करने की मांग की। परन्तु कभी कभी तो उनके पत्रों के उत्तर ही न दिये जाते। फ़रवरी १९१५ में उन्होंने अपनी बहन को एक पत्र में लिखा था कि "क्या एनसाइक्लोपीडिया कोश के लिये अधिक कार्य प्राप्त करना सम्भव है? मैंने मंत्री को लिखा था परन्तु मुझे कोई

उत्तर न मिला"* और १९१२ में उन्होंने अपने एक पत्र में लिखा था: "मुझे खेद के साथ कहना पड़ता है कि यहां सम्पादकों से मेरा संबंध बिलकुल ही टूट गया है।"

यदि उनकी पुस्तकों का प्रकाशन उनके साथियों और परिवारवालों के, जिन्होंने प्रकाशकों से सम्पर्क स्थापित किया था तथा प्रूफ़ आदि देखे थे, हित में न होता तो उनका प्रकाशन और भी कठिन हो गया होता। परन्तु व्लादीमिर इल्यीच के भाई बहन—विशेष रूप से जब वे जेल या निष्कासन में होते—सदैव उनकी सहायता न कर पाते। उदाहरणार्थ १९०४ में उन्होंने माता जी से मार्क तिमोफ़ेयेविच का पता भेजने का अनुरोध किया था क्योंकि उन्हें उनसे "साहित्यिक काम" में कुछ सहायता लेनी थी (२० जनवरी १९०४ का पत्र)।

व्लादीमिर इल्यीच नियमित रूप से, मनोयोग के साथ और सृजनात्मक प्रकार का काम करने वाले थे। परन्तु मौक़ा पड़ने पर वे आराम करना भी जानते थे। उन्हें भीड़भाड़ से दूर, प्राकृतिक सुषमा के बीच, छुट्टियां बिताना अधिक पसन्द था। वे फ़िनलैण्ड के स्तरसुदेन नगर को बहुत पसन्द करते और वहां पार्टी के पांचवें सम्मेलन के बाद, जब वे बहुत थक गये थे, एक छुट्टी में गये भी थे। अपने एक पत्र में उन्होंने लिखा था कि "यह बड़ा अद्भुत स्थान है जहाँ नहाना-धोना तथा घूमना-घामना बस यही काम हैं। मेरे चारों ओर न कोई शोर है न गुल; और न करने के लिये कोई काम ही। इस समय मुझे पूर्ण विश्राम तथा एकान्त की आवश्यकता है"। लीदिया

---

* इस सिलसिले में अन्य प्रकाशक भी उनके साथ अच्छा व्यवहार न करते थे। वे उनके पत्रों का उत्तर तक न देते थे। उदाहरणार्थ पत्र संख्या तीन देखिये जो (२७ सितम्बर १९०१ को) लेनिन ने ऐक्सलरोड को लिखा था (लेनिन, विविध लेख, ११, पृष्ठ ३२६)—म०उ०

मिखाइलोवना क्नीपोविच उनका बड़ा ध्यान रखती थीं। छुट्टी अच्छी तरह बीत गई और जब मारीया टाइफ़स के बाद कुछ कुछ सुधर रही थी उस समय उन्हें स्तरसुदेन की फिर याद आई और उन्होंने उसे लिखा कि "इस समय तुम्हारे लिये स्तरसुदेन जाना ही उचित है।"

व्लादीमिर इल्यीच प्रकृति प्रेमी थे और अपने पत्रों में प्राय: प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन किया करते थे। जहां जहां वे जाते वहां वहां प्रकृति सौन्दर्य के उपासक ही बने रहते। १८९५ में जब वे स्वीट-ज़रलैंड जा रहे थे उस समय उन्होंने माता जी को लिखा था: "यहां के प्राकृतिक दृश्य बड़े लुभावने हैं। मैं तो इनकी प्रशंसा में ही खो जाता हूं। उस जर्मन स्टेशन के बाद, जहां मैंने आपको एक पत्र लिखा था, हम लोग आल्प्स पहाड़ों से होते हुए झीलों की बगल से गुज़रे। रास्ते भर मैं खिड़की से हिला तक नहीं।" जब वे प्सकोव में थे उस समय उन्होंने माता जी को लिखा था "मैं यहां खूब घूम-घाम रहा हूं। यह बहुत सुन्दर स्थान है। यहां और इसके आस-पास के क्षेत्र में मन को लुभाने वाली अनेक जगहें हैं।" विदेश से भेजे गये अपने एक पत्र में उन्होंने लिखा था कि "यहां मौसम बड़ा शानदार तथा दृश्य बड़े मनोहर हैं। हाल ही में मैंने काफ़ी समय तक एक खूबसूरत झील में नौकाविहार भी किया है।" दूसरे पत्र में उन्होंने लिखा था, "कुछ दिन पहले मैं और नाद्या तथा हमारे एक मित्र सलेव की ओर रवाना हुए थे। यह यात्रा बड़ी अद्भुत थी। ठीक नीचे जेनेवा कोहरे से ढका हुआ था और वहां कुछ दिखाई न पड़ता था। परन्तु पहाड़ियों के ऊपर सूर्य अपनी पूरी शान के साथ चमक रहा था और लोग बर्फ़ पर 'सानी' गाड़ियों का मज़ा ले रहे थे (हम लोग समुद्र के धरातल से लगभग ४००० फ़ीट की ऊंचाई पर थे); यह रूसी जाड़े का सा दिन था)। पहाड़ियों से नीचे देखने पर हम कोहरे और बादलों के एक वास्तविक समुद्र को देख सकते थे जिसके पार कुछ भी न

दीखता था—दूर ऊंचाई पर केवल ऊंचे ऊंचे पहाड़ दिख जाते। छोटा सलेव (३००० फ़ीट) कोहरे से ढका हुआ है।" और (२७ सितम्बर १६०२ के) एक दूसरे पत्र में हमने पढ़ा, "नाद्या और मैंने कई बार पर्यटन और भ्रमण किये हैं और आस-पास के ग्रामों का बहुत बड़ा क्षेत्र देख लिया है। हमने कुछ आकर्षक स्थान देखे भी हैं।" सम्भवत: उनका कहना ठीक था जब उन्होंने अपने एक पत्र में यह लिखा था कि "व्यावहारिक रूप से यहां ऐसे रूसी साथी हमीं हैं जो नगर के चारों ओर के ग्राम क्षेत्रों में दिलचस्पी लेते हैं। हमने यहां बहुत सी उल्टी-सीधी पगडंडियां देखी हैं और नगर के निकटस्थ क्षेत्रों का भ्रमण किया है। हमारा विचार अभी और आगे घूमने जाने का है"।

गर्मी में, जब वे देहाती क्षेत्रों में भ्रमण करने ("ग्राम जीवन" का आनन्द लेने, "जल्दी सोने और सोकर जल्दी उठने") का अवकाश न पाते उस समय व्लादीमिर इल्यीच और नदेज्हदा कोन्स्तानतीनोवना स्वीटज़रलैंड की पहाड़ियों परहु घूमने निकल जाते। इस प्रकार के एक भ्रमण का वर्णन नदेज्हदा कोन्स्तानतीनोवना ने माता जी को लिखे गये २ जुलाई १६०४ के अपने एक पत्र में किया है। पत्र में लिखा था: "जेनेवा छोड़े हुए हमें एक सप्ताह हो चुका है और हम पूरी तरह विश्राम कर रहे हैं। काम और चिन्ताएं पीछे छूट गई हैं; हम प्रतिदिन दस घंटे सोते हैं, नहाते हैं और खूब घूमते हैं। वोलोद्या अख़बार सरसरी तौर से पढ़ा करते हैं। हम अपने साथ कुछ पुस्तकें लाये थे परन्तु हम उन्हें पढ़ न सके और अब उन्हें वापस जेनेवा भेज रहे हैं। हम प्रात:काल चार बजे उठकर अपना सामान तैयार करेंगे और लगभग दो सप्ताह के लिये पहाड़ जायंगे। हमने बेदेकर का ध्यानपूर्वक अध्ययन किया है और जाने का मार्ग भी तय कर लिया है—पहले हम इन्टरलेकेन जायंगे और फिर वहां से लूसरने। हमने और वोलोद्या ने आपस में यह तय किया है कि हम काम-

काज के संबंध में एक शब्द भी न बोलेंगे... और चाहे जो हो, काम भागा थोड़े ही जा रहा है"।

इस प्रकार के पर्यटन बार बार नहीं हुआ करते थे परन्तु इनकी आवश्यकता उस समय पड़ती थी जब काम अथवा दलगत संघर्षों के कारण व्लादीमिर इल्यीच के स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ने लगता। ऐसा एक बार १९०३—१९०४ के जाड़े के बाद उस समय हुआ था जब पार्टी का दूसरा सम्मेलन हो चुका था और उसमें फूट पड़ चुकी थी। प्राय: जब कभी व्लादीमिर इल्यीच गर्मी की छुट्टियों में ग्राम-क्षेत्रों में जाते तो कुछ ही दिन की बेकारी के बाद अपने काम में लग जाया करते। जब नगर को छोड़ना असम्भव हो जाता अथवा जब उन्हें कोई छोटी मोटी छुट्टियां मिल जातीं तो वे देहाती क्षेत्रों में निकल जाया करते और कभी कभी या तो पैदल या बाइसिकिल पर—प्राय: रविवारों को—पहाड़ों पर भी चले जाते। "किसी न किसी प्रकार हमें विदेशियों की भांति ही बर्ताव करना पड़ता है और हम रविवार को ही भ्रमण करते हैं यद्यपि भीड़-भाड़ के कारण यह समय सर्वोत्तम नहीं है" (माता जी को, २९ मार्च १९०३ का पत्र)। इन पर्यटनों में वे अपने साथ साथ मांस आदि लगी हुई रोटियां ले जाया करते ताकि सारा समय घर के बाहर ही बिता सकें। साथी लोग व्लादीमिर इल्यीच और नदेज्हदा कोन्स्तानतीनोवना को मज़ाक़ मज़ाक़ में "घुमक्कड़ दल के सदस्य" कहा करते थे जबकि दूसरे साथी "सिनेमा जाने वालों के दल के सदस्य" कहलाते थे।

व्लादीमिर इल्यीच को इस प्रकार के मनोरंजन न भाते जो अन्य लोगों को कार्य-भार से विश्राम लेने के समय अच्छे लगते थे। जब तक वे बाहर रहे तब तक कभी सिनेमा नहीं गये, थियेटर तो वे कभी कभी ही जाते थे। जब वे पहली बार विदेश गये थे उस समय बर्लिन थियेटर में एक बार "जुलाहे" नामक खेल भी

देखने गये। जब वे अपने को "बिल्कुल अकेले" (अर्थात् बिना परिवार के) महसूस करते तब, अथवा कभो कभो कठोर श्रम के बाद, वे थियेटर चले जाया करते। जब वे किसी काम से किसी बड़े नगर में जाते तो भी प्राय: "अपने को भुलाने के लिये" सीधे थियेटर पहुंच जाते। परन्तु विदेशो प्रदर्शनों में उन्हें आनन्द न आता। कभी कभी वे नदेज्हदा कोन्स्तानतीनोवना के साथ थियेटर जाते और केवल पहला ऐक्ट देखकर ही वहां से उठ आते। ऐसे समय उनके साथी रुपया बरबाद करने की बात कह कह कर उनका मज़ाक़ उड़ाया करते। अन्तिम नाटकों में उन्होंने "ज़िन्दा लाश" नामक एक नाटक देखा था और केवल यही एक खेल था जिसने उन पर कुछ प्रभाव डाला था। वे मास्को में आर्ट थियेटर के बड़े शौकीन थे। स्वदेश से यहां आने के पूर्व वे एक बार लालायान्त्स ("कोलम्बस") के साथ मास्को के थियेटर में गये थे और उन्होंने फ़रवरी १९०१ को माता जी को अपने एक पत्र में लिखा था: "आज भी जब मुझे यह याद आ जाती है कि मैं वहां गया था तो मुझे बड़ी प्रसन्नता होती है।" और फिर (४ फ़रवरी १९०३ का पत्र) "नीची गहराइयाँ" देखने के लिये "मुझे रूसी कला थियेटर में जाना कितना अच्छा लगता है।" परन्तु वे मास्को में गोर्की के इस नाटक को केवल क्रांति के पश्चात् ही देख सके थे।

यद्यपि व्लादीमिर इल्यीच को संगीत से शौक़ था फिर भी प्राय: वे कन्सर्ट नहीं जाते थे। ऊपर अभी अभी जिस पत्र का उल्लेख किया गया है उसमें उन्होंने लिखा था: "हाल ही में हम इस जाड़े में पहली बार एक कन्सर्ट सुनने गये और वह हमें बहुत पसन्द आया। चइकोव्स्को की लय और ध्वनि (मर्मस्पर्शी समवेत गान) हमें विशेष रूप से अच्छी लगी।" माता जी को (९ फ़रवरी १९०१ के) एक दूसरे पत्र में उन्होंने लिखा था कि "हाल ही में मैं आपरा गया और वहां

मुझे "यहूदी की बेटी" संगीत सुनकर बड़ी प्रसन्नता हुई। मैंने इसे लगभग १३ वर्ष पूर्व कज़ान में सुना था जबकि इसे ज़क्र्ज़्हेव्स्की ने गाया था। मुझे इसकी कुछ धुनें पहले से याद थीं।" वे इन धुनों को सीटी की तरह मुंह से बजाया करते (उन्हें दांतों द्वारा सीटी बजाने की एक खास आदत थी)। विदेश में वे आपरा और कन्सर्टों से दूर रहे। संगीत का उनके स्नायु-मंडल पर बड़ा प्रभाव पड़ता और जब कभी कार्य भार से दबकर, दलगत संघर्षों से खीझकर अथवा विदेश जीवन से उकता कर वे परेशान होते उस समय संगीत भी उन्हें नीरस प्रतीत होता। उनके एकान्त प्रेम तथा मनोरंजनों में उनकी दिलचस्पी के कम होने के कारण थे—पैसे की कमी आर काम की अधिकता।

व्लादीमिर इल्यीच के पास सैर-सपाटों के लिये समय न रहता। उन्होंने १८९५ में बर्लिन से लिखे गये अपने एक पत्र में कहा था: "सामान्यतया मैं इस विषय में बिल्कुल तटस्थ हूं और वहां कभी कभी ही जाता हूं। हां संग्रहालयों, थियेटरों और मेहराब-पंक्तियों आदि को देखने के बजाय सायंकालीन गोष्ठियों में लोगों से मिलना-जुलना और उनके बीच उठना-बैठना अधिक पसन्द करता हूं।" कभी कभी किसी दिन सायंकाल वे इस प्रकार "घूमते-घामते" भी। १८९५ में बर्लिन में भी उन्होंने यही किया था। "बर्लिन निवासियों के स्वभावों का अध्ययन करने तथा जर्मनी भाषा सुनने" की उन्हें उत्कंठा रहती थी। अन्य विदेशी नगरों में भी उनके मनोविनोद का प्रिय साधन यही था। उनके पत्रों में स्थानीय रीति-रिवाजों के अध्ययन के विषय में बहुत से निदेश मिल सकते हैं। जब वे पेरिस में रहते थे अथवा किसी कारण वहां जाया करते थे उस समय उन्हें इधर उधर टहलने में बड़ा आनन्द आता और जब वे सड़कों अथवा राज-मार्गों पर चहलकदमी करते तो प्रायः यह देखा करते कि पेरिस

के लोग क्या करते हैं, कैसे रहते हैं। कुछ दिनों तक वहां रह लेने के पश्चात् उन्होंने लिखा था: "पेरिस में थोड़े पैसों में गुज़र करना बड़ा कठिन है। इसके अतिरिक्त शोर-गुल के कारण वहां रहना भी दूभर हो उठता है। लेकिन थोड़े समय तक घूमने फिरने के लिए उससे अच्छा दूसरा कोई नगर नहीं हो सकता।" जब वे चेकोस्लावेकिया होकर भ्रमण कर रहे थे उस समय वहां के लोगों की जीवन-चर्या में भी रुचि लेते थे। उन्हें उस समय केवल चेक भाषा न आने का ही दुख था। जब वे गैलीशिया में ठहरे हुए थे उस समय उन्होंने वहाँ के कृषकों के, जिनसे उन्होंने वहां ठहरने के समय भेंट की थी, जीवन और रीति-रिवाज़ों का बड़ा रोचक वर्णन किया है। उन्होंने म्यूनिच की सड़कों पर होने वाले आनन्द-उत्सवों और अनेकानेक मनोरंजनों का भी उल्लेख किया है। वे जीवन के सभी स्वरूपों से प्रेम करते थे और उनमें जीवन का व्यापक रूप से अध्ययन करने और उसका सूक्ष्म निरीक्षण करने की अभूतपूर्व क्षमता थी।

व्लादीमिर इल्यीच के पत्रों से हमें इस बात का ज्ञान होता है कि उनके तथा उनके परिवारवालों के बीच एक दूसरे के प्रति कितना आकर्षण था और वे साधारणतया अन्य लोगों से कितना स्नेह करते थे। वे अपने पत्रों में इन सबके बारे में पूछताछ किया करते। परिवार, और विशेष रूप से माता जी, के लिए तो वे सब कुछ करने को तैयार रहते। उनके सभी पत्रों में, जो हमें मिलते थे, बराबर यही पूछताछ रहती थी कि माता जी कैसी हैं। अच्छी तो हैं, आराम से रह तो रही हैं। वे सदा उनके स्वास्थ्य के लिये चिंतित रहते। "फ़्लैट कैसा है? आप लोगों के लिये अधिक ठंढा तो नहीं है; आप लोग सर्दी तो न खा जायंगे? क्या वहां छोटे स्टोव आदि से गर्मी नहीं पैदा की जा सकती?"—उन्होंने १९०९ में लिखा था। और "छुट्टियाँ

अच्छी तरह बिताओ", "इतनी दौड़-धूप मत करो—अधिक आराम करो और तन्दुरुस्त रहो" आदि बहुत सी नसीहतें उनके पत्रों में रहा करतीं।

व्लादीमिर इल्यीच माता जी का बड़ा ध्यान रखते थे विशेष रूप से उस समय जब उन पर कोई विपत्ति आती थी। और विपत्ति का शिकार वे प्राय: हो जाया करतीं क्योंकि परिवार का कोई न कोई सदस्य कभी न कभी गिरफ़्तार हो जाता अथवा उसे निष्कासित कर दिया जाता। कभी कभी तो ऐसी मुसीबतें कई लोगों पर एक साथ आ जाया करतीं। वृद्धा हो जाने पर भी कभी उन्हें मुलाक़ात के लिये जेलों में जाना पड़ता, कभी वहां उन्हें पारसल और सन्देश ले जाने पड़ते, कभी पुलिस के स्वागत-कक्षों में घंटों प्रतीक्षा करनी पड़ती और यह देखकर कि उनके बच्चों की स्वतंत्रता छिन गई है उन्हें हार्दिक क्लेश होता। इन वर्षों में व्लादीमिर इल्यीच माता जी के लिये विशेष चिंतित रहा करते। माता जी से अलग रहना उन्हें बहुत खलता था और वे सदैव यही चाहते थे कि माता जी की ज़िम्मेदारियों को अपने कंधों पर ले लें, जैसा कि उनके १ सितम्बर, १९०१ के एक पत्र से, जो उन्होंने माता जी को लिखा था, प्रकट होता है। उस समय उनकी बहन मारिया तथा मार्क तिमोफ़ेयेविच जेल में थे। आन्ना विदेश में थी और वहां से इसलिए वापस न आ सकती थी कि उसे यहां इसी मामले की आड़ में गिरफ़्तार कर लिया जाता और दिमीत्री माता जी के पास इसलिए नहीं रह सकता था कि उसे युरयेव विश्वविद्यालय का पाठ्यक्रम पूरा करना था। एक बार १९०४ में माता जी को किएव जाना पड़ा था जो उनके लिये एक नया नगर था। यह उस समय की बात है जब दिमीत्री, आन्ना तथा मारिया पार्टी की केन्द्रीय समिति और किएव समिति संबंधी एक मामले में गिरफ़्तार हो चुके थे।

व्लादीमिर इल्यीच हमेशा यही चाहते कि माता जी सदा उनके पास रहें और इसी लिए उनसे बराबर यही कहा करते कि वे उनसे आकर मिल जाया करें। परन्तु माता जी के लिये ऐसा करना कठिन था क्योंकि अन्य बातों के साथ साथ उनके लिये यह भी आवश्यक था कि वे अपने उन बच्चों के पास रहें जो विपत्ति में होते थे, ताकि वे उनको सहायता के लिये सदा तत्पर रह सकें। और रूस में इस सहायता की बड़ी आवश्यकता पड़ती थी क्योंकि पुलिस बराबर उनके बच्चों के पीछे पड़ी रहती। जब व्लादीमिर इल्यीच विदेश में थे उस समय माता जी दो बार उनसे मिलने गई थीं। १९०२ में वे व्लादीमिर इल्यीच के साथ लांगुइवो, उत्तरी फ़्रांस, में रही भी थीं परन्तु केवल थोड़े ही समय के लिये। दूसरी बार वे उनके पास स्टाकहोम में १९१० में गई थीं। इस बार उनके साथ मारिया भी थी। व्लादीमिर इल्यीच माता जी को इन यात्राओं के संबंध में ठीक ठीक निदेश भेज दिया करते थे और उन्हें यह भी बताया करते थे कि उन्हें रात में किन होटलों में ठहरना चाहिए "ताकि आपको यात्रा में अधिक थकान न हो।" स्टाकहोम में माता जी ने स्वदेश छोड़कर आये हुए लोगों की एक सभा में व्लादीमिर इल्यीच का पहली और आखिरी बार भाषण सुना था। हमारे प्रस्थान के दिन वे हमें पहुंचाने के लिये नाव तक आये थे परन्तु जहाज़ पर इसलिए न जा सके थे कि जहाज़ रूसी था और उनके वहां चढ़ते ही उन्हें तुरन्त गिरफ़्तार कर लिया जाता। जिस समय उन्होंने माता जी की ओर देखा था उस समय उनके मुंह पर हमें कुछ ऐसी भाव-भंगिमा दिखाई दी थी जिसे मैं कभी नहीं भूल सकता। यह विषाद की अभिव्यक्ति थी। शायद उन्होंने समझ लिया था कि यह माता जी से उनका अन्तिम मिलन है। और बात सच निकली। व्लादीमिर इल्यीच उस समय तक अपने परिवारवालों से न मिल सके थे जब तक कि फ़रवरी क्रांति

के पश्चात् वे रूस नहीं लौट आये। परन्तु इसके कुछ ही पूर्व — जुलाई १९१६ में — माता जी की मृत्यु हो चुकी थी। माता जी के देहान्त का समाचार सुनकर उन्होंने जो पहला पत्र लिखा था वह डाक में खो गया था। दूसरा पत्र भी सुरक्षित न रखा जा सका। परन्तु उसमें क्या लिखा था यह मुझे अच्छी तरह याद है। माता जी की मृत्यु से उन्हें बड़ा दुख हुआ था। लेकिन अपने इस दुख में भी उन्होंने हम लोगों के साथ, जिन्हें स्वयं उतना ही दुख हुआ था, बड़ी विनम्रता दिखाई।

व्लादीमिर इल्यीच अपनी बहनों, भाई तथा बहनोई म० त० एलिज़ारोव का बड़ा ध्यान रखते। वे सदा यह जानने के लिये व्यग्र रहते कि वे कैसे रह रहे हैं, उनका स्वास्थ्य ठीक है या नहीं, उन्हें पैसा मिल रहा है या नहीं और उन्हें छुट्टियां भी मिलती हैं या नहीं, आदि, आदि। वे हमें अनुवाद करने के लिये विदेशी पुस्तकें भेजते थे। वे सदा यह जानने के इच्छुक रहते कि हमारी पढ़ाई-लिखाई कैसी चल रही है और हमें इसलिए आमंत्रित करते थे कि हम आकर उनके मेहमान बनें। उन्हें अपने साथियों का बड़ा ध्यान रहता और वे सदा उनके कुशल समाचार पूछते रहते तथा सभी तरह से उनकी सहायता को तैयार रहते। वे अपने साथियों द्वारा अनूदित पुस्तकों की भूमिका लिख दिया करते ताकि उनकी पुस्तकें प्रकाशित होने में कुछ मदद मिल जाय और वे कुछ रुपया कमा सकें।

व्लादीमिर इल्यीच के पत्र उन लोगों को, जो विदेश के जीवन और ज़ारकाल में वैध पत्र-व्यवहार के तौर-तरीक़ों से अनभिज्ञ हैं, विचित्र तथा कई मानों में अबोध्य भी लगेंगे। उदाहरणार्थ वे लिखा करते थे कि वे "बहुत आराम के साथ" अथवा "शांतिपूर्वक" अथवा "ऐसे वैसे" रहते हैं। उस काल, अर्थात् साम्राज्यवादी युद्ध के दौरान में, जैसा कि हमें तत्कालीन साहित्य और अवैध पत्र-व्यवहार से

पता है, उनका परराष्ट्रों से घृणा करने वाले स्वदेश-प्रेमियों से निरन्तर संघर्ष चला करता और यह प्रवृत्ति उस काल के अनेकानेक सामाजिक-जनवादी दलों के राजनीतिक दृष्टिकोण में घुली मिली थी। हमें यह न भूलना चाहिए कि व्लादीमिर इल्यीच के सार्वजनिक कार्य स्वदेश छोड़कर आये हुए लोगों और विदेशी श्रमिकों की छोटी छोटी सभाओं में भाषण करने तथा पार्टी के समाचारपत्र के लिए लेखादि तैयार करने तक ही सीमित रह गये थे। यह पत्र कई कई हफ़्तों में एक बार निकलता और कभी कभी तो महीनों बाद इसका कोई एक अंक निकल पाता। इसका वितरण भी पैम्फ़लेटों की भांति बड़ा दुष्कर कार्य था। यह बात समझ में आ सकती है कि व्लादीमिर इल्यीच को जनता के समक्ष भाषण करने की सम्भावनाएं प्राय: कम रहा करती थीं। न० क० क्रुप्स्काया के कथनानुसार, जब रूस में क्रांति छिड़ी उस समय उन्हें रूस से बाहर रहना असह्य हो उठा और वे, विशेष रूप से साम्राज्यवादी संघर्ष-काल में, विदेशी जीवन के प्रतिबन्धों से इतने उकता गये कि उनकी आत्मा कराह उठी और उन परिस्थितियों में, जिनमें रहकर वे जनता के नेता और प्रवक्ता के रूप में अपना यथोचित स्थान पाने से वंचित रह गये थे, वे उसी प्रकार बेचैन हो उठे जैसे बबर शेर अपने पिंजड़े में हो उठता है। वे वास्तविक कार्यों में जुटना और जनता के बीच रहना चाहते थे। परन्तु इसके बजाय अप्रत्यक्ष रूप से ही, अर्थात् अन्य कुछ साथियों की मार्फ़त, आन्दोलन पर अपना प्रभाव डाल सके थे। और क्या "सुप्त बर्न" की यह सामान्य स्थिति तथा इस प्रकार की क्रियाशीलता लेनिन के लिये अत्यधिक "संकुचित" और अत्यधिक "शांतिपूर्ण" नहीं थी?

प्राय: व्लादीमिर इल्यीच अपने वैध पत्र-व्यवहार में "सब से खराब क़िस्म के अवसरवादियों" तथा "युद्ध का श्रेय प्राप्त करने के लिए होने वाले मतदान की तुच्छताओं" आदि के प्रति बड़ा रोष

प्रकट करते। चूंकि उनपर सेन्सर की तलवार हमेशा सवार रहा करती थी अतएव "अपनी ओर पुलिस का ध्यान आकृष्ट करने" और अपने विरुद्ध उन्हें "सारवान् साक्ष्य" देने की परिस्थितियाँ न आने देने की दृष्टि से अपने पत्रों में वे उपर्युक्त कुछ वाक्यांशों का प्रयोग किया करते थे। इस बात से यह आसानी से समझ में आ सकता है कि वे तथा उनके परिवार के लोग परस्पर "उस प्रकार का पत्र-व्यवहार करने में बड़ी कठिनाई का अनुभव करते जैसा कि हम चाहते थे।"

जैसा पहले कहा जा चुका है व्लादीमिर इल्यीच के पत्र इस दृष्टि से आवश्यक तथा रोचक हैं कि उनसे हमें उनके व्यक्तित्व का पता चलता है (परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि — मुख्यतया उन दशाओं में जिनमें पत्र-व्यवहार होता था — इस पत्र-व्यवहार से उनके व्यक्तित्व का पूरा चित्र हमारे सामने नहीं आ पाता)। इस दृष्टि से ये पत्र व्लादीमिर इल्यीच विषयक साहित्य की मूल्यवान् धरोहर हैं। यह खेद का विषय है कि परिवारवालों, और सामान्यतया साथियों को, लिखे गये उनके बहुत से पत्र खो गये हैं।

फिर भी ऐसी बहुत अधिक सामग्री है — विशेष रूप से उनका समृद्ध साहित्य — जिससे इस बात पर प्रकाश पड़ता है कि नेता, राजनीतिक कार्यकर्ता और अध्यापक के रूप में लेनिन का व्यक्तित्व कितना प्रभावशाली था।

व्लादीमिर इल्यीच का दूसरी बार विदेश जाना उनके लिये विकट परीक्षा थी। पीटर्सबर्ग रह आने के पश्चात् जब वे जेनेवा लौट कर आये तो उनके लिये "पुराने आवास में" रहना बसना दुष्कर हो गया। १४ जनवरी १९०८ को उन्होंने मारिया को लिखा था, "हम कई दिनों से इस अरुचिकर जेनेवा से चिपके हुए हैं। नगर क्या है घोंसला है। परन्तु हमें तो वहां रहने की आदत डालनी ही होगी।" और वे पूरी लगन और पूरी शक्ति के साथ वहां काम

करने में जुट गये। वे अपने को किसी भी परिस्थिति का "आदी बना सकते थे"। उन्होंने माता जी को अपने दूसरे पत्र में लिखा था: "हमारी यात्रा के पहले कुछ दिन बहुत खराब रहे। परन्तु चारा ही क्या था।" सबसे अधिक कठिनाई इस बात की थी कि उन्हें अपने कार्य के लिये अपेक्षित सामग्री—साहित्यिक सामग्री, नई पुस्तकें, समाचारपत्र—उपलब्ध न हो पाती थी। इन चीज़ों का अभाव उन्हें बड़ा खलता। हां, पीटर्सबर्ग में अवश्य उन्हें सभी समाचारपत्र तथा पत्रिकाएं प्राप्त हो जातीं और नये नये प्रकाशनों के बारे में पूरी जानकारी रहती। अतएव उन्होंने मांग की कि "हमें तृतीय ड्यूमा (आशुलिपिक रिपोर्टों का औपचारिक संस्करण, औपचारिक घोषणाएं, प्रश्न, क़ानून के मसौदे, इत्यादि) के रिकार्ड भेज दिये जायं" और "वे पूरे हों तथा उनमें कोई बात छोड़ी न गई हो।" वे "अक्तूबरियों*, दहिन-दल तथा कोज़क दलों के कार्यक्रम, घोषणाएं और पत्रक भी प्राप्त करना चाहते थे।" वे इन सब सामग्रियों से वंचित रह जाते जबकि "ड्यूमा में यदि ये सब पत्र फेंक भी दिये जायं तो भी उन्हें कोई न उठाये।" उनकी दूसरी मांग "मेनशेविकों के सभी नये प्रकाशनों" को भेज देने के संबंध में थी। साथ ही वे व्यापार-संघ को उन पत्र-पत्रिकाओं को भी देखना चाहते थे जो नष्ट नहीं हुई थीं।

---

*अक्तूबरी—बड़े बड़े औद्योगिक बूर्जवा और ज़मींदारों की प्रतिक्रान्तिवादी पार्टी जो नवम्बर १९०५ में बनाई गई थी। १७ अक्तूबर की घोषणा की, जिसमें ज़ार ने क्रान्ति से डर कर लोगों को "नागरिक स्वतंत्रता" और संविधान देने का वचन दिया था, अक्तूबरी ज़ारशाही सरकार की वैदेशिक और गृह-नीति का पूरा पूरा समर्थन करते थे—सम्पादक

हमने इस बात की पूरी कोशिश की कि हम उन्हें पुस्तक-संसार की रोचक पुस्तकें बराबर भेजते रहें परन्तु उन्हें रूसी अखबारों की भी ज़रूरत रहा करती थी — विशेष रूप से साम्राज्यवादी युद्ध के समय जब कि प्रायः यह पत्र उन्हें नहीं मिल पाते थे। २० सितम्बर, १९१६ को उन्होंने लिखा था, "सप्ताह में एक बार आप लोग मुझे वे समाचारपत्र भेज दिया करें जिन्हें आप पढ़ चुकते हैं क्योंकि मेरे पास वे पत्र नहीं रहते।"

दूसरी बड़ी समस्या, विशेषकर उनके विदेश-काल के अन्त में, थी—गुज़र-बसर के लिये पर्याप्त धन पैदा करने की। "शीघ्र ही काम के पुराने साधन हमारे लिये समाप्त हो जायंगे और उस समय धनार्जन की समस्या हमारे लिये बड़ी प्रखर हो जायगी" (१४ दिसम्बर १९१५)। "वे इस मामले में सदा बड़े चिन्तित रहा करते थे," नदेज़्हदा कोन्स्तानतीनोवना ने अपने एक पत्र में लिखा था, क्योंकि रुपये पैसे के मामले में ब्लादीमिर इल्यीच बड़े संकोची व्यक्ति थे और दूसरों से सहायता लेना पसन्द न करते थे। २० सितम्बर, १९१६ को उन्होंने लिखा था कि "मैं अब ऐसी कोई भी चीज़ लिखने को तैयार हूं जिससे धन मिल सकता हो क्योंकि रहन-सहन के व्यय आसमान छू रहे हैं और यहां जीवन-यापन कठिन हो रहा है।"

फ़रवरी की क्रांति (१९१६ की शरद् ऋतु) के पहले के कुछ महीनों तक उन्हें अनुवाद के लिए पुस्तकों की तलाश थी और उन्होंने इस संबंध में एक प्रकाशक को लिखा भी था। यदि बीच में क्रांति न हो गई होती तो न जाने उन्होंने अपने कितने समय और कितनी शक्ति का इस काम में अपव्यय किया होता?

ये दशाएं थीं जिनमें वे क्रांति के ठीक पूर्व रह रहे थे। रूस तथा श्रमिक-वर्ग से उनका संबंध टूट गया था जिनके साथ उन्होंने सदा सम्पर्क स्थापित करने का प्रयत्न किया था। ब्लादीमिर इल्यीच

में शक्ति और लगन का अभाव न था फिर भी उन्हें वैदेशिक जीवन की कठिनाइयाँ झेलनी पड़ती थीं। अतएव इसमें आश्चर्य नहीं यदि "उनका स्नायुमंडल दुर्बल हो गया हो।" और वास्तव में उनका स्वास्थ्य काफ़ी ख़राब हो गया था।

१५ फ़रवरी, १९१७ के एक पत्र में उन्होंने कुछ कटु सत्य का उद्घाटन किया था। उन्होंने हमें बताया था कि जब उन्हें रूस से रुपया मिला था उस समय नदेज्हदा कोन्स्तानतीनोव्ना ने मज़ाक़ में कहा था कि "अब तो हम पेंशन पर रह रहे हैं!"

और तब — इस पत्र के पाने के पश्चात्, जिसमें उपर्युक्त मज़ाक़ में यह उल्लेख था कि क्रांति के पूर्व व्लादीमिर इल्यीच को कितनी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था, हमें एक संक्षिप्त तार मिला जिसमें लिखा था: "सोमवार ११ बजे पहुंच रहे हैं। "प्रावदा" को सूचित कर दें। उल्यानोव।"

अब विदेश-वास समाप्त हो चुका था और इसके साथ ही साथ उन पत्रों का तांता भी टूट गया था जिन्हें वे अपने परिवारवालों को लिखा करते थे।

इसके बाद मुझे फ़िनलैंड से, जहां व्लादीमिर इल्यीच महान अक्तूबर क्रान्ति के पूर्व केरेन्श्चीना* तथा करनीलोवश्चीना** के दिनों में अवैध रूप से रह रहे थे, उनके दो संक्षिप्त सन्देश और मिले थे।

---

*केरेन्श्चीना का नाम समाजवादी क्रान्तिकारी केरेन्स्की के नाम पर पड़ा था जो रूस में १९१७ में बूर्जवा अस्थायी प्रतिक्रान्तिवादी सरकार का नेता था — सम्पादक

**करनीलोवश्चीना का नाम जनरल करनीलोव के नाम पर पड़ा था जिसने अगस्त — सितम्बर, १९१७ में प्रतिक्रान्तिवादी षड्यंत्र का संघटन किया था — सम्पादक

मारिया उल्यानोवा द्वारा

वापसी

२० साल पहले १६ अप्रैल को लेनिन फ़र्वरी क्रान्ति के पश्चात् पेत्रोग्राद लौटे। उस समय तक वे काफ़ी लम्बे काल तक विदेशों में रह चुके थे।

उनके जीवन के १५ सर्वोत्तम वर्ष (जिसमें वह समय सम्मिलित नहीं है जब वे १९०५ की प्रथम रूसी क्रान्ति के समय पीटर्सबर्ग में रहते थे) देश के बाहर एक ऐसे वातावरण में व्यतीत हुए जहाँ, जैसा उन्होंने स्वयं लिखा है, "मानसिक अथवा शारीरिक पीड़ा का बाहुल्य" था तथा जहाँ "बहुत बड़ी संख्या में लोग बड़ा कष्टमय जीवन व्यतीत कर रहे हैं।"* देश से बाहर रहना उनके लिए एक कटु अनुभव था क्योंकि इसका अर्थ उन रूसी श्रमिकों से बहुत दूर रहना था जिनके साथ इल्यीच ने निकट का सम्पर्क बनाये रखने का निरन्तर प्रयत्न किया था। देश के बाहर उनका जीवन विदेशों में बसने वाले अन्य बहुत से देशवासियों से भिन्न था।

स्तालिन ने एमिल लुदविग से अपनी एक बातचीत के दौरान में कहा था, "ऐसे बहुत ही थोड़े लोग थे जो रूस में रहते हुए भी वहाँ के वास्तविक मामलों और देश के भीतर होने वाले श्रम आन्दोलन के साथ उतना सम्पर्क रख सके थे जितना कि लेनिन रखते थे यद्यपि बहुत काल तक वे विदेशों में ही रहे। जब कभी मैं उनसे मिलने विदेश

---

* व्ला० इ० लेनिन, ग्रन्थावली, चतुर्थ संस्करण, खंड १८, पृष्ठ २९२ — सम्पादक

जाया करता—१६०६, १६०७, १६१२ और १६१६—तो मुझे उनके पास ढेरों पत्र देखने को मिलते जो उन्हें रूस में पार्टी के व्यावहारिक कार्यकर्ताओं से प्राप्त होते रहते थे। उन्हें उन लोगों से कहीं अधिक सूचना रहती थी जो रूस में रह रहे थे" और "विदेशों में रहना वे अपने लिए सदैव एक बोझ समझते थे।"*

और यह बात उस समय तो और भी सत्य हो गई थी जब कि फ़र्वरी की क्रान्ति भड़क चुकी थी।

व्लादीमिर इल्यीच ने गनेत्स्की को लिखा था: "आप आसानी से समझ सकते हैं कि ऐसे समय यहां रहना कितने बड़े अत्याचार की बात है।"

लेनिन यह चाहते रहे कि वे रूस लौट जायं और रूसी श्रमिकों और कार्यकर्त्ता कृषकों के संघर्ष में भाग लें तथा राजनीतिक घटनाओं पर अपना समयोचित प्रभाव डालें। परन्तु वापस जाना आसान न था। केवल सामाजिक अंधराष्ट्रवादी ही अंतांत की सहायता पर निर्भर रह सकते थे। प्लेखानोव तथा उसके समर्थकों के मार्ग में कोई कठिनाई न थी। वे एक जंगी जहाज़ पर चले जिसकी रक्षा के लिए कुछ और सुरंगी जहाज़ भी भेजे गये थे। अंतांत को यह आशा थी कि रूस में प्रतिरक्षावादियों के कार्य उनके और उनकी साम्राज्यवादी नीति के हित में हैं। उन अन्तर्राष्ट्रीयतावादियों के लिए कोई गुंजाइश न थी जिनके नाम अवांछनीयों की सूची में थे। यदि वे अंतांत के समर्थक राष्ट्रों से होकर यात्रा करते थे तो उन्हें क़ैद कर लिये जाने अथवा जेल में डाल दिये जाने का ख़तरा उठाना पड़ता और यह भी सम्भव हो सकता था कि उनका जहाज़

---

*ज०व० स्तालिन, ग्रन्थावली, खंड १३, पृष्ठ १२०-१२१—सम्पादक।

ही डुबा दिया जाय जैसा कि ऐसे कुछ व्यक्तियों का अनुभाव था जिन्होंने नाव द्वारा रूस वापस आने का निश्चय किया था। व्लादीमिर इल्यीच इन सब बातों को भली भांति समझते थे।

उन्होंने ३० मार्च १९१७ को गनेत्स्की को लिखा था कि "ब्रिटेन मुझे अथवा अन्य किसी भी अन्तर्राष्ट्रीयतावादी को अपने मार्ग से होकर न जाने देगा। यह स्पष्ट है कि आंग्लो-फ़्रान्सीसी साम्राज्यवादी पूंजी के चाकर तथा रूसी साम्राज्यवादी, मिल्यूकोव (ऐन्ड कम्पनी) अन्तर्राष्ट्रीयतावादियों को रूस वापस आने से रोकने के लिए कुछ उठा न रखेंगे और अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए छल-कपट से भी बाज़ न आयेंगे। यदि मिल्यूकोव अथवा केरेन्स्की (कोरा गपोड़िया जो रूसी साम्राज्यवादी बूर्जवा वर्ग का एजेन्ट है) पर कुछ भी भरोसा किया गया तो वह श्रमिक वर्ग आन्दोलन तथा हमारी पार्टी पर विपत्तियों की वर्षा कर देगा और यह अन्तर्राष्ट्रीयवादिता के प्रति विश्वासघात होगा।"*

परन्तु कैसे लौटा जाय? लेनिन ने एक के बाद एक अनेक योजनाएं बनाईं परन्तु वे सभी अव्यवहार्य थीं। उन्होंने कई रातें आंखों ही आंखों में बिताईं और यही सोच विचार करते रहे कि स्वीट्ज़रलैंड से कैसे निकला जाय। आख़िर निराश होकर उन्होंने एक ऐसे गूंगे बहरे व्यक्ति का पार्ट अदा करने की बात सोची जिसके पास एक स्वेडिश पासपोर्ट हो तथा जो स्वीडेन वापस जा रहा हो। उन्होंने गनेत्स्की को लिखा कि वे एक ऐसे स्वीड की तलाश करें जिसकी सूरत शकल उनसे (लेनिन से) मिलती-जुलती हो, और उससे उसका पास-पोर्ट ले लें। उन्होंने अपना एक फ़ोटो भी पत्र के साथ रख दिया। गनेत्स्की

---

*व्ला०इ०लेनिन, ग्रन्थावली, चतुर्थ संस्करण, खंड ३५, पृष्ठ २४९—सम्पादक

ने बाद में बताया कि "जब मैंने यह पत्र पढ़ा तो ऐसा अनुभव किया कि लेनिन निराश हो उठे हैं। फिर भी मुझे उनकी इस असंगत योजना पर बड़ी हंसी आई।" फ़ोटो दो ही तीन दिन बाद स्वेडिश वाम-सामाजिक-जनवादियों के दैनिक समाचारपत्र "पोलिटिकेन" में प्रकाशित हुई। इस फ़ोटो के नीचे वरोव्स्की ने "रूसी क्रान्ति के नेता" शीर्षक एक लेख लिखा था।

लेनिन ने अब यह आशा छोड़ दी थी कि देश के बाहर रहने वाले रूसी राजनीतिक कार्यकर्ताओं को स्वदेश बुलाने के समिति के प्रयास सफल होंगे। समिति श्रमिक सदस्य परिषद् द्वारा इस आशय का पत्र-व्यवहार कर रही थी कि मिल्यूकोव जर्मनी के युद्ध बंदियों की रूस के उन निवासियों के अदला-बदली करने की व्यवस्था करे जो विदेशों में रहते हों। मिल्यूकोव ने यह योजना पसन्द न की। अब केवल यही सम्भावना रह गई थी कि जर्मन सरकार से यह आज्ञा प्राप्त की जाय कि वह जर्मनी से होकर जाने की अनुमति दे दे। और तटस्थ स्विस समाजवादियों ने अन्ततः इसकी व्यवस्था कर ली।

बेशक यह एक खतरनाक क़दम था क्योंकि यह स्पष्ट था कि रूसी बूर्जवा वर्ग तथा सामाजिक अंधराष्ट्रवादी जर्मन राज्य से होकर होने वाले बोल्शेविकों की यात्रा को लेकर उन पर कलंक लगाने तथा उन्हें बदनाम करने की चेष्टा करेंगे। अतएव इस धारणा का खंडन करने के उपाय करने पड़े थे कि बोल्शेविक जर्मनी की सरकार तथा जर्मन सामाजिक अंधराष्ट्रवादियों से सांठ गांठ कर रहे हैं। व्लादीमिर इल्यीच ने एक स्विस साम्यवादी को यह अधिकार दिया था कि वह जर्मन सरकार के सामने जर्मनी से होकर रेल यात्रा करने के सम्बन्ध में उनकी कुछ शर्तें रखे। मूल रूप से शर्तें ये थीं — रेल का डिब्बा सीमा-बाह्य नामोद्दिष्ट होना चाहिए, उस

डिब्बे के यात्रियों के पासपोर्टों की जांच न की जानी चाहिए; साथी प्लैटेन को छोड़कर, जो लेनिन तथा उनके साथियों के साथ केवल स्टाकहोम तक ही यात्रा कर रहे थे (रूसी सरकार ने उन्हें पेत्रोग्राद जाने की अनुमति नहीं दी थी) और किसी को डिब्बे से बाहर जाने अथवा रास्ते में किसी से बात करने का कोई अधिकार न हो। यही कारण था कि बाद में इस यात्रा के बारे में यह कहा जाने लगा था कि "यात्रा मुहरबन्द गाड़ी" में की गई थी।

लेनिन ने ६ अप्रैल (नयी पद्धति) को विदेशों में बसने वाले कुछ अन्य देशीय लोगों — अधिकतर बोल्शेविकों — के साथ ज़ूरिच से प्रस्थान किया। विदेशों में बसने वाले कुछ अन्य रूसियों ने इस यात्रा को "राजनीतिक ग़लती" बता कर गाड़ी छूटने से पूर्व हमारे साथियों के खिलाफ़ प्रदर्शन भी किये थे। बाद में उसी रास्ते से उन्हें भी रूस लौटने को बाध्य होना पड़ा क्योंकि अन्य किसी प्रकार से वापस जाने की कोई आशा नहीं रह गई थी।

जब हमें लेनिन की रवानगी की सूचना मिली उस समय हम आश्चर्य-चकित रह गये। हमें उनका इस आशय का तार कि वे चल पड़े हैं १६ अप्रैल को दोपहर के बाद प्राप्त हुआ। तार तरनीयो से भेजा गया था और किसी छुट्टी के दिन पहुंचा था जब कल-कारख़ाने बन्द थे और समाचारपत्र भी नहीं निकले थे। फिर भी यह ख़बर श्रमिक वर्ग के प्रदेशों की मार्फ़त आग की तरह फैल गई कि बोल्शेविकों का नेता सायंकाल तक पहुंच जायगा। श्रमिकों ने पूरे ज़ोर शोर से अपने प्रिय नेता तथा शिक्षक का स्वागत करने की तैयारियां आरम्भ कर दीं।

ब्येलोस्त्रोव में ही लेनिन के स्वागत की तैयारियाँ होने लगी थीं। उनके सबसे निकट के मित्रों तथा सम्बन्धियों के अलावा उनसे मिलने

के लिए सेस्त्रोरेत्स्क से भी श्रमिक नर-नारी झंडे लेकर एकत्र हुए। उन्होंने ट्रेन में से लेनिन को निकाल कर अपने कंधों पर उठा लिया और लेनिन ने वहीं प्लेटफ़ार्म पर लोगों के समक्ष भाषण किया। उन्होंने फ़र्वरी क्रान्ति का महत्व समझाते हुए कहा कि यह विश्व सामाजिक क्रान्ति के लिए पथ-प्रदर्शन का काम करेगी।

इस स्वागत का लेनिन पर गहरा प्रभाव पड़ा। उनका मुख आभा से चमक उठा तथा हृदय द्रवित हो गया। उन्होंने स्थिति के सम्बन्ध में अपने साथियों से प्रश्नों की झड़ी लगा दी और यह भी शंका प्रकट की कि शायद उन्हें पेत्रोग्राद में गिरफ़्तार कर लिया जाय। परन्तु इसके बजाय फ़िनलैंड स्टेशन पर उनके स्वागत की ज़ोरदार तैयारियां की जा रही थीं।

गाड़ी पहुंचने के पूर्व ही स्टेशन के चारों ओर का मैदान तथा पास-पड़ोस की सड़कें लोगों से खचाखच भर गईं। लाखों नर-नारी झंडे लेकर वहां एकत्र हो गये। जहाज़ी बेड़े के नाविकों, मशीनगन कम्पनी के लोगों तथा मास्को और प्रेओब्राजेन्स्की की सैनिक टुकड़ियों ने प्लेटफ़ार्म पर उन्हें गार्ड-आफ़-ऑनर दिया। जैसे ही सैनिकों और नाविकों ने उन्हें पहले-पहल देखा कि सावधान खड़े हो गए। सैनिक बैंड "मार्सीलेज़" की धुन बजाता रहा। गार्ड के अधिकारी की रिपोर्ट सुन लेने के पश्चात् उत्तर में लेनिन ने कहा था: "सामाजिक क्रान्ति अमर हो!"। तत्पश्चात् उन्हें एक "सुन्दर कक्ष" में ले जाया गया जहां श्रमिकों, सैनिकों तथा कृषकों के प्रतिनिधियों की प्रबन्ध-कारिणी के प्रतिनिधि च्खीद्ज़े ने अपने छद्म शब्दों में उनका स्वागत किया। और एक बार फिर लेनिन ने वही नारा लगाया परन्तु स्पष्ट था कि च्खीद्ज़े को यह नारा पसन्द न था।

स्टेशन के बाहर के मैदान में आने पर जब वे एक कार में, जो वहां इन्तज़ार कर रही थी, बैठ रहे थे उस समय श्रमिकों के

कुछ शिष्ट मंडलों ने, जो वहाँ उनका स्वागत करने के लिए आये थे, उनसे अनुरोध किया कि वे पास ही खड़ी एक सैनिक लारी पर चढ़ आयें। वे लारी पर खड़े हो गये और लारी सर्चलाइट की रोशनी में क्षेसिन्स्काया महल के भवन की ओर चल दी। उन्होंने श्रमिकों तथा सैनिकों का अभिवादन किया और निरंकुश प्रशासन से रूस को मुक्त करने के लिए उन्हें बधाई दी। उन्होंने बार बार नारा लगाया—"सामाजिक क्रान्ति अमर हो"। सैनिक लारी धीरे धीरे आगे बढ़ी। लारी के पीछे पीछे सशस्त्र फ़ौज की टुकड़ियां थीं और टुकड़ियों के पीछे दोनों ओर हाथ में हाथ बांधे श्रमिक लारी को रास्ता दे रहे थे।

पार्टी के साथी क्षेसिन्स्काया महल में एकत्र हुए। शीघ्र ही लेनिन ने उनके स्वागत शब्दों को गम्भीर वार्ता की ओर मोड़ दिया। उन्होंने परिस्थिति के संबंध में अपने विचार उनके सामने रखे और उन्हें यह समझाया कि अब पार्टी के सामने कौन कौन से तात्कालिक कार्य हैं। उन्होंने वहाँ वे विषय भी उपस्थित किये जो पेत्रोग्राद के श्रमिक सदस्य परिषद् के दल के समक्ष किये गये उनके भाषण के आधार थे। बाद में इन विषयों को उनके प्रसिद्ध "अप्रैल प्रस्ताव" में समाविष्ट किया गया।

लेनिन के विचारों ने बूर्जवा वर्ग में रोष पैदा कर दिया और मेन्शेविकों तथा सामाजिक-क्रान्तिवादियों ने हुल्लड़ मचाना आरम्भ किया। उन्होंने जर्मनी से होकर "मुहरबन्द गाड़ी" की यात्रा को लेकर पार्टी के नेता को बदनाम करना शुरू कर दिया और वे श्रमिकों तथा सैनिकों को, जिनमें से कुछ अब भी साधारण बूर्जवा वर्ग की छोटी छोटी भ्रान्तियों के शिकार थे, बोल्शेविकों के प्रभाव में न आने-देने के लिए कोशिशें करने लगे। उस समय केवल थोड़े से श्रमिकों ने ही लेनिन के विचारों को समझा था। परन्तु ये विचार ठीक

हैं इस बात की पुष्टि कुछ महीनों बाद ही हो सकी थी। इन्हीं विचारों के कारण महान् अक्तूबर क्रान्ति सफल हुई।

जबसे लेनिन, अप्रैल १९१७ में, विदेश से वापस आये तब से अब बीस साल हो चुके हैं। उस ऐतिहासिक दिवस पर उन्होंने जिस नारे से श्रमिकों का स्वागत किया गया था वह अब कार्यान्वित हो चुका था। हमारी जनता ने प्रतिक्रान्तिवादियों तथा दहिनांगों को, जो हमारे देश में पूंजीवाद लाना चाहते थे, अपने रास्ते से हटाया तथा साम्यवादी पार्टी के निर्देशन में समाजवाद की स्थापना की। अब वे अधिकाधिक सफलताएँ प्राप्त कर रहे हैं तथा साम्यवाद की जड़ें मज़बूत कर रहे हैं।

"इज़वेस्तिया", अंक ९१
१६ अप्रैल, १९३७

मारिया उल्यानोवा द्वारा

लेनिन को पत्र

क्रान्ति पश्चात् के पहले कुछ वर्षों के सम्बन्ध में कुछ पुराने पत्रों तथा हस्तलिखित प्रतियों में मुझे ऐसे पत्रों का एक पुलिन्दा मिला जिनमें से कुछ सीधे व्लादीमिर इल्यीच को, तथा कुछ उन तक पहुंचा देने के लिए मुझे अथवा "प्रावदा" सम्पादकों को, लिखे गये थे। ये उन आदि पत्रों में से थे जिन्हें उन श्रमिकों— अधिकतर लड़ाई में भाग लेने वाले सैनिकों— ने व्लादीमिर इल्यीच के पास भेजा था, जो "प्रावदा" में उनके भाषणों को पढ़ते थे तथा जिन्होंने पहली बार उनके विचारों को समझा था। एक सैनिक का तो कहना था: "इन भाषणों तथा सम्प्रति अथवा क्रान्तिपूर्व के काल में अन्य समाचारपत्रों में छपने वाले लेखों में कितना अन्तर है"। फ़रवरी क्रान्ति के बाद के कुछ महीनों में जनता ने इन विचारों का बड़ा स्वागत किया क्योंकि इस समय तक अधिकांश सैनिक साम्राज्य-वादी संघर्ष से थक चुके थे। ऐसे बहुत से लोगों ने "हमारे प्रिय रक्षक, मिस्टर लेनिन" को धन्यवाद दिया।

परन्तु चूंकि ये विचार नये थे अतएव प्रत्येक व्यक्ति उन्हें न समझ सका। बहुतों ने इन पर विचार किया और उन्हें समझने की कोशिशें भी कीं। अतएव पत्र-लेखक यह जानने को उत्सुक

थे कि "यह लड़ाई कैसे समाप्त होगी" और वे "अपना कार्यक्रम तथा स्पष्टीकरण आदि" प्रस्तुत करने का अनुरोध करते थे।

बूर्जवा समाचारपत्र तथा बूर्जवा सेवक, मेन्शेविक तथा सामाजिक क्रान्तिवादी लेनिन को सैनिकों की दृष्टि में बदनाम करने का प्रयत्न करते और उन्हें जर्मनी का जासूस तथा देश-द्रोही आदि जाने क्या क्या कहा करते परन्तु अधिकांश सैनिक इन बातों में विश्वास न करते क्योंकि वे ऐसी बातें फैलाने का उद्देश्य जानते थे।

एक नाविक ने लिखा था, "साथी सैनिको तथा श्रमिको! उन बूर्जवा पत्रों तथा उनके मददगारों का विश्वास मत करो जो स्वतंत्रता तथा समानता के हमारे सेनानी के नाम को बदनाम करना चाहते हैं। ज़रा सोचो तो! उन्हें हमारे नेता पर क्रोध क्यों न आये! वह तो पूंजीवादियों की अन्तिम आशा पर भी पानी फेर देना चाहता है।"

"मिस्टर लेनिन को एक धन्यवाद-संदेश में" अनेकानेक पैदल टुकड़ियों के कुछ सैनिकों ने लिखा था कि "आपने अपने भाषण में जिन शब्दों का प्रयोग किया है उनसे हमें विश्वास हो गया है कि वास्तविक आज़ादी तथा युद्ध-श्लथ सैनिकों से केवल आप ही सहानुभूति रखते हैं। मिस्टर लेनिन आपने जो कुछ कहा है वह बिल्कुल ठीक है। आप के विरोध में बहुत से अपने अपने ढोल पीटते हैं परन्तु उनकी सुनता कौन है?"

ऐसे भी बहुत से लोग थे जिन्हें लेनिन के विचारों में पूर्ण आस्था न थी; उन्हें प्रत्येक बात विस्तारपूवक समझानी पड़ती थी। इस सम्बन्ध में निम्नलिखित पत्र उल्लेखनीय है—

"साथी नागरिक, मिस्टर लेनिन,

अनेक सैनिकों की भांति मैं भी आपके तथा आपके काम के बारे में नियमित रूप से सुना करता हूँ कि आप स्वतंत्रता के लिए

लड़ने वाले तथा सर्वहारा वर्ग के मित्र हैं। परन्तु साथ ही बहुत से सैनिकों को यह विश्वास दिलाया जाता है कि आप जनता के शत्रु हैं। लोग हमें ऐसे अख़बार भेजते हैं जिनमें आप पर बहुत से दोषारोपण रहते हैं। वे बरावर हमारे कानों में फूँका करते हैं कि आप जनता और रूस दोनों ही के शत्रु हैं, आदि आदि। परन्तु सैनिक इन सब में विश्वास नहीं रखते और आपसे सहानुभूति रखते हैं। इस ग़लतफ़हमी को दूर करने के लिए सैनिकों ने मुझसे अनुरोध किया है कि मैं भूमि सम्बन्धी प्रश्न तथा युद्ध-स्थल की स्थिति के वारे में आपका मत जानने के लिए आपसे प्रार्थना करूं। दूसरे शव्दों में, आप किसे उत्तम समझते हैं—मोर्चा लेने के लिए आगे बढ़ना या शान्ति के लिए प्रतीक्षा करना? साथी लेनिन, यहाँ के साथियों के उपकार के लिए कृपया मेरी प्रार्थना स्वीकार करें।"

निश्चय ही लेनिन के विचारों को अधिकाधिक स्पष्ट करना बहुत आवश्यक था क्योंकि युद्धरत सैनिकों को ये विचार कैडेट अख़वारों में पढ़ने को मिला करते थे। अतएव यह साफ़ है कि उनके विचार जनता के सामने स्पष्ट रूप से नहीं आ पाते थे और इस सम्बन्ध में बड़ी गड़बड़ी थी।

सैनिकों के एक वर्ग ने लिखा था: "जैसा कि मिस्टर लेनिन का कहना है हमें युद्ध में लड़ने से इन्कार नहीं है। हम अपनी बन्दूक़ें ताख पर तो रखेंगे नहीं परन्तु यह आवश्यक है कि लड़ाई यथासंभव शीघ्र समाप्त कर दी जाय, जैसा कि मिस्टर लेनिन का ख़ुद का विचार है। मिस्टर लेनिन आप कृपया हमें क्षमा करें। कहना चाहिए कि हम ऐसे लोग हैं जो भली भांति शिक्षित भी नहीं हैं क्योंकि पुरानी सरकार को डर था कि यदि कहीं हम पढ़-लिख गये तो हमारी आंखें खुल जायंगी। अतएव हमारा अनुरोध है कि आप ऐसा करें कि आपके मार्ग में कोई—और विशेष रूप से वे बोल्शेविक—

बाधक न बनें।" ये लोग पूरी आस्था के साथ लेनिन के पास आते, उनका विश्वास करते और "मिस्टर लेनिन आपने जो काम उठाया है उसमें आपको पूरी सफलता मिले" यह कामना करते। परन्तु "वे बोल्शेविक" कुछ दूसरे ही प्रकार के जीव थे और यदि सैनिकों के समक्ष उनकी भर्त्सना की गई थी तो इसका कोई कारण था।

परन्तु कुछ लोग ऐसे भी थे जिन्हें किसी प्रकार की शंकाएँ नहीं थीं।

"साथी, मित्र लेनिन,

याद रखें कि (... टुकड़ी के) सैनिक एक साथ मिल कर एक व्यक्ति की भांति कहीं भी आपके पीछे चलने को तैयार हैं। आपके विचार वास्तव में कृषकों तथा श्रमिकों की आकांक्षाओं की ही अभिव्यक्ति हैं।"

खाइयों में युद्धरत एक सैनिक ने लिखा था: "मैं तथा मेरे साथी जो मेरी ही तरह हैं आपको निष्ठापूर्वक वचन देते हैं कि हम अपने हथियारों को तिलांजलि नहीं देंगे अपितु घर वापस आकर और भी अधिक दृढ़ता के साथ अपने को तैयार करेंगे" और पुनश्च उन्होंने लिखा था "पूर्ण आस्था सहित, मैं स्वयं हस्ताक्षर करता हूँ (नाम)।"

उनके विचारों में आस्था व्यक्त करने वाले पत्रों के साथ साथ उन्हें ऐसे भी पत्र प्राप्त होते रहते थे जिनमें अविश्वास प्रकट किया जाता था।

एक सैनिक ने जो हाल ही में युद्ध से लौटा था लिखा था, "साथी लेनिन, आप कहते हैं लड़ाई समाप्त कर दी जाय और आपके साथी भी यही कहते हैं परन्तु जब मैं उनसे पूछता हूँ कि 'लड़ाई कैसे समाप्त की जाय' इस सम्बन्ध में उनके क्या विचार हैं तो वे मुझे जवाब नहीं दे पाते।"

कुछ पत्र ऐसे भी थे जिनमें "सैनिक टुकड़ियों में असंगठन पैदा करने तथा फूट डालने के लिए" रोष प्रकट किया गया था। परन्तु इनमें से ऐसे बहुत ही कम थे जो वास्तव में सरल सच्चे भाव से लिखे गये थे और जिन्हें सचमुच उन लोगों ने लिखा था जो मोर्चे पर डटे हुए थे। अधिकांश पत्र क्रान्ति के पुराने शत्रुओं ने लिखे थे जो ऊपर से यह दिखाना चाहते थे कि लेखक युद्ध-स्थल की खाइयों से लिख रहा है।

सोवियत शक्ति की विजय हुई। युद्ध समाप्त हो गया और लेनिन को लिखे जाने वाले पत्रों की संख्या दिन प्रति दिन बढ़ने लगी। उनमें बहुत से प्रश्न पूछे जाते और अनेक स्पष्टीकरणों की मांग की जाती। परन्तु अब इनके विषय होते थे—निर्माण, अन्य पार्टियों के साथ सम्बन्ध, कृषकों की दिलचस्पी की चीजें, विभिन्न दोषों के बारे में सूचना देना, आदि आदि। कुछ पत्रों में सहायता की माँग की जाती, कुछ में पूछा जाता कि काम कैसे मिल सकता है, आदि। पहले तो व्लादीमिर इल्यीच ने पत्रों को स्वयं देखने का प्रयास किया परन्तु शीघ्र ही उन्हें ज्ञात हो गया कि उनके लिए यह सम्भव नहीं है। मुझे याद है कि एक बार उन्होंने मुझे बताया था कि जब वे एक पत्र के कई पन्ने पढ़ चुके तब उन्हें पता चला कि लेखक महोदय केवल एक टाइपराइटर की फ़रमाइश कर रहे हैं। लेनिन ने इस प्रकार के पत्रों को पढ़ना बन्द कर देने का दृढ़ निश्चय कर लिया था और जन-प्रतिनिधि परिषद् के अपने कुछ साथियों को यह आदेश दिये थे कि वे समस्त पत्रों को देख लिया करें, उनका उत्तर दिया करें और यदि सम्भव हुआ तो उसमें की गई प्रार्थनाओं को भी स्वीकार कर लिया करें।

ऐसे साथियों के, जिनसे लेनिन का व्यक्तिगत परिचय था, कार्य-नीति सम्बन्धी पत्र उनके पास सीधे भेज दिये जाते थे। उन्हें कुछ

अन्य पत्रों का भी सार बता दिया जाता था और उनसे पूछा जाता था कि उन विषयों पर क्या क्या उत्तर दिये जायँ। रूसी सोवियत संयुक्त समाजवादी प्रजातंत्र के कार्यकर्त्ताओं के पत्र जिनमें व्लादीमिर इल्यीच को शुभकामनाएँ भेजी जाती थीं अथवा उनके स्वास्थ्य के बारे में पूछ-ताछ आदि की जाती थी उनके पास प्राय: मेरे द्वारा ही भेजे जाते थे। पुराने पत्र-व्यवहार में, जिसका उल्लेख ऊपर किया जा चुका है, ऐसे ही कुछ पत्र थे।

ये पत्र इस बात के द्योतक थे कि श्रमिकगण लेनिन का कितना आदर तथा सम्मान किया करते थे। उनकी हत्या के प्रयत्न के पश्चात् तथा उनके आरोग्य-काल में उनके पास पत्रों की बाढ़ सी आ गई थी। उनकी ५० वीं वर्षगांठ पर भी यही हुआ था। रसद सप्लाई के असाधारण कमिसर में काम करने वाले अभियान के एक सदस्य द्वारा लिखे गये एक पत्र का उद्धरण इस प्रकार है—

"हम दीर्घकाल से त्रस्त सर्वहारा वर्ग के अपने नेता, आपका हार्दिक अभिनन्दन करते हैं। साथी लेनिन हम आपके इसलिए भी आभारी हैं कि आपने हमें उन पूंजीवादियों के शासन से मुक्त किया है जो कितने ही समय तक हमें अपनी मुट्ठी में लिए रहे और जो श्रमिक तथा ग़रीब किसान का खून चूसते रहे। जो लोग क्रान्ति के नेता पर उंगली उठाते हैं हम उनकी भर्त्सना करते हैं। विश्व श्रमिक वर्ग और कृषक सर्वहारा वर्ग के आगे आगे चलने वाली सर्वहारा शक्ति के संचालकों को हमारा सम्मान।"

इस पत्र में पुनश्च लिखा हुआ था, "अपनी श्रद्धा के प्रतीक-स्वरूप और साथी लेनिन आपकी हत्या का जो प्रयास किया गया है

उससे शीघ्र ही स्वस्थ होने में आपकी सहायता करने के उद्देश्य से हम आपको पचास अंडे भेज रहे हैं।"

इस प्रकार के "संलग्नक" प्राय: प्राप्त होते रहते थे, जिनमें से कुछ तो काफ़ी द्रवित कर देने वाले होते थे। उदाहरणार्थ सैनिक वर्दी में एक कृषक-पुत्र लेनिन के पास रोटी का एक टुकड़ा लाया और कहने लगा "मुझे नहीं मालूम, हो सकता है उनके पास न हो" और तब उसने केवल एक मिनट के लिये व्लादीमिर इल्यीच को देखते रहने के निमित्त उनके सामने बैठे रहने की अनुमति माँगी। जब इल्यीच का घाव भर रहा था उस समय साइबेरिया के एक साथी ने घर के बने विस्कुटों का एक पारसल भेजा और लिखा: "कृपया यह भेंट स्वीकार करें। इन बिस्कुटों को मेरी पत्नी उल्याना मारके-लोवना ने स्वयं तैयार किया है। प्रिय मित्र मेरा अनुरोध है कि आप हमारे प्रदेश के इन केकों को अवश्य मंजूर करें।" इसके अतिरिक्त, उन्हें ऐसे बड़े बड़े पारसल भी भेजे जाते थे, जिन्हें वे अस्पतालों तथा शिशुगृहों को भेज दिया करते थे।

लेनिन के पास न केवल श्रमिकों के अपितु कृषकों के भी पत्र आया करते थे। इनमें से एक इस प्रकार है—"लेवो-लाम्की प्रदेश (तम्बोव गुबर्निया) के प्राविये लामकी ग्राम के नागरिकों से। हम आपको, अर्थात् रूसी किसानों के महान् नेता व्लादीमिर इल्यीच उल्यानोव—लेनिन को, २२ अप्रैल को पड़ने वाली आपकी ५२ वीं वर्षगांठ पर बधाई देते हैं। हमने आपके सम्मान में, तथा आपके स्वास्थ्य की शुभ कामना करते हुए, तृतीय साम्यवादी अन्ताराष्ट्रीय गान गाया। हमारी कामना है कि आपका स्वास्थ्य सदैव अच्छा बना रहे और आप रूसी किसानों के अग्रणी नेता के रूप में काम करते रहें। यदि कभी किसी को आपका तथा श्रमिक वर्ग का विरोध करने का साहस होगा तो हम सब किसी भी समय एक हो कर अपने महान् नेता व्लादीमिर

इल्यीच उल्यानोव—लेनिन—की सहायता के लिए अवश्य आयेंगे।" इस पत्र में आगे चल कर लिखा था, "कृपया हमें क्षमा करें—हम आपसे माफ़ी माँगते हैं यदि हमने किसी भी प्रकार आपको कोई कष्ट दिया हो। परन्तु हमें हार्दिक प्रसन्नता होगी यदि आप हमें इसका उत्तर दें, भले ही वह एक पंक्ति का क्यों न हो, और यह बतायें कि आपको हमारा पत्र मिला या नहीं। हम सब जो आपको यह पत्र लिख रहे हैं न तो पार्टी के लोग हैं और न भली भांति पढ़े लिखे ही और यदि यह पत्र सम्यक् रीति से न लिखा गया हो तो कृपया हमें क्षमा करें। यद्यपि हम पार्टी के लोग नहीं हैं, फिर भी हृदय और आत्मा से हम साम्यवादी हैं, और यह जानते हैं कि वर्तमान शासन श्रमिकों का शासन है।"

यह जानना रुचिकर होगा कि इस समय उक्त पत्र का लेखक कहाँ है, और उसमें तब से अब तक राजनीतिक दृष्टि से क्या प्रगति हुई है। वह लेखक इस समय हमारी अर्थ-व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के महत्वपूर्ण कार्य में लगा हुआ है और न केवल "आत्मा से ही" पार्टी से साथ है अपितु पार्टी का एक सदस्य भी है।

मुझे याद है कि जब लेनिन ने यह पत्र पढ़ा था उस समय उनकी मुखाकृति कितनी तेजपूर्ण हो उठी थी।

उन्होंने मुझ से कहा था कि मैं उन्हें उस पत्र का उत्तर देने की याद दिला दूँ। बाद में उन्होंने इस पत्र का उत्तर दे दिया था।

मई १९१७ में एक गाँव से उनके पास एक पत्र आया था जिसमें लिखा था, "हम किसान यह समझते हैं कि हमारे पिता लेनिन ही एक ऐसे महान् व्यक्ति हैं जो रूस का उद्धार कर सकते हैं, यदि हम लोग उनका साथ दें, उनके क़ानूनों का पालन करें।"

व्यात्का गुबर्निया में स्थित एक दूरस्थ ग्राम से आये हुए एक पत्र में लिखा था—

"आपको तथा आपके अनुगामियों को बोल्शेविक कहा जाता है। पहले तो मैं यह भी न समझ पाया कि बोल्शेविक किसे कहते हैं और मेन्शेविक किसे? मैंने इसके सम्बन्ध में बहुत से लोगों से पूछताछ की परन्तु कोई भी इसका उत्तर न दे सका। सम्भव है कि इसका कारण यह रहा हो कि या तो वे ईमानदारी से उसका जवाब देना ही नहीं चाहते अथवा उन्हें स्वयं पार्टियों के सम्बन्ध में कोई ज्ञान नहीं है। अतएव बिना किसी की सहायता के मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि सामाजिक-जनवादियों की पार्टी के दो कार्यक्रम हैं—'न्यूनतम' कार्यक्रम जिसे मैं समझता हूँ, भले ही उसकी जानकारी मुझे कम हो और दूसरा 'अधिकतम' कार्यक्रम। मैं समझता हूँ कि आप इस विख्यात कार्यक्रम के, जो समस्त रूस में व्याप्त हो रहा है, प्रतिनिधि—अथवा उससे भी कुछ अधिक, जनक—हैं। मैं स्वीकार करता हूँ कि मुझे इसकी जानकारी नहीं है।"

तत्पश्चात् पत्र-लेखक ने लेनिन से अनुरोध किया कि वे उसे "'अधिकतम' कार्यक्रम का विस्तृत विवरण भेज दें ताकि मैं सर्व-साधारण के सामने, और आपके तथा अपने प्रतिद्वन्द्वियों के वाद-विवाद के समय लेनिन के विचारों का समर्थन कर सकूं।"

एक बार लेनिन को इटली के कुछ श्रमिकों ने एक पत्र भेजा था जिसमें लिखा था: "वेरोना के श्रमिक आपकी तथा समस्त सोवियत सरकार की अनेकानेक वर्षों तक समृद्धि की कामना करते हैं।"

एक दूसरे पत्र में कहा गया था, "मैंने समाचारपत्रों में रूसी सोवियत संयुक्त समाजवादी प्रजातंत्र के सर्वहारा वर्ग के महान् नेता व्लादीमिर इल्यीच उल्यानोव—लेनिन—के स्वास्थ्य के सम्बन्ध में पढ़ा है और इस दृष्टि से कि यदि उनके स्वास्थ्य को कुछ हो गया तो

रूसी सर्वहारा वर्ग को गम्भीर हानि होगी, मैं सर्वहारा होने के नाते रूसी सोवियत संयुक्त समाजवादी प्रजातंत्र की अखिल-संघीय केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति के प्रेसीडियम से प्रार्थना करूंगा कि वे इस अल्पख्यात औषधि का प्रयोग करने के सम्बन्ध में विचार करें। मुझे आशा है कि इससे महान् शिक्षक और साथी लेनिन को पूर्ण स्वास्थ्य-लाभ होगा और जनता के सामान्य कल्याण के लिए सर्वहारा वर्ग को बल मिलेगा।"

उन पत्र लेखकों की संख्या तो बहुत अधिक थी जिन्होंने लेनिन की बीमारी के दौरान में उन्हें अपना रक्त देने की इच्छा प्रकट की थी।

मारिया उल्यानोवा द्वारा "स्वतंत्र" रूस में गुप्त कार्य

जुलाई १९१७ के आरम्भ में लेनिन की तलाश

५ जुलाई की रात को सैनिक कैडेटों ने "प्रावदा" के कार्यालय पर छापा मारा परन्तु व्लादीमिर इल्यीच हाथ न लगे। वे उनके आने से केवल आधा घंटा पहले किसी सम्पादकीय काम से वहाँ उपस्थित थे। हमें अगले दिन तक इस छापे की कोई सूचना न मिल सकी। हम सो कर उठे ही थे कि य०म०स्वेर्दलोव हमें रात की घटना की सूचना देने आये और उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि लेनिन को कहीं जाकर छिप जाना चाहिए। यह स्पष्ट था कि मुद्रणालय पर छापा मारने के बाद पुलिस और भी बहुत कुछ करेगीजसके फलस्वरूप लेनिन के गिरफ़्तार हो जाने का डर था। स्वेर्दलोव ने लेनिन को अपनी बरसाती दी और दोनों ही बिना किसी के भाँपे हुए सड़क पर निकल गये। अब हम अपने उन अतिथियों की प्रतीक्षा के लिए तैयार हो गये जिन्हें हम देखना भी न चाहते थे। इस बात में हमें कोई भी सन्देह न था कि वे आयेंगे अवश्य। ज़ार के ज़माने में रात के समय इस प्रकार के छापों के तो हम अभ्यस्त थे, परन्तु "स्वतंत्र" रूस में यह लज्जा की बात थी।

उस दिन सायंकाल को कुछ देर बीते अपनी शान्त, निर्जन सड़क पर (हम पेत्रोग्राद की तरफ़ शिरोकाया सड़क के छोर पर रहते थे) हमने एक बड़ी मोटर लारी की पों पों सुनी। यह लारी हमारे दरवाज़े के बाहर आकर खड़ी हो गई। मैंने चिल्लाकर कहा "वे आ गये!" और मेरा अनुमान ठीक निकला। हम खिड़की की ओर गये और हमने देखा कि लारी ठीक मकान के बाहर रोक दी गई और सैनिक मुख्य द्वार की ओर बढ़े। हमने उनकी ऊंची ऊंची आवाज़ें—वे अनुचर अथवा दरबान से बात कर रहे थे—सुनीं, और दो ही तीन मिनट बाद हमारी घंटी बज उठी और दरवाज़े पर भड़भड़ाहट शुरू हो गई।

हमने तुरन्त दरवाज़ा खोल दिया क्योंकि हमें कोई बात छिपानी तो थी नहीं। दरवाज़ा खुलते ही कमरे में भयावह आकृति वाले कुछ सशस्त्र कैडेट तथा सैनिक घुस आये। वे हमें तलाशी का वारन्ट दिखाते ही तुरन्त उस व्यक्ति को ढूँढ़ने में लग गये जिसे वे पाना चाहते थे। गुप्त पुलिस का सहायक प्रधान तथा दो तीन अन्य अधिकारी और सैनिक सीधे उस कमरे में घुस गये जहाँ व्लादीमिर इल्यीच रहते थे। दूसरे सैनिक बाकी घर की तलाशी में जुट पड़े।

यद्यपि हमने उनसे कह दिया था कि व्लादीमिर इल्यीच यहाँ नहीं हैं फिर भी उन्होंने वे सब स्थान देखने शुरू कर दिये जहाँ किसी व्यक्ति के छिपने की गुंजाइश हो सकती थी—जैसे पलंगों के नीचे, बड़ी बड़ी अलमारियों के भीतर, खिड़की के परदों के पीछे, इत्यादि। उन्होंने हमसे चाभियाँ मांगी और जब मैंने बक्सों और ट्रंकों को खोल दिया तो वे सामान इधर उधर फेंकने और संगीनों से उसे कोंचने-कांचने लगे। शायद यह तो उन्होंने समझ ही लिया था कि कोई भी ट्रंक इतना बड़ा नहीं है जिसमें आदमी समा सकता हो। जैसे ही वे बक्सों का सामान देख चुके मैंने उसमें ताला लगा दिया।

परन्तु शीघ्र ही मुझे यह स्पष्ट हो गया कि इससे वे और भी अधिक क्रोधित हो उठे हैं। शायद उन्होंने यह समझा था कि "यदि वह संदूक़ बन्द कर रही है तो वह व्यक्ति ज़रूर उसके अन्दर होगा"। अतएव दूसरे सैनिकों ने तुरन्त ही मांग की कि मैं उसी संदूक़ को फिर से खोलूँ, और जब संदूक़ खोला गया तो फिर उन्होंने कोंचा-कांची आरम्भ कर दी। उन्होंने सन्दूक़ के सामानों को बिल्कुल न देखा। वे तो केवल एक ही चीज़ की तलाश कर रहे थे और वह थी "जर्मनी का जासूस" जिसे पकड़ने के लिए वे भेजे गये थे।

व्लादीमिर इल्यीच के कमरे की पूरी पूरी तलाशी ली गई और वहाँ गुप्त पुलिस के सहायक प्रधान तथा अन्य कुछ अधिकारी बराबर व्यस्त रहे। तमाम सामान इधर उधर तितर-बितर कर देने के पश्चात् जब उन्हें व्लादीमिर इल्यीच के कुछ काग़ज़-पत्र हाथ लगे तब उन्होंने हम लोगों से इस बात की जानकारी प्राप्त करने की कोशिश की कि वे हैं कहाँ। इस समय दो सैनिक लेनिन के पत्रों को एक मेज़ पर बैठ कर पढ़ रहे थे। इन पत्रों में से बहुत से तो युद्ध-स्थल में लड़ने वाले सैनिकों के पत्र थे जिनमें बड़े ओजस्वी शब्दों में व्लादीमिर इल्यीच के प्रति, जिन्होंने उस अभिशप्त युद्ध को समाप्त करने का रास्ता दिखाया था, कृतज्ञता का प्रकाशन किया गया था। मुझे यह पता था कि इन पत्रों में क्या क्या लिखा है, इसलिए जब मैंने उन सैनिकों की, जो उन्हें पढ़ रहे थे, मुखाकृति देखी तो मुझे ऐसा लगा मानो वे स्वयं आश्चर्य-चकित हो रहे हों। "अरे? हमारे ही साथियों ने, हमारे ही सैनिकों ने, खाइयों में से जर्मन के इस जासूस और देश-द्रोही को ऐसे पत्र लिखे हैं और हम इसे गिरफ़्तार करने के लिए भेजे गये हैं!"

एक अधिकारी तो किंकर्त्तव्यविमूढ़ ही हो रहा था। उसने हमसे प्रश्नों की झड़ी लगा दी। व्लादीमिर इल्यीच पहले कहाँ रहते थे?

वे क्या करते थे? उन्होंने कौन कौन सी पुस्तकें लिखी हैं? "क्या मैं उनकी कुछ पुस्तकें देख सकता हूँ?"—"हाँ हाँ आप इन्हें देखिये। क्या आप इन्हें पढ़ना भी चाहेंगे?" मेरा उत्तर था। "क्या मैं इन्हें ले जा सकता हूँ?" उसने पूछा। परन्तु उसके साथियों ने उसके कानों में कुछ फुसफुसाया शायद यह कि ऐसा करना ठीक नहीं है। और फिर उसने कुछ न कहा।

अफ़सरों को इस बारे में कुछ पता न चल सका कि लेनिन कहाँ हैं। एक अफ़सर तो नदेज्हदा कोन्स्तानतीनोवना से प्रश्न पर प्रश्न किये जा रहा था परन्तु जब मैंने बीच ही में यह कह कर उसकी बात काटी कि "पुराने ज़ार क़ानूनों में भी पत्नी को अपने पति के साथ विश्वासघात करने के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता था" तो उसे चुप होना पड़ा। परन्तु किसी प्रकार उन्हें यह पता चल गया था कि कुछ ही पहले व्लादीमिर इल्यीच फ़िनलैंड में बोंच-ब्रुयेविच के पास ठहरे हुए थे। और उनके लिए यह जानकारी लाभकर सिद्ध हुई।

तमाम तलाशी ले लेने के बाद, जिसमें उनके हाथ कुछ भी न लगा था, वे अफ़सर तथा अन्य व्यक्ति नदेज्हदा कोन्स्तानतीनोवना, म०त०एलीज़ारोव (क्योंकि उनमें से किसी का यह विचार था कि वे लेनिन जैसे ही दिखाई पड़ रहे हैं) तथा हमारी एक नौकरानी को साथ लेकर वहाँ से चल दिये। हमारी नौकरानी उन "सज्जन" का नाम न बता सकी जिनके यहाँ वह काम करती थी और इस बात से अफ़सरों को विश्वास हो गया कि वह कुछ न कुछ छिपा रही है। परन्तु वे सब उसी रात को छोड़ दिये गये। कारण यह था कि उस अत्युत्तेजित अफ़सर के अफ़सर ने ग़लत व्यक्ति को साथ ले आने के लिए उसे अच्छी खासी डाट पिलाई थी।

कुछ दिन बीतने के बाद एक रोज़ सायंकाल ५ बजे हमारी

सड़क फिर सिपाहियों से भर गई और वे फिर हमारे मकान की तलाशी लेने लग गये। इस समय वे दिन रहते आ गये थे। अतएव वहाँ तमाशा देखने वालों की भी भीड़ लग गई। इस तलाशी की अध्यक्षता एक युवक अफ़सर कर रहा था। पहली तलाशी में भी वही आया था। उस समय वह ख़ुश दिल नज़र आ रहा था परन्तु इस बार दल का नेता होने के कारण और अपनी सम्भावित असफलता से खीझ कर वह हम सब पर बरस पड़ा और हमसे यह जानना चाहा कि लेनिन हैं कहाँ। उसने यह भी कहा कि उसे इत्तिला मिली है कि लेनिन यहीं हैं। "वे यहाँ नहीं हैं। आप ख़ुद ही देख लें।" अपनी तलाशी आरम्भ करते समय वह रसोईघर में घुसा। हमारी नौकरानी ज़रा कमज़ोर दिमाग़ की थी और जब उससे पूछा गया कि अभी हाल ही में इस मकान में कौन कौन लोग आये थे तो वह कुछ बड़बड़ाती हुई पिछले दरवाज़े की तरफ़ भागी। बाद में उसने बताया कि उसे कोई ऐसी चीज़ याद आ गई थी जिसे उसे दूकान से ख़रीदना था। वे उसे वापस ले आये और उस अधिकारी ने यह विश्वास नहीं किया कि वह केवल दूकान जा रही थी। उसे यह विश्वास था कि वह व्लादीमिर इल्यीच को सचेत करने के लिए किसी दूसरे मकान को जा रही है। वह नौकरानी पर चिल्लाया परन्तु उसने जवाब दिया "आप मुझे क्यों तंग कर रहे हैं। मैं कुछ नहीं जानती।" अफ़सर ने कहा कि उसे पूरी इमारत की तलाशी लेनी पड़ेगी। इस पर म० त० एलिज़ारोव ने उससे पूछा "क्या आपके पास ऐसा करने की अनुमति है?" थोड़ी देर तक तो अफ़सर सोच-विचार करता रहा लेकिन बाद में बड़ी अनिच्छापूर्वक उसने एलिज़ारोव की इस बात से सहमति प्रकट की कि बिना वारन्ट के इमारत भर की तलाशी लेने का उसे कोई अधिकार नहीं है। अधिकारी इमारत घेर लेने, किसी को बाहर न जाने देने और साथ ही पास पड़ी हुई

खाली ज़मीन की तलाशी लेने के आदेश देने के पश्चात् अपने उच्चाधिकारियों को टेलीफ़ोन करने के लिए नीचे दौड़ा। खाली ज़मीन पर लकड़ी और रद्दी चीज़ों के ढेर लगे थे और वहाँ की तलाशी लेना आसान काम न था। सिपाही इधर-उधर चक्कर लगाते, कभी इस लकड़ी को उठाते कभी उसके नीचे देखते। वे तहखाने में गये और वहाँ का भी कोना कोना छान मारा परन्तु उन्हें कोई चीज़ हाथ न लगी। अफ़सर बौखलाया हुआ था। वह फ़िनलैंड में बोंच-ब्रुयेविच के घर भी गया था जहाँ किसी ने उसे यह बता दिया था कि व्लादीमिर इल्यीच इस समय पीटर्सबर्ग के अपने मकान में होंगे।

गुप्त पुलिस विभाग के प्रधान-कार्यालय से यह आदेश प्राप्त हो गये थे कि वे लोग हम से ठीक नीचे वाले मकान की, जहाँ साथी अलेक्सी (पुशास) रह रहा था, तलाशी लें। उन्होंने वहाँ की पूरी पूरी तलाशी न ली — केवल कमरे देखे, उपस्थित व्यक्तियों के कुछ काग़ज़-पत्रों पर निगाह डाली और अन्त में उन्हें विश्वास हो गया कि लेनिन वहाँ नहीं हैं।

इस प्रकार कुछ समय बीत गया। हमारे मकान में दो सिपाही छोड़ दिये गये थे। हमने उन्हें चाय पर आमन्त्रित किया और उनसे बातचीत छेड़ दी। उन्होंने बड़ी ख़ुशी ख़ुशी मांस लगी रोटियों पर हाथ साफ़ किये और बातचीत के दौरान में हमें बताया कि उनके पास थोड़ी सी ज़मीन है और वे युद्ध से ऊब उठे हैं। परन्तु जब हमने उन्हें व्लादीमिर इल्यीच के बारे में बताया कि वे कौन हैं और किस उद्देश्य के लिए संघर्ष कर रहे हैं तो उन्हें उन पर विश्वास नहीं हुआ। यह विचार कि वे जर्मनी के जासूस हैं उनके दिमाग़ में जड़ जमा चुका था। वे युद्ध के दौरान में जर्मनी से होकर की जाने वाली व्लादीमिर इल्यीच की यात्रा को भूले नहीं थे। "उन्होंने दूसरों को अपने देश से

होकर क्यों नहीं जाने दिया? उन्हीं के साथ यह रिआयत क्यों की गई?" — उनका तर्क था।

जब दूसरी बार तलाशी हो रही थी उस समय नदेज्हदा कोन्स्तान-तीनोवना, जो विबोर्ग हलक़े में काम करती थी, घर लौटी और जब उसने वहाँ के रंग ढंग देखे तो उल्टे पैर वापस चली गई।

इसके पश्चात् हमारे यहाँ गुप्त पुलिस ने तीसरी बार छापा मारा। इस बार हम एक दूसरे मकान में रह रहे थे। मार्क तिमोफ़े-येविच का एक भतीजा हमसे मिलने आया हुआ था। उसे उस भवन में कोई न जानता था। किसी का विचार था कि वह सूरत शक़ल में व्लादीमिर इल्यीच से मिलता-जुलता था। अतएव रात के अंधेरे में हमें पुलिस के एक बार फिर दर्शन हुए और फिर हमारे घर का कोना कोना छाना गया। मगर इस बार भी उन्हें कोई सफलता न मिली।

मारिया उल्यानोवा द्वारा

लेनिन की हत्या का पहला प्रयास

१ (१४) जनवरी १९१८ को व्लादीमिर इल्यीच मिखाइलोव्स्की राइडिंग स्कूल में समाजवादी सेना के पहले दस्ते के सामने, जो युद्ध में जा रहा था, भाषण कर रहे थे। मैं तथा स्विस साथी प्लैटेन उन्हें सभा-मंडप की ओर ले जा रहे थे। सभा के बाद राइडिंग स्कूल से बाहर निकल कर हम स्मोल्नी संस्था में वापस आने के लिए एक बन्द कार में चढ़े। हम पचास गज़ ही बढ़े होंगे कि हमें पीछे से गोलियों की आवाज़ें सुनाई दीं। गोलियाँ हमारी कार पर पटापट पड़ रही थीं। मैं चिल्लाई "कोई हम पर गोली चला रहा है"। प्लैटेन ने व्लादीमिर इल्यीच को नीचे सुरक्षित स्थान की ओर झुकाया। लेनिन का विचार था कि हमें ग़लतफ़हमी हुई है। परन्तु ड्राइवर को कोई सन्देह न था। उसने तुरन्त गाड़ी तेज़ की और सबसे निकट कोने की तरफ़ उसे मोड़ते हुए उसने पूछा "आप ठीक तो हैं?" लेनिन ने पूछा "क्या सचमुच हम पर कोई गोली चला रहा था?"—"बेशक"—ड्राइवर ने कहा "मैं तो समझा कि अब मरे। परन्तु आश्चर्य है कि हम बचे कैसे। यदि गोलियों

ने टायर को छेद दिया होता तब तो बचने की कोई गुंजाइश न थी। कोहरे के कारण हम तेज़ी से बढ़ भी न सकते थे—ऐसा करना खतरनाक हो सकता था।"

वास्तव में हमारे चारों ओर पेत्रोग्राद का कोहरा था।

जब हम स्मोल्नी पहुँचे उस समय हमने वहाँ अपनी कार देखी। वह गोलियों के कारण स्थान स्थान पर पिचकी हुई थी। कुछ गोलियाँ तो कार के पिछले भाग को छेदती और कार के आगे लगे हुए शीशे को तोड़ती हुई बाहर निकल गई थीं। उस समय हमने देखा कि साथी प्लैटेन के हाथ से खून बह रहा है। जैसे ही उन्होंने लेनिन को अपने हाथों से नीचे झुकाया कि एक गोली आकर उन्हें लग गई।

"हाँ यह दैवी घटना हो थी कि हम सब बाल बाल बच गये" हम सबका यही एक मत था जब हम लेनिन के कमरे में जाने के लिए सीढ़ियाँ चढ़ रहे थे।

मारिया उल्यानोवा द्वारा

छुट्टियों में

१९१८ की गर्मी के आरम्भ में जब हम छुट्टियों के बारे में सोच रहे थे उस समय व० द० बोंच-ब्रूयेविच ने व्लादीमिर इल्यीच को तरासोवका ग्राम के अपने मकान में ठहरने के लिए आमंत्रित किया। बोंच-ब्रूयेविच तथा उनका परिवार जिस मकान में रह रहा था उसके ठीक बगल में स्थित मकान के दूसरी मंज़िल में दो कमरे खाली थे। हमें उन्हीं के साथ भोजन करना था।

लेनिन इन्स्टीट्यूट में एक टिप्पणी है जो प्रत्यक्षत: किसी सभा में लिखी गयी थी। लेनिन का यह स्वभाव था कि वे अपने साथियों को ऐसी टिप्पणियाँ लिख दिया करते थे — वे सभाओं में बातचीत करने पर आपत्ति करते थे।

इस टिप्पणी में लिखा हुआ था —

१. गाँव जाने का क्या तय रहा?
२. क्या हम आगामी रविवार को जा सकते हैं?
३. दो या तीन?
४. क्या कार वहाँ हमारा इन्तज़ार करेगी?

बोंच-ब्रूयेविच ने इन प्रश्नों का संतोषप्रद उत्तर दिया और बताया कि उन्होंने निर्देश दे दिये हैं कि पलँगों पर नई चादरें बिछा दी जायं।

उन्होंने कहा कि "मैंने थोड़े आलू ख़रीद लिये हैं और दूध तथा कुछ अन्य खाना है ही।"

और ग्राम क्षेत्र में छुट्टियाँ बिताने का निश्चय हो गया। हम वहाँ केवल दो या तीन बार ही ठहरे थे क्योंकि यद्यपि बोंच-ब्रूयेविच हमारा बहुत अधिक सत्कार करते थे, फिर भी लेनिन को छुट्टियाँ एकान्त में ही बिताना अधिक पसंद था।

उन्होंने स्तरसुदेन (फ़िनलैंड) से, जहाँ वे १९०७ की गर्मियों में ठहरे हुए थे, माता जी को लिखा था कि "यह बहुत सुन्दर स्थान है। नहाना-धोना, घूमना-घामना। कोई विशेष काम नहीं। चारों ओर कोई शोर-गुल भी नहीं। इस समय मुझे एकान्त और पूर्ण विश्राम की सख़्त ज़रूरत है।"

हम प्रात:काल घर से निकल जाते और जंगलों में दूर दूर तक चले जाते जहाँ लोगों से मिलने-जुलने और बातचीत करने की सम्भावना बहुत कम रहती थी। वस्तुत: छुट्टियों में व्लादीमिर इल्यीच इस प्रकार की बातचीत बराबर बराया करते क्योंकि नगरों में अधिकतर उन्हें लोगों से मिलने जुलने और इनसे बातें करने में ही अपने समय का उपयोग करना होता था। तरासोवका में बहुत से लोग थे। अतएव व्लादीमिर इल्यीच को वास्तविक छुट्टी का आनन्द न मिल पाता। सबसे ख़राब बात तो यह थी कि जहाँ वे ठहरे हुए थे वहाँ मच्छड़ों की बहुतायत थी। व्लादीमिर इल्यीच को उनसे बड़ी परेशानी होती। उनका वहाँ खिड़की पर बैठना कठिन हो जाता क्योंकि उसमें जालियां न लगी होने के कारण ये मच्छर कमरों में भर जाते और अपनी भनभनाहट आरम्भ कर देते। एक दिन मच्छड़ों के कारण उन्हें रात भर करवटें बदलनी पड़ीं और सुबह होते ही वे सीधे नगर की ओर चल दिये। उसके बाद उन्होंने तरासोवका में कभी भी छुट्टियाँ नहीं बिताईं।

चूंकि देहातों में ठहरने के लिए अन्य कोई व्यवस्था न थी अतएव हमने नगर के बाहर कुछ घंटे बिताने का निश्चय किया। वहाँ हमें ताजी हवा मिल सकती थी और छुट्टी का वास्तविक आनन्द भी प्राप्त हो सकता था। हम अपने साथ खाने के लिए मांस लगी कुछ रोटियाँ ले गये और वहाँ इधर उधर घूमने का आनन्द लेने लगे। टहलते टहलते हम एक ऐसे स्थान पर पहुँचे जो बारविखा के निकट मास्को नदी के किनारे था। यह स्थान लेनिन को बड़ा प्रिय था। यहाँ हमने कुछ उँचाई पर एक एकान्त स्थान चुना जहाँ से नदी तथा उसके इर्द-गिर्द के खेतों का मनोरम दृश्य दिखाई पड़ता था। हम यहाँ सायंकाल तक रहे। लेनिन का ड्राइवर, साथी गिल, उस स्थान के निकट विश्राम करने लगा था। उस समय लेनिन का कोई भी अंग-रक्षक न था। शीघ्र ही हम उस स्थान से परिचित हो गये और हमें यह भी पता लग गया कि उस स्थान तक पहुँचने वाले कौन कौन से ऐसे पैदली पुल हैं जिनपर कार द्वारा निरापद जाया जा सकता है। हमें इस मार्ग का पता एक कटु अनुभव के बाद, जब एक पुल को बुरी तरह से क्षति पहुँची थी, लगा था। व्लादीमिर इल्यीच ने उस समय इस बात की ज़िद की थी कि उस स्थान को छोड़ने के पहले हमें, जहाँ तक हमसे हो सके, उस पुल की मरम्मत कर लेनी चाहिए।

कभी कभी जब हम लोग अपनी कार पर होते उस समय किसानों के सुन्दर सुन्दर बालों वाले कुछ बच्चे कार तक दौड़ते हुए आते और हमसे कार पर चढ़ा लेने को ज़िद किया करते। व्लादीमिर इल्यीच को बच्चों से प्रेम था। अतएव वे ड्राइवर को गाड़ी रोकने और बच्चों को बिठा लेने की आज्ञा दे देते। शीघ्र ही कार बच्चों से ठसाठस भर जाती और वे उसमें शोर-गुल मचाते तथा क़हक़हे लगाते। हम

इन बच्चों को एक आध मील तक ले जाते और फिर उतार देते। बच्चे भी खुशी खुशी चिल्लपों मचाते हुए अपने घरों तक वापस दौड़ जाते।

इस प्रकार का मनोरंजन कुछ आदिकालीन सा था परन्तु उस समय मन-बहलाव के किसी दूसरे साधन की व्यवस्था करना असम्भव सा था। कुछ भी हो जब हम घर लौटते उस समय ताज़े होते, संतुष्ट होते और हमारा मस्तिष्क सुखद स्मृतियों से भरा होता।

न. क. क्रुप्स्काया

लेनिन
विषयक संस्मरणों से

इल्यीच का बचपन तथा उनके प्रारम्भिक वर्ष

व्लादीमिर इल्यीच के बचपन के बारे में लिखते समय मैं मुख्यतया उन्हीं बातों का उल्लेख करूंगी जो उन्होंने मुझे हमारे वैवाहिक जीवन के दौरान में बताई थीं। यह ठीक है कि क्रान्तिकारी कार्यों में लगे रहने के कारण उन्हें अपने विगत जीवन पर प्रकाश डालने का अवसर कम मिलता था फिर भी हम थे तो उसी पीढ़ी के (मैं उनसे एक वर्ष बड़ी थी); और न्यूनाधिक एक ही वातावरण में बड़े भी हुए थे। हम इस वातावरण को विभिन्न प्रकार के बुद्धिजीवियों का वातावरण कह सकते हैं। उन्होंने हमें समय समय पर अपने बारे में जो थोड़ी सी बातें बताई थीं उनसे मैं बहुत कुछ समझ सकती थी।

व्लादीमिर इल्यीच सिम्बीर्स्क के वोल्गा नगर में २२ अप्रैल १८७० को पैदा हुए थे वे वहां १७ वर्ष की उम्र तक रहते रहे। सिम्बीर्स्क एक गुबर्निया का नगर था और आज जब हम उन दिनों के सिम्बीर्स्क की सड़कों, मकानों तथा वातावरण के नक्शे देखते हैं तो हमें ऐसा लगता है कि वह स्थान बड़ा शान्तिपूर्ण रहा होगा। उस समय वहां न तो कोई कल-कारख़ाने थे और न कोई रेलवे लाइन ही। रेडियो तथा टेलीफ़ोन की तो बात ही क्या।

इल्यीच का वास्तविक नाम उल्यानोव था। लेनिन नाम तो

उन्होंने बहुत बाद में उस समय अपनाया था जब वे क्रांतिकारी हो चुके थे और जब उन्होंने लेखादि लिखना आरम्भ कर दिया था। नाम बदलने का मुख्य कारण यह था कि उन्हें प्राय: अपने भूमिगत कार्यों के लिये एक कल्पित नाम का सहारा लेना पड़ता था। अब लेनिन के संस्मरणों के अनुसार सिम्बीर्स्क नगर का नाम उल्यानोव्स्क पड़ गया है। आज उल्यानोव्स्क शिक्षा का एक केन्द्र है जहां बहुत से विद्यार्थी अध्ययन करते हैं। वहां लेनिन संग्रहालय की भी एक शाखा है।

व्लादीमिर इल्यीच के पिता इल्या निकोलायेविच आस्त्राखान के एक मध्यम श्रेणी के परिवार के व्यक्ति थे। वे ग़रीबी में गुज़र बसर करते और इसीलिए शिक्षा का मार्ग उनके लिये अवरुद्ध था। ७ वर्ष की अवस्था में वे अनाथ हो गये और उनके भरण-पोषण का भार उनके बड़े भाई के कन्धों पर पड़ गया, जिन्होंने उन्हें पढ़ाने-लिखाने में अपनी सारी पूंजी लगा दी। इल्या निकोलायेविच एक प्रतिभाशाली तथा स्वभाव से परिश्रमी व्यक्ति थे और इसी कारण उन्होंने अपने जीवन में बड़ी तरक़्क़ी की। वे पाठशाला के स्नातक थे और बाद में कज़ान विश्वविद्यालय में भी दाखिल हुए थे। विश्वविद्यालय का पाठ्य-क्रम उन्होंने १८५४ में पूरा किया। तत्पश्चात् वे समृद्धों के पेन्ज़ा कालेज में भौतिकशास्त्र के और गणित के अध्यापक हुए। इसके बाद उन्होंने निज़्नी-नोवगोरद में लड़के लड़कियों की पाठशाला में भी कार्य किया। बाद में वे पहले सिम्बीर्स्क की सार्वजनिक पाठशालाओं के इन्स्पेक्टर और अन्तत: डाईरेक्टर बना दिये गये। इल्या निकोलायेविच ने कज़ान विश्वविद्यालय में उस समय स्नातक परीक्षा पास की थी जब क्रीमिया का युद्ध अपनी चरम सीमा पर था। इस युद्ध ने यह बात पूर्ण रूप से स्पष्ट कर दी थी कि कम्मीगिरी की प्रथा अत्यधिक भ्रष्ट है और निकोलस प्रथम के अधीन ज़ारप्रशासन क्रूरता की सीमा पार कर चुका है। यह वह काल था जबकि कम्मीगिरी तथा इस प्रथा के अधीन

जीवन-यापन की कड़ी आलोचनाएं की जाती थीं। परन्तु अभी तक क्रान्तिकारी आन्दोलन को कोई बल नहीं मिला था।

इल्या निकोलायेविच की प्रतिभा तथा उनके स्वभाव की जानकारी के लिए "सोव्रेमेन्निक" नामक पत्रिका पढ़ना चाहिए। इस पत्रिका का सम्पादन नेक्रासोव तथा पनायेव ने संयुक्त रूप से किया था। तथा इसमें बेलिन्स्की, चेरनिशेव्स्की तथा दब्रोलुबोव ने अपने अपने लेख प्रकाशित करवाये थे। व्लादीमिर इल्यीच तथा उसकी सबसे बड़ी बहन आन्ना प्राय: बताया करती कि इल्या निकोलायेविच नेक्रासोव की कविताओं को कितना पसन्द करते थे। अध्यापक के रूप में दब्रोलुबोव की कृतियां वे विशेष रूप से पढ़ा करते। उस काल में अध्यापन का पेशा कम्मीगिरी के विरुद्ध मोर्चा संघटित करने का एक अखाड़ा था। १८५६ में दल ने जिसने "महान जीवित रूसी भाषा का कोष" का संकलन किया था, कृषकों के मध्य साक्षरता का तीव्र विरोध किया था। स्कूलों में बूर्सा पद्धति* के अनुसार शिक्षा दी जाती। स्वयं पाठशालाओं में भी, जहां समृद्ध लोगों तथा अधिकारियों के बच्चों को ही शिक्षा मिलती थी, बेंत लगाने की प्रथा आम तौर से प्रचलित थी।

हम सब जानते हैं कि उन दिनों दब्रोलुबोव ने कम्मीगिरी के ज़माने में दी जाने वाली शिक्षा-प्रणाली के खिलाफ़ कितनी सख्त आवाज़ उठाई थी। १८६१ में, २५ वर्ष की अवस्था में उसकी मृत्यु हुई। १८५७ में प्रकाशित उसके "शिक्षा के क्षेत्र में अधिकार का महत्व" शीर्षक लेख में कम्मीगिरी की प्रथा के अधीन स्कूलों में व्याप्त गुलामी की दशाओं में अध्यापक के अधिकार की तुलना उस अधिकार से की गई थी जो किसी ऐसे अध्यापक को मिला हो जिसने अपने विद्यार्थियों का सम्मान

---

*बूर्सा — ज़ारकालीन रूस की एक धार्मिक शिक्षण संस्था जिसकी विशेषताएं थीं—सख्ती करना, दंड देना और क्रूरता बरतना—सम्पादक।

पाया हो। दब्रोलुबोव ने अपने लेख में विश्वास उत्पन्न करने के संबंध में पिरोगोव का उद्धरण दिया था जो इस प्रकार है: "...किसी व्यक्ति में विश्वास आसानी से नहीं उत्पन्न किया जा सकता। 'विश्वास केवल उन्हीं व्यक्तियों में पैदा हो सकता है जिन्हें बाल-काल से ही स्वयं अपना सूक्ष्म निरीक्षण करने की शिक्षा मिली हो, जिन्हें बचपन से इस बात की शिक्षा मिली हो कि सत्य क्या है, ईमानदारी के साथ उसे किस प्रकार व्यवहार में लाया जा सकता है और उन्हें अपने अध्यापकों तथा स्कूल के साथियों के साथ किस प्रकार खुल कर तथा निष्कपटता के साथ बर्ताव करना चाहिए'।" दब्रोलुबोव ने आगे कहा है कि "प्राय: विद्यार्थियों को अध्यापकों की विद्याभिमानता के कारण नुक्सान उठाना पड़ता है। अध्यापक होने के नाते वह विद्यार्थी को अपनी ऐसी निजी वस्तु समझने लगता है जिसके साथ इच्छानुसार कोई भी सुलूक किया जा सकता है।" परन्तु ऐसा करने में "वह एक आवश्यक बात भूल जाता है—जिन बच्चों को वह शिक्षा दे रहा है उनका वास्तविक जीवन और उनका स्वभाव..." इस लेख में दब्रोलुबोव ने इस बात की बड़े तीव्र शब्दों में भर्त्सना की थी कि विद्यार्थियों को गुलामों और अंधों की भांति अध्यापकों की अधीनता में क्यों रखा जाता है? उसने लिखा था, "क्या यह बताने की भी कोई ज़रूरत है कि बिना शर्त आज्ञा पालन कराने की ज़िद से बच्चे के आचरण का स्वाभाविक विकास कितना अवरुद्ध हो जाता है!"

इसी लेख में दब्रोलुबोव ने कहा था कि यदि बिना शर्त आज्ञा पालन वाली बात पर दृष्टि डाली जाय तो यह आवश्यक है कि अध्यापक में भी बिना शर्त निर्दोषिता होनी चाहिए। उसने लिखा था: "यदि हम यह मान भी लें कि अध्यापक सदा ही विद्यार्थी के व्यक्तित्व से ऊपर रहेगा (परन्तु ऐसा किसी भी दशा में सदैव नहीं होता) तो वह समस्त पीढ़ी से तो ऊपर नहीं उठ सकता। बच्चे को नये वातावरण

में रहना है। उसके जीवन-यापन की दशाएं वही नहीं होंगी जो २० — ३० साल पहले तब थीं जब स्वयं उसका अध्यापक विद्यार्थी के रूप में पढ़ रहा था। साधारण अध्यापक नये युग की आवश्यकताओं का न केवल पूर्वानुमान ही नहीं करता अपितु उन्हें समझ भी नहीं पाता और उन्हें बेकार की चीज़ मानता है।"

इस लेख में दब्रोलुबोव ने शल्य-चिकित्सक तथा शिक्षक प्रोफ़ेसर पिरोगोव के सुविचारों को अपनाये जाने पर ज़ोर दिया। परन्तु जब प्रतिक्रियावादियों से प्रभावित हो जाने के बाद पिरोगोव ने इस बात पर ज़ोर दिया कि शान्ति और व्यवस्था के प्रति सम्मान की भावना पैदा करने के निमित्त विद्यार्थियों को सज़ा दी जानी चाहिए (जिस में बेंत लगाने और स्कूल से निकाले जाने की सज़ा भी सम्मिलित है) तो दब्रोलुबोव ने अपनी पूरी शक्ति के साथ उसकी भी भर्त्सना की थी।

नेक्रासोव ने, जिनकी रचनाओं के शौक़ीन लेनिन के पिता, इल्या निकोलायेविच थे, "दब्रोलुबोव की प्रशंसा में" एक कविता लिखी थी जिसका भाव इस प्रकार था—

कभी न पूरी कीं इच्छाएँ अपने मन को,
तुम स्वदेश को प्यार रहे करते नारी सा—
अपनी चाहें,
अपनी कला,
और श्रम-कौशल जैसे उस पर वार दिया था;
शुद्ध और निर्मल आत्मायें
तुमने कर दीं एकत्रित माँ के मंदिर में,
और त्रस्त, संतप्त देश का आवाहन कर
स्वप्न कि सौंपे नव-जीवन के,

सुख-समृद्धि के,
स्नेह-प्यार के,
और, अलौकिक-स्वतंत्रता के।
किन्तु, न समय अधिक मिल पाया
और, दुखद-अंतिम क्षण आया —
हाय, मृत्यु ने प्राण हर लिये —
रह न गया मस्तिष्क कि जिसकी
वाणी में थी शक्ति अनूठी —
रह न गया वह हृदय कि जो
कलपा-तड़पा
इस मानवता को मुक्ति दिलाने के
हित सत्वर।

इल्या निकोलायेविच दब्रोलुबोव की बड़ी प्रशंसा करते जिसकी विचारधारा ने सिम्बीर्स्क गुबर्निया में सार्वजनिक स्कूलों के डाइरेक्टर के रूप में उनके कार्य में, तथा उनके पुत्र, लेनिन, और अन्य बच्चों की, जो सभी क्रान्तिकारी हो गये थे, पढ़ाई-लिखाई की व्यवस्था करने में उनकी बड़ी मदद की थी और वे उस विचारधारा से बड़े प्रभावित हुए थे।

जिस समय इल्या निकोलायेविच ने सिम्बीर्स्क गुबर्निया में काम करना आरम्भ किया उस समय वहां के प्राय: सभी किसान निरक्षर थे। परन्तु उनके प्रयासों के फलस्वरूप उस गुबर्निया के स्कूलों की संख्या बढ़ कर ४५० हो गई। उन्होंने अध्यापकों के बीच रहकर भी बहुत काम किया। स्कूल केवल आदेश देकर ही नहीं खोले जा सकते थे। इसके लिए बहुत कुछ करना पड़ता था। एतदर्थ इल्या निकोलायेविच को गांव गांव की खाक छाननी पड़ती, बैलगाड़ियों पर सफ़र करना

पड़ता और रात कहीं किसी गन्दी सराय में काटनी पड़ती। साथ ही स्कूल खोलने के लिए उन्हें स्थानीय अधिकारियों से घंटों बहस करनी पड़ती तथा किसानों को भी समझाना-बुझाना पड़ता। इल्यीच ग्राम-जीवन के बारे में अपने पिता की कहानियाँ सुना करते। गांव के बारे में बालक इल्यीच ने अपनी आया से, जिससे वह बड़ा स्नेह करता था, और अपनी माता से, जो गांव में ही इतनी बड़ी हुई थी, विभिन्न प्रकार की जानकारी प्राप्त की थी।

इस वातावरण के बीच इल्यीच ने ग्राम-जीवन की ओर विशेष ध्यान दिया। क्रान्तिकारी के रूप में उनके द्वारा किये गये सभी कार्यों पर गांवों ने अपना विशेष प्रभाव डाला था और जब उन्होंने मार्क्स-वाद का अध्ययन कर लिया उस समय भी ग्राम-जीवन संबंधी अपने ज्ञान के कारण वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे थे कि हमारे पिछड़े हुए देश रूस में भी जहां गरीब किसानों की संख्या अत्यधिक है, समाजवाद की विजय होगी। इसी ज्ञान के कारण उन्होंने अपने संघर्ष की ठीक ठीक रूप रेखा तैयार करने में भी, जिसके कारण हमारे देश को विजय मिली, सफलता प्राप्त की।

इल्या निकोलायेविच आस्त्राखान में बड़े हुए। वे एक सामाजिक प्राणी थे। सार्वजनिक स्कूलों के डाइरेक्टर के रूप में उन्होंने बहुसंख्यक "इनरोद्त्सी" (पराये) लोगों में ज्ञान का प्रसार करने की ओर विशेष ध्यान दिया।

१९३७ में मुझे इवान ज़ैतसेव का एक पत्र मिला था। ज़ैतसेव पोलेवो-सुन्दिर (चुवाश स्वायत्त प्रजातंत्र) में एक अध्यापक थे। उन्होंने अपने जीवन के ७७ वर्षों में से ५५ वर्ष चुवाश स्कूलों में अध्यापन कार्य करने में बिताये। अब उन्हें "श्रम-वीर" तथा "प्रतिष्ठित शिक्षक' की पदवियों से सम्मानित किया गया है। वे एक सक्रिय सार्वजनिक कार्यकर्ता हैं। उन्होंने उन कक्षाओं को पढ़ाया जिनका उद्देश्य निरक्षरता

तथा अर्द्ध-साक्षरता दोनों ही के स्थान पर साक्षरता लाना था। वे शिक्षा क्षेत्र में काम करनेवालों के संघ के चेयरमैन और ग्राम सोवियत तथा स्थानीय ट्रेड-यूनियन समिति के सदस्य थे। उन्होंने कृषि आंकड़े एकत्र किये थे, संगणना काल में अनुदेशक के रूप में कार्य किया था और अन्तरिक्ष-विज्ञान-केन्द्रों को भी सहायता दी थी, आदि आदि।

इवान ज़ैतसेव के पिता एक खेतिहर मज़दूर थे। १३ वर्ष की अवस्था तक वे बत्तखों को पालते रहे। उन्हें पढ़ने लिखने का चाव था। अतएव स्कूल में भर्ती होने के लिए वे घर से भाग गये। सिम्बीर्स्क पहुंचने में उन्हें दो दिन लगे और यद्यपि शिक्षण-वर्ष आरम्भ हो चुका था फिर भी उन्हें इल्या निकोलायेविच उल्यानोव की सहायता से, जिन्हें उस बच्चे पर दया आ गई थी, एक स्कूल में दाखिला मिल गया। अपने एक पत्र में ज़ैतसेव ने एक घटना का उल्लेख किया है। यह घटना उसके स्कूल के प्रथम वर्ष की है। एक दिन जब गणित का घंटा चल रहा था इल्या निकोलायेविच कक्षा में आये। उन्होंने ज़ैतसेव को बुलाया और उन्हें बोर्ड पर एक प्रश्न हल करने को दिया। जब ज़ैतसेव सवाल लगा चुके और उन्होंने उसके करने का तरीक़ा भी उन्हें समझा दिया तो इल्या निकोलायेविच ने उससे कहा था "शाबाश, अब अपनी जगह पर जाओ"।

इस पत्र में आगे लिखा था कि "विश्राम के घंटे के बाद हम लोगों से एक निबन्ध लिखने को कहा गया जिसका विषय था 'आज की कोई बात जिसका तुम पर प्रभाव पड़ा हो'। अध्यापक ने हमें बताया था कि हम स्कूल जीवन की किसी ऐसी घटना पर कुछ लिखें जिसे हम आवश्यक समझते हों। संक्षेप में, हम अपनी इच्छानुसार अपने भाव व्यक्त कर सकते थे।

"विद्यार्थियों ने विषय सोचने में कुछ मिनट लगा दिये। कुछ लोगों ने कुछ हास्यात्मक घटनायें उठाईं तो कुछ ने किसी अन्य बात

पर लेखनी चलाई। मुझे विषय चुनने में कोई कठिनाई नहीं हुई क्योंकि मैं इल्या निकोलायेविच का अपनी गणित कक्षा में आना और उन्हें सवाल हल करने का तरीक़ा बताना न भूल पाया था। अतएव मैंने उसी घटना के बारे में लिखने का निश्चय किया।

"मैंने लिखा: 'आज प्रात: नौ बजे डाइरेक्टर उल्यानोव पधारे। मुझे ब्लैक-बोर्ड पर बुलाया गया और एक सवाल करने को दिया गया जिसमें एक शब्द "ग्रिवेनिक"* बार बार आया था। मैंने सवाल लिख लिया, उसे पढ़ा और इस बात पर विचार करने लगा कि इसे कैसे हल करना चाहिए। डाइरेक्टर उल्यानोव ने मुझसे कई सवाल किये और मैंने देखा कि जब भी वे 'ग्रिवेनिक' शब्द पर आते तो उन्हें 'र' का उच्चारण करने में कठिनाई होती। 'ग्रिवेनिक' के स्थान पर वे 'घिवेनिक' कहा करते थे। यह मुझे कुछ विचित्र सा लगा। मैं सोचने लगा कि यहां विद्यार्थी हूं फिर भी 'र' का शुद्ध उच्चारण कर लेता हूं जब कि डाइरेक्टर, जो एक महत्वपूर्ण और विद्वान व्यक्ति हैं, 'र' का उच्चारण नहीं कर पाते और 'घ' कहते हैं।

"इसके बाद मैंने कुछ छोटी-मोटी बातें और लिखीं और निबन्ध पूरा कर दिया। कापियाँ इकट्ठा की गईं और अध्यापक कलाशनिकोव को दे दी गईं।

"दो दिन बाद हमें किसी ऐसे लेख के बारे में संक्षेप में लिखना था जिसे हमने पढ़ा हो। जब हमें कापियाँ दी गईं उस समय हमने अपने पिछले निबन्ध के अंक देखे। कुछ विद्यार्थी खुश थे, कुछ के चेहरे से ऐसा मालूम हो रहा था कि न वे खुश हैं और न दुखी।

"कलाशनिकोव ने मेरी कापी जानबूझकर रोक ली थी। बाद

---

*१० कोपेक का एक सिक्का — सम्पादक

में उन्होंने उसे मेरे ऊपर फेंकते हुए ग़ुस्से से चिल्लाकर कहा था 'सुअर!'।

"मैंने अपनी कापी उठा ली और देखा कि मेरा निबन्ध लाल स्याही से पूरा काट दिया गया था और उसमें मुझे ज़ीरो मिला था। नीचे अध्यापक के हस्ताक्षर थे। मैं रुआसा सा हो गया और मेरी आंखों में आँसू छलछला आये। स्वभाव से मैं सीधा सादा भावुक और सच्चा व्यक्ति था। सारे जीवन में ऐसा ही रहा हूं।

"इल्या निकोलायेविच कक्षा में आ गये थे। हमने उनका स्वागत किया और अपना काम करते रहे। वे कक्षा में इस डेस्क से उस डेस्क की ओर जाते, कभी कहीं खड़े हो जाते और फिर काम में लगे हुए बच्चों को देखने लगते। वे मेरी डेस्क के पास भी आये। जब उन्होंने मेरा पहला निबन्ध, जो लाल स्याही से कटा था और जिस पर मुझे ज़ीरो मिला था, देखा तो मेरे कन्धे पर हाथ रखते हुए मेरी कापी उठा ली। वे उसे पढ़ने लगे। जैसे ही जैसे वे उसे पढ़ते जाते मुस्कुराते जाते। तब उन्होंने अध्यापक को बुलाया और उससे पूछा: 'ज़रा मुझे यह तो बताइये कि आपने इस बच्चे को लाल क्रास से क्यों सम्मानित किया है और यह बड़ा सा अंडा क्यों दिया है? निबन्ध में व्याकरण की कोई अशुद्धियाँ नहीं हैं, यह तर्कसंगत है, उसमें कोई कृत्रिमता नहीं है और उसे ईमानदारी के साथ निभाया गया है। इसका विषय भी वही है जो आपने निश्चित किया है।

"अध्यापक महोदय हकबका गये, उनके मुंह से शब्द तक न फूटे और घबड़ा कर कहने लगे कि इस निबन्ध में ऐसी बातें थीं जो स्कूल के प्रशासन की शोभा नहीं बढ़ातीं। इस पर डाइरेक्टर उल्यानोव ने हस्तक्षेप किया और कहा 'यह सर्वोत्तम निबन्धों में से एक है। इसे पढ़िये। विषय है, 'आज की कोई बात जिसका तुम पर प्रभाव पड़ा

हों'। विद्यार्थी ने वही बात लिखी है जिसका उस पर कक्षा में प्रभाव पड़ा था। यह बहुत सुन्दर निबन्ध है'। इसके बाद उन्होंने मेरा क़लम उठाया और निबन्ध के अन्त में लिख दिया 'बहुत सुन्दर' और उसके नीचे अपने हस्ताक्षर कर दिये: उल्यानोव।

"मुझे आज भी वह घटना नहीं भूली है और शायद भूलूंगा भी नहीं। इल्या निकोलायेविच ने अपनी दयालुता, अपनी सरलता और अपनी न्यायप्रियता का परिचय दिया था।"

इल्यीच ने अपने पिता का अनुसरण किया था। पाठशाला की एक उच्च कक्षा में उन्होंने पूरे एक वर्ष तक एक चुवाश साथी को पढ़ाया था। यह व्यक्ति रूसी भाषा में पिछड़ा हुआ था। उसे पढ़ाने का उद्देश्य यही था कि वह विश्वविद्यालय की प्रवेश परीक्षाओं में सफल हो सके। और वह सफल हुआ भी।

राष्ट्र के अल्प-संख्यकों के प्रति इल्या निकोलायेविच की सहानुभूति ने लेनिन पर उनके क्रान्ति सम्बन्धी सभी क्रिया-कलापों में विशष प्रभाव डाला था। प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि लेनिन ने सोवियत संघ के निवासियों की पारस्परिक मैत्री के क्षेत्र में कितना महान कार्य किया है।

इल्या निकोलायेविच ने इल्यीच के मनोयोग को एकाग्र करने की दिशा में दब्रोलुबोव की विधियों का प्रयोग किया था। व्लादीमिर इल्यीच साढ़े नौ वर्ष की अवस्था में पाठशाला में दाखिल हुए थे। उन्होंने सदैव सबसे अधिक अंक पाये और अन्त में उन्हें एक स्वर्ण-पदक मिला। परन्तु यह सफलता उन्हें इतनी आसानी से न मिली थी, जैसा कि कुछ लोग सोचते हैं। इल्यीच एक खुशदिल बालक था और उसे दूर दूर तक टहलना अच्छा लगता था। उसे वोल्गा और स्वीयागा नदियों से प्रेम था। तैरना और स्केटिंग उसे विशेष प्रिय थे। एक बार उन्होंने मुझे बताया था कि "मुझे स्केटिंग का बड़ा शौक़

था, परन्तु जब मुझे यह पता चला कि इससे मेरी पढ़ाई में विघ्न पड़ता है तो मैंने उसे छोड़ दिया।" पढ़ने की उन्हें बड़ी रुचि थी। पुस्तकें उनके लिए आकर्षण का केन्द्र थीं। उनसे उन्हें मनुष्यों तथा मानव जीवन का परिचय मिलता था और उनके ज्ञान की परिधि का भी विस्तार होता था, जबकि पाठशाला की पढ़ाई नीरस थी, निर्जीव थी और विद्यार्थियों को तोता-रटन्त के लिए बाध्य करती थी। इल्यीच के पढ़ने का ढंग अनोखा था। पहले वे अपने पाठों को तैयार करते और फिर पढ़ने में जुट जाते। आत्मानुशासन के कारण वे अपना बहुत सा समय नष्ट होने से बचा लिया करते थे। उनकी पढ़ने की रफ़्तार बहुत तेज़ थी। पढ़ते समय वे बड़े ध्यान-मग्न रहते थे। टिप्पणियाँ तैयार करते समय वे लिखने में लगनेवाला अपना बहुत सा समय बचा लेते थे। जिन्होंने उनका हस्तलेख देखा है वे जानते हैं कि वे कितने संक्षिप्त रूपों का इस्तेमाल किया करते थे। इस प्रकार वे अपनी आवश्यकतानुरूप सभी कुछ लिख लेते थे और जल्दी लिख लेते थे।

उन्होंने अपनी चेतना-शक्ति का विकास करना भली भाँति सीख लिया था। यदि वे कुछ करने की ठान लेते तो करते अवश्य। उनका कह देना ही करने का संकल्प होता था। एक बार जब वे छोटे थे उन्हें धूम्रपान की लत पड़ गई। जब उनकी माता जी को इसके बारे में पता चला तो उन्हें दुख हुआ और उन्होंने उनसे यह आदत छोड़ देने के लिए कहा। इल्यीच ने वचन दिया कि वे सिगरेट न पियेंगे और फिर कभी उन्होंने उसे हाथ से भी न छुआ।

इल्या निकोलायेविच ने इल्यीच को परिश्रम के साथ पढ़ने की शिक्षा दी थी और उनमें वे गुण पैदा करने की कोशिश की थी जिनका आग्रह दब्रोलुबोव ने किया था — अर्थात् स्कूल में क्या और कैसे पढ़ाया जाता है इस बारे में जानकारी रखना। अध्यापिका कशकदामोवा

का, जो इल्या निकोलायेविच के अधीन काम करती थी और उनका सदैव बड़ा आदर करती थी, कहना है कि उन्हें पाठशाला तथा उसकी अध्ययन-प्रणाली और उसके अध्यापकों का मज़ाक़ उड़ाते हुए इल्यीच को तंग करना बहुत अच्छा लगता था। इल्यीच प्रायः प्राथमिक स्कूलों की कमियों के बारे में अपने पिता से वाद-विवाद किया करते थे।

कशकदामोवा का कहना है कि इल्या निकोलायेविच अपने पुत्र इल्यीच को यह सिखाया करते थे कि जीवन का सूक्ष्म अध्ययन किस प्रकार सम्भव है। परन्तु जब कभी कक्षा के समय इल्यीच अपने अध्यापकों का मजाक़ उड़ाने की स्वतंत्रता लेते (उदाहरणार्थ फ़्रेंच अध्यापक पोर एक बार उनके मज़ाक़ का शिकार बने थे) उस समय उनके पिता उन्हें अपने पास बुलाते और समझाते कि भले ही अध्यापक ठीक ठीक न पढ़ा पाते हों फिर भी उनके साथ अशिष्टता का व्यवहार नहीं करना चाहिए। इल्यीच ने इस विषय में पिता की आज्ञा का पालन किया था।

दब्रोलुबोव ने बच्चों के संबंध में यह मत प्रकट किया था कि सामान्य भलाई की दृष्टि से ही किसी व्यक्ति को तथा उसके कार्यों को आँका जाना चाहिए। इल्यीच के पिता ने उनमें भी इसी गुण का समावेश करने का प्रयत्न किया था। इस प्रकार इल्यीच आत्म-प्रशंसा और अहंकार जैसे दोषों से बचे रहे।

ज़ैतसेव के संस्मरणों से हमें पता चलता है कि इल्या निकोलायेविच कठोर परिश्रम करने पर तो ज़ोर देते ही थे साथ ही इस बात पर भी विशेष बल दिया करते थे कि बच्चों में निष्ठापूर्वक काम करने के गुणों का विकास होना चाहिए। दब्रोलुबोव का भी यही मत था। और निष्ठा इल्यीच के स्वभाव का एक अंग बन चुकी थी।

१४—१५ वर्ष की उम्र में इल्यीच तुर्गेनेव की ओर आकृष्ट हुए थे। उन्होंने मुझे बताया था कि उस समय उन्हें तुर्गेनेव की कहानी

"आन्द्रेय कोलोसोव" विशेष रूप से पसन्द थी, क्योंकि उसमें प्रेम के मार्ग में निश्छलता एवं निष्कपटता के विषय में कुछ सुन्दर विचार व्यक्त किये गये थे। उस समय मैं भी "आन्द्रेय कोलोसोव" की भक्त थी। मैं मानती हूं कि इतना व्यापक प्रश्न इतनी आसानी से हल नहीं हो सकता, जितनी आसानी से वह पुस्तक में हल किया गया है क्योंकि यह प्रश्न केवल निश्छलता एवं निष्कपटता से ही तो सम्बद्ध नहीं है। इसके साथ ही यह भी आवश्यक है कि मनुष्य के प्रति उदार अनुभूतियों का प्रदर्शन हो और उसकी ओर ध्यान दिया जाय। हम युवक युवतियों के लिए, जो मध्यम श्रेणी के लोगों में चारों ओर धन के लिए विवाह करने की तत्कालीन व्यापक प्रवृत्ति देखते थे और इसके फलस्वरूप कपट और प्रपंच का जो वातावरण छाया हुआ था, "आन्द्रेय कोलोसोव" एक प्रिय पुस्तक साबित हुई। इसके पश्चात् हमने चेरनिशेव्स्की की "क्या करना चाहिए?" पुस्तक पढ़ी और हम सबने उसे बहुत पसन्द किया। इल्यीच ने इस पुस्तक को सबसे पहले तब पढ़ा था जब वे पाठशाला में थे। मुझे याद है कि जब हमने साइबेरिया में इन विषयों पर वाद-विवाद छेड़ा था उस समय मुझे यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ था कि इल्यीच को चेरनिशेव्स्की की पुस्तक का कितना व्यापक ज्ञान है। वे चेरनिशेव्स्की के प्रति तभी से आकृष्ट हुए थे जब से उन्होंने उसकी "क्या करना चाहिए?" नामक पुस्तक पढ़ी थी।

इल्या निकोलायेविच ने सार्वजनिक जीवन में सक्रिय भाग लिया था। उन्होंने अपनी पूरी शक्ति के साथ उस अज्ञता के विरुद्ध मोर्चा लिया था जो जनता के बीच व्याप्त थी। इल्या निकोलायेविच अपने समय के सपूत थे। अतएव जिन चीज़ों ने उनके बच्चों अलेक्सान्द्र और व्लादीमिर को प्रभावित किया था—चेरनिशेव्स्की के लेखानुसार—वे थीं १८६१ का सुधार जो जागीरदारों के हित में

किया गया था; भूमि विमोचन भुगतान* तथा किसानों की सर्वोत्तम ज़मीनें हथिया लेना — उनसे इल्या निकोलायेविच बहुत अधिक प्रभावित नहीं हुए थे। उनके लिए तो अलेक्सान्द्र द्वितीय ज़ार-उद्धारक के रूप में था। इल्यीच कहते थे कि जब पिता जी को ज़ार की हत्या के समाचार मिले थे उस समय वे बहुत घबड़ा गये थे। उन्होंने तत्काल अपने कपड़े पहनें और मृतक-आत्मा की शांति के लिए की जानेवाली सामूहिक प्रार्थना के लिए गिरजाघर की ओर चल दिये। उस समय इल्यीच केवल ११वर्ष के थे परन्तु अलेक्सान्द्र द्वितीय की हत्या का समाचार, जो सारे नगर में बिजली की तरह फैल गया था, बच्चों तक में जोश भर देने के लिए पर्याप्त था। इसके पश्चात् इल्यीच — जैसा उन्होंने स्वयं मुझे बताया था — सभी प्रकार की राजनैतिक वार्ताओं को बड़े ध्यानपूर्वक सुनते रहे।

उन्होंने बालोपयोगी वे सभी पत्र-पत्रिकाएं तथा पुस्तकें पढ़ी थीं जिन्हें उनके पिता बच्चों के लिए मंगाया करते थे। वे अपने बड़े भाई की पुस्तकें भी पढ़ा करते थे। उन दिनों की बालोपयोगी पत्र-पत्रिकाओं में अमरीका, टर्की से युद्ध और बालकन संबंधी विषयों पर बहुत कुछ लिखा जाता था। यहां यह उल्लेखनीय है कि १८६१—१८६५

---

*"१६ फ़र्वरी १८६१ के स्टैट्यूट" के अनुसार — इस वर्ष रूस में कम्मीगिरी की प्रथा का उन्मूलन हुआ था — किसानों को उन ज़मीनों के लिए ज़मींदारों को धन देना होता था जो उन्हें दी जाती थीं। कुल मिला कर यह धन ऐसी ज़मीनों के वास्तविक मूल्य से बहुत अधिक होता था अर्थात् २ अरब रूबल। इन भुगतानों को दिये जाने पर किसान न सिर्फ़ उस ज़मीन का मूल्य चुकाते थे जिसे वे दीर्घ काल से जोता बोया करते थे बल्कि अपनी निजी आज़ादी का मूल्य भी चुका देते थे। — सम्पादक

तक के वर्षों में अमेरीका में उत्तरी तथा दक्षिणी राज्यों में से नीग्रो-गुलामी-प्रथा का उन्मूलन करने के लिए गृह-युद्ध हो रहे थे। वास्तव में यह युद्ध पूंजीवाद के और अधिक व्यापक प्रसार के लिए मार्ग प्रशस्त करने के उद्देश्य से हो रहा था। परन्तु युद्ध किया जा रहा था स्वतंत्रता बनाये रखने के नाम में। इल्यीच के एक सहपाठी, कुज़्नेत्सोव का कहना है कि साहित्य पर वे सदा अच्छे अच्छे निबन्ध लिखा करते थे। उन दिनों उस पाठशाला के, जहां इल्यीच पढ़ा करते थे, डाइरेक्टर फ़०म०केरेन्स्की थे (फ़०म०केरेन्स्की सामाजिक क्रान्तिकारी तथा १६१७ की अस्थायी सरकार के प्रधान-मंत्री अ०फ़० केरेन्सकी के पिता थे) जो स्कूल में साहित्य पढ़ाया करते थे। केरेन्स्की इल्यीच के निबन्धों पर सदा सबसे अधिक अंक दिया करते थे। एक बार निबन्ध की कापी लौटाते समय केरेन्सकी ने इल्यीच से कुछ रूखे शब्दों में कहा था: "ये दलित वर्ग हैं कौन जिनके बारे में तुमने लिखा है?" अन्य विद्यार्थी यह जानने को उत्सुक थे कि इल्यीच को केरेन्स्की ने कितने अंक दिये हैं। परन्तु बाद में पता चला कि उन्हें सबसे अधिक अंक मिले थे।

उल्यानोव का परिवार बड़ा था। उसमें ६ बच्चे थे। वे जोड़ों में बड़े हुए। सबसे बड़े आन्ना और अलेक्सान्द्र, फिर व्लादीमिर और ओल्गा और अन्ततः दिमीत्री तथा मारिया। इल्यीच ओल्गा से बड़ा स्नेह करता था। बचपन में दोनों साथ साथ खेले थे और बड़े होने पर दोनों ने मार्क्सवाद का अध्ययन भी साथ साथ किया था। १८६० में वह महिलाओं के उच्च पाठ्यक्रमों में भर्ती होने के लिए पीटर्सबर्ग चली गई। दुर्भाग्यवश उसे टाइफ़स हो गया और १८६१ में वह मर गई।

अलेक्सान्द्र ने, जो क्रान्तिकारी हो गये थे, इल्यीच पर बड़ा प्रभाव डाला था। आन्ना और अलेक्सान्द्र "इस्क्रा" कवियों (कुरोचकिन

भ्राता, मिनायेव, ज्हुलोव तथा अन्य लोग) की ओर आकृष्ट हुए थे। इन कवियों को चेरनिशेवियन कवि कहा जाता था। इन लोगों ने सामाजिक जीवन तथा नैतिक क्षेत्र में कम्मिगीरि से चिपके रहने-वालों का बड़ा विरोध किया था और यह स्पष्ट कर दिया था कि यह प्रथा अत्यधिक "अपमान-जनक, बुरी तथा दोषपूर्ण" है। आन्ना को "इस्क्रा" कवियों की कविताएं याद थीं और स्वयं भी वह कविता करती थी। उसे यह कविताएं आजीवन याद रहीं। उसके जीवन के अन्तिम दिनों में, जब फ़ालिज के कारण वह खाट से चिपक गई थी, मुझे दफ़्तर से आने के बाद प्राय: उससे बातें करने का अवसर मिल जाता था और हम दोनों चाय पीते समय "इस्क्रा" कवियों के बारे में वाद-विवाद छेड़ दिया करती थीं। उस समय यह देखकर मुझे आश्चर्य होता था कि उसकी स्मृति कितनी तेज़ है। उसे ऐसी ढेरों कविताएं याद थीं जो उस काल के बुद्धिजीवी लोगों के गले का हार बनी हुई थीं। साइबेरिया में इल्यीच के साथ अपने निष्कासन काल में मुझे यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ था कि उन्हें "इस्क्रा" कवियों की कविताओं के विषय में कितना अधिक ज्ञान है।

"इस्क्रा" कवि अनर्गल तथा बेकार की बातों का सदा उपहास किया करते थे। ऐसी बातें अलेक्सान्द्र तथा इल्यीच को भी पसन्द नहीं थीं। जब कभी इन भ्राताओं से मिलने और उनसे बेकार की बातें करने के लिए कई संबंधी एक साथ आ टपकते उस समय उनका प्रिय वाक्य यह होता था: "अपनी अनुपस्थिति से हमें प्रसन्न करने की कृपा करें"। अलेक्सान्द्र को पीसरेव के लेख पढ़ना विशेष प्रिय था और उन्हें उसके प्राकृतिक विज्ञान विषयक लेखों में जिन में धर्म का विरोध किया जाता था, खास दिलचस्पी थी। उस समय पीसरेव की कृतियां प्रतिषिद्ध घोषित कर दी गई थी। इल्यीच भी, जो उस समय केवल १४—१५ वर्ष का बालक था, पीसरेव

के लेखों को चाट जाया करता था। कहना चाहिए कि १८५६ में दब्रोलुबोव ने अन्तिम रूप से धर्म को तिलांजलि न दी थी और इल्या निकोलायेविच भौतिक विज्ञान तथा अन्तरिक्ष विज्ञान के अध्यापक होते हुए भी आजीवन ईश्वर में विश्वास करते रहे। उन्हें यह सुनकर बड़ा क्लेश हुआ था कि उनके पुत्रों ने धर्म का त्याग कर दिया है। अलेक्सान्द्र ने मुख्यतया पीसरेव के प्रभाव के कारण गिरजा जाना बन्द किया। आन्ना का कहना है कि एक बार जब इल्या निकोलायेविच ने अलेक्सान्द्र से रात्रि-प्रार्थना के लिए गिरजा जाने को कहा था उस समय उन्होंने दृढ़ता के साथ इन्कार कर दिया था और फिर उनसे इस प्रकार का प्रश्न कभी न किया गया। इल्यीच ने हमें अपने पिता तथा उनके एक अध्यापक मित्र की बातचीत का हवाला देते हुए बताया था कि उनके पिता ने अपने मित्र से कहा था कि मेरे बच्चे गिरजे के पुजारी नहीं हैं। उस समय इल्यीच जिनकी उम्र १४—१५ की रही होगी, वहां मौजूद थे परन्तु बातचीत शुरू होते ही पिता ने उन्हें किसी काम से खिसका दिया था। जब वे वापस आये तो पिता जी के मित्र ने मुस्कराते हुए उनसे कहा था "इसे छड़ी लगाइए, छोड़िए नहीं"। यह सुनकर इल्यीच ने उसी समय धर्म से अपना संबंध विच्छेद कर लेने का निश्चय कर लिया। वे भागते हुए बाग़ में गये, और अपना क्रॉस, जिसे वे गले में पहने हुए थे, उतार कर वहीं फेंक दिया।

अलेक्सान्द्र विश्वविद्यालय में प्राकृतिक विज्ञान का अध्ययन करने के लिए पीटर्सबर्ग गये। वहां उनका रुझान क्रान्तिकारी कार्यों की ओर हुआ और यह बात उन्होंने आन्ना तक से न बताई। जब वे गर्मियों की छुट्टियों में घर आये उस समय भी उन्होंने इसके बारे में किसी को न बताया। इस बीच इल्यीच में यह उत्कंठा होने लगी थी कि वे अपने उन विचारों को जो बार बार उनके मस्तिष्क में आते जाते थे किसी के

सामने रखें और उन पर विचार विमर्श करें। पाठशाला में ऐसा कोई न था जिसके साथ वे बातचीत कर सकते। एक बार उन्होंने अपने एक सहपाठी को चुना जिसके बारे में उनका ख्याल था कि वह क्रान्ति का समर्थक है। अतएव क्रान्ति के विषय में बातचीत करने के उद्देश्य से स्वियागा के किनारे किनारे टहलने का कार्यक्रम निश्चित किया गया। परन्तु यह बातचीत न हो सकी। उनका सहपाठी जीविकोपार्जन संबंधी बातें करने लगा और उसने अपना यह विचार व्यक्त किया कि मनुष्य को चाहिए कि वह ऐसा पेशा चुने जिसमें सबसे अधिक आमदनी हो सकती हो। इल्यीच ने मुझसे कहा था कि यह सुन कर "मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि वह लड़का जीविकोपार्जक है न कि क्रान्तिकारी। इसलिए मैंने उससे आगे कोई बातचीत न की।"

इस काल में, जब घर में अलेक्सान्द्र ने यह आखिरी गर्मी बिताई थी, वे इल्यीच से बातचीत करना बराबर बराते रहे। और इल्यीच भी जब अपने बड़े भाई को कीड़े-मकोड़ों के संबंध में अनुसंधान करते देखते तो सोचा करते "यह कभी भी क्रान्तिकारी नहीं हो सकते" (अलेक्सान्द्र प्रातःकाल उठते कुछ घंटों तक कीड़े-मकोड़ों का अध्ययन करते, उन्हें खुर्दबीन से देखते और उनके सम्बन्ध में परीक्षण किया करते थे)। इल्यीच को शीघ्र ही अपनी ग़लती मालूम हो गई और जब उन्हें अपने भाई के कार्यों तथा उनकी सज़ा के बारे में मालूम हुआ तो उन पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा।

पिता और भाई के प्रभाव के अतिरिक्त इल्यीच पर माता का भी प्रभाव बहुत अधिक पड़ा था। उनकी नानी जर्मन थीं और नाना का जन्म उक्रइन में हुआ था। उनके नाना एक विख्यात शल्यचिकित्सक थे, जिन्होंने अपनी २० वर्ष की प्रैक्टिस के अन्त में कज़ान से २५ मील दूर कोकूशकिनो गाँव में एक मकान ख़रीद लिया था। यहाँ वे स्थानीय

कृषकों का इलाज करते थे। वह [illegible] अपनी पुत्री को किसी संस्था में भेजने के कायल न थे। इसलिए उन्होंने उसे घर पर ही पढ़ाया। उनकी पुत्री आगे चलकर अच्छी संगीतज्ञ बनी। उसने अनेकानेक पुस्तकों का अध्ययन किया और जीवन के विषय में अच्छा ज्ञान प्राप्त किया। उसके पिता ने उसे नियमित रूप से तथा परिश्रम के साथ काम करना सिखाया था। फलतः वह एक अच्छी गृहणी बनी और अन्त में उसके यह गुण उसकी पुत्रियों में भी संक्रमित हुए। विवाह करने और उसके बाद बच्चों के बीच रहने के कारण उसे बहुत कुछ करना पड़ता था। इल्या निकोलायेविच के वेतन से मुश्किल से खर्च चल पाता था। इसका परिणाम यह होता कि उसे अपने बच्चों और पति के लिए आराम के साधन जुटाने और गृहस्थी का काम-काज सुचारु रूप से चलाने के लिए बड़ी माथापच्ची करनी पड़ती। उसके ऐसा करने से उसके बच्चों का अध्ययन ठीक से चलता रहा, और वे सदाचारी बने।

अपने पति की भाँति इल्यीच की माता जी ने भी बच्चों की पढ़ाई-लिखाई पर अधिक ध्यान दिया। उन्होंने बच्चों को जर्मन भाषा सिखाई। इस सम्बन्ध में इल्यीच ने हमें बताया था कि छोटी कक्षाओं में उनके जर्मन अध्यापक उनके जर्मन भाषा के ज्ञान के कारण उनकी प्रशंसा करते थे। इसके पश्चात् भाषा सम्बन्धी अध्ययन की ओर, जिस में लेटिन भाषा भी थी, इल्यीच विशेष रूप से आकृष्ट हुए। मैं समझती हूं कि उनके अन्दर संघटन की जो प्रतिभा थी वह उन्हें विरासत में माता जी से ही मिली थी।

माता जी स्वयं अपने उदाहरण से बड़े बच्चों को यह सिखाया करती थीं कि छोटों की देख-भाल कैसे होनी चाहिए। माता जी ने बच्चों को कुछ गाने सिखा दिये थे जिन्हें वे सब मिल-जुल कर झूमते हुए गाया करते थे। इल्यीच ने बचपन से ही अपने छोटे भाई

बहन पर देख-रेख रखना आरम्भ कर दी थी। इस सम्बन्ध में मारिया और दिमीत्री के उनके विषय में बड़े रोचक संस्मरण हैं। इल्यीच खेलों का प्रबन्ध करते और जहां छोटे बच्चों की बात होती वे खेलों के मामले में उदारता और सज्जनता का परिचय दिया करते।

बच्चों के साथ उनका यह निश्छल प्रेम आजीवन बना रहा। उन्हें बच्चों के साथ खेलना, उनसे हंसी मज़ाक़ करना बेहद पसन्द था। मुझे याद भी नहीं पड़ता कि कभी उन्होंने बच्चों के साथ सख्ती की भी थी। जब कोई अन्य व्यक्ति बच्चों के साथ सख्ती करता तो उन्हें बुरा लगता।

वे समझते थे कि ये बच्चे बड़े होकर उसी काम को आगे बढ़ायेंगे जिसके लिए इल्यीच ने अपना जीवन लगाया है। बच्चों से बातचीत करते समय कभी कभी विना किसी प्रश्न की प्रतीक्षा किये हुए वे उनसे कहा करते थे, "जब तुम बड़े होगे तब साम्यवादी बनोगे, है ना"। प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि इल्यीच ने बच्चों के कल्याण, उनके भोजन तथा शिक्षा, उनके जीवन को प्रफुल्ल तथा सुखद बनाने, उनमें विजय के लिए अपेक्षित ज्ञान का प्रसार करने तथा आधुनिक मशीन-युग में हाथ और मस्तिष्क द्वारा आवश्यक काम करने की योग्यता पैदा करने आदि से सम्बन्धित विषयों में कितनी रुचि दिखाई थी।

इल्यीच अपनी माता जी से अत्यधिक स्नेह करते थे और उनके दुर्दिनों में तो उनकी विशेष देख-रेख रखते थे। १८८६ में उनके पिता की मृत्यु हो गई। इल्यीच ने मुझे बताया था कि माता जी ने अपने पति की, जिनका वे इतना आदर-सत्कार करती थीं, १८८६ में हुई मृत्यु के शोक को बड़े धैर्यपूर्वक सहन किया था। परन्तु जब अलेक्सान्द्र को फांसी हुई और माता जी को तथा हम सब को इतना

बड़ा आघात सहना पड़ा था उस समय इल्यीच ने माता जी के साथ जिस मृदुता और विनम्रता का व्यवहार किया वह निःसंदेह सराहनीय है। अलेक्सान्द्र ने देखा था कि उनके चारों ओर किसानों की दशा कितनी दयनीय है और जनता पर कितने अधिक अत्याचार हो रहे हैं। अपने इन्हीं अनुभवों के कारण वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे थे कि ज़ारों से मोर्चा लेना अनिवार्य है। वे इल्यीच से चार वर्ष बड़े थे और १ मार्च १८८१* को जो घटनाएँ हुई थीं उनके सम्बन्ध में उनकी प्रतिक्रिया इल्यीच से बिल्कुल भिन्न थी।

पीटर्सबर्ग में अलेक्सान्द्र "नरोद्नया वोल्या" पार्टी के सदस्य बने और उन्होंने अलेक्सान्द्र तृतीय की हत्या के षड्यंत्र में सक्रिय भाग लिया। परन्तु यह प्रयत्न विफल हुआ और १ मार्च १८८७ को अपने कुछ साथियों के साथ वे गिरफ़्तार कर लिये गये। अलेक्सान्द्र की गिरफ़्तारी की ख़बर सिम्बीर्स्क में कशकदामोवा नामक स्कूल की एक अध्यापिका को लगी थी। उसने यह समाचार इल्यीच को (जो उस समय १७ वर्ष के थे) सुनाया था क्योंकि वे उल्यानोव परिवार के सबसे बड़े पुत्र थे। आन्ना, जो उस समय पीटर्सबर्ग में महिलाओं के उच्च पाठ्यक्रमों की छात्रा थी, भी गिरफ़्तार की गई। इल्यीच ने यह दुखद समाचार माता जी को सुनाया। उस समय इल्यीच ने देखा कि यह समाचार सुनकर माता जी का चेहरा कितना फक पड़ गया था। वे उसी दिन पीटर्सबर्ग के लिए चल पड़ीं। उस ज़माने में सिम्बीर्स्क तक रेल की लाइन नहीं आई थी। अतएव सिज़्रान तक के लिए कोच द्वारा यात्रा करनी पड़ती थी। परन्तु चूंकि कोच की यात्रा महंगी पड़ती थी इसलिए यात्रा करनेवाले लोग अन्य ऐसे सहयात्रियों को

---

* १ मार्च १८८१ को नरोदोवोल्त्सी ने रूसी ज़ार अलेक्सान्द्र द्वितीय को मौत के घाट उतार दिया था — सम्पादक

ढूढ़ लिया करते जो मिल-जुल कर कोच का किराया दे देते। इस प्रकार किसी एक सहयात्री पर पूरे किराये का बोझ न पड़ता। इल्यीच अपनी माता के लिए एक सहयात्री ढूढ़ने निकले परन्तु इस समय तक अलेक्सान्द्र की गिरफ़्तारी की ख़बर सारे शहर में फैल चुकी थी। इसलिए कोई भी व्यक्ति माता जी के साथ यात्रा को तैयार न हुआ, यद्यपि उस समय तक नगर के सभी नागरिक स्कूलों के डाइरेक्टर की विधवा के रूप में माता जी की बड़ी प्रशंसा किया करते थे। इस घटना के बाद उल्यानोव परिवार के सभी भूत पूर्व-मित्रों और सिम्बीर्स्क के "समाज" के सभी उदार व्यक्तियों ने इस परिवार से अपना नाता तोड़ लिया। माता जी के कष्टों तथा समाज के बुद्धिजीवियों के भय ने उस १७ वर्षीय युवक पर एक गहरा प्रभाव डाला। माता जी चली गईं और इल्यीच पीटर्सबर्ग के समाचारों की व्यग्रतापूर्वक प्रतीक्षा करते हुए छोटे बच्चों की देख-रेख के निमित्त वहां रह गये। अब उन्होंने अध्ययन की ओर अपना चित्त लगाया और वे समस्याओं पर सोचने विचारने लगे। इस समय उन्होंने चेरनिशेव्स्की के ग्रन्थ देखे और उनके उद्देश्य को समझा। उन्होंने अपने प्रश्नों का उत्तर पाने के लिए मार्क्स की ओर भी देखा। अलेक्सान्द्र की पुस्तकों में "पूँजी" की भी एक प्रति थी। पिछले वर्षों में इसका अध्ययन इल्यीच के लिए एक टेढ़ी खीर था, परन्तु अब उन्होंने उसे दूने उत्साह से पढ़ना शुरू कर दिया। अलेक्सान्द्र को ८ मई को फाँसी दे दी गई। इस समाचार को सुनकर इल्यीच ने कहा था: "नहीं, हम वह रास्ता नहीं पकड़ेंगे। हमें दूसरे रास्ते पर चलना आवश्यक है"। मारिया अलेक्सान्द्रोवना ने अपने पुत्र पुत्री के लिए अधिकारियों को दया-प्रदर्शन के निमित्त एक अनुनय-पत्र देने का विचार किया था। लेकिन इसके पूर्व अलेक्सान्द्र का विचार जानने के निमित्त उन्होंने उनसे मुलाक़ात की। इस भेंट से माता जी को बहुत परेशानी

हुई। उन्होंने अपने अनुनय-पत्र के लिए अलेक्सान्द्र की सहमति प्राप्त करने का प्रयत्न किया था। परन्तु अलेक्सान्द्र ने उनसे यही कहा था: "माता जी मैं ऐसा नहीं कर सकता, ऐसा करने में इमानदारी नहीं होगी"। इस पर माता जी ने आगे ज़िद न की और पुत्र से विदा लेते समय कहा "हिम्मत रखो।" जब उनके पुत्र ने न्यायालय में अपना वक्तव्य दिया उस समय भी वे वहीं पर थीं।

आन्ना को रिहा करके कज़ान के समीप कोकूशकिनो गाँव में पुलिस की निगरानी में रहने के लिए भेज दिया गया। माता जी में इन संकटों के कारण कुछ परिवर्तन हो गये थे। अब वे अपने बच्चों के क्रांतिकारी कार्यों के निकट आ गईं। बच्चे भी उन्हें पहले से अधिक प्रेम करने लगे।

१८९९ में वे पीटर्सबर्ग आईं। इस बार वहां जाकर उन्हें यह प्रयत्न करना था कि इल्यीच को येनिसी गुबर्निया से विदेश जाने की अनुमति मिल जाय, और यदि यह सम्भव न हो तो उन्हें राजधानी के आसपास कहीं रहने दिया जाय। तत्कालीन पुलिस विभाग के अध्यक्ष ज़्वोलान्सकी ने माता जी से कहा था: "आपको अपने बच्चों पर गर्व करना चाहिए, एक लटका दिया गया है और दूसरे की तैयारी की जा रही है"। यह सुनकर मारिया अलेक्सान्द्रोवना उठ खड़ी हुई और उन्होंने बड़े स्वाभिमान के साथ ये शब्द कहे थे: "जी हाँ मुझे अपने बच्चों पर गर्व है"। (इस बातचीत के समय म० ब० स्मिर्नोव मौजूद थे। उन्होंने "सोवेत्स्की यूग" नामक समाचारपत्र में इस घटना का उल्लेख किया है)। इल्यीच अपनी माता की असीम संकल्प-शक्ति की प्रायः सराहना किया करते। उनका कहना था "अच्छा हुआ कि अलेक्सान्द्र की गिरफ़्तारी के पूर्व ही मेरे पिता की मृत्यु हो गई। यदि वे जीवित होते तो पता नहीं क्या हो गया होता"। इसके पश्चात् मैं भी मारिया अलेक्सान्द्रोवना से मिली थी, उदाहरणार्थ

१८९५ में, जब इल्यीच प्राथमिक निरोध कारागृह में बीमार पड़े थे और वे उनसे मिलने आई थीं। उस समय मुझे मालूम हुआ कि इल्यीच अपनी माता से क्यों इतना प्रेम करते थे। "सम्बन्धियों को पत्र" शीर्षक उनकी पुस्तक में माता जी को लिखे गये पत्रों की प्रत्येक पंक्ति से माता जी के प्रति उनके प्रेम और उनकी विनम्रता का परिचय मिलता है। यह उल्लेखनीय है कि इस पुस्तक के पत्रों का चयन इल्यीच की बहन मारिया ने किया था और उसी ने उन्हें प्रकाशनार्थ संकलित भी किया था।

इल्यीच पर अपनी माता के सहनशील स्वभाव का बराबर प्रभाव पड़ता रहा। यद्यपि भाई की मृत्यु से उनके हृदय पर भी आघात हुआ था, फिर भी उन्होंने अपने आप पर नियंत्रण रखा और अपनी परीक्षाओं में सफलता प्राप्त की। पाठशाला की पढ़ाई समाप्त करने पर स्कूल की ओर से उन्हें एक स्वर्ण-पदक दिया गया।

ग्रीष्म ऋतु में उल्यानोव परिवार कज़ान आ गया और इल्यीच ने उसी विश्वविद्यालय में नाम लिखाया जहाँ उनके पिता उनसे पहले अध्ययन कर चुके थे।

"बोल्शेविक" अंक १२,
१५ जून, १९३८

इल्यीच के साथ बातचीत

हाल ही में मुझसे मिलने के लिए रुदाकोव नामक एक पुराना कार्यकर्ता आया। यह कार्यकर्ता कुज़नेत्स्क के कोयला-क्षेत्र में स्थित प्रोकोप्येव्स्क नामक स्थान से कुछ कार्यवश मास्को आया हुआ था। वह १८९०-१९०० में पीटर्सबर्ग में नारवा गेट के उस पार काम किया करता था। यह व्यक्ति बबूश्किन का निकट का साथी और उन दिनों के सक्रिय कार्यकर्ताओं में से एक था। वह प्रौढ़ों के लिए रात्रि में लगने वाली कक्षाओं में पढ़ा करता था। मैं इन कक्षाओं की अध्यापिका थी। हम लोग एक दूसरे से लगभग ४० वर्ष से नहीं मिले थे। अब चूंकि वह मास्को आया था इसलिए वह मुझसे मिलने भी आया। हम दोनों एक दूसरे से मिल कर बड़े प्रसन्न हुए। उसने मुझे अपना जीवन-वृत्तान्त कह सुनाया—किस प्रकार उसे जेल काटनी पड़ी, फिर निष्कासन भुगतना पड़ा और १९०५ के बाद किस प्रकार वह साइबेरिया में बस गया। उसने मुझे बताया "मेरा पुत्र इंजीनियर है और पुत्री विश्वविद्यालय के अन्तिम वर्ष की छात्रा। मेरे परिवार के सभी सदस्य साम्यवादी हैं"। तब उसने कुछ उत्साह के साथ आगे कहा "उस समय हम जिस जिस विषय पर बात करते थे अब हम उन्हें पूरा होते हुए देख रहे हैं"। हम दोनों बातचीत के दौरान में कुछ इतनी उमंग में आ गये थे कि वह मुझे अपना पता बताना भी भूल गया।

हाँ, हम वृद्ध, अपनी सफलताओं के प्रति विशेष जागरूक होते हैं। जब कभी हम सोचते हैं कि जिन बातों की हम कल्पना करते थे तथा जिनके लिए हमने वर्षों संघर्ष किया है वे अब पूरी हो चुकी हैं और हमें अपने प्रयासों में सफलता मिल गई है तो हमें अकथनीय प्रसन्नता होती है। हमारी पीढ़ी के लिए, उन लोगों के लिए जिन का लेनिन से निकट का संबंध था, जो उनके साथ काम करते थे, जो उन्हें जानते थे, प्रसन्नता की अनुभूति के साथ यह दुःख का विषय भी है कि वे हमारी सफलताओं को देखने के लिए जीवित न रहे और असमय इस संसार से कूच कर गये।

लेनिन कर्मठ व्यक्ति थे। उन्हें अपने मस्तिष्क को एक क्षण के लिए भी विश्राम देना पसन्द न था। मुझे उनके अन्तिम घातक रोग की याद आज भी बनी हुई है। डाक्टरों के सख्त निर्देश थे कि प्रति दिन भोजन के पश्चात् उन्हें दो घंटे अवश्य आराम करना चाहिए। पिछली बार बीमारियों के समय तो वे डाक्टरों की ऐसी राय मान भी लेते थे परन्तु उनका विश्वास न करते थे। इल्यीच का कहना था कि "वे मुझे सोच विचार करने से नहीं रोक सकते"। और वास्तविकता यह थी कि उठते-बैठते, सोते-जागते, घूमते-घामते अथवा गृहस्थी की छोटी मोटी बातों के संबंध में बातचीत करते समय भी वे सदैव उन बातों पर सोच-विचार किया करते थे जिनके लिए उन्होंने अपनी समस्त शक्ति और अपने जीवन का प्रत्येक क्षण समर्पित कर दिया था।

टहलते समय इल्यीच उन बातों के संबंध में बातचीत करना पसन्द करते जिनकी ओर सम्प्रति उनका ध्यान आकृष्ट रहता था। हम लोगों में कुछ ऐसे रीति-रिवाज थे कि उनकी वर्षगांठ के दिन हम घूमते-घामते वनों में चले जाया करते। ऐसे समय इल्यीच तत्कालीन समस्याओं पर विचार विनिमय किया करते।

वसन्त की भीनी भीनी बयार, अवगुण्ठन से झांकती हुई कलियाँ तथा वन-जीवन में नूतनता का संचार मनुष्य को बरबस अपनी ओर आकृष्ट करते, उसमें नवीन भावों का विकास करते तथा उसे भविष्य के गर्भ में देखने की दिव्य-दृष्टि प्रदान करते से प्रतीत होते। मुझे ऐसे ही वातावरण की उनकी एक बार की बातचीत का स्मरण है। हमारी यह बातचीत उनके जीवन के अन्तिम वर्षों में हुई थी।

प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि लेनिन विज्ञान को कितना अधिक महत्व देते थे और शायद पाठक उनका वह भाषण भी न भूले होंगे जो उन्होंने सोवियतों की तृतीय अखिल रूसी कांग्रेस के सामने दिया था "अभी तक मनुष्य के मस्तिष्क तथा उसकी प्रतिभा का उपयोग इस प्रकार होता रहा है जिससे कुछ लोग तो शिल्प और संस्कृति के समस्त लाभों का उपयोग कर सकते थे और कुछ बुद्धि-प्रकाश तथा विकास जैसी अनिवार्य आवश्यकताओं से भी वंचित रह जाते थे। परन्तु अब से शिल्प के समस्त आश्चर्यों तथा सांस्कृतिक क्षेत्र की समस्त सफलताओं से सम्पूर्ण मानवता लाभान्वित होगी और मनुष्य की प्रतिभा और उसके मस्तिष्क को हिंसा और शोषण का साधन न बनने दिया जायगा"।* उनके ये विचार हमारे देश, सोवियत भूमि, के लिए थे। पूंजीवादी देशों के बूर्जवा वर्ग विज्ञान तथा शिल्प की सफलताओं को अपने साम्राज्यवादी उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उपयोग में ला रहे हैं। ये लोग अपने प्रत्येक आविष्कार को उस सर्वनाशी युद्ध की ज्वाला प्रज्वलित रखने के उपयोग में लाना चाहते हैं जिसकी वे कल्पना करते हैं। उनका उद्देश्य इस युद्ध को पहले के साम्राज्य-वादी युद्ध की अपेक्षा अधिक सर्वभक्षी बनाना और पृथ्वी पर मृत्यु

---

* व्ला० इ० लेनिन, ग्रन्थावली, चतुर्थ संस्करण, खंड २६, पृष्ठ ४३६। — सम्पादक

का नग्न ताण्डव उपस्थित कर देना है। हमें अपने देश, अपनी सोवियत भूमि, की रक्षा करनी है और इसलिए हमें अपनी प्रतिरक्षा सेनाओं को भी सुदृढ़ करना पड़ा है। साथ ही हमें प्रतिरक्षा के लिए अपने विज्ञान और शिल्प की सफलताओं का उपयोग करना पड़ा। हमने ऐसा उस समय भी किया था जब लेनिन जीवित थे।

और इस स्थल पर, मुझे उनकी एक वर्षगांठ पर उनसे हुई एतद्विषयक बातचीत का स्मरण आता है। पहले तो हम लोग वर्तमान विषयों पर बातचीत करते रहे परन्तु जब हम टहलते टहलते वन में प्रवेश करने लगे तो इल्यीच कुछ शांत और गम्भीर हो गये। बाद में एक नये आविष्कार का हवाला देते हुए उन्होंने कहा था कि विज्ञान तथा शिल्प के क्षेत्र में नये नये आविष्कारों से हमारा देश इतना शक्तिशाली हो जायगा कि उस पर आक्रमण करना ही असम्भव हो जायगा। उन्होंने फिर कहना शुरू किया कि बूर्जवा वर्ग के हाथ में शक्ति दे देने से उसका उपयोग काम करने वालों का दमन करने में होगा जबकि वर्ग-चेतन तथा संघटित सर्वहारा वर्ग के हाथों में दी गई ताक़त शोषण और भक्षण का ही उन्मूलन कर देगी। यह बात इल्यीच ने कुछ धीमी, फुसफुसाहट जैसी, आवाज़ में कही थी। वे अपने स्वप्न तथा ऐसी सभी बातें, जो उन्हें सबसे प्रिय लगती थीं, प्रायः उसी लहजे में व्यक्त किया करते थे। इस बातचीत के दौरान में इल्यीच ने जो कुछ कहा था उससे उनका मत स्पष्ट है। काश कि मेरी स्मृति इतनी अच्छी होती कि मैं उनकी बातचीत को शब्दशः याद रख सकती।

अपनी पार्टी की नीति के कारण पिछले वर्षों में हमारे देश ने औद्योगिक क्षेत्र में अत्यधिक उन्नति की है।

हम जानते हैं कि श्रमिक वर्गों से निर्वाचित विशेषज्ञों को इन वर्षों में कैसा कैसा प्रशिक्षण दिया गया है, उनकी वर्ग-चेतना को

किस प्रकार प्रखर बनाया गया है तथा उनके सैन्य गुणों में क्या क्या विकास किया गया है।

इस समय हमारे देश में जो विविध कार्य हो रहे हैं उनमें इल्यीच ने कितना योग दिया था. इसे हम अच्छी तरह जानते हैं। उन्होंने हमें वह सत्परामर्श दिया जो वर्षों वर्षों तक हमारी प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा।

"लेनिनग्रादस्काया प्रावदा" अंक २७,
२२ अप्रैल १६३५

इल्यीच की प्रिय पुस्तकें

जिस साथी ने मेरा इल्यीच से परिचय कराया था उसने मुझे बताया कि वे वैज्ञानिक प्रवृत्ति के व्यक्ति हैं और केवल विज्ञान संबंधी पुस्तकों का अध्ययन करते हैं। उन्होंने न तो कभी कोई उपन्यास पढ़ा है और न कविता ही। मुझे यह सुन कर आश्चर्य हुआ। अपनी युवावस्था में मैंने उच्च कोटि के साहित्यिक लेखकों की कृतियाँ पढ़ी थीं। लेर्मोन्तोव मुझे ज़बानी याद था और चेरनिशेव्सकी, लेव तोलस्तोय और उसपेन्सकी तो जैसे मेरे जीवन का एक अंग ही बन गये थे। मुझे यह सुनकर आश्चर्य हुआ कि यह व्यक्ति इन सभी साहित्यिकों में तनिक भी रुचि नहीं रखता।

बाद में, जब अपने कार्य के दौरान में मेरा इल्यीच से अच्छा खासा परिचय हो गया उस समय मैंने यह जाना था कि वे मनुष्य का मूल्य किस प्रकार आंकते थे और मैंने स्वयं इस बात का अनुभव किया था कि वे मनुष्यों तथा मानव जीवन का अध्ययन कितने निकट से करते हैं। इस समय मेरे सामने इल्यीच नाम का जो महान् व्यक्ति था वह उस इल्यीच से कितना भिन्न था जिस का परिचय मुझे यह कहकर कराया गया था कि उसने मानव जीवन से संबंधित एक भी पुस्तक नहीं पढ़ी है।

जीवन की जटिलताओं ने हमें उपर्युक्त विषय पर विचार

विनिमय करने से वंचित कर दिया था। बाद में मुझे साइबेरिया में मालूम हुआ था कि इल्यीच ने उच्च कोटि के साहित्यिक ग्रन्थों को पढ़ा था। तुर्गनेव जैसे कुछ लेखकों की कृतियों को तो उन्होंने एकाधिक बार पढ़ा था। मैं अपने साथ साइबेरिया में पुश्किन, लेर्मोन्तोव तथा नेक्रासोव की कुछ पुस्तकें लेती आयी थी। इल्यीच ने ये पुस्तकें अपने पलंग के पास रख लीं, जहाँ पास ही हीगेल की कृतियाँ भी रखी हुई थीं। वे सायंकाल इन पुस्तकों को पढ़ा करते। पुश्किन उनका प्रिय लेखक था। परन्तु वे लेखकों की शैली मात्र में ही दिलचस्पी न रखते उदाहरणार्थ चेरनिशेव्स्की की "क्या करना चाहिए?" नामक पुस्तक उन्हें बड़ी पसन्द थी यद्यपि उसकी शैली बड़ी सीधी-सादी थी। जब मैंने देखा कि वे इस पुस्तक को कितने ध्यान से पढ़ते तथा इसकी अच्छी अच्छी बातों पर कितना ग़ौर करते तो मुझे विस्मय होता। यह उल्लेखनीय है कि वे चेरनिशेव्स्की के बड़े शौक़ीन थे। साइबेरिया के उनके एलबम में इस लेखक के दो चित्र थे जिनमें से एक पर उन्होंने उसकी जन्म तथा मरण तिथि लिख रखी थी। इस एलबम में एमिल ज़ोला तथा रूसी लेखक हरज़ेन और पीसरेव के भी चित्र थे। एक समय था जब इल्यीच पीसरेव के बड़े शौक़ीन थे, और उन्होंने उसकी बहुत सी कृतियों को पढ़ा था। साइबेरिया में हमारे पास गेटे की प्रसिद्ध कृति "फ़ौस्ट" और हैने की कविताओं का एक ग्रन्थ था। ये दोनों ही पुस्तकें जर्मन भाषा में थीं।

साइबेरिया से लौटने के बाद मास्को में इल्यीच "कोचवान हॉनशेल" नामक खेल देखने के लिए थियेटर गये थे। बाद में उन्होंने मुझे बताया कि वह खेल उन्हें बहुत पसन्द आया था।

मुझे याद है कि जब वे म्युनिच में थे उस समय वे जिन पुस्तकों को सबसे अधिक पसन्द करते थे, उन में गेरगार्द का उपन्यास "मां के पास" और पोलेन्त्स का "किसान" भी था।

बाद में, जब हम लोग दूसरी बार पेरिस में रह रहे थे उस समय इल्यीच को विक्टर ह्यूगो का काव्य "चैटिमेन्ट्स" बड़ा पसन्द आया। इस काव्य-संग्रह में १८४८ की क्रान्ति का उल्लेख था, और ह्यूगो ने इसे अपने विदेश निवास-काल में लिखा था। परन्तु इसकी कुछ प्रतियाँ चोरी चोरी फ़्रांस में भी आ गई थीं। यद्यपि इस में काव्याडंबर का तीखापन है फिर भी इसमें क्रान्ति की पुकार थी, क्रान्ति का सन्देश था। इल्यीच प्राय: पेरिस के भोजनालयों तथा उपनागर थियेटरों में जाया करते जहाँ उन्हें क्रान्ति-गान सुनने को मिल जाते। ये गायक श्रमिक वर्गों के प्रदेशों में प्राय: सभी प्रकार के गाने गाते जो विभिन्न अर्थों के द्योतक होते, जैसे मदोन्मत्त कृषकों द्वारा मंत्रि परिषद् के लिए एक यात्री आन्दोलन-कर्त्ता का निर्वाचन, बच्चों का भरण-पोषण, बेकारी इत्यादि। इल्यीच को मानटेगस की कृतियों का बड़ा शौक़ था। यह व्यक्ति पेरिस कम्यून में भाग लेने वाले एक व्यक्ति का पुत्र था और उसके गीत श्रमिक प्रदेशों में घर घर गूँजते थे। उसके गीत जीवन के माधुर्य से ओतप्रोत रहते। परन्तु उनमें किसी प्रकार के सिद्धान्तों का समावेश न था। हाँ, उनमें ऐसी बातें अवश्य थीं जो लोगों को अपनी ओर आकृष्ट कर लेतीं। इल्यीच इस का प्राय: वह गीत गाया करते जिस में १७ वीं टुकड़ी को इसलिए बधाई दी गई थी कि उसने हड़तालियों पर गोली चलाने से इनकार कर दिया था। एक बार एक दिन सायंकाल के समय, जब उसके कुछ रूसी दोस्त एकत्र थे, इल्यीच को मान्टेगस से बातचीत करने का अवसर मिला, और यह एक आश्चर्य की बात थी कि यद्यपि दोनों के दृष्टिकोण भिन्न थे फिर भी दोनों विश्व-क्रान्ति की कल्पना कर रहे थे। (यह उल्लेखनीय है कि जिस समय लड़ाई छिड़ी थी उस समय मान्टेगस ने अंधराष्ट्रवादियों का समर्थन किया था)। ऐसी चीज़ें प्राय: देखने को मिलती हैं—कभी

कभी ट्रेन में आपको कुछ ऐसे साथी मिल जाते हैं, जिनसे आप पहले से परिचित नहीं होते। ऐसे व्यक्तियों से आप गम्भीर विषयों पर भी बातें करते हैं और ऐसे विषयों पर भी जिन पर सम्भवत: आप अन्य किसी समय बात करना पसन्द न करेंगे। कुछ देर बाद आप दोनों अपने अपने रास्ते पर चले जाते हैं और फिर कभी नहीं मिलते। ऐसा ही यहाँ भी हुआ। दोनों की बातचीत फ़्रेंच में हो रही थी, और चूंकि अपनी भाषा की अपेक्षा किसी विदेशी भाषा में अपने आन्तरिक विचारों को अधिक ज़ोरों के साथ व्यक्त किया जाता है अतएव यहाँ भी वही बात देखने में आई। हमें दिन में कुछ घंटे काम करने वाली फ़्रेंच नौकरानी की सेवाएं प्राप्त थीं। एक बार इल्यीच ने उसे अल्सेस का गीत गाते सुना। गीत उन्हें पसन्द आया और उन्होंने उससे फिर गाने का अनुरोध किया। तत्पश्चात् उन्होंने स्वयं भी उसे याद कर लिया; और इसके बाद तो वे उसे प्राय: गुनगुनाया करते। इस गीत की अन्तिम कुछ पंक्तियां बड़ी मार्मिक थीं जिनका भाव था: "तुमने अल्सेस और लोरेन ले अवश्य लिए हैं, परन्तु तुम्हारे होते हुए भी हम फ़्रेंच ही रहेंगे। तुमने हमारे खेतों का जर्मनीकरण कर दिया है, परन्तु तुम हमारे दिलों को कभी भी नहीं बदल सकते।"

Vous avez pris l'Alsace et la Lorraine.
Mais malgré vous nous resterons français,
Vous avez pu germaniser nos plaines,
Mais notre cœur—vous ne l'aurez jamais!

यह बात १९०९ की है जब क्रान्ति की प्रतिक्रिया हुई थी और पार्टी हार गयी थी, परन्तु उसकी क्रान्ति की भावना पूर्ववत् बनी रही। यह गान इल्यीच की प्रकृति के अनुरूप था:

Mais notre cœur—vous ne l'aurez jamais!

इल्यीच के विदेश काल के ये वर्ष बड़े कठोर थे और जब कभी वे इस काल के संबंध में बात करते तो उनकी मुख-मुद्रा पर विषाद के लक्षण स्पष्ट प्रकट हो जाते। (जब हम लौटकर रूस वापस आ गये, उस समय भी हमसे एक बार उन्होंने फिर वही बात कही जिसे वे कई बार पहले कह चुके थे, अर्थात् "हम जेनेवा से पेरिस आये ही क्यों?") उन वर्षों में वे अनेक कल्पनायें किया करते। कभी ये कल्पनायें मानटेगस से की जाने वाली बातचीत के रूप में होतीं, कभी अल्सेस संबंधी गान के रूप में और कभी वरहेरन की रचनाओं के अध्ययन के रूप में।

इस काल के पश्चात्, युद्ध के दौरान में, इल्यीच को बार्बुसे की "आग" नामक पुस्तक बहुत पसन्द आई। वे इसे एक अत्यधिक महत्वपूर्ण कृति समझते क्योंकि इसमें स्वयं उनके अपने विचारों और भावनाओं का प्रतिबिम्ब था।

थियेटर हम लोग बहुत कम जाते और जब कभी जाते भी तो खेल की नीरसता और ख़राब अभिनय इल्यीच को प्रायः खिन्न कर देता और हम पहले ऐक्ट के बाद ही वहाँ से उठ कर चले जाते। अन्य साथी हम पर हंसते और छींटाकशी करते कि आख़िर हमने अपना पैसा क्यों बरबाद किया?

एक अवसर पर इल्यीच सारे समय बर्न के एक थियेटर में बैठे रहे। मैं समझती हूँ कि यह बात १९१५ के अन्त की है। खेल का नाम था तोलस्तोय कृत "ज़िन्दा लाश"। खेल जर्मनी भाषा में था, परन्तु उसमें जिस व्यक्ति ने शहज़ादे का अभिनय किया था वह रूसी था और उसने तोलस्तोय के विचारों को ठीक ठीक व्यक्त किया था। फलत: खेल उन्हें पसन्द आया और उन्होंने सारे खेल को बड़े ध्यान-पूर्वक देखा।

और अन्त में रूस की भी एक घटना उल्लेखनीय है। इल्यीच

को नई कला किसी प्रकार दुर्बोध तथा कुछ विदेशी सी लगी थी। घटना उस समय की है जब हमें क्रेमलिन में लाल सेना के लिए आयोजित एक कन्सर्ट में आमंत्रित किया गया था। इल्यीच सामने की पंक्ति में बैठे थे और अभिनेत्री गज़ोव्सकाया मयाकोव्सकी की कोई पंक्ति कह रही थी जिसका भाव था: "गति हमारा भगवान और हृदय हमारा ढोल है"। यह अभिनेत्री सीधे इल्यीच के सामने आगे बढ़ कर भाव-प्रदर्शन करने लगी। इसे देख कर इल्यीच को कुछ झेंप सी लगी थी। जिस समय इस अभिनेत्री के बाद एक अन्य अभिनेता ने स्थान ग्रहण किया और वह चेखोव की कृति "पातकी" पढ़ने लगा तो उन्होंने संतोष की सांस ली।

एक दिन सायंकाल के समय इल्यीच को यह जानने की इच्छा हुई कि कम्यूनों में नवयुवक किस प्रकार रह रहे हैं। अतएव हमने अपनी युवा मित्र, वार्या अरमांद, से मिलने का निश्चय किया जो आर्ट स्कूल के विद्यार्थियों के एक कम्यून में रह रही थी। मैं समझती हूँ कि हम लोग उससे मिलने ठीक उस दिन पहुंचे थे, जिस दिन १९२१ में क्रपोत्किन को दफ़नाया गया था। वहाँ के लोग ग़रीब थे परन्तु उनमें उत्साह था। उनके पास रोटी न थी। वे खाली तख़्तों पर सोया करते थे। कम्यून के एक सदस्य ने हमें बताया कि "हमारे पास अनाज का टोटा नहीं है"। उन्होंने इल्यीच के लिए हलुआ बनवाया परन्तु उस में नमक न था। इल्यीच ने उन नवयुवकों के प्रफुल्लित चेहरों की ओर निगाह डाली जो उन्हें घेरे खड़े थे। उनकी प्रसन्नता स्वयं इल्यीच के चेहरे पर प्रतिबिम्बित हो रही थी। इन लोगों ने उन्हें अपनी सीधी सरल ड्राइंग दिखाई और उन पर प्रश्नों की बौछार शुरू कर दी। इल्यीच ने मुस्कराते हुए, तथा उनके प्रश्नों के उत्तर बचाते हुए, स्वयं उनसे अपने प्रश्न आरम्भ कर दिये। "तुम क्या पढ़ते हो? क्या तुमने पुश्किन पढ़ा है?"

किसी ने उत्तर दिया "नहीं, वह बूर्जवा था। हम मयाकोव्सकी को पढ़ते हैं।" "मैं समझता हूँ पुश्किन अधिक अच्छा लेखक है"—इल्यीच ने कहकहा लगाते हुए कहा। इसके पश्चात् इल्यीच ने मयाकोव्सकी की भी थोड़ी प्रशंसा की। जब कभी उस कवि के नाम का उल्लेख आ जाता उस समय उनकी कल्पना के समक्ष कला के वे नवयुवक विद्यार्थी घुम जाते, जो प्रसन्नचित्त एवं प्रफुल्लित रहते हुए सोवियत प्रणाली के लिए अपने जीवन की बलि देने को कटिबद्ध थे। जब कभी इन विद्यार्थियों को अपने भावों की अभिव्यक्ति करनी होती तो वे तत्कालीन भाषा का नहीं अपितु मयाकोव्स्की की अगम्य कविताओं का सहारा लिया करते। बाद में, इल्यीच ने एक बार मयाकोव्स्की के बारे में कहा था कि उसने सोवियत लालफ़ीते का मखौल उड़ाते हुए जो सुन्दर कविता लिखी है उसके लिए वह प्रशंसा का पात्र है। मुझे याद है कि तत्कालीन पुस्तकों में से इल्यीच को एहरेनबर्ग का युद्ध संबंधी उपन्यास बड़ा प्रिय लगा था। एक बार उन्होंने ज़ोर देकर कहा भी था "आप जानते हैं कि रुक्ष इल्या (एहरेनबर्ग का कल्पित नाम) की पुस्तक कितनी उत्कृष्ट कोटि की रचना है।"

हम लोग कई बार कला थियेटर देखने गये। एक बार हमने "मूसलाधार वर्षा" नामक खेल देखा। इल्यीच ने उसे बड़ा पसन्द किया। दूसरे दिन हम गोर्की का "नीची गहराइयाँ" खेल देखने गये। इल्यीच व्यक्ति के रूप में गोर्की को बहुत पसन्द करते। उनसे उनकी निकट की जान पहचान पार्टी के लन्दन अधिवेशन में हुई थी। वे कलाकार गोर्की के भी शौक़ीन थे। वे कहा करते कि कलाकार गोर्की में वस्तुओं को परखने और समझने की अद्भुत क्षमता है। गोर्की के साथ वे बहुत खुलकर बातें करते और इसीलिए वे चाहते थे कि उनकी रचना का अभिनय उत्कृष्ट कोटि का हो। इल्यीच को

ज़रूरत से ज़्यादा अभिनय कभी पसन्द न आता। इससे वे खीज खीज उठते। "नीची गहराइयां" देखने के पश्चात् बहुत समय तक वे थियेटर नहीं गये। एक बार हम दोनों चेखोव का "चाचा वान्या" देखने गये। इल्यीच को यह खेल पसन्द आया। अन्तिम बार हम थियेटर देखने १९२२ में गये। इस बार हम ने डिकेन्स का "चूल्हे पर टिड्डा" नामक खेल देखा। पहले ऐक्ट के बाद से इल्यीच को उस खेल में कोई आनन्द न आया। कोई कोई स्थल तो उन्हें बहुत ही अरुचिकर लगे। अतएव जिस समय वृद्ध कुम्हार तथा उसकी अंधी पुत्री में बातचीत चल रही थी उस समय वे अधिक सहन न कर सके और ऐक्ट के बीच में ही हाल छोड़कर चल दिये।

अपने जीवन के अन्तिम महीनों में मैं उनके अनुरोध से उन्हें प्रायः सायंकाल कहानियां उपन्यास आदि सुनाया करती। मैंने उन्हें श्चेद्रिन की कृतियां और गोर्की का "मेरे विश्वविद्यालय" सुनाया था। वे कविताएं सुनना भी पसन्द करते विशेषकर देमयन बेदनी उन्हें बड़ा भाता। उसकी व्यंग्यपूर्ण कविताओं की अपेक्षा उन्हें वीर रस से ओतप्रोत कविताएं अधिक प्रिय थीं।

कविताएं सुनते समय कभी कभी वे विचारशील मुद्रा में खिड़की के बाहर अस्ताचल की ओर जाते हुए सूर्य को निहारा करते। मुझे वह कविता याद है जिसकी अन्तिम पंक्ति का आशय था कि "पेरिस कम्यून के सिद्धान्तों में विश्वास रखने वाले व्यक्ति कभी गुलाम न रहेंगे।"

जब जब मैं इल्यीच को यह पंक्ति सुनाती ऐसा लगता कि मैं उनके इस संकल्प को बार बार दुहरा रही हूं कि हम क्रान्ति द्वारा प्राप्त हुए लाभों में से एक का भी परित्याग नहीं करेंगे, नहीं करेंगे...

उनकी मृत्यु के दो दिन पूर्व मैंने उन्हें जैक लन्दन की "जीवन का प्रेम" शीर्षक एक कहानी सुनाई थी। वह अब भी उन के कमरे

में एक मेज़ पर रखी हुई है। यह एक जानदार कहानी है—बर्फ़ से ढके हुए एक निर्जन सूनसान स्थल पर, जहां पहले कभी मनुष्य के पैर तक न पड़े थे, एक बीमार और भूख से कराहता हुआ व्यक्ति नदी के घाट की ओर बढ़ रहा है। उसकी शक्ति क्षीण होती जा रही है। उसमें चलने की सामर्थ्य नहीं रही। वह रेंग रहा है। भूख से मरणासन्न एक भेड़िया उसका पीछा कर रहा है। भेड़िया निर्जीव सा है। वह भी रेंगते हुए चल रहा है। दोनों एक दूसरे के आमने सामने आते हैं। दोनों में लड़ाई होने लगती है और मनुष्य की पशु पर विजय होती है। अर्द्ध-मृत, अर्द्ध-विक्षत मनुष्य अपने लक्ष्य की ओर बढ़ता है और अन्त में उसे प्राप्त करता है। इस कहानी ने इल्यीच को बड़ा द्रवित कर दिया था। दूसरे दिन उन्होंने मुझे लन्दन की कोई दूसरी कहानी सुनाने का अनुरोध किया। जैक लन्दन की विशेषता यही रही है कि उसने सदा शक्तिशाली को अत्यधिक अशक्त के साथ चित्रित किया। दूसरी कहानी बिल्कुल भिन्न थी। इसमें बूर्जवा सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया था—किसी जहाज़ का कप्तान जहाज़ के स्वामी को यह वचन देता है कि वह जहाज पर लदे अनाज को अच्छे मूल्य पर बेच देगा। अपने वचन को निभाने के लिए कप्तान अपना जीवन दे देता है। इस कहानी को सुनकर इल्यीच हंसे थे और उन्होंने अपना हाथ हिलाया था।

अन्तिम बार मैंने उन्हें यही कहानी सुनाई थी...

न० क० क्रूप्स्काया
लेनिन विषयक संस्मरण
राज्य प्रकाशन गृह, १९३१

अध्ययन के लिए

लेनिन पुस्तकालयों का कैसे प्रयोग करते थे

लेनिन ने अपना अधिकांश समय पुस्तकालयों में ही व्यतीत किया। जब वे समारा में रहते थे उस समय अधिकांश पुस्तकें पुस्तकालय से मंगाया करते थे। बाद में, पीटर्सबर्ग में कई कई दिन तक वे सार्वजनिक पुस्तकालय में पढ़ने गये और फ़्री इकानोमिक समिति के पुस्तकालय तथा अन्य पुस्तकालयों से पुस्तकें मंगाने लगे। जेल में भी उनकी बहन उनके लिए पुस्तकालयों की पुस्तकें लाया करती। इन पुस्तकों में से वे अपनी टिप्पणियाँ तैयार कर लिया करते। लेनिन ग्रंथावली के दूसरे संस्करण के तीसरे खंड में इस बात का उल्लेख है कि "रूस में पूंजीवाद का विकास" शीर्षक अपनी पुस्तक लिखने में उन्हें ५८३ ग्रंथों का अवलोकन करना पड़ा था। उनकी उक्त पुस्तक में इन सभी ग्रन्थों के निर्देश दिये हैं। क्या लेनिन के लिए इतनी पुस्तकें खरीदना कभी संभव हो सकता था? बहुत सी पुस्तकें तो बिक्री के लिए प्रकाशित ही नहीं हुई थीं; उदाहरणार्थ ज़ेम्स्तवो की आंकड़ा सामग्री। यह सामग्री उनके लिए विशेष रूप से मूल्यवान थी। इसके अलावा उस समय वे विद्यार्थी की भांति रह रहे

थे और उन्हें एक एक पैसे के लिए जोड़-तोड़ करना पड़ता था। यदि वे पुस्तकें उन्हें ख़रीदनी पड़तीं तो उनके हज़ारों रूबल खर्च हो गये होते। और इतना धन व्यय करना उनकी सामर्थ्य के बाहर था। इसके अतिरिक्त पुस्तकों की दूकान में पुस्तकें ढूढ़ने के लिए भी उनके पास समय न था। पुस्तकालयों के कारण उनका बहुमूल्य समय नष्ट होने से बच गया और इस समय को उन्होंने अध्ययन में लगाया। वास्तविकता यह थी कि यदि उनके पास पुस्तकालयों की पुस्तक-सूची न होती तो अनेकानेक पुस्तकों का नाम भी उन्हें न मालूम हुआ होता। इन सब बातों के अलावा, उनका कमरा इतना छोटा था कि अपना पुस्तकालय रखने की वहाँ कोई जगह ही न थी। उनके अध्ययन ने उन्हें "रूस में पूंजीवाद का विकास" शीर्षक उनकी प्रसिद्ध पुस्तक की तैयारी में तो सहायता दी ही, साथ ही इससे उन्हें औद्योगिक श्रमिकों तथा कृषकों की जीवन-चर्या और उनकी श्रम-व्यवस्था आदि की भी अच्छी जानकारी प्राप्त हुई। यदि लेनिन का अध्ययन इतना गहन न होता तो शायद हमारे सामने लेनिन का वह महान् व्यक्तित्व न आ पाता जिसे हम सबों ने अपने इन्हीं चर्मचक्षुओं से देखा था। "रूस में पूंजीवाद का विकास" पुस्तक १८९९ में प्रकाशित हुई।

विदेशों में तो इल्यीच ने पुस्तकालयों का और भी अधिक उपयोग किया। वे विदेशी भाषाएं जानते थे। अतएव उन्होंने इन भाषाओं की पुस्तकों का अध्ययन किया। विदेशों में तो इन पुस्तकों को ख़रीदने की वे कल्पना भी न कर सकते थे क्योंकि वहाँ उनके लिए एक एक पाई का मूल्य था और उन्हें ट्राम तथा भोजन पर होने वाले व्यय के लिए पैसा पैसा जोड़ना पड़ता था। परन्तु पढ़ना उनके लिए अनिवार्य था। पुस्तकों तथा विदेशी पत्र-पत्रिकाओं के अभाव में उनका कार्य प्रायः असंभव हो गया होता और साथ ही उन्हें उतना ज्ञान भी न प्राप्त हो सकता जितना हुआ था।

"संबंधियों को पत्र" के अवलोकन से पता चलेगा कि वे पुस्तकालयों को कितना महत्व देते थे।

१८९५ में वे पहली बार विदेश गये और कुछ सप्ताह तक बर्लिन में रह कर वहां के अनुभव प्राप्त करते रहे। वे श्रमिकों के जीवन का अध्ययन करने तथा इम्पीरियल पुस्तकालय में पुस्तकें पढ़ने में अपना अधिक समय व्यय करते थे। इसके पश्चात्, उसी वर्ष उन्होंने जेल में तीन हफ़्तों में ही पुस्तकालय से पुस्तकें मंगवाने की व्यवस्था कर ली। जेल पुस्तकालय का प्रयोग करने के अलावा उन्होंने बाहर से भी पुस्तकें मंगाने का प्रबन्ध किया था। अपनी गिरफ़्तारी के तीन सप्ताह बाद उन्होंने जेल की अपनी कोठरी से यह पत्र लिखा था—

"...क़ैदियों को पढ़ने की अनुमति है। यद्यपि मुझे यह बात पहले से ही मालूम थी, फिर भी मैंने जानबूझकर यह बात अभियोक्ता से पूछी (जिन लोगों को दंडाज्ञा मिल चुकी है उन्हें भी पढ़ने की सुविधाएं दी जाती हैं)। अभियोक्ता ने इस बात की पुष्टि की कि क़ैदियों को किसी भी संख्या में पुस्तकें भेजी जा सकती हैं। इन पुस्तकों को पढ़कर वापस भी किया जा सकता है। फलतः पुस्तकें पुस्तकालयों से भी ली जा सकती हैं। यह व्यवस्था निश्चय ही अच्छी है।

"पुस्तकें प्राप्त करना काफ़ी दुष्कर है। बहुत सी पुस्तकों की आवश्यकता पड़ती है। मैं उन पुस्तकों की सूची दे रहा हूं जिनकी मुझे आवश्यकता है, परन्तु इन्हें प्राप्त करने में काफ़ी श्रम लगेगा। मुझे यह भी विश्वास नहीं है कि सारी पुस्तकें मिल जायेंगी। आप फ़्री इकोनोमिक समिति के पुस्तकालय पर निर्भर रह सकते हैं (मैंने वहां से पुस्तकें ली हैं और मेरे १६ रूबल वहाँ अभी भी जमा हैं)।

इस पुस्तकालय से शुल्क देने पर दो महीने तक के लिए पुस्तकें ली जा सकती हैं। परन्तु वहां का संग्रह अच्छा नहीं है। यदि आप (किसी लेखक या प्रोफ़ेसर की सहायता से) विश्वविद्यालय के पुस्तकालय से तथा वित्त मंत्रालय की विज्ञान समिति के पुस्तकालय से पुस्तकें प्राप्त करने की व्यवस्था कर लें तो पुस्तकों की कठिनाई दूर की जा सकती है।

"अन्तिम और सबसे कठिन काम है इन पुस्तकों को मुझ तक पहुंचाना। यह दो एक छोटी छोटी पुस्तकें लाने की बात नहीं है। इसके लिए समय समय पर, और काफ़ी लम्बी अवधि तक के लिए, पुस्तकालयों में जाने, वहां से पुस्तकें प्राप्त करने और फिर उन्हें यहां तक लाने की ज़रूरत होगी (मैं समझता हूं कि यदि आप प्रति बार उतनी पुस्तकें यहां ले आएं जितनी ला सकती हैं, तो पुस्तकों की व्यवस्था करने में महीने में एक बार या पन्द्रह दिन में एक बार ही तकलीफ़ होगी)। तत्पश्चात् पढ़ी जा चुकी पुस्तकों को मुझसे वापस भी ले जाना होगा। अच्छा हो यदि आप किसी दरबान, किसी संदेशवाहक अथवा किसी लड़के को रख लें जिसे मैं कुछ दे दिया करूंगा और वह यह काम कर दिया करेगा। यह आवश्यक है कि व्यावहारिक दशाओं में, और पुस्तकालयों में पुस्तकें देने के लिए निश्चित नियमों के अनुरूप ही, वहां से पुस्तकें प्राप्त करने अथवा लौटाने की अच्छी व्यवस्था की जाय।

"'कहना आसान है—करना कठिन...' मैं समझता हूं कि यह कार्य बहुत कठिन है और मुझे शंका है कि कहीं मेरी 'योजना' कल्पना मात्र ही न रह जाय..."*

---

* व्ला० इ० लेनिन, संबंधियों को पत्र, १९३४, पृष्ठ १४—१५—संपादक

आन्ना ने पुस्तकालय से पुस्तक लेने और जेल में उन्हें भाई तक पहुँचाने की ज़िम्मेदारी अपने ऊपर ली।

निष्कासन के लिए निर्दिष्ट गन्तव्य स्थान तक जाते समय इल्यीच को ४ मार्च से लेकर ३० अप्रैल १८९७ तक क्रासनोयार्स्क में रहना पड़ा था। इस काल में यहाँ उन्होंने एक पुस्तकालय का उपयोग किया था जिसके मालिक का नाम यूदिन था। १० मार्च को उन्होंने क्रासनोयार्स्क से माता जी को लिखा था—

"...कल मैं प्रसिद्ध यूदिन पुस्तकालय गया। पुस्तकालय के स्वामी ने मेरा हार्दिक स्वागत किया और मुझे अपना संग्रह दिखाया। उसने मुझे अपने पुस्तकालय का उपयोग करने की अनुमति दी। मैं समझता हूँ कि मैं पुस्तकालय का उपयोग अवश्य करूंगा (मेरे मार्ग में दो कठिनाइयाँ हैं—पहली यह कि पुस्तकालय लगभग डेढ़ मील दूर नगर से कुछ बाहर है और वहाँ तक टहलते टहलते ही पहुँचा जा सकता है और दूसरी यह कि वह ठीक तरह से व्यवस्थित नहीं है। मुझे भय है कि अपनी रुचि की पुस्तकें निकलवाने में मुझे पुस्तकालय के स्वामी को काफ़ी कष्ट देना होगा)। आगे चलकर हम इस बात का भी अनुभव करेंगे कि व्यवहार में क्या क्या कठिनाइयाँ सामने आती हैं। मैं समझता हूँ कि दूसरी कठिनाई दूर की जा सकती है। मैंने अभी तक पूरा पुस्तकालय नहीं देखा है। परन्तु जो कुछ भी देख सका हूँ उसके आधार पर कह सकता हूँ कि यहाँ का संग्रह बहुत सुन्दर है। यहाँ १८ वीं शताब्दी के अन्त से लेकर अद्यावधि (प्रमुख) पत्र-पत्रिकाओं की पूरी पूरी फाइलें हैं। मुझे आशा है कि मैं उनमें से अपने कार्यों के लिए उपयोगी सामग्री प्राप्त कर सकूँगा..."*

---

* वही, पृष्ठ २६। —संपादक

पाँच दिन बाद १५ मार्च को उनके दूसरे पत्र में लिखा था "...मैं प्रतिदिन पुस्तकालय जाता हूँ और चूंकि यह पुस्तकालय नगर के बाहर लगभग डेढ़ मील पर है अतएव मुझे लौटा फेरी में तीन मील का चक्कर लगाना पड़ता है जिसमें लगभग एक घंटा लग जाता है। मुझे घूमना पसन्द है और यद्यपि कभी कभी ऊंघ जाता हूँ फिर भी मुझे टहलने में एक विशेष आनन्द की अनुभूति होती है। पुस्तकालय के आकार-प्रकार को देखते हुए मैंने जो अनुमान लगाया था उसके अनुरूप वहाँ उस विषय पर, जिस पर मैं काम करना चाहता हूँ, उतनी पुस्तकें नहीं हैं जितनी मुझे ज़रूरत होंगी। फिर भी यहाँ ऐसी चीज़ें हैं जिन्हें मैं उपयोगी समझता हूँ। मुझे प्रसन्नता है कि यहाँ मेरा समय नष्ट नहीं हो रहा है। मैं नगरपालिका पुस्तकालय भी जाया करता हूँ जहाँ मुझे ११ दिन बाद के समाचार-पत्र और पत्रिकाएं पढ़ने को मिल जाती हैं। इन पुरानी 'खबरों' का आदी बनना मुझे कुछ कठिन प्रतीत हो रहा है।"*

अपने निष्कासन स्थल — शुशेन्स्कोये ग्राम, में पहुँच कर जहाँ पत्र तथा समाचारपत्र आदि केवल १३ वें दिन पहुँचा करते थे, लेनिन ने साइबेरिया के इस दूरस्थ कोने में भी मास्को के पुस्तकालयों से पुस्तकें मंगाने की व्यवस्था की थी।

२५ मई १८९७ के अपने एक पत्र में इल्यीच ने मास्को में अपनी बहन आन्ना को लिखा था —

"...मैं मास्को के पुस्तकालयों का उपयोग करने की बात सोच रहा हूँ। क्या आप इस सम्बन्ध में कुछ व्यवस्था कर सकी हैं, अर्थात् क्या आप किसी सार्वजनिक पुस्तकालय में गई हैं? मतलब यह कि क्या दो महीनों के लिए पुस्तकें लेना सम्भव है? (जैसी कि सेन्ट-पीटर्सबर्ग

---

* वही, पृष्ठ २७— २८। — संपादक

में फ़्री इकोनोमिक समिति के पुस्तकालय में व्यवस्था थी। पार्सल का ख़र्च भी ज्यादा नहीं है—प्रति पाउंड १६ कोपेक तथा रजिस्ट्री के लिए ७ कोपेक अर्थात् अधिक से अधिक ४ पाउंड की पुस्तकें आप ६४ कोपेक में भेज सकती हैं)। सम्भवत: मेरे लिए डाक पर पैसा ख़र्च करना और अधिक पुस्तकें मंगा कर पढ़ना थोड़ी सी पुस्तकों की ख़रीद पर ढेरों रुपया ख़र्च करने से कहीं सस्ता पड़ता है। मैं समझता हूं कि मेरे लिए यही व्यवस्था अधिक अच्छी रहेगी। प्रश्न केवल यही है कि क्या किसी अच्छे पुस्तकालय से हमें (शुल्क जमा करके) दो महीने के लिए पुस्तकें मिल भी सकती हैं या नहीं। यूनिवर्सिटी पुस्तकालय (मैं समझता हूं कि मित्या या तो क़ानून के किसी विद्यार्थी की मार्फ़त अथवा राजनीतिक अर्थ-व्यवस्था के किसी प्रोफ़ेसर के पास सीधे जाकर, और यह कहकर कि वह इस विषय का अध्ययन करना चाहता है, प्रधान पुस्तकालय से पुस्तकें ले सकता है। परन्तु इसके लिए शरद ऋतु तक प्रतीक्षा करनी होगी) अथवा मास्को क़ानून समिति के पुस्तकालय (वहां भी पूछताछ कर लेना और उनसे पुस्तक-सूची मांगना तथा सदस्यता की शर्तों आदि का पता लगाना) अथवा किसी अन्य पुस्तकालय से पुस्तकें प्राप्त की जा सकती हैं। सम्भवत: मास्को में कुछ अन्य अच्छे पुस्तकालय भी हैं। हो सके तो निजी पुस्तकालयों का भी पता लगाना। यदि आप लोगों में से कोई इस समय मास्को में हो तो इसका पता चला ले।

"यदि आप विदेश जायं तो मुझे बता दें। मैं वहां से पुस्तकें प्राप्त करने के लिए सविस्तर लिखूंगा। मुझे पुस्तकों की दुकानों तथा पुस्तकालयों आदि की समस्त सूचियां भी भेज दें।

भवदीय व्ला०उ० "*

---

* वही, पृष्ठ ४८—संपादक

१६ जुलाई १८६७ के एक पत्र में जो माता जी तथा मारिया दोनों ही के नाम था, इल्यीच ने उसके लिए अवतरण भेजने के मारिया के प्रस्ताव के सम्बन्ध में लिखा था — "अवतरणों के सम्बन्ध में मुझे यह विश्वास नहीं है कि उनसे कोई भी मदद मिलेगी। मुझे आशा है कि शरद काल तक मास्को या सेन्ट-पीटर्सबर्ग के पुस्तकालयों से कोई न कोई प्रबन्ध अवश्य हो जायगा।"*

१८६७ के जाड़े के मौसम में उन्होंने अपने संबंधियों को एक पत्र लिखा था जिससे पता चलता है कि इन लोगों ने उनके निर्देशानुसार कार्य किया था। परन्तु वे कुछ अन्य सुविधाएं प्राप्त करना चाहते थे।

"प्रिय मारिया, मुझे (१४) २.१२ तारीख़ का तुम्हारा पोस्टकार्ड मिला और सेम्योनोव की दो पुस्तकें भी प्राप्त हुईं। धन्यवाद। मैं अधिक से अधिक एक सप्ताह के भीतर उन्हें वापस कर दूंगा। (मैं समझता हूं कि बुधवार(५.१) २४ तारीख़ को डाकिया बिल्कुल न जायेगा)।

"मैंने पहले दो खंडों को देखा है और उनमें मेरी रुचि की कोई बात नहीं है। मैं समझता हूं कि हमें जिन पुस्तकों के बारे में कोई जानकारी नहीं होती, उन्हें मंगाने में इस प्रकार की चीज़ अपरिहार्य ही है। मैंने पहले ही इसकी कल्पना कर ली थी।

"मुझे आशा है मुझे जुर्माना नहीं देना होगा। वे पुस्तकों की वापसी अगले महीने तक के लिए स्थगित कर देंगे।

"मैं तुम्हारा यह वाक्य नहीं समझा — 'लॉ सोसायटी पुस्तकालय का उपयोग करने के उद्देश्य से — मैंने इसके बारे में कबलूकोव से पूछा था — वकील होना ज़रूरी है और सोसायटी के दो सदस्यों की

---

* वही, पृष्ठ ५७ — संपादक

सिफ़ारिशें भी आवश्यक हैं'। केवल यही? क्या सोसायटी का सदस्य होना आवश्यक नहीं है? मैं सेन्ट-पीटर्सबर्ग से सिफ़ारिश प्राप्त करने का प्रयत्न करूंगा।

"मुझे इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि कोई ऐसा व्यक्ति भी सोसायटी का सदस्य हो सकता है जो वकील न हो।

"तुम्हारा स्नेह-भाजन व्ला० उ०"*

परन्तु डाक सम्बन्धी कठिनाइयों के कारण शूशेन्सकोये में पुस्तकालयों का किसी भी प्रकार का संतोषजनक उपयोग सम्भव न रह गया था।

सितम्बर १८९८ में इल्यीच को दाँत का इलाज कराने के लिए क्रासनोयार्स्क जाने की अनुमति मिल गई। उन्हें इससे बहुत प्रसन्नता हुई और उन्होंने स्थानीय पुस्तकालय का उपयोग करने की एक योजना बनाई।**

निष्कासन से लौटने पर वे प्स्कोव में बस गये। उन्होंने १५ मार्च १९०० को एक पत्र में माता जी को लिखा था कि "मैं प्राय: पुस्तकालय जाता हूँ और टहलता भी हूँ।"***

जब वे विदेश में थे उस समय अपना अधिकांश समय वे पुस्तकालयों में ही व्यतीत करते, परन्तु उन्होंने अपने परिवार वालों को जो पत्र लिखे थे उनमें उस बात का उल्लेख बहुत ही कम हुआ था।

१९०२—३ में लन्दन में हमारे अस्थायी निवास के दौरान में इल्यीच का आधा समय ब्रिटिश संग्रहालय में ही व्यतीत हुआ था। इस संग्रहालय में संसार भर में सबसे अधिक पुस्तकें हैं और यहाँ की

---

* वही, पृष्ठ ७७ — संपादक

** वही, पृष्ठ १३० — संपादक

*** वही, पृष्ठ २३८ — संपादक

सेवाएँ भी बहुत सक्षम हैं। वे प्राय: वाचनालयों में भी गये थे जैसा कि उनके उस पत्र से प्रकट है, जो उन्होंने २७ अक्तूबर १९०२ को माता जी को लिखा था।*

"लंदन में बहुत से वाचनालय हैं जिनके कमरों में सीधे सड़कों पर से प्रवेश किया जा सकता है। यहाँ कुर्सियाँ नहीं हैं परन्तु खड़े होकर पढ़ने की सुविधाएँ हैं। यहाँ लोग खूंटियों से लटकते हुए अख़बार पढ़ लेते हैं। कमरे में घुसते ही आप खूंटियों से अख़बार उतार सकते हैं और पढ़ने के बाद फिर उसे यथास्थान रख सकते हैं। ये वाचनालय बहुत सुविधाजनक हैं। दिन भर में यहाँ बहुत से व्यक्ति पढ़ने आते हैं।"

अपनी दूसरी विदेश यात्रा के दौरान में जब लोगों में दार्शनिक विषयों पर विचार-विमर्श चल रहा था, इल्यीच "मैटीरियलीज़्म ऐंड एम्पीरिओक्रिटिसिज़्म" शीर्षक अपनी पुस्तक लिखने में व्यस्त थे। उस समय वे मई १९०८ में ब्रिटिश संग्रहालय में विशेष अध्ययन करने के निमित्त जेनेवा से लंदन गये थे।

जेनेवा में, जहाँ हम १९०३ में पहुंचे थे, इल्यीच "सोसाइटी दे लेक्तुरे" पुस्तकालय में दिन के दिन बिता देते। यह एक बहुत बड़ा पुस्तकालय था जहाँ पढ़ने के लिए आदर्श सुविधाएं उपलब्ध थीं। इस पुस्तकालय में अनेकानेक फ्रेंच, जर्मन और अंग्रेज़ी समाचारपत्र तथा पुस्तकें मंगाई जाती थीं। सोसायटी के सदस्य प्राय: वृद्ध प्रोफ़ेसर होते थे, जो यदा कदा ही पुस्तकालय जाया करते। इल्यीच वहाँ एक कमरे में बैठ कर पढ़ते लिखते या चहलक़दमी कर लेते। इस प्रकार वे अपने लेखों पर भी मनन कर सकते थे। वे अल्मारी से ऐसी कोई भी पुस्तक उठा कर पढ़ सकते थे जिसकी उन्हें आवश्यकता होती थी।

---

* वही, पृष्ठ २८६ — संपादक

यहां वे एक समृद्ध रूसी पुस्तकालय में पढ़ने जाया करते।

इस पुस्तकालय का नाम कुकलिन के नाम पर था और साथी कारपिंसकी इसका अध्यक्ष था। अन्य नगरों में अपने निवास के समय वे इसी पुस्तकालय से पुस्तकें लिया करते थे।

जब वे पेरिस में रह रहे थे उस समय मुख्यतया "बिबलियाथेक नेशनाल" नामक पुस्तकालय में पढ़ने जाया करते थे।

इस पुस्तकालय में उनके कार्य के संबंध में मैंने दिसम्बर १९०९ को उनकी माता जी को लिखा था —

"पिछले एक सप्ताह से भी कुछ अधिक से वे पुस्तकालय जाने के लिए प्रात:काल आठ बजे उठते हैं और वहां से अपराह्न २ बजे वापस आते हैं। पहले तो उन्हें इतने सबेरे उठने में कष्ट होता था परन्तु अब इसमें कोई भी असुविधा नहीं होती। वे जल्दी सो भी जाते हैं"।*

इल्यीच ने पेरिस के कुछ अन्य पुस्तकालयों का भी उपयोग किया। परन्तु उन्हें वे पसन्द न आये। "बिबलियाथेक नेशनाल" में नवीनतम पुस्तक-सूचियां नहीं थीं और पुस्तकें लेने में लाल-फ़ीता व्यवस्था का आधिक्य था। सच पूछा जाय तो फ़्रेंच पुस्तकालयों की विशेषता ही लाल-फ़ीता थी। नगरपालिका पुस्तकालयों में अधिकतर कहानी उपन्यास की पुस्तकें रहती थीं परन्तु पुस्तक मिलने के पूर्व मालिक मकान से इस आशय का एक प्रमाण-पत्र ले लिया जाता था कि वह समय से पुस्तक लौटाने के लिए ज़िम्मेदार है। हमारी अर्थिक स्थिति सुदृढ़ न थी। अतएव हमारे मालिक मकान ने हमें उक्त प्रमाण-पत्र देने में विलम्ब कर दिया था। इल्यीच किसी देश के सांस्कृतिक स्तर का अनुमान लगाने के लिये यह देखा करते थे कि वहां के पुस्तकालयों का संचालन किस प्रकार किया जाता है।

---

* वही, पृष्ठ ३५३ — संपादक

उन्होंने ६ अप्रैल १६१४ को क्रैको से अपनी माता जी को लिखा था—

"...पेरिस काम करने के लिए सुविधाजनक स्थान नहीं है। "बिबलियाथेक नेशनाल" का संचालन ठीक प्रकार से नहीं हो रहा है। मुझे प्रायः जेनेवा की याद आ जाती है जहां काम आसानी से हो जाता था। वहां मुझे एक पुस्तकालय में बड़ी सुविधाएं प्राप्त थीं और मैं शांत वातावरण में काम कर सकता था। जिन जिन स्थानों पर मुझे जाना पड़ा उनमें मुझे लंदन या जेनेवा विशेष रूप से पसन्द हैं यदि वे इतनी दूर न होते। सामान्य संस्कृति तथा आराम की दृष्टि से जेनेवा बड़ी सुन्दर जगह है। परन्तु यहां संस्कृति का तो प्रश्न ही नहीं उठता। यह बहुत कुछ रूस के समान है। यहां का पुस्तकालय ख़राब तथा अत्यधिक असुविधापूर्ण है, परन्तु समयाभाव के कारण मैं वहां बहुत कम जाता हूं..."*

जब हम क्रैको से बर्न लौटे उस समय इल्यीच ने ६ दिसम्बर १६१४ के एक पत्र में अपनी बहन मारिया को लिखा था:

"...यहां अच्छे पुस्तकालय हैं और जहां तक पुस्तकों का संबंध है मुझे कोई परेशानी नहीं होती। दिन भर किसी समाचारपत्र में अथक परिश्रम करने के पश्चात् जब पढ़ने का अवकाश मिल जाता है, उस समय अध्ययन में कितना आनन्द आता है। नदेज्हदा भी शिक्षण-शास्त्र विषयक एक पुस्तकालय का उपयोग कर रही है और वह शिक्षा विषयक एक पुस्तक लिख रही है..."**

७ फ़र्वरी १६१६ को मारिया को लिखे गये अपने एक पत्र में इल्यीच ने लिखा था—"नदेज्हदा तथा मैं ज्यूरिच में बड़े प्रसन्न हैं।

---

* वही, पृष्ठ ४०२-४०३—संपादक

** वही, पृष्ठ ४०५—संपादक

यहाँ अच्छे अच्छे पुस्तकालय हैं।" तीन सप्ताह पश्चात् उन्होंने माता जी को लिखा था "...हम ज्यूरिच में रह रहे हैं जहाँ हम स्थानीय पुस्तकालयों में आते जाते हैं। हमें झील पसन्द है। यहाँ के पुस्तकालय बर्न की अपेक्षा अधिक अच्छे हैं। अतएव हम पूर्व निश्चय की अपेक्षा अब यहाँ कुछ अधिक काल तक ठहरेंगे।"*

९ अक्तूबर के एक पत्र में इल्यीच ने मारिया को लिखा था, "ज्यूरिच में पुस्तकालय अपेक्षाकृत अच्छे हैं और काम करने की सुविधाएं भी उत्तम हैं।"**

स्विस पुस्तकालयों का संचालन बहुत योग्यता के साथ किया जाता है। यहाँ की उल्लेखनीय विशेषता यह है कि यहाँ पुस्तकालय आपस में अपनी पुस्तकों का अपेक्षानुसार पारस्परिक विनिमय करते हैं। जर्मन स्विटज़रलैंड के वैज्ञानिक पुस्तकालयों का संबंध जर्मनी के वैज्ञानिक पुस्तकालयों से रहता है। युद्ध काल के दौरान में भी इल्यीच को यथावश्यकता जर्मनी से किताबें मिल जाती थीं।

दूसरी विशेषता यह है कि वे पाठकों के वास्तविक सहायक हैं — यहाँ की सुन्दर शुद्ध पुस्तक-सूचियाँ, खुली अलमारियाँ, कर्मचारियों का पाठकों में रुचि लेना और लाल-फ़ीते का अभाव ऐसी बातें हैं जिन्हें देख कर पाठक मुग्ध हो जाता है।

१९१५ के गर्मी के मौसम में हम रोथर्न पहाड़ियों की तलहटी पर बसे हुए एक दूरस्थ गांव में रहते थे। यहाँ हमें बराबर पुस्तकालयों से पुस्तकें मिलती रहतीं। पुस्तकें डाक द्वारा भेजी जातीं। हमें डाक-टिकट तक के पैसे न देने पड़ते। ये पुस्तकें काग़ज़ के पैकटों में आती थीं। इन पैकटों के साथ एक लेबिल रहता था जिसके एक ओर पुस्तक पाने वाले का तथा दूसरी

---

* वही, पृष्ठ ४१५-४१६ — संपादक

** वही, पृष्ठ ४१८ — संपादक

ओर प्रेषक पुस्तकालय का पता रहता था। पुस्तक वापस करते समय केवल लेबिल को उलट दिया जाता और पुस्तकें डाकखाने में भेज दी जातीं।

इल्यीच सदैव स्विस संस्कृति की सराहना किया करते थे। वे एक ऐसी पुस्तकालय-पद्धति की कल्पना कर रहे थे जिसकी क्रान्ति के पश्चात् रूस में व्यवस्था की जा सके।

न० क० क्रूप्स्काया
पुस्तकालयों के संबंध में लेनिन
ने क्या कहा और क्या लिखा
पार्टी प्रकाशन गृह, १९३४

विदेशी भाषाएं सीखने के संबंध में लेनिन का मत

लेनिन अनेक विदेशी भाषाएं जानते थे। उन्हें जर्मन, फ़्रेंच और अंग्रेज़ी का अच्छा ज्ञान था। उन्होंने इन भाषाओं का अध्ययन किया था और उनसे अनुवाद किया था। उन्होंने पोलिश तथा इटैलियन भाषाएं भी पढ़ी थीं। कभी कभी "आराम के लिए" वे किसी कोष को उठा लेते और उसी के पन्ने पलटने लगते। बहुतों का विचार है कि विदेशी भाषा तथा मातृभाषा के अध्ययन में कोई पारस्परिक संबंध नहीं किन्तु वास्तविकता यह है कि उनमें संबंध ही नहीं अपितु घनिष्ठता भी है। विदेशी भाषाओं के अध्ययन से मातृभाषाओं को बल मिलता है, वे समृद्ध बनती हैं, सुस्पष्ट बनती हैं और उनमें भावाभिव्यक्ति की क्षमता पैदा होती है। जिन लोगों ने लेनिन की भाषा का अध्ययन किया है वे जानते हैं कि उनकी भाषा कितनी समृद्ध, आकर्षक तथा भावपूर्ण होती है। लेनिन ने स्कूली वर्षों में कौन सी भाषाएं सीखी थीं? लेनिन ने पाठशाला का पाठ्यक्रम पूरा किया था। वहाँ रूसी, स्लैवोनिक, लेटिन, ग्रीक, फ़्रेंच और जर्मन ये छ भाषाएं सिखाई जाती थीं। इनमें से तीन जीवित तथा तीन मृत थीं।

इल्यीच ने एक बार बताया था कि पाठशाला की छोटी कक्षाओं के एक जर्मन अध्यापक ने जर्मन व्याकरण के ज्ञान के लिए उनकी कितनी प्रशंसा की थी। इल्यीच की माता जी को जर्मन भाषा का अच्छा ज्ञान था। इसका उनके जर्मन भाषा संबंधी ज्ञान पर अच्छा प्रभाव पड़ा। युवावस्था में वे यह समझते कि उन्हें जर्मन का अच्छा ज्ञान है और इसमें सन्देह नहीं कि अपने स्कूल के अन्य साथियों की अपेक्षा उनका जर्मन-ज्ञान कहीं बढ़ा चढ़ा था। परन्तु १८६५ के गर्मी के मौसम में बर्लिन में उन्हें पता चला कि बोली जानेवाली जर्मन को समझने में उन्हें बड़ी कठिनाई होती है। माता जी को अपने एक पत्र में उन्होंने लिखा था — "... यहाँ एक ही कठिनाई है और वह है भाषा की। बोली जानेवाली फ्रेंच की तुलना में बोली जाने वाली जर्मन मेरी समझ में कम आती है। जर्मन उच्चारण का मैं इतना अनभ्यस्त हूँ कि मुझे सार्वजनिक सभाओं के भाषण समझने में भी कठिनाई होती है। जब मैं फ्रांस में था उस समय पहले ही दिन से मैं प्राय: सभी भाषण समझ लिया करता था। परसों मैं थियेटर गया था जहाँ मैं ने हाप्तमन का "जुलाहे" खेल देखा। यद्यपि मैंने यह पूरा नाटक इस उद्देश्य से दुबारा पढ़ लिया था कि मैं उसके अभिनय को समझ सकूँ परन्तु मैं इसके सारे के सारे वाक्यों को न समझ सका। हाँ मैं निराश नहीं हुआ। खेद इतना ही है कि मैं भाषा के मूलभूत अध्ययन में बहुत थोड़ा समय दे पाता हूं।"*

जनवरी १८६६ में जब इल्यीच जेल में थे उस समय उन्होंने अपनी बहन आन्ना से कुछ कोश भेजने का अनुरोध किया था और लिखा

---

* व्ला०इ०लेनिन, संबंधियों को पत्र, १९३४, पृष्ठ ८ — सम्पादक

था—"इस समय मैं जर्मन से अनुवाद कर रहा हूँ इसलिए मैं आपसे अनुरोध करूंगा कि आप मुझे पवलोव्स्की का कोष भेज दें।"* (जेल में—न०क०)

निष्कासन काल में इल्यीच ने वेब की एक पुस्तक का रूसी भाषा में अनुवाद करना आरम्भ किया था। मार्च १८९८ को उन्होंने आन्ना को लिखा था कि "मैं चाहता हूँ कि आप मुझे अंग्रेज़ी भाषा की कुछ पाठ्य पुस्तकें भेज दें। मैंने अनुवाद के लिए यहाँ कुछ पुस्तकें प्राप्त करने के निमित्त लिखा पढ़ी की थी, और मुझे एतदर्थ वेब** की पुस्तक मिल गई है, जो काफ़ी मोटी है, और उसमें ग़लतियां हो जाने का भय है।

इसलिए मुझे निम्नलिखित चीज़ों की आवश्यकता है:

(१) अंग्रेज़ी व्याकरण की कोई पुस्तक जिसमें मुख्य रूप से वाक्य विन्यास तथा मुहावरेदार अंग्रेज़ी के अध्याय हों। यदि न० क० के पास नुरोक*** की पुस्तक न हो (मुझे ऐसा लगता है कि उसके पास यह प्रति थी, परन्तु वह उसकी अपनी थी या नहीं यह मुझे नहीं मालूम) तो गर्मी भर के लिए—यदि आपको (अथवा मारिया को) उनकी ज़रूरत न हो—उसे मुझे भेज दें। यदि अंग्रेज़ी भाषा की कोई पाठ्य पुस्तक भेजना सम्भव हो सके तो मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी।

(२) भूगोल तथा नामकरण सम्बन्धी शब्दकोष—अंग्रेज़ी से नामों का अनुवाद और रूपान्तर करना कठिन कार्य है, और मुझे इस कार्य में ग़लतियाँ कर बैठने की आशंका है। मुझे पता नहीं एतद्विषयक कोई

---

* वही, पृष्ठ २०—संपादक

** सिदनेई तथा बियात्रिस वेब की पुस्तक का विषय है "औद्योगिक लोकतंत्र"—संपादक

*** अंग्रेज़ी भाषा, पाठ तथा कोष, का व्यावहारिक व्याकरण, सेन्ट-पीटर्सबर्ग, १८९४—न० क०

उपयुक्त कोष है या नहीं; यदि "पुस्तक विषयक पुस्तक" में अथवा अन्य किसी निर्देश-पुस्तिका अथवा पुस्तक-सूची में कोई सूचना न मिल सके तो शायद आपको यह सूचना किसी अन्य स्रोत से मिल जायगी। यदि आपको यह सूचना मिल जाय तो उसे मुझे भेज दें। (ख़र्चे की चिन्ता मत करें क्योंकि अनुवाद से जो धन मुझे मिलेगा वह काफ़ी होगा, परन्तु पहला प्रयास अच्छा होना चाहिए)। इसके लिए अधिक परेशानी उठाने की आवश्यकता नहीं। मुझे वेब की पुस्तक का जर्मन अनुवाद मिल जायगा, अतएव मैं इससे अपने अनुवाद का मिलान कर लूंगा।"*

जब मैंने शूशेन्सकोये के लिए प्रस्थान किया उस समय मैं अपने साथ नुरोक की उक्त पुस्तक ले गई थी। इस पुस्तक को मैंने जेल में भी पढ़ा था। इल्योच मुझसे अधिक अंग्रेज़ी जानते थे। मुझे अंग्रेज़ी उच्चारण का अच्छा ज्ञान न था और मैं फ़्रेंच के समान ही उसका उच्चारण किया करती थी। इल्यीच उस समय अपनी बहन ओल्गा के पास बैठ जाया करते जब एक भाषा अध्यापिका उसे पढ़ाने आती थी। ओल्गा उसके समक्ष ऊँची आवाज़ में अंग्रेज़ी पढ़ा करती थी। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि इल्यीच का अंग्रेज़ी उच्चारण शुद्ध न था। मैंने स्वयं उच्चारण उन्हीं से सीखा था परन्तु जब चार वर्ष बाद हम लन्दन गये उस समय न तो हमीं किसी की बात समझ पाते और न हमारी ही बात कोई दूसरा समझ पाता। इसलिए हमें अंग्रेज़ी की पढ़ाई फिर से शुरू करनी पड़ी।

लन्दन में बस जाने के पश्चात् धीरे धीरे हमने उच्चारण सीखना अरम्भ किया। हम सभाओं में जाते और वहाँ के भाषण सुनते, हाइड पार्क के सभा-स्थलों में जाते और वहाँ की चर्चाएं सुनते, साथ

---

* व्ला० इ० लेनिन, संबंधियों को पत्र, १९३४, पृष्ठ—१०६-१०७—सम्पादक

ही दूसरे लोगों से बातचीत भी किया करते थे। इसके अतिरिक्त दो अंग्रेज़ों को हम रूसी पढ़ाते और बदले में वे हमें अंग्रेज़ी पढ़ाया करते।

अक्तूबर १६०२ में इल्यीच ने अपनी माता जी को लिखा था कि उन्हें अंग्रेज़ी भाषा का अच्छा व्यावहारिक ज्ञान हो गया है। उसी वर्ष दिसम्बर में उन्होंने अपनी बहन मारिया को तूसेन की अंग्रेज़ी पाठ्य-पुस्तक का उपयोग करने की सलाह दी थी, "क्योंकि" उन्होंने लिखा था, "तूसेन सर्वोत्तम है। पहले मुझे उसकी पद्धति में विश्वास न था, परन्तु अब मुझे विश्वास हो गया है कि केवल यही पद्धति एक उपयोगी और गम्भीर पद्धति है। यदि तुम इस पुस्तक के प्रथम संस्करण को अद्योपान्त पढ़ो और वहाँ किसी अंग्रेज़ की सहायता से कुछ पाठों का अध्ययन करो तो इसमें सन्देह नहीं कि तुम्हें भाषा का अच्छा ज्ञान हो जायगा। तूसेन का एक ध्वनि विज्ञान-कोष भी है, और मैं मारिया को सलाह दूँगा कि वह इसकी एक प्रति अवश्य ख़रीद ले क्योंकि अलेक्सान्द्रोव की पुस्तक में ढेरों कूड़ा-कबाड़ भरा हुआ है।"*

जर्मन भाषा का गहन अध्ययन करने की दृष्टि से इल्यीच ने निष्कासन काल, दिसम्बर १८६८, में पवलोव्सकी के कोष के अलावा तुर्गेनेव की पुस्तकों का जर्मन अनुवाद भी मंगाया था और लिखा था: "आप तुर्गेनेव की कोई भी पुस्तक भेज दें परन्तु यह ध्यान अवश्य रहे कि अनुवाद अच्छा हो। जर्मन के किसी अच्छे और पूर्ण व्याकरण, विशेषकर वाक्य विन्यास विषयक की ज़रूरत है। अच्छा हो यदि वह जर्मन में हो।"**

---

*वही, पृष्ठ २८७ — संपादक
**वहीं, पृष्ठ १६४ — संपादक

इल्यीच को तुर्गनेव के जर्मन अनुवाद की आवश्यकता इसलिए थी कि वे इसकी सहायता से जर्मन भाषा का अध्ययन करने के इच्छुक थे। मई १९०१ में इल्यीच ने म्यूनिच से अपने बहनोई मार्क तिमोफ़ेयेविच एलिज़ारोव को, जो उस समय जेल में थे, समय के सदुपयोग के संबंध में लिखा था कि "जहाँ तक मानसिक कार्यों का संबंध है मेरा सुझाव है कि आप विदेशी भाषा से रूसी में और फिर रूसी से उसी विदेशी भाषा में किसी पुस्तक का अनुवाद किया करें। मैंने स्वयं इस प्रणाली का उपयोग किया है, और मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि विदेशी भाषा सीखने का यही सर्वोत्तम तरीक़ा है।"*

इल्यीच फ़्रेंच, अंग्रेज़ी तथा जर्मन भाषाओं के ज्ञाता तो थे ही साथ ही उन्होंने पोलिश और इटैलियन भाषाओं का भी अध्ययन किया था और वे चेक तथा स्वेडिश भाषाएं समझते थे।

१९०८ के गर्मी के मौसम में जब हम दूसरी बार विदेश गये थे उस समय मैं विदेशी अध्यापकों के लिए आयोजित एक पाठ्यक्रम में सम्मिलित होने जाया करती थी। यह पाठ्यक्रम ६ हफ़्तों का था और इसमें अध्यापकों को यह शिक्षा दी जाती थी कि अपने देश वापस आने पर उन्हें फ़्रेंच भाषा किस प्रकार पढ़ानी चाहिए। मैंने इल्यीच से वहाँ की शिक्षण-प्रणाली के विषय में बताया। इस पाठ्यक्रम में विशेष ध्यान ध्वनि-विज्ञान पर दिया जाता था और इसके साथ ही साथ अध्यापकों की मातृभाषा की विशेषताओं पर भी निगाह रखी जाती थी। भाषा सीखने में कक्षाओं और सैर-सपाटों के समय बातचीत पर विशेष बल दिया जाता। विद्यार्थी रेकार्डों (लिंगुआफ़ोन) पर भी

---

* वही, पृष्ठ १६७-१६८ — सम्पादक

शुद्ध फ्रेंच उच्चारण सुना करते। इल्यीच की इस प्रणाली में विशेष रुचि थी और वे उन पाठ्य-पुस्तकों को पढ़ा करते थे जिनका उपयोग इस प्रणाली में किया जाता था। उनका कहना था कि इस प्रणाली का अधिकाधिक उपयोग करना चाहिए। इस समय जब हमारे देश में लोग विदेशी भाषाओं में इतनी अधिक रुचि ले रहे हैं तो यह जानना भी रुचिकर होगा कि लेनिन विदेशी भाषाओं का किस प्रकार अध्ययन किया करते थे।

"प्रावदा" अंक २४५
सितम्बर ५, १९३७

इल्यीच का कार्य

विज्ञान अकादमी गणित शास्त्र, भौतिक विज्ञान, रसायन शास्त्र भूगोल, भूगर्भशास्त्र तथा नक्षत्र-विज्ञान के क्षेत्रों में ज्ञान का प्रसार करने तथा एतद्विषयक ज्ञान को लोकप्रिय बनाने के लिए उपयुक्त व्यक्तियों के निर्वाचन में व्यस्त है। प्रकाशन गृह भी इस कार्य में हाथ बटा रहे हैं। सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में भी बहुत कुछ किया जा रहा है। परन्तु राजनीतिक साहित्य की अत्यधिक मांग होते हुए भी इस क्षेत्र में केवल थोड़ा सा ही कार्य किया जा रहा है। हमें मालूम है कि इस प्रकार की मांगें हमारे ग्राम पुस्तकालयों तथा प्रौढ़ विद्यालयों से आई हैं। हाल ही में विधि संबंधी एक पाठ्य-पुस्तक का सम्पादन करते समय मैंने यह वाक्य देखा था: "अर्द्ध-साक्षर व्यक्तियों में सबसे अधिक मांग राजनीतिक साहित्य तथा प्राविधिक विषयों के पैम्फ़लेटों की है। उन्हें इस बात की फिर सलाह दी जानी चाहिए कि वे कहानी, उपन्यास आदि हल्की पुस्तकें पढ़ें।" परन्तु इस प्रकार की सलाह से कोई विशेष लाभ नहीं। जो लोग साक्षरता के लिए स्कूलों में जाते हैं वे असन्तुष्ट हैं क्योंकि निरक्षरों और अर्द्ध-साक्षरों के पाठ्यक्रमों में केवल कहानियों की ही प्रधानता है।

ल्यूबलिनो के समीपस्थ "मोज्हेरेज़" प्रौढ़ विद्यालय की एक अध्यापिका ने कहा था कि विद्यार्थी इस बात की शिकायत करते हैं

कि अर्द्ध-साक्षरों के स्कूलों में राजनीतिक विषयों के अध्ययन के लिए कोई भी समय निर्दिष्ट नहीं किया जाता।

मुझे याद है कि एक बार १९१८ में व्लादीमिर इल्यीच ने हमारे मकान में उन लेखकों की एक बैठक का आयोजन किया था जो, उनके विचार से, लोक-रुचि के पैम्फ़्लेट लिख सकते थे। चाय की चुस्कियाँ लेते हुए हमने लोक-रुचि की पुस्तकें लिखने के उपायों पर काफ़ी देर तक वाद-विवाद किया था। कुछ दिनों बाद मुझे अपने काग़ज़-पत्रों में रखा हुआ एक छोटा सा नोट मिला जो जनप्रतिनिधि परिषद् के चेयरमैन के एक पीले लेटरहेड पर पुरानी हिज्जों के अनुसार टाइप किया गया था। इस लेख पर हस्ताक्षर न थे। इसका विषय था लोक-रुचि के पैम्फ़्लेट कैसे लिखना चाहिये। यह इल्यीच का एक अनुदेश-पत्र था जो इस प्रकार था—"कार्य—श्रमिकों तथा किसानों के लिए दो सप्ताह के भीतर एक पुस्तक का संकलन।

इस पुस्तक में अलग अलग तथा स्वतंत्र पत्रक हों। प्रत्येक पत्रक पूरा पूरा हो और २ से लेकर ४ पृष्ठ तक का हो।

इसकी भाषा सरल हो ताकि साधारण से साधारण किसान उसे समझ ले। पत्रकों की संख्या ५० से लेकर २०० तक हो। पुस्तक के प्रथम संस्करण के लिए ५० पत्रक पर्याप्त हैं।

विषय—सोवियत शासन का विकास—उसकी गृह तथा वैदेशिक नीति। उदाहरणार्थ—सोवियत शासन क्या है? देश का प्रशासन कैसे हो? भू-आज्ञप्ति। राष्ट्रीय अर्थतंत्र की समितियां। उद्योगों का राष्ट्रीय-करण। श्रम-अनुशासन। साम्राज्यवाद। साम्राज्यवादी युद्ध। गुप्त सन्धियाँ। हमारे शांति प्रस्ताव। इस समय हम किस चीज़ के लिए संघर्ष कर रहे हैं। साम्यवाद क्या है। धर्म तथा राज्य का पृथक्करण, इत्यादि इत्यादि।

हम पुराने अच्छे पत्रकों का उपयोग कर सकते हैं और हमें

उनका उपयोग करना चाहिए तथा पुराने लेखों को दुबारा लिखना चाहिए।

पुस्तक में सार्वजनिक उपयोगिता के पाठ्य-विषय होने चाहिए और ऐसे विषय भी जिन्हें सरुचि घरों में भी पढ़ा जा सके। इसके अतिरिक्त पुस्तक में अलग अलग पत्रकों के पुनर्मुद्रण तथा अन्य भाषाओं में उनके कुछ अनुवाद (थोड़े बहुत परिवर्द्धनों के साथ) भी होने चाहिए।" यह नोट १९१८ में लिखा गया था। यह पुस्तक संकलित भी की गई थी। परन्तु सम्प्रति वह किसी न किसी प्रकाशन गृह की अलमारियों की शोभा बढ़ा रही है।

अट्ठारह वर्ष बीत चुके हैं। आज भी इल्यीच द्वारा निश्चित किये गये कार्य उतने ही सामयिक हैं जितने वे उनके काल में थे। बेशक विषयों में कुछ परिवर्तन वांछनीय हैं। यह बड़ा उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य है और इसे अवश्य सम्पन्न किया जाना चाहिए।

"प्रावदा", अंक १४९, १ जून १९३६

ВОСПОМИНАНИЯ РОДНЫХ
О ЛЕНИНЕ

на языке хинди

Художественный редактор *В. Ходоровский*
Технические редакторы *Я. Гольдфельд и Т. Пискарева*

Подписано к печати 1/III — 1958 г.
Формат 84×108¹/₃₂. Бум. л. 4¹⁵/₁₆ — 16, 29 печ. л. Уч.— изд. л, 19,33
Заказ 1216. Тираж 7500. Цена 8 руб.

Отпечатано в 15-й типографии «Искра революции»
Управления полиграфической промышленности
Мосгорсовнархоза. Москва.

दुनिया के मज़दूरो एक हो !

लेनिन

[illegible] संस्मरण
उनके संबंधियों द्वारा

विदेशी भाषा प्रकाशन गृह
मास्को